( )

सब जगत् में आप नित्यही प्राप्त हो ऋतम्वदिष्यामि। आपकी
जो यथार्थ आज्ञा है उसी को मैं कहूंगा और उसी कोही मैं
करूंगा सत्यम्वदिष्यामि। और सत्यही कहूंगा और करूंगा
सो तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। ऐसा जो मैं आपकी आज्ञा को
ने वाला और करने वाला मेरी आप रक्षा करें
ज्ञा से मेरी बुद्धि विरुद्ध न होय। उसी आज्ञा
न वाला उसी आज्ञा से मैं विरुद्ध कभी न करूं
प की आज्ञा है धर्म रूपोही है जो उससे विरुद्ध सो
उसी आज्ञा को कहूं और करूं भी वैसी आप कृपा करैं जब
उस आज्ञा को यथावत कहूंगा और करूंगा भी तब उस
मुख्य फल यही है कि आप की प्राप्ति का होना अवतुमाम-
ववक्तारम्। यह फिर जो दूसरी बार पाठ है मन्त्र में वह
ादर के वास्ते है जैसे कि किसी ने किसी से कहा त्वंग्रामङ्-
गच्छ। यह कहने से क्या जाना जाता है कि तूं ग्राम को
ीघ्रही जा वैसेही दूसरी बार पाठ से आप मेरी अवश्यही रक्षा
करैं और (ॐशान्तिश्शान्तिश्शान्तिः) यह जो तीन बार पाठ है
सका अभिप्राय यह है कि अध्यात्मताप जो शरीर में रोगा-
कों से होता है दूसरा शत्रु व्याघ्र और सर्पादिकों से जो होता
उसका नाम आधि भौतिक है तीसरा ताप वह है कि वृष्टि
ा अत्यन्त होना और कुछ भी वृष्टि का न होना अति शीत
उष्णता का होना उसका नाम आधि दैविक ताप है हम
ोगों की यह प्रार्थना है कि जगत के तीनों तापों की निवृत्ति
ाप की कृपा से होजाय भवान्शन्नोभवतु। आप हम लोगों के
र्थात सब संसार के कल्याण करने वाले हो आप से भिन्न
ई भी कल्याण कारक अथवा कल्याण स्वरूप नहीं है इससे
ाप सेही प्रार्थना है कि सब जीवों के हृदय में आपही प्र-
काशित होवैं इस मन्त्र का संक्षेप से अर्थ पूर्ण होगया और

रस्परंतज्जलम् ।(जो अव्यक्त से व्यक्त को और एक परमाणु से दूसरे परमाणु को अन्योन्य संयोग और बियोग के वास्ते जो हनन और प्रतिहनन करने वाला होय उसका नाम जल है इस्से परमेश्वर का नाम जल है हनन नाम एक से एक को मिलाना प्रतिहनन नाम दूसरे से तीसरे को मिलाना तीसरे को चौथे से मिलाना जगत की उत्पत्ति समय में सभों का संयोग करने वाला और प्रलय समय में वियोग का करनेवाला ऐसा परमेश्वरही है दूसरा कोई भी नहीं)॥ जनीप्रादुर्भावे । लाआदाने इन धातुओं से भी जल शब्द सिद्ध होता है जनयति नाम उत्पादयतिसर्वञ्जगत् तज्जम् लातिगृह्णाति नाम आदत्ते चराचरञ्जगत्तल्लम् जञ्चतल्लञ्चतज्जलम् ॥ अत्र ज शब्द से सभों का जनक और ल शब्द से सभों का धारण करने वाला उसका नाम जल, जल नाम परमेश्वर का है काशृदीप्तौ । उस्से आ-काश शब्द सिद्ध होता है ॥ आसमन्तात् सर्वतः सर्वञ्जगत्प्रकाश तेसआकाशः । जो परमेश्वर सब जगह से और सब प्रकार से सभों को प्रकाशता है इस्से परमेश्वर का नाम आकाश है ॥ अदभक्षणे । इस्से अन्न शब्द सिद्ध होता है ॥ अत्तिभक्षयतिच-राचरञ्जगत्तदन्नम् । जो चराचर जगत् का भक्षक है और काल को भी खाके पचा लेता है उसका नाम अन्न है इसमें प्रमाण है ॥ अद्यतेऽत्तिचभूतानि तस्मादन्नन्तदुच्यते । यह तैत्तिरीयोप-निषद् का बचन है ॥ अहमन्नमहमन्नमहमन्नम् अहमन्नादोऽहमन्नादोऽहमन्नादः । यह भी उसी उपनिषद् में है ॥ अन्नम-त्तीत्यान्नादः । अन्न शब्दसे चराचर जगत् का जो ग्राहक उस्का नाम अन्नाद है यह बचन परमेश्वरही का है क्योंकि मैं अन्न हूं मैंही अन्नाद हूं तीन बार इस श्रुति में पाठ आदर के वास्ते है जैसे कि त्वंग्रामङ्गच्छगच्छगच्छ । इस्से क्या लिया जाता है कि शीघ्रही तूं ग्राम को जा और कहीं भी ठहरना

नहीं इस प्रकार के व्यवहारों में जो बहुत बार का कहना है सो जैसे अनर्थक नहीं वैसे इसमें भी अनर्थक नहीं इस विषय में व्यासजी का सूत्र भी प्रमाण है ॥ अत्ताचराचरग्रहणात् । अत्ता नाम खाने वाले का है उसी का नाम अन्नाद है चराचर नाम जड़ और चेतन सब जगत उसके ग्रहण करने से परमेश्वर का नाम अत्ता और अन्नाद है जैसे कि गूलर के फल में कृमि उत्पन्न होके उसी में रहते हैं और उसी में नाश हो जाते हैं इसे परमेश्वर का नाम अत्ता अन्न और अन्नाद है वसनिवासे इस धातु से वसु शब्द सिद्ध होता है ॥ वसन्तिसर्वाणिभूतानि यस्मिन्सवसुः । अथवा सर्वेषुभूतेषुयोवसतिसवसुः । सब आकाशादिक भूत जिसमें रहते हैं उसका नाम वसु है अथवा सब भूतों में जो वास कर्ता है उसका नाम वसु है इसे वसु परमेश्वर का नाम है ॥ रुदिर्अश्रुविमोचने । रुदेर्णिलोपश्च इस धातु से और इस सूत्र से रुद्र शब्द सिद्ध होता है ॥ रोदयति न्यायकारिणोजनान्सरुद्रः । रोवाता है दुष्ट कर्म करने वाले जीवों को जो उसका नाम रुद्र है इसमें यह श्रुति का भी प्रमाण है ॥ यन्मनसाध्यायति तद्वाचावदति यद्वाचावदति तत्कर्मणाकरोति यत्कर्मणाकरोति तदभिसम्पद्यते । यह यजुर्वेद के ब्राह्मण की श्रुति है इसका यह अर्थ है कि जो जीव मन से विचारता है वही बचन से कहता है उसी को कर्त्ता है और जिसको कर्ता है उसी कोही प्राप्त होता है ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है कि जो जैसा कर्म करै सो वैसाही फल पावै इस आज्ञा को कहने वाला परमेश्वर है उसकी आज्ञा सत्यही है इसे जो जैसा कर्ता है सो वैसाही प्राप्त होता है इसे क्या आया कि दुष्ट कर्मकारी जितने पुरुष हैं वे सब दुष्ट कर्मों के फल प्राप्त होके रोदन ही कर्ते हैं इस कारण से परमेश्वर का नाम रुद्र है नारायण भी नाम परमेश्वर का है ॥ आपोनाराइतिप्रो

का आपोवैनरसूनवः। तायदस्यायनंपूर्वं तेननारायणःस्मृतः ॥
यह श्लोक मनुस्मृति का है आप नाम जल का है और नारसंज्ञा
भी जलकी है और वे प्राण जलसंज्ञक हैं वे सब प्राण जिसका
अयन नाम निवासस्थान है इससे परमेश्वर का नाम नारायण
है सूर्य का अर्थ तो कर दिया है ॥ चदिआह्लादे। इस धातु से
चन्द्र शब्द सिद्ध होता है ॥ चन्दतिसोयञ्चन्द्रः। जो आह्लाद
नाम आनन्द स्वरूप होय और जो मुक्त पुरुष जिसको प्राप्त हो
के सदा आनन्द स्वरूपही रहै उसको दुःखका लेश कभी न होय
इससे परमेश्वर का नाम चन्द्र है ॥ मगिधातुर्गत्यर्थः। मङ्गरलच्
इससे मङ्गल शब्द सिद्ध हुआ ॥ मङ्गतिसोयंमङ्गलः। जो आपतो
मङ्गलं स्वरूपहो हैं और सब जीवों के मङ्गल का वही कारण है
इससे परमेश्वर का नाम मङ्गल है ॥ बुधअवगमने। इस धातु
से बुध शब्द सिद्ध होता है ॥ बुध्यतेसोयंबुधः। जो आप तो बोध
स्वरूप होय और सब जीवों के बोधों का कारण होय इससे पर-
मेश्वर का नाम बुध है बृहस्पति का अर्थ प्रथम कर दिया है ॥
ईशुचिरपूतीभावे। इस धातु से शुक्र शब्द सिद्ध होता है शुचि-
र्गीम। अत्यन्त पवित्र का जो आप तो अत्यन्त पवित्र होय औरों
के पवित्रता का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम शुक्र है
चरगतिभक्षणयोः। इस धातु से शनैस् अव्यय पूर्व पदसे शनैश्चर
शब्द सिद्ध होता है जो अत्यन्त धैर्यवान् होय और सब संसार
के धैर्य का कारण होय इससे परमेश्वर का नाम शनैश्चर है
रहत्यागे। इस धातु से राहु शब्द सिद्ध होता है जो सब से
एकान्त स्वरूप होय जिसमें कोई भी मिला न होय और सब
त्यागियों के त्याग का हेतु होय इससे परमेश्वर का नाम राहु
है ॥ कित निवासेरोगापनयनेच। इससे केतु शब्द सिद्ध होता
है जो सब जगत् का निवासस्थान होय और सब रोगोंसे रहित
होय मुमुक्षुओं के जन्म मरणादिक रोगों के नाशका हेतु होय

इससे परमेश्वर का नाम केतु है ॥ यजदेवपूजासङ्गतिकरणदानेषु इस धातु से यज्ञ शब्द सिद्ध होता है ॥ इज्यतेसर्वैर्ब्रह्मादिभिर्जनैस्सयज्ञः । सब ब्रह्मादिक जिसकी पूजा करते हैं उसका नाम यज्ञ है ॥ यज्ञोवैविष्णुरितिश्रुतेः । यज्ञ का नाम विष्णु है और विष्णु नाम है व्यापक का इस श्रुति से भी परमेश्वर का नाम यज्ञ है ॥ हुदानादनयोः । इस धातु से होम शब्द सिद्ध होता है ॥ हूयतेसोयंहोमः । जो दान नाम देने के योग्य है और अदन नाम ग्रहण करने के योग्य है उसका नाम होम है सब दानों से परमेश्वर का जो दान नाम उपदेश का करना और सब ग्रहणों से जो परमेश्वर का ग्रहण नाम परमेश्वर में दृढ़ निश्चय का करना इस दान से वा ग्रहण से कोई भी उत्तमदान वा ग्रहण नहीं है इससे परमेश्वर का नाम होम है ॥ बन्धबन्धने इस धातु से बन्धु शब्द सिद्ध होता है जिसने सब लोक लोकांतर अपने २ स्थान में प्रबन्ध करके यथावत् रक्खे हैं और अपने २ परिधि के ऊपर सब लोक भ्रमण करैं इस प्रबन्ध के करने से किसी से किसी का मिलना न होय जैसे कि बन्धु बन्धु का सहायकारी होता है वैसेही सब पृथिव्यादिकों का धारण करना और सब पदार्थों का रचन करना इससे परमेश्वर का नाम बन्धु है पा पाने पारक्षणे । इन दो धातुओं से पिता शब्द सिद्ध होता है जैसे कि पिता अपनी प्रजा के ऊपर कृपा और प्रीति को कर्त्ताही है तैसे परमेश्वर भी सब जगत के ऊपर कृपा और प्रीति कर्ता है इससे परमेश्वर का नाम सब जगत् का पिता है पितॄणांपितापितामहः । जितने जगत में पिता लोग हैं उन सभों के पिता होने से परमेश्वर का नाम पितामह है ॥ पितामहानांपिता प्रपितामहः । जगत में जितने पिताओं के पिता हैं उन सभों के पिता के होने से परमेश्वर का नाम प्रपितामह है ॥ मा माने माङ्माने शब्देच । इन दो धातुओं से माता शब्द

सिद्ध होता है जैसे कि माता अपनी प्रजाका मान करती है और लाड़न करती है तैसेही सब जगत का मान और लाड़न अत्यन्त कृपा और प्रीति करने से परमेश्वर का नाम माता है ॥ श्रोत्रस्यश्रोत्रंमनसोमनो यद्वाचोहवाचंसउप्राणस्यप्राणः । चक्षुसश्चक्षुरतिमुच्यधीराः प्रेत्याऽस्माल्लोकादमृताभवन्ति ॥ यह केनोपनिषद का बचन है इसका यह अभिप्राय है कि जैसे श्रोत्रादिक अपने २ बिषय को ग्रहण कर्ते हैं तथा सबश्रोत्रादिकों का और श्रोत्रादिक बिषयों को उनकी क्रिया को भी यथावत् जानता है इससे परमेश्वर का नाम श्रोत्रका श्रोत्र है तथा मन का मन वाणी को वाणी प्राण का प्राण और चक्षु का चक्षु इससे परमेश्वर के नाम श्रोत्र मन वाणीप्राण और चक्षु ये सब हैं बोधयन् बुद्धिर्भवति चेतयन्चित्तम्भवति । नाम सब का चेताने वाले हैं इससे परमेश्वर का नाम चित्त और बुद्धि है ॥ अहङ्कुर्वन्नहङ्कारोभवति । नाम अहङ्करोतीत्यहङ्कारः जो अव्याकृतादिक सब जगत् को मैंही कर्ता हूं ऐसा जो ज्ञान का होना इससे परमेश्वर का नाम अहङ्कार है ॥ जीवप्राणधारणे । इस धातुसे जीव शब्द सिद्ध होता है ॥ जीवयतिसर्वान्प्राणिनःसजीवः । जो सब जीव और प्राणों का जीवन् धारण करने वाला है इससे परमेश्वर का नाम जीव है ॥ आप्लृव्याप्तौ । इस धातु से अप् शब्द सिद्ध होता है सब जगत में व्यापक होने से परमेश्वर का नाम आप है ॥(जनीप्रादुर्भावे इससे अज शब्द सिद्ध होता है ॥ नजायतइत्यजः । जिसका जन्म कभी न हुआ न है और न होगा इससे परमेश्वर का नाम अज है ॥ सत्यंज्ञानमनन्तंब्रह्म । यह तैत्तिरीयोपनिषद का बचन है ॥ अस्तीतिसत् सतेहितंसत्यम् । जो सब दिन रहे जिसका नाश कभी न होय ॥ इससे परमेश्वर का नाम सत्य स्वरूप है और ज्ञान स्वरूप होने से परमेश्वर का नाम ज्ञान है (जिसका अन्त नाम सीमा कभी नहीं अर्थात

देश काल और वस्तु का परिच्छेद नहीं जैसे कि मध्यदेश में दक्षिण देश नहीं दक्षिण देश में मध्यदेश नहीं भूतकाल में भविष्यत्काल नहीं और दोनों में वर्तमान काल नहीं तैसेही पृथिवी आकाश नहीं और आकाश पृथिवी नहीं ऐसा भेद परमेश्वर में नहीं है ऐसा ब्रह्म ही है किन्तु सब देशों सब कालों और सब वस्तुओं में अखण्ड एक रस के होने से और कोई भी जिसका अन्त न लेसके इससे परमेश्वर का नाम अनन्त है ॥ टुनदि समृद्धौ । इससे आनन्द शब्द सिद्ध होता है जो सब समृद्धिमान् सदा आनन्द स्वरूप और मुमुक्षु मुक्तों को जिस की प्राप्ति से सब समृद्धि और नित्यानन्द के होने से परमेश्वर का नाम आनन्द है ॥ सत् शब्द का अर्थ सत्य शब्द के व्याख्यान में जान लेना और ज्ञान शब्द के व्याख्यान से चित् शब्द का अर्थ जान लेना इससे परमेश्वर को सच्चिदानन्द स्वरूप कहते हैं ॥ शुन्ध शुद्धौ । इससे शुद्ध शब्द सिद्ध होता है जो आप तो शुद्ध होय जिसको कुछ मलीनता के संयोग का लेश कभी न होय और सब शुद्धियों के हेतु के होने से परमेश्वर का नाम शुद्ध है बुध अवगमने । इस धातु से बुद्ध शब्द सिद्ध होता है जो सब बोधों का परमावधि नाम परम सीमा के होने से परमेश्वर का नाम बुद्ध है ॥ (मुच्लृ मोचने । इस धातु से मुक्त शब्द सिद्ध होता है जो आप तो सदा मुक्त स्वरूप होय और सब मुक्त होने वालों के मुक्ति के साक्षात् हेतु होने से परमेश्वर का नाम मुक्त है) ॥ सदकारणवन्नित्यम् । जो सत् स्वरूप होय और कारण जिसका कोई भी नहीं इससे परमेश्वर का नाम नित्य है ये सब मिलके ऐसा एक नाम हो जायगा ॥ नित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभावः । जो स्वभावही से नित्य शुद्ध बुद्ध और मुक्त के होने से परमेश्वर का नाम नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव है ॥ डुकृञ् करणे । इस धातु से निराकार शब्द सिद्ध होता है ॥ (निर्गतः आकारोयस्मात्स-

निराकारः। जिसका आकार कोई भी नहीं इससे परमेश्वर का नाम निराकार है ॥ (अञ्जनं मायाऽविद्ययोर्नाम निर्गतमञ्जनं यस्मात् स निरञ्जनः। माया नाम छल और कपट का है क्योंकि यह पुरुष मायावी है इससे क्या जाना जाता है कि यह छली और कपटी है अविद्या अज्ञान का नाम है जिसको माया और अविद्या का लेश मात्र सम्बन्ध कभी न हुआ न है और न होगा इससे परमेश्वर का नाम निरञ्जन है)॥ गणसंख्याने। इस धातु से गण शब्द सिद्ध होता है इसके आगे ईश शब्द रखने से गणेश शब्द सिद्ध होता है ॥ गणानांसमूहानांजगतामीशस्सगणेशः। जो सब गणों का नाम संघातों का अर्थात सब जगतों का ईश नाम स्वामी होने से परमेश्वर का नाम गणेश है ॥ विश्वस्यईश्वरःविश्वेश्वरः। विश्वनाम सब जगत का ईश्वर होने से परमेश्वर का नाम विश्वेश्वर है ॥ कूटेतिष्ठतीतिकूटस्थः। जिसमें सब व्यवहार होय आप सब व्यवहारों में व्याप्त होय और सब व्यवहार का आधार भी होय परन्तु जिसके स्वरूप में व्यवहार का लेश मात्र भी विकार न होनेसे परमेश्वर का नाम कूटस्थ है। जितने देव शब्द के अर्थ लिखे हैं वेही अर्थ देवी शब्द के जान लेना चाहिये ॥ शक्लृशक्तौ शक्नोतिययासाशक्तिः। जो सब पदार्थों को रचने का सामर्थ्य जिसमें है इससे परमेश्वर का नाम शक्ति है ॥ लक्षदर्शनाङ्कनयोः। इससे लक्ष्मी शब्द सिद्ध होता है लक्षयति नाम दर्शयति चराचरञ्जगत् सालक्ष्मीः जो सब जगत् को उत्पन्न करके देखावै उसका नाम लक्ष्मी है ॥ अङ्कयति चिन्हयति वा चराचरञ्जगत्सालक्ष्मीः। जो सब जगत के चिन्हों को अर्थात नेत्र नासिकादिक और पुष्प पत्र मूलादिक एक से एक विलक्षण जितने चिन्ह हैं उनके रचने और प्रकाशक के होने से परमेश्वर का नाम लक्ष्मी है ॥ लक्ष्यतेवेदादिभिः शास्त्रैर्ज्ञानिभिश्चसापिलक्ष्मीः। वेदादिक शास्त्र और ज्ञानियों

का लच्यनाम दर्शन के योग्य होने से परमेश्वर का नाम लक्ष्मी है ॥ सृगतौ । इस से सरस् शब्द से मतुप् और ङोप् प्रत्यय के करने से सरस्वती शब्द सिद्ध होता है सरोनाम विज्ञानम् विज्ञानंनाम विविधंयत्ज्ञानम् तत्विज्ञानम् सरस् शब्द विज्ञान का वाचक है विविधनाम नानाप्रकार शब्द शब्दों का प्रयोग और शब्दार्थ सबन्धों का यथावत् जो ज्ञान उसका नाम विज्ञान है ॥ सरोनाम विज्ञानंविद्यतेयस्याः सासरस्वती । सर नाम विज्ञान सो अखण्डित विद्यमान है जिसको उसका नाम सरस्वती है वैसा परमेश्वरही है इस से सरस्वती नाम परमेश्वर का है ॥(सर्वाःशक्तयोविद्यन्तेयस्यससर्वशक्तिमान् । जिसको सब शक्ति नाम सब सामर्थ्य विद्यमान होय उसका नाम सर्व शक्तिमान् है अर्थात जो किसी का लेशमात्र सामर्थ्य का आश्रय न लेवै और सब जगत उसका आश्रय कर्ता है इस से परमेश्वरका नाम सर्व शक्तिमान् है)धर्म न्याय और पच्चपात का त्याग ये तीन नाम एक अर्थ के वाचक हैं ।(प्रमाणैरर्थपरीक्षणंन्यायः । यह न्यायशास्त्र सूत्रों के ऊपर वात्स्यायन मुनिकृत भाष्य का बचन है जो प्रत्यचादिक प्रमाणों से सत्य सत्य सिद्ध होय उसका नाम न्याय है ॥ न्यायकर्तुंशीलमस्यसोऽयंन्यायकारी । जिसका न्याय करनेही का स्वभाव होय और अन्याय करने का लेशमात्र सम्बन्ध कभी न होय ऐसा परमेश्वरही है इस से परमेश्वर का नाम न्यायकारी है)॥ दय दान गति रच्चण हिंसादानेषु । इस धातु से दया शब्द सिद्ध होता है ॥ दय्यतेयासादया । दान नाम अभय का देना गतिर्नाम यथावत् गुण दोषों का विज्ञान रच्चण नाम है सब जगत की रच्चा का करना हिंसा नाम दुष्ट कर्मकारियों को दण्ड का होना आदान नाम सब जगत के ऊपर वात्सल्य से कृपा का करना इसका नाम दया है)॥ दयाविद्यतेयस्यसदयालुः । उस दया के नित्य विद्यमान होने से

परमेश्वर का नाम [illegible] है ॥ (सदेवसोम्येदमग्रआसीदेकमेवा द्वितीयम् । यह छांन्दोग्योपनिषद् का बचन है इस्का अभिप्राय यह है कि हे सोम्य हे श्वेतकेतो श्वेतकेतु के जो पिता उद्दालक व उस्से कहते हैं अग्रे नाम सृष्टि जब उत्पन्न नहीं भई थी तब एक अद्वितीय ब्रह्म परमेश्वरही था और कोई भी नहीं था वैसा कोई परमेश्वर से भिन्न न हुआ न है और न होगा सदेव नाम जिस्का नाश किसी काल में कभी न होय ॥ इस्से श्रुति में सदेव यह बचन का पाठ है)॥ एकम् एव और अद्वितीयम् ये तीनों शब्दों से यह अर्थ जाना जाता है कि ॥ सजातीयविजातीयस्वगतभेदशून्यंब्रह्मास्तीति । सजातीय भेद यह है कि मनुष्यसे भिन्न दूसरे मनुष्यों का होना विजातीय भेद यह है कि मनुष्य से भिन्न विजातीय पाषाण और स्वगत भेद यह है कि जैसे मनुष्य में नाक कान सिर पांव एक से एक भिन्न अवयव हैं तैसेही परमेश्वर में तीन प्रकार के भेद नहीं जब सजातीय परमेश्वर से भिन्न कोई दूसरा वैसाही परमेश्वर होय तब तो सजातीय भेद होय ऐसा दूसरा कोई परमेश्वर नहीं है इस्से परमेश्वर में सजातीय भेद नहीं है जैसे परमेश्वर का न्यायकारित्वादि गुण स्वाभाविक हैं तैसाही परमेश्वर से भिन्न अन्यायकारित्वादि विशिष्ट गुणवान् दूसरा विरुद्ध स्वभाव परमेश्वर होय तब तो परमेश्वर में विजातीय भेद आसकै जैसा कि खुदा के विरुद्ध शैतान ऐसा कभी नहीं इस्से परमेश्वर में विजातीय परिच्छेद नहीं (परमेश्वर निराकार और निरवयव है) वैसेही कोई प्रकार का भेद नहीं है इस्से परमेश्वर में स्वगत परिच्छेद नहीं इस्से परमेश्वर का नाम [illegible] है यही अद्वैत शब्द का अर्थ है ॥ द्वयोर्भावोद्विताद्वितैवद्वैतम् नविद्यतेद्वैतंयस्मिन्यस्यवातदद्वैतम् । दोनों विद्यमान ईश्वरों का जो होना उस्का नाम द्विता है द्विता जिसको कहते हैं उसी का नाम द्वैत है

नहीं है विद्यमान द्वैत जिसमें जिसको वा उसका नाम अद्वैत है, अद्वितीय और अद्वैत परमेश्वरही का नाम है ॥ निर्गताः जन्मादयः अविद्यादयः सत्त्वादयः गुणाः यस्मात् सनिर्गुणः परमेश्वरः । जगत् के जन्मादिक अविद्यादिक और सत्वादिक गुणों से भिन्न हैं अर्थात जगत के जितने गुण हैं वे परमेश्वर में लेश मात्र सम्बन्ध से भी नहीं रहते इससे परमेश्वर का नाम निर्गुण है सच्चिदानन्दादिगुणैः सहवर्तमानत्वात्सगुणः अपने नित्य स्वाभाविक सच्चिदानन्दादिक गुणों से सदा सहवर्तमान होनेसे परमेश्वर का नाम सगुण है कोई भी संसार में ऐसी वस्तु नहीं है जो कि केवल निर्गुण अथवा सगुण होय जैसे कि पृथिवी में गन्धादिक गुणों के योग होने से सगुण है और वही पृथिवी चेतन और आकाशादिकों के गुणों से रहित होने से निर्गुण भी है वैसेही अपने सर्वज्ञादिक गुणों से सदा सहित होनेसे परमेश्वर का नाम सगुण है और उत्पत्ति स्थिति नाश जड़त्वादिक जगत के गुणों से रहित होने से परमेश्वर निर्गुण भी है वैसे सब जगहों में विचार कर लेना ॥(सर्वजगतोन्तर्यन्तुं शीलमस्यसोऽन्तर्यामी । जो सब जगत के भीतर बाहर और मध्य में सर्वत्र व्याप्त होके सब को जानते हैं और सब जगत को नियम में रखने से परमेश्वर का नाम अन्तर्यामी है)न्यायकारी नाम के अर्थ में धर्म शब्द की व्याख्या कर दी है उससे जानलेना धर्मेण राजते सधर्मराजः अथवाधर्मराजयतिप्रकाशयति सधर्मराजः । धर्म न्याय का और न्याय पक्षपात के त्याग का नाम है तिस धर्म से सदा प्रकाशमान होय अथवा सदा धर्म का प्रकाशकरने से परमेश्वरका नाम धर्मराज है ॥(सर्वञ्जगत्करोतीतिसर्वजगत्कर्त्ता सो सब जगत् का करने वाला होने से परमेश्वर का नाम सर्व जगत् कर्त्ता है)॥ निर्गतंभयंयस्मात्सनिर्भयः)। जिसको किसी से किसी प्रकार का भय नहीं होता है इससे परमेश्वर का नाम

निर्भय है ॥ (नविद्यतेआदिःकारणंयस्यसःअनादिः । जिसका कारण कोई भी नहीं और अपने तो सब जगत का आदि कारण है इससे परमेश्वर का नाम अनादि है)॥(अणोरणीयान्महतोमहीयान् । यह कठोपनिषद् का बचन है) जो सब सूक्ष्म पदार्थों से अत्यन्त सूक्ष्म के होने से परमेश्वर का नाम सूक्ष्म है) और जो सब बड़ों में अत्यन्त बड़ा है इससे परमेश्वर का नाम महान् है सब कल्याण गुणों से सदा युक्त रहने से परमेश्वर का नाम शिव है ॥ (भगोविद्यतेयस्यसभगवान । जो अनन्त ज्ञान अनन्त वैराग्यादिक नित्य गुणों से युक्त होने से परमेश्वर का नाम भगवान् है)॥(मानयतिचराचरञ्जगत् । अथवा सर्वैर्वेदादिभिश्शास्त्रैः शिष्टैश्चमन्यतेयः समनुः । जो सब जगत का मान करै अथवा सब वेदादिक शास्त्र और शिष्टलोक जिसको अत्यन्त मानैं इससे परमेश्वर का नाम मनु है)॥ चिन्तितुंयोग्यश्चिन्त्यःनचिन्त्योऽचिन्त्यः। जो विषयासक्त पुरुषों से चिन्तने में नाम सम्यक् जानने में नहीं आते इससे परमेश्वर का नाम अचिन्त्य है परन्तु ऐसा ज्ञान ज्ञानियों को होता है कि सर्वव्यापक जो परमेश्वर सो हृदय देश में भी है उस हृदयस्थ व्यापक परमेश्वर को जानने से सब अनन्त जो परमेश्वर उसका ज्ञान निश्चित होता है जैसा मेरे हृदय में परमेश्वर है वैसाही सर्वत्र है जैसे कि समुद्र के जल का एक बिन्दु जीभ के ऊपर रखने से उसके स्वादादिक गुणों के जानने से सब समुद्र के जल का ज्ञान हो जाता है वैसेही परमेश्वर का दृढ़ ज्ञान ज्ञानियों को हो जाता है ॥(प्रमातुंयोग्यः प्रमेयः नप्रमेयः अप्रमेयः । जो परिमाणों से जिसका परिमाण तौलन नहीं होता इतनाहीं परमेश्वर में सामर्थ्य है ऐसा कोई भी नहीं कह सक्ता और न जान सक्ता है इससे परमेश्वर का नाम अप्रमेय है)॥ प्रमदितुंनाम उन्मदितुंशीलमस्यसप्रमादी नप्रमादी अप्रमादी । जिसका प्रमाद नाम उन्मत्तता

के लेशमात्र का भी सम्बन्ध नहीं है इस से परमेश्वर का नाम अनामी है॥ विश्वंबिभर्तीतिविश्वम्भरः। जो विश्व का धारण और पोषण का कारण होने से परमेश्वर का नाम विश्वम्भर है। कलसंख्याने। इस धातु से काल शब्द सिद्ध होता है॥ कलयतिसर्वञ्जगत् सकालः जो सब जगत की संख्या और परिमाण को आदि अन्त मध्य को यथावत् जानने से परमेश्वर का नाम काल है उसका काल कोई भी नहीं है और वह काल का भी काल है)॥ प्रीञ्तर्पणेकान्तौच। इस धातु से प्रिय शब्द सिद्ध होता है॥ प्रीणातिसर्वान्धर्मात्मनः। अथवा प्रीयतेधर्मात्मभिःसप्रियः। जो सब शिष्टों को और मुमुक्षुओं को अपने आनन्द से प्रसन्न करदे अथवा जिस्को प्राप्त होके सब जीव प्रसन्न हो जांय इस से परमेश्वर का नाम प्रिय है। शिव नाम कल्याण का है जो आप तो कल्याण स्वरूप होय और जिस्को प्राप्त होके जीव भी कल्याण स्वरूप होय इस से परमेश्वर का नाम शिवशङ्कर) है इतने सौ १०० नाम परमेश्वर के विषय में लिख दिये परन्तु इन से भिन्न भी बहुत अनन्त नाम हैं उन का इसी प्रकार से सज्जन लोक विचार कर लेवें कुछ थोड़ा सा परमेश्वर के विषय में मैंने लिखा है किन्तु वेदादिक शास्त्रों में परमेश्वर के विषय में जितना ज्ञान लिखा है उसके आगे मेरा लिखना ऐसा है कि समुद्र के आगे एक बिन्दु भी नहीं और जो यह लिखा है सो केवल उन वेदादिक शास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने की प्रवृत्ति के लिये लिखा है जब सब लोक उन शास्त्रों के पठन पाठन में प्रवृत्त होंगे और जब उन शास्त्रों को ऋषि मुनियों के व्याख्यान की रीति से पढ़के बिचारेंगे तब सब लोगों को परमेश्वर और अन्य पदार्थों का भी यथावत् ज्ञान होगा अन्यथा नहीं इस प्रकरण का नाम मङ्गलाचरण है ऐसा कोई कहे कि मङ्गलाचरण आदि मध्य और अन्तमें किया जाता है ऐसा आप

भी करेंगे वा नहीं ऐसा हमको करना योग्य नहीं क्योंकि वह बात मिथ्या है आदि मध्य और अन्तमें जो मङ्गल करेगा तो आदि और मध्यके बीचमें अन्त और मध्य के बीच में अमङ्गल ही को लिखेगा इस्से यह बात मिथ्या है किन्तु शिष्टों को तो सदा मङ्गलही का आचरण करना चाहिये और अमङ्गल का कभी नहीं इसमें कपिल ऋषि का प्रमाण भी है॥(मङ्गलाचरणंशिष्टाचारात् फलदर्शनाच्छ्रुतितश्चेति । इस सूत्र का यह अभिप्राय है कि मङ्गलनाम सत्य सत्य धर्म जो ईश्वर की आज्ञा उसका यथावत् आचरण उसका नाम मङ्गलाचरण है उस मङ्गलाचरण के करने वाले उनका नाम शिष्ट है उस शिष्टाचार के हेतु से मङ्गलही का आचरण करना चाहिये और जो मङ्गल को आचरण करने वाले हैं उन को मङ्गल रूपही फल होता है अमङ्गल कभी नहीं और श्रुति से भी यही आता है कि मङ्गलही का आचरण करना चाहिये)॥ यान्यनवद्यानिकर्माणि तानिसेवितव्यानिनोइतराणीति । इसका यह अभिप्राय है कि अनवद्य नाम श्रेष्ठहीका है धर्मरूपही मङ्गलकर्म करना चाहिये अधर्म रूप अमङ्गल कर्म कभी न करना चाहिये इस्से क्या आया कि आदि अन्त और मध्यहीं में मङ्गलाचरण करना चाहिये यह बात मिथ्या जानी गई कि सदा मङ्गलाचरणही करना चाहिये अमङ्गल का कभी नहीं और आज काल के पण्डित लोक जो कि मिथ्या ग्रन्थ रचते हैं सत्यशास्त्रों के ऊपर मिथ्या टीका रचते हैं उन के आदि में जो श्रीगणेशायनमः शिवायनमः सीतारामाभ्यान्नमः दुर्गायैनमः राधाकृष्णाभ्यांनमः बटुकायनमः श्रीगुरुचरणारविन्दाभ्यान्नमः हनुमतेनमः । भैरवायनमः ॥ इत्यादिक लेख देखने में आते हैं इनको बुद्धिमान् मिथ्याही जान लेवै क्योंकि वेदों में और ऋषि मुनियों के किये ग्रन्थों में किसी स्थान में भी ऐसे लेख देखने में नहीं आते हैं

ऋषि लोक अथ शब्द का और ऊँकार शब्द का पाठ आदि में कर्ते हैं सो अधिकारार्थ अधिकारार्थ नाम इतनी विद्या होने से इस शास्त्र पढ़ने का अधिकारी होता है वा आनन्तर्यार्थ आनन्तर्यार्थ नाम एक शास्त्र को करके उसके पीछे दूसरे का जो रचना अथवा एक कर्म करके दूसरे कर्म को करना इस वास्ते ऊँकार और अथ शब्द का पाठ ऋषि मुनि लोग कर्ते हैं ऊँकारंवेदेषु अथकारंभाष्येषु यह कात्यायन मुनिकृत प्रातिशाख्य का बचन है वैसेही मैं दिखाता हूं अथशब्दानुशासनम् अथेत्ययंशब्दोऽधिकारार्थ: प्रयुज्यते यह व्याकरण महाभाष्य के प्रारम्भ का बचन है॥ अथातोधर्मजिज्ञासा । यह भी मीमांसा शास्त्र के आरम्भ का बचन है॥ अथातोधर्मंव्याख्यास्याम: । यह वैशेषिक दर्शन शास्त्र का प्रथम सूत्र है॥ प्रमाणप्रमेयेत्यादि॥ यह न्यायदर्शन शास्त्र के आरम्भ का बचन है॥ अथयोगानुशासनम् यह पातञ्जलदर्शन के प्रारम्भ का बचन है॥ अथत्रिविधदु:खात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थ: । यह साङ्ख्यदर्शन शास्त्र के आरम्भ का बचन है॥ अथातोब्रह्मजिज्ञासा। यह वेदान्तशास्त्र के प्रारंभ का बचन है॥ ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत । यह छान्दोग्य उपनिषद के प्रारम्भ का बचन है॥ ओमित्येतदक्षरमिदंसर्वन्तस्योपव्याख्यानम् । यह माण्डूक्यउपनिषद का बचन है इत्यादिक और भी जानलेने, देखना चाहिए कि ऋषि लोगोंने और बेदों मेंभी अथ और ऊँकार अग्न्यादिक भी चारों बेदों के आरम्भ में अग्नि तथा इट् और शम् ये शब्द देखने में आते हैं परन्तु ओगणेशायनम: इत्यादिक बचन किसी बेद में और ऋषियों के ग्रन्थों में भी नहीं देखने में आते हैं इससे क्या जाना जाता है कि बेदादिक शास्त्रों से और ऋषि मुनियों के किये ग्रन्थों से भी यह नवीन लोगों का प्रमादही है ऐसाही शिष्ट लोगों को जानना चाहिये और वैदिक लोक हरि:ओम् इस

शब्द का पठन पाठन के आरम्भ में उच्चारण करते हैं वह सत्य है वा नहीं। यह भी मिथ्याही है क्योंकि ओंकारका तो ऋषि ग्रन्थों के प्रारम्भ में पाठ देखने में आता है परन्तु हरिः शब्द का पाठ कहीं देखने में नहीं आता है इससे हरिः शब्द का पाठ तो मिथ्याही है पूर्वोक्त प्रातिशाख्य के प्रमाण से ओंकार तो उचितही है यह प्रकरण तो पूर्ण होगया इससे आगे शिक्षा के विषय में लिखा जायगा ॥ इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते प्रथमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ १ ॥ ओ३म्

अथशिक्षांवक्ष्यामः। मातृमान्पितृमानाचार्यवान्पुरुषोवेद इतिश्रुतिः। प्रथम तो सब जनों को माता से शिक्षा होनी उचितहै जन्म से लेके तीनवर्ष अथवा पांचवर्ष पर्यन्त अपने संतानों को सुशिक्षा अवश्य करै प्रथम तो सुश्रुत और चरक जो वैद्यक शास्त्र ग्रन्थ हैं उनकी रीति से शरीर के स्वभाव के अनुकूल दुग्धादिकों में ओषधों को मिला के वा संस्कार करके पुत्रों को और कन्याओं को पिलावै अथवा जो स्त्री उनको अपना दूध पिलावै सोई स्त्री उन श्रेष्ठ पदार्थों का भोजन करै जिस्से कि उसीके दूध में उनका अंश आजायगा जिस्से बालकों केभी शरीर की पुष्टि बल और बुद्धि वृद्धि होय और शुद्ध स्थान में उनको रखना चाहिये शुद्ध सुगन्ध देश में बालकों को भ्रमण कराना चाहिये जब उनका जन्म होय उसी दिन अथवा दूसरे तीसरे दिन धनाढ्य लोग और राजा लोग दासी वा अन्य स्त्री की परीक्षा करके कि उसके शरीर में रोग न होय और दूध में भी रोग न होय उसके पास बालक को रख देवैं और वही स्त्री उनका पालन करै परन्तु माता उस स्त्री के और बालकों के भी शिक्षा के ऊपर दृष्टि रक्खै और जो असमर्थ लोग हैं जिनको दासी वा अन्यस्त्री रखने का सामर्थ्य न होय तो छेरी

अथवा गाय वा भैंसो के दूध से बालकों का पोषण करैं जहां छेरी आदिकों का अभाव होय वहां जैसा होसके वैसा करैं और अञ्जनादिकों से नेत्रादिकों कोभी युक्तिसे रोग निवारणार्थ करैं परन्तु बालकों की जो माता है सो उन्हों को दूध कभी न देवै स्त्रीके दूध देने से स्त्रीका शरीर निर्बल और चीण होजायगा जो स्त्री प्रसूत हुई वह भी अपाने शरीर की रक्षा के लिये श्रेष्ठ भोजनादिक करै जो कि औषधवत् होय जिस्से फिर भी युवावस्था की नाईं उसका शरीर होजाय और दूध के रक्षा के वास्ते उक्त वैद्यकशास्त्र में जैसा वह औषध सो यथावत संपादन करके स्तन के ऊपर लेपन करके उस मार्ग को रोकदेवै जिस्से कि दूध न निकल जाय इस्से स्त्रीका शरीर फिरभी पूर्ण बलवान् होजाय जैसे कि युवती का शरीर उसके तुल्य उसका भी शरीर होजायगा इस्से जो सन्तान होगा सो वैसाही फिर बलवान् और निरोग होगा जो उक्त वैद्यकशास्त्र में जैसी कि रीति लिखी है उसी प्रकार के लेपन से योनि का संकोच और योनि का शोधन भी स्त्री लोग करैं इस्से अपने पति का भी बल चीण न होगा जब कुछ बालक लोग समर्थ होंय तब उनको चलने बैठने मलमूत्र के त्याग और शौच नाम पवित्रता की शिक्षा करैं और हस्त पाद मुख नेत्रादिकों की सुचेष्टा की शिक्षा करैं जिस्से कि किसी अङ्ग से वे बालक लोग कुचेष्टा न करैं और खाने पीने की भी यथावत् शिक्षा करैं बालक को जिह्वा का शोधन करावैं क्योंकि कोमल जिह्वा के होने से अक्षरों का उच्चारण स्पष्ट होगा औषधों से और दन्तधावन से फिर बालक को बोलने की शिक्षा करैं तब माता श्रेष्ठ वाणी से स्थान और प्रयत्न के साथ भाषण करैं जैसे कि प इसका ओष्ठ तो स्थान है और दोनों ओष्ठों का मिलाना सो स्पर्श प्रयत्न है ओष्ठ स्थान के और स्पर्श प्रयत्न के बिना पकार का शुद्ध उच्चारण कभी न होगा

ऐसेही सब वर्णों का स्थान और प्रयत्न ह्रस्व और दीर्घ विचार के माता उच्चारण करै वैसाही बालकों को करावै जिस्से कि वे बालक शुद्ध उच्चारण करैं गमन, आसन, सोना, बैठना, इस्की भी शिक्षा माता करै जिस्से कि सब कर्म युक्त युक्तही करैं और यह भी उपदेश उनको माता करै कि माता पिता तथा ज्येष्ठ बन्धादिक मान्य लोगों को नमस्कार बालक लोग करैं रोदन हास्य और क्रीडासक्त भी वे न होवें बहुत हर्ष शोक भी न करैं उपस्थ इन्द्रिय को हस्तसे नेत्र नासिकादिकों के बिना प्रयोजन से मर्द्दन अथवा स्पर्श न करैं क्योंकि निमित्त से बिना उपस्थेन्द्रिय का मर्द्दन और बारम्बार स्पर्श के करने से वीर्य की क्षीणता होगी और हस्त दुर्गन्ध युक्त भी होगा इस्से व्यर्थ कर्म करना न चाहिये इतनी शिक्षा बालकों को पांचवर्ष तक करना चाहिये उसके पीछे माता और पिता अक्षर लिखने की और पढ़ने की शिक्षा करैं देवनागराक्षर और अन्यदेशों के भाषाक्षरों का लिखने पढ़ने का अभ्यास ठीक २ करावें स्पष्ट लिखने पढ़ने का अभ्यास होजाय इस्से यह भी अवश्य शिक्षा करना चाहिये और भूत प्रेतादिक हैं ऐसा विश्वास बालक लोग कभी न करैं क्योंकि यह बात मिथ्याही है जब भूत प्रेतादिकों की बात सुनके उनके हृदय में मिथ्या भय होजाता है तब किसी समय में अन्धकार होनेसे शृगालादिक पशु पक्षि और मूषक मार्जारादिक अथवा चोर वा अपने शरीर की छाया देखने से शृगालादिकों के भागने का शब्द सुनके उसके हृदय में पूर्व सुनने के संस्कार के होने से अत्यन्त भूत प्रेतादिकों का विश्वास होने से भयभीत होके कम्प और ज्वरादिक होते हैं इस्से बहुत दुःख से पीड़ित होते हैं इस्से यह शङ्का का बहुत रीति से निवारण करना चाहिये जिस्से कि उनको कभी भूत प्रेतादिकों के होने में निश्चय न होय वैद्यक शास्त्र में बहुत से मानस

रोग लिखे हैं वे जब होते हैं तब उन्मत्त होके अन्यथा चेष्टा मनुष्य कर्ता है तब निर्बुद्धि लोग जानते हैं और कहते हैं कि इसके शरीर में भूत वा प्रेत आगया है फिर वे मिलके बहुत से पाखण्ड कर्ते हैं कि मैं मन्त्र से झाड़ झूड़ के पांच रुपैया मुझको दे तो अभी निकाल देऊं फिर उनके सम्बन्धी लोग उन पाखण्डियों से कहते हैं कि हम पांच रुपैया देंगे परन्तु इसके भूत को जल्दी आप लोग निकाल देवें फिर वे मिल के मृदङ्ग झांझ इत्यादिकों को लेके उसके पास आके बजाते गाते हैं फिर एक कोई पाखण्ड से उन्मत्त होके नांचता कूदता है कि इसके शरीर में बड़ा भूत प्रविष्ट हुआ है वह भूत कहता है कि मैं न निकलूंगा इसका प्राण लेही के निकलूंगा वह नांचने कूदने वाला कहता है कि मैं देवी वा भैरव हूं मुझ को एक बकरा और मिठाई, वस्त्र देओ तो मैं इस भूत को निकाल देऊं तब उनके सम्बन्धी कहते हैं कि जो तुम चाहो सो लेलो परन्तु इस भूत को आप निकाल देवें सब लोग उस उन्मत्त के गोड़ पैं गिर पड़ते हैं तब तो उन्मत्त बहुत नांचता कूदता है परन्तु कोई बुद्धिमान् उसको एक थपेड़ा वा एक जूता मार देवै तब शीघही उसको देवी वा भैरव भाग जाते हैं क्योंकि वह केवल धूर्त धनादिक हरण करने के लिये पाखण्ड कर्ता है जो नाममात्र तो पण्डित हैं ज्योतिश्शास्त्र का अभिमान कर्के कहते हैं कि सूर्यादि ग्रह क्रूर इनके ऊपर आये हैं इससे यह पुरुष पीड़ित है परन्तु इसके ग्रहों को शान्ति के लिये दान पाठ और पूजा जो करावै तो ग्रहों की शान्ति होजाय अन्यथा शान्ति न होगी उनको बहुत पीड़ा होगी और इनका मरण होजाय तो आश्चर्य नहीं इनसे कोई पूंछे कि सूर्यादिक ग्रह सब आकाश में रहते हैं वे सब लोक हैं जैसा कि पृथिवी लोक है कैसे वे पीड़ा कर सकते हैं और जो तापादिक उनके तेज हैं सब के ऊपर

समानही प्रकाश है कैसे एक के ऊपर क्रूर होके दुःख दे और दूसरे को शान्त होके सुख दे यह बात कभी नहीं हो सक्ती है जितने धनाढ्य और राजा लोग हैं उनके ऊपर सब मिलके आपके ऊपर क्रूर ग्रह आये हैं ऐसा कहते हैं क्योंकि दरिद्रों से तो इतना धन नहीं मिल सकता है इस्से उन धनाढ्यों के पास जाके बारम्बार ग्रहों की कथा से भय देखा के बहुत धन को हरण कर लेते हैं जो कोई बुद्धिमान् उनसे ऐसा कहे कि आप पण्डित लोग अपने घरमें ग्रहों की शान्ति के लिये पूजा पाठ दान वा पुण्य क्यों नहीं कराते हैं तब वे सब पुरोहित पण्डितादिक मिलके कहते हैं कि तूं नास्तिक होगया इस रीति से भय देखाके उनको उपदेशादिक बहुत प्रकार कहके उसी मार्ग में लेआते हैं परन्तु कोई बुद्धिमान् होता है सो उनके जाल में नहीं आता है वैसेही मुहूर्त विषय अथवा यात्रा में जाल रचते हैं धन लेने के लिये तथा जन्मपत्र का जो रचन होता है सो भी मिथ्या है वह जन्मपत्र नहीं है किन्तु शोकपत्र है ऐसा जानना चाहिये क्योंकि जन्मपत्र रचके पण्डित उस्का फल उनके पास आके कहते हैं इस बालक का १० वां वर्ष अथवा ३० वां वर्ष जब आवेगा तब इसके ऊपर बहुत से क्रूर ग्रह आवेंगे यह बहुत सी पीड़ा पावेगा यह मरजावे तो भी आश्चर्य नहीं इस बात को सुनके बालक के माता अथवा पितादिक शोकातुर हो जाते हैं इस्से इस पत्र का नाम शोक पत्रही रखना चाहिये कभी इसके ऊपर विश्वास न करना चाहिये इसको बुद्धिमान् मिथ्याही जानैं रोग निवृत्ति के लिये औषधादिक अवश्य करैं इस रीति से बालकों का प्रथमही माता वा पिता को शिक्षा का निश्चय करना वा कराना उचित है मारण मोहन उच्चाटन वशीकरणादिक विषय में सत्यत्व प्रतिपादन करते हैं सो भी मिथ्या जानना चाहिये और तांबे का सोना करते हैं

पारे को चांदी बनाता है यह भी बात मिथ्या जानना चाहिए फिर उन बालकों को हृदय में अच्छी रीति से यह बात निश्चय कराना चाहिये कि वीर्य की रक्षा करने में निश्चित बुद्धि होय क्योंकि वीर्य की रक्षा से बुद्धि बल पराक्रम और धैर्यादिक गुण अत्यन्त बढ़ते हैं इससे बालकों को बहुत सुख की प्राप्ति होती है इसमें यह उपाय है कि विषयों की कथा और विषयी लोगों का सङ्ग विषयों का ध्यान कभी न करैं श्रेष्ठ लोगों का सङ्ग विद्या का ध्यान और विद्या ग्रहण में प्रीति सदा होने से विषयादिकों में कभी प्रवृत्त न होंगे जब तक ब्रह्मचर्य की पूर्ति और विवाह का समय न होय तब तक उन बालकों का माता पितादिक सर्वथा रक्षा करैं और ऐसा यत्न करैं कि जिसमें अपने बालक मूर्ख न रहैं किसी प्रकार से भ्रष्ट भी न होंय ऐसे ७ सात वर्ष वा ८ आठवर्ष तक माता पिता यत्न करैं प्रथम जो श्रुति लिखी थी कि मातृमान् नाम माता शिक्षितः प्रथम माता से उक्त प्रकार से अवश्य शिक्षा होनी चाहिये पितृमान् नाम पिता से भी शिक्षा होनी चाहिये आचार्यवान् नाम पांचवर्ष के पीछे वा ८ आठवर्ष के पीछे आचार्य की शिक्षा होनी चाहिये जब तीनों से यथावत् शिक्षित पुत्र वा कन्या होंगे तब शिष्ट होंगे अन्यथा पशुवत् होंगे मनुष्य गुण जो हैं विद्यादिक वे कभी न आवेंगे और विद्या रूप धन की सन्तान को प्राप्ति कराना यही माता पिता और आचार्य का मुख्य फल है कि उनका लाड़न कभी न करना कराना चाहिये क्योंकि लाड़न में बहुत से दोष हैं और ताड़न में बहुत से गुण हैं इसमें व्याकरण महाभाष्य की कारिका का प्रमाण है ॥ सामृतैःपाणिभिर्घ्नन्ति गुरवोनविषोक्षितैः । लाड़नाश्रयिणोदोषा स्ताड़नाश्रयिणोगुणाः ॥ इसका यह अर्थ है कि सामृतैः नाम अमृत के तुल्य ताड़न है जैसा कि हाथ से किसी को कोई अमृत देवै वैसाही बालकों का ताड़न

है क्योंकि जो वे ताड़न से श्रेष्ठ शिक्षा को और सद्विद्या को ग्रहण करेंगे तब उनको प्रतिष्ठा सुख और मान सर्वत्र प्राप्त होगा उस्से धन और आजीविका भी उनको सर्वत्र होगी वे बहुत सुखी होंगे साम्हतैः पाणिभिर्घ्नन्ति नाम सदा गुरु लोक ताड़ना कर्ते हैं न विषोक्षितैः नाम विष से युक्त जो हाथ उस्से जो स्पर्श वह दुःखही का हेतु होता है वैसा अभिप्राय उनका नहीं है किन्तु हृदय में तो कृपा परन्तु केवल गुण ग्रहण कराने के लिये माता पिता तथा गुर्वादिक ताड़न कर्ते हैं क्योंकि लाड़ना श्रयिणोदोषाः नाम जो अपने सन्तानों का लाड़न करेंगे तो वे मूर्ख रहजांयगे पीछे जो कुछ उनके अधिकार में धन वा राज्य रहेगा उसका वे न पालन करेंगे न अधिक वृद्धि होगी उन पदार्थों का नाशही करदेंगे फिर वे अत्यन्त दुःखी होजांयगे और दूसरे के आधीन रहेंगे यह दोष माता पिता तथा गुर्वादिकों का गिना जायगा इस्से क्या आया कि उनका लाड़न क्या किया किन्तु उनको मारही डाला ताड़ना श्रयि-णोगुणाः नाम अवश्य सन्तानों को गुण ग्रहण कराने के लिए सदा ताड़नहीं कराना चाहिये क्योंकि ताड़न के बिना वे श्रेष्ठ स्वभाव और श्रेष्ठ गुणों को कभी ग्रहण न करेंगे इस्से वैसाही करना चाहिये जिस्से अपने सन्तान उत्तम होंय उनको विद्या और श्रेष्ठ गुणों काही आभूषण धारण कराना चाहिये और सुवर्णादिकों का कभी नहीं क्योंकि विद्यादिक गुण का जो आ-भूषण धारना है सोई आभूषण उत्तम है और सुवर्णादिकों का आभूषण का जो धारण है उसमें गुण तो नहीं है किन्तु दोषही बहुत से हैं क्योंकि चौरादिक भी उनको मारके आभू-षणों को लेजाते हैं और आभूषणों को धारण करने वाले को बहुत अभिमान रहता है जो कोई उसके सामने विद्यावान् भी पुरुष होय तो भी वह तृण के बराबर उसको गणना करेगा

और अभिमान से गुण ग्रहण भी न करैगा और जब वे सोते हैं तब चोर आके उनको मार डालते हैं अथवा अङ्ग भङ्ग करके आभूषण लेजाते हैं इससे सुवर्णादिकों का आभूषण धारना उचित नहीं और कभी चोरी न करैं किसी का पदार्थ उसको आज्ञा के बिना एक तृण वा पुष्प भी ग्रहण न करैं क्योंकि जो तृण की चोरी करेगा सो सब की चोरी करेगा फिर उसको राजगृह में दण्ड होगा अप्रतिष्ठा भी होगी और निन्दा होगी उसका विश्वास कोई भी न करेगा इससे मनसे भी कभी चोरी करने की इच्छा न करनी चाहिये और मिथ्या भाषण भी करना न चाहिये क्योंकि मिथ्या भाषण जो करेगा सो सब पापकर्मों को भी करेगा और उसका विश्वास कोई भी न करेगा प्रतिज्ञा भी मिथ्या न करनी चाहिये प्रथम तो बिचार करके प्रतिज्ञा करनी चाहिये जब प्रतिज्ञा की तब उसका पालन यथावत् करना चाहिये प्रतिज्ञा क्या होती है कि नियम से जो कहना उस वक्त में आपके पास आऊंगा वा आप मेरे पास आवैं इस पदार्थ को मैं देऊंगा वा लेऊंगा सो जैसा कहै वैसाही प्रतिज्ञा पालन करै अन्यथा कभी न करै प्रतिज्ञा की जो हानि है सो मनुष्य का महादोष है इससे प्रतिज्ञा की हानि कभी न करनी चाहिये अभिमान कभी न करना चाहिये अभिमान नाम अहङ्कार का है मैं बड़ा हूं मेरे सामने कोई कुछ भी नहीं इससे क्या होगा कि कभी वह गुण ग्रहण तो न करेगा परन्तु मूर्खही रहजायगा छल कपट वा कृतघ्नता कभी न करनी चाहिये क्योंकि छल, कपट, और कृतघ्नता से, अपनाही हृदय दुःखित होता है तो दूसरे की क्या कथा और उसका उपकार कोई भी न करेगा छल कपट और कृतघ्न तो उसको कहते हैं कि हृदय में तो और बात बाहर और बात कृतघ्नता नाम कोई उपकार करै उस उपकार को न मानना सो कृतघ्नता कहाती है क्रोध

ऐ कभी न करना क्रोध से अपने अपनीही हानि करदेवै और
को भी हानि करले इस्से क्रोध भी न करना चाहिये किसी से
कटुक वचन न कहै किन्तु मधुर वचनही सदा कहै बिना बोलाये
किसी से बोले नहीं और बहुत बकवाद कभी न करै जितना
कहना चाहिये इतनाही कहै जिस्से कहना वा सुनना सो
सफलता सेही करै अभिमान से कभी नहीं किसी से बाद बिवाद
न करै नेत्र नासिकादिकों से चपलता कभी न करै जहां किसी
के पास जाय वहां उसको पहिलेही नमस्कार करै और नीच
आसन में बैठे न किसी को आड़ होय न किसी को दुःख होय
जो कोई उसको उठावै जिस्से गुण ग्रहण करै उसको पूर्व नम-
स्कार करै उस्से बिरोध कभी न करै उसको प्रसन्न करके जैसे
गुण मिले वैसाही करै पीछे भी मरण तक उसके गुण को मानै
जिस गुण को ग्रहण करै उस गुण को आच्छादन कभी न करै
किन्तु उस गुण का प्रकाशही करना उचित है किसी पाखण्डी
का विश्वास कभी न करै सदा सज्जनों का सङ्ग करै दुष्टों का
कभी नहीं अपने माता और पिता वा आचार्य की आज्ञा पालन
सदा करै परन्तु जो आज्ञा सत्यधर्म सम्बन्धी होय तो करै और
जो धर्म बिरुद्ध आज्ञा होय तो कभी न करै परन्तु सेवा के लिये
जो माता पिता और आचार्य आज्ञा देवैं उसको अपने सामर्थ्य
के योग्य जरूर करै और माता पिता धर्म सम्बन्धी श्लोकों को
अथवा निघंटु वा अष्टाध्यायी को कण्ठस्थ करा देवैं परन्तु सत्य
सत्य धर्म के बिषय में और परमेश्वर के बिषय में दृढ़ निश्चय
करा देवैं जैसे कि पहिले प्रकरण में परमेश्वर के बिषय में
लिखा है वैसा उसी को उपासना में दृढ़ निश्चय करा देवैं और
शस्त्र धारने की यथावत् शिक्षा कर देवैं जैसा कि धारना चाहिये
भोजन की भी जितनी क्षुधा होय इस्से कुछ न्यून भोजन करैं
जिस्से कि उनके शरीर में रोग न होय गहरे जल में कभी

स्नान के लिये प्रवेश न करैं क्योंकि जो गम्भीर जल होगा और तरना न जानेगा तो डूब के मर जायगा अथवा जलजन्तु होगा तो खालेगा वा काटलेगा इस्से दुःखही होगा सुख कभी न होगा। इसमें मनुस्मृती का प्रमाण भी है॥ नाविज्ञातेजलाशये। इस्का यह अभिप्राय है कि जिस जल को परीक्षा यथावत् जो न जानै सो स्नान के लिये उसमें प्रवेश कभी न करै किन्तु जल के तट पै बैठ के स्नान करै और बहुत कूदना फांदना न करै जिस्से कि हाथ पैर टूट जाय ऐसा न करै और मार्ग में जब चले तब नीचे दृष्टि करके चलैं क्योंकि कांटा और नीचा ऊंचा जीवजंतु देखके चलै जल को छान के पिये और बचन को बिचार के सत्यही बोले जो कुछ कर्म करै उसको पहिले बिचारही के आरंभ करै इस्से क्या सुख वा दुःख हानि वा लाभ होगा किस रीति से इसको करना चाहिये कि जिस रीति से परिश्रम तो न्यून होय और उसकी सिद्धि अवश्य होय इस रीति से बिचार करके कर्म का आरम्भ करना चाहिये इसमें मनुस्मृति के बचन का प्रमाण भी है ॥ दृष्टिपूतंन्यसेत्पादं वस्त्रपूतंजलंपिबेत्। सत्यपूतांवदेद्वाचं मनःपूतंसमाचरेत्॥ दृष्टिपूतं नाम आंख से देख देख के आगे चले, वस्त्रपूतं नाम वस्त्र से छान के जल को पीवै क्योंकि जल में कश अथवा तृण वा जीव रहते हैं छानने से शुद्ध होजाता है इस्से जल छानही के पीना चाहिये, सत्यपूतांवदेद्वाचम् नाम सत्य से दृढ़ निश्चय करके यही कहना सत्य है तब बिचार करके मुख से निकालना चाहिये क्योंकि बचन निकाला जो गया सो जो मिथ्या होजायगा तब बुद्धिमान् लोग उसको जान लेंगे कि यह विचारशून्य पुरुष है इस्से बिचार करके सत्यही कहना चाहिये, मनःपूतंसमाचरेत् नाम मनसे बिचार करके कर्म का आरम्भ करना चाहिये कि भविष्यत्काल में इसका फल क्या होगा ऐसा जो बिचार करके कर्म न करेगा

उसको पश्चाताप ही होगा और सुख न होगा इस से जो कुछ करना चाहिये सो विचार के करना चाहिये इस रीति से आठ वर्ष तक बालकों को शिक्षा होनी चाहिये जो कुछ और शिक्षा लिखी है सत्य भाषणादिक सो तो सब को करना उचित है जिन के सन्तान सुशिक्षित होंगे वेही सुख पावेंगे और जिनके सन्तान सुशिक्षित न होंगे वे कभी सुख न पावेंगे यह बाल शिक्षा तो कुछ कुछ शास्त्रों के आशयों से लिख दी परन्तु सब शिक्षा का ज्ञान जब वेदादिक सत्य शास्त्रों को पढ़ेंगे और विचारेंगे तब होगा इसके आगे ब्रह्मचर्याश्रम और गुरु शिष्य को शिक्षा लिखी जायगी उसी के भीतर पढ़ने पढ़ाने की शिक्षा भी लिखी जायगी॥ इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषाबिरचिते द्वितीयःसमुल्लासः सम्पूर्णः॥ २॥
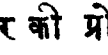
अथाध्ययनाध्यापानविधिंव्याख्यास्यामः। आठ वर्ष का पुत्र और कन्याओं को पाठशाला में पढ़ने के लिये आचार्य के पास भेज देवें अथवा पांचवे वर्ष भेजदेवें घरमें कभी न रक्खें परंतु ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य इनके बालकों का यज्ञोपवीत घरमें होना चाहिये पिता यथावत् यज्ञोपवीत करै पिताही उनको गायत्री मन्त्र का उपदेश करै गायत्री मन्त्र का अर्थ भी यथावत् जना देवै गायत्री मन्त्र में जो प्रथम ओंकार है उसका अर्थ प्रथम समुल्लास में लिखा है वैसाही जान लेना॥ भूरितिवै-प्राणः भुवरित्यपानः स्वरितिव्यानः। यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है॥ प्राणयतिचराचरञ्जगत्सप्राणः। जो सब जगत् के प्राणों का जीवन कराता है और प्राण से भी जो प्रिय है इस से परमेश्वर का नाम प्राण है सो भूः शब्द प्राण का वाचक है और भुवः शब्द से अपान अर्थ लिया जाता है॥ अपानयति सर्वंदुःखंसोपानः। जो मुमुक्षुओं को और मुक्तों को सब दुःखसे छोड़ा के आनन्द स्वरूप रक्खै इस से परमेश्वर का नाम अपान

है सो अपान भुवः शब्द का अर्थ है व्यानयतिसव्यानः। जो सब जगत् के विविध सुख का हेतु और विविध चेष्टा का भी आधार इस्से परमेश्वर का नाम व्यान है सो व्यान अर्थ स्वः शब्द का जानना तत् यह द्वितीया का एक बचन है सवितुः षष्ठी का एक बचन है वरेण्यं द्वितीया का एक बचन है॥ भर्गः २ का एक बचन है॥ देवस्य ६ का एक बचन है धीमहि क्रिया पद है धियः द्वितीया का बहुबचन है यः प्रथमा का एक बचन है नः षष्ठी का बहु बचन है, प्रचोदयात् क्रिया पद है, सविता शब्द का और देव शब्द का अर्थ प्रथम समुल्लास में कह दिया है वहीं देख लेना॥ वर्तुमर्हंवरेण्यं। नाम अति श्रेष्ठम् भर्गो नाम तेजः तेजोनाम प्रकाशः प्रकाशोनाम विज्ञानम् वर्तुंनाम स्वीकार करने को जो अत्यन्त योग्य उसका नाम वरेण्य है और अत्यन्त श्रेष्ठ भी वह है धी नाम बुद्धि का है नः नाम हमलोगों को प्रचोदयात् नाम प्रेरयेत् हे परमेश्वर हेसच्चिदानन्दानन्त स्वरूप हेनित्य शुद्धबुद्ध मुक्त स्वभाव हेकृपानिधे हेन्यायकारिन् हेअज हे निर्विकार हेनिरञ्जन हेसर्वान्तर्यामिन् हेसर्वाधार हेसर्वजगत्पितः हेसर्वजगदुत्पादक हेअनादे हेविश्वम्भर सवितुर्देवस्य तवयद्वरेण्यं भर्गः तद्वयंधीमहि तस्य धारणं वयं कुर्वीमहि हेभगवन् यः सविता देवः परमेश्वरः सभवान् अस्माकंधियः प्रचोदयादित्यन्वयः हे परमेश्वर आप का जो शुद्ध स्वरूप ग्रहण करने को योग्य जो विज्ञान स्वरूप उसको हम लोग सब धारण करैं उसका धारण ज्ञान उसके ऊपर विश्वास और दृढ़ निश्चय हम-लोग करैं ऐसी कृपा आप हम लोगों पर करैं जिस्से कि आप के ध्यान में और आप की उपासना में हम लोग समर्थ होंय और अत्यन्त श्रद्धालु भी होंय जो आप सविता और देवादिक अनेक नामों के वाच्य अर्थात अनन्त नामों के अद्वितीय जो आप अर्थ हैं नाम सर्वशक्तिमान् सो आप हमलोगों की बुद्धियों

को धर्म विद्या मुक्ति और आप की प्राप्ति में आपही प्रेरणा करैं कि बुद्धि सहित हम लोग उसी उक्त अर्थ में तत्पर और अत्यन्त पुरुषार्थ करने वाले होंय इस प्रकार की हम लोगों की प्रार्थना आप से है सो आप इस प्रार्थना को अङ्गीकार करैं यह संक्षेप से गायत्री मन्त्र का अर्थ लिख दिया परन्तु उस गायत्री मन्त्र का वेद में इस प्रकार का पाठ है ॥ ओं भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् । इस मन्त्र को पुत्रों को और कन्याओं को भी कण्ठस्थ करा देवें और इसका अर्थ भी हृदयस्थ करा देवें परंतु कन्या लोगों को यज्ञोपवीत कभी न कराना चाहिये और संस्कार तो सब करना चाहिये योगशास्त्र की रीति से प्राणों के और इन्द्रियों के जीतने के लिये उपाय का उपदेश करैं सो यह योगशास्त्र का सूत्र है ॥ प्रच्छर्दनविधारणाभ्यांवाप्राणस्य । इसका यह अर्थ है कि छर्दन नाम वमन का है जैसे कि मक्खी वा और कुछ पदार्थ खाने से उदर से मुख द्वारा अन्न बाहर निकल जाता है और प्रकर्षेणच्छर्दनम् प्रच्छर्दनम् अत्यन्त जो बल से वमन का होना उसका नाम प्रच्छर्दन है ॥ विधारणंनाम विरुद्धञ्चतद्धारणञ्च विधारणम् । जैसे कि उस अन्न का धारण पृथिवी में होता है उसको देख के घृणा होती है तो ग्रहण की इच्छा कैसे होगी कभी न होगी यह दृष्टान्त हुआ परन्तु दृष्टान्त इसका यह है कि नाभि के नीचे से अर्थात मूलेन्द्रिय से लेके धैर्य से अपान वायु को नाभि में लेआना नाभि से अपान को और समान को हृदय में लेआना हृदय में दोनों व और तीसरा प्राण इन तीनों को बल से नासिका द्वार से बाहर आकाश में फेंक देना अर्थात जो वायु कुछ नासिका से निकलता है और भीतर जाता है उन सब का नाम प्राण है उसका मूलेन्द्रिय नाभि और उदर को ऊपर उठाले तब तक वायु न निकले पीछे हृदय में इकट्ठा करके

जैसे कि वमन में अन्न बाहर फेंका जाता है वैसे सब भीतर के वायु को बाहर फेंक दे फिर उसको ग्रहण न करे जितना सामर्थ्य होय तब तक बाहर ही वायु को रोक रक्खे जब चित्त में कुछ क्लेश होय तब बाहर से वायु को धीरे धीरे भीतर लेजाय फिर उसको वैसाही बारम्बार २० बार भी करेगा तो उसका प्राण वायु स्थिर होजायगा और उसके साथ चित्त भी स्थिर होगा बुद्धि और ज्ञान बढ़ेगा बुद्धि इस प्रकार की तीव्र होगी कि बहुत कठिन विषय को भी शीघ्र जान लेगी शरीर में भी बल पराक्रम होगा और वीर्य भी स्थिर होगा तथा जितेन्द्रियता होगी सब शास्त्रों को बहुत थोड़े काल में पढ़लेगा इससे यह दोनों उपदेशों को यथावत् अपने सन्तानों को करदे फिर उसको आचमन का उपदेश करे हाथ में जल लेके गायत्री मन्त्र मन से पढ़के तीनवार आचमन करे ॥ अंगुष्ठमूलस्यतले ब्राह्मन्तीर्थं प्रचक्षते । कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवंपित्र्यं तयोरधः ॥ अंगुष्ठ मूल के नीचे तले नाम अंगुली का जो मध्य है उसका नाम ब्राह्मतीर्थ है कनिष्ठिका के मूल में जो रेखा है उसका नाम प्राजापत्य तीर्थ है अंगुलियों का जो अग्रभाग है उसका नाम देवतीर्थ है तर्जनी और अंगुष्ठ इन दोनों के मूल जो बीच है उसका नाम पितृतीर्थ है आचमन समय में ब्राह्मतीर्थ से आचमन करे इतने जल से आचमन करे कि हृदय के नीचे पर्यन्त वह जल जाय उससे क्या होता है कि कण्ठ में कफ और पित्त कुछ शान्त होगा फिर गायत्री मन्त्र को तो पढ़ता जाय और अंगुली से जल का छींटा शिर और नेत्रादिकों के ऊपर देवे इससे क्या होगा कि निद्रा और आलस्य न आवेगा जैसे कि कोई पुरुष को निद्रा और आलस्य आता होय तो जलके छींटा से निवृत्त हो जाता है तैसे यहां भी होगा पीछे गायत्री मन्त्र से उपस्थान करै उपस्थान नाम परमेश्वर की प्रार्थना और अघमर्षण करै

अघमर्षण उसका नाम है कि पाप करने की इच्छा भी न करना चाहिये संक्षेप से संध्योपासन कह दिया परन्तु यह दोनों बात एकान्त में जाके करना चाहिये क्योंकि एकान्त में चित्त की एकाग्रता होती है और परमेश्वर की उपासना भी यथावत् होती है इसमें मनुस्मृति का प्रमाण भी है ॥ अपांसमीपेनियतो नैत्यकंविधिमास्थितः। सावित्रीमप्यधीयीत गत्वाऽरण्यंसमाहितः ॥ इसका यह अभिप्राय है कि जल के समीप जाके और जितनी आचमन प्राणायामादिक क्रिया उनको करके बनके शून्य देश में बैठके गायत्री को मनसे यथावदुच्चारण करके एक एक पद का अर्थ चिन्तन करके और प्राणायाम से प्राण चित्त और इन्द्रियों की स्थिरता करके परमेश्वर की प्रार्थना और स्वरूप विचार से उक्त रीति से उसमें मग्न होजाय नाम समाधिस्थ होजाय ऐसेही नित्य दो बार द्विज लोक प्रातःकाल और सायङ्काल करैं एक घण्टा तक तो अवश्यही करैं इस्से बहुत सा सुख और लाभ भी होगा फिर वह पुत्रों को अग्निहोत्र का आचार सिखावै एक चतुष्कोण मिट्टी को वा तांबे को वेदि रच ले ☐ ऊपर चौड़ी नीचे छोटी ऊपर तो १२ अंगुल नीचे चार ४ अंगुल रहै ऐसी रचके चन्दन वा पलाश आम्रादिक श्रेष्ठ काष्ठों को लेके उस वेदि के परिमाण से खण्ड खण्ड कर लेवै वेदी अच्छी शुद्ध करके उस वेदी में काष्ठों को यथावत् रक्खै उसके बीच में अग्नि रखदे उसके ऊपर फिर काष्ठ रख दे रख कर अग्नि प्रदीप्त करै और एक चमसा रचले हाथ की कोणी से कनिष्ठिका के अग्रपर्यन्त परिमाण से और इस प्रकार की प्रोक्षणीपात्र रचले ⊂⊃ । उस्से छेढ़ा प्रणीता पात्र रचले—[] एक घृत पात्र रचले 0 प्रणीता में तो जल रक्खै पीछे उसमें से जब जब कार्य होय तब तब प्रोक्षणी में प्रणीता से जल लेके चमसा को और घृत के पात्र को नित्य शुद्ध करै

और कुशा को भी रखले जब जब होम करने का समय आवै तब सब पात्र को शुद्ध करके घृतपात्र में घृत को लेके अङ्गारों के ऊपर तपावै फिर उतार के आंख से देखके उसमें कुछ केश वा और जीव पड़े होंय तो उनको कुशाग्र से निकाल देवै पीछे अग्नि को प्रदीप्त करके चमसा में घृत को लेके ओं भूरग्नयेस्वाहा इदमग्नये इदन्नमम । इस मन्त्र से जो काष्ठ अग्नि से प्रदीप्त होय उसके बीच में एक आहुति देवै ॥ ओं भुववीयवेस्वाहा इदं वायवे इदन्नमम । इससे दूसरी आहुति देवै । ओं स्वरादित्याय स्वाहा इदमादित्याय इदन्नमम । इससे तीसरी आहुति देवै ॥ ओं भूर्भुवः स्वः अग्निवाय्वादित्येभ्यःस्वाहा इदमग्निवाय्वादित्येभ्यः इदन्नमम । इससे चौथी आहुति देनी ॥ ओं सर्ववैपूर्णंस्वाहा । इससे पांचवी आहुति देवै ॥ और जो अधिक होम करना होय तो गायत्री मन्त्र से करदे ऐसेही संध्योपासन के पीछे नित्य दो बार अग्निहोत्र सब करें ओंकार भू आदिक और अग्न्यादिक जितने इन मन्त्रों में नाम हैं वे सब परमेश्वरही के हैं उनका अर्थ प्रथम प्रकरण में कह दिया है वहां जान लेना चाहिये और जो इसमें तीन बार पाठ है सो प्रथम जो अग्नयेस्वाहा इसका यह अर्थ है कि जो कुछ करना सो परमेश्वर के उद्देशही से करना इदमग्नये दूसरा जो पाठ है उसका यह अभिप्राय है कि सब जगत् परमेश्वर के जनाने के लिये है क्योंकि कार्य जो होता है सो कारणही वाला होता है इदन्नमम यह जो तीसरा पाठ है सो इस अभिप्राय से है कि यह जो जगत है सो मेरा नहीं है किन्तु परमेश्वरही का रचा है किस लिये कि हम लोगों के सुख के लिये परमेश्वर ने कृपा करके सब पदार्थ बनाये हैं हम लोग तो भृत्यवत् हैं परमेश्वरही इस जगत् का स्वामी है क्योंकि जो जिसका पदार्थ होता है उसका वही स्वामी होता है और जो इन मन्त्रों में स्वाहा शब्द है

इसका यह अर्थ है स्वम् आह सा स्वाहा अथवा स्वा नाम स्वकीया वाक् आह सा स्वाहा स्वम् नाम अपना जो हृदय सो सत्य हो है जैसा जो कर्त्ता है वैसाही सो जानता है आह नाम कहने का है जैसा कि हृदय में होय वैसाही वाणी से कहै ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है संध्योपासन अग्निहोत्र तर्पण बलि वैश्व देव और अतिथि सेवा पंच महा यज्ञों के प्रयोजन पीछे लिखेंगे अग्निहोत्र के आगे तर्पण करैं॥ नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्याद्देवर्षिपितृतर्पणम्। यह मनुस्मृति का वचन है॥ अथदेवतर्पणम् ॐ ब्रह्मादयोदेवास्तृप्यन्ताम् १ ॐ ब्रह्मादिदेवपत्न्यस्तृप्यन्ताम्॥१॥ ॐ ब्रह्मादिदेवसुतास्तृप्यन्ताम् १ ॐ ब्रह्मादिदेवगणास्तृप्यन्ताम् १ इतिदेवतर्पणम्) (अथर्षितर्पणम्) ॐ मरीच्यादयऋषयस्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिपत्न्यस्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिसुतास्तृप्यन्ताम् २ ॐ मरीच्याद्यृषिगणास्तृप्यन्ताम् २ (इत्यृषितर्पणम्) अथ पितृतर्पणम्। ॐ सोमसदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ अग्निष्वात्ताः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ बर्हिषदः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ सोमपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ हविर्भुजः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ आज्यपाः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ सुकालिनः पितरस्तृप्यन्ताम् ३ ॐ यमादिभ्योनमः यमादींस्तर्पयामि ३ ॐ पित्रे स्वधानमः पितरन्तर्पयामि ३ ॐ पितामहायस्वधानमः पितामहन्तर्पयामि ३ ॐ प्रपितामहायस्वधानमः प्रपितामहन्तर्पयामि ३ ॐ मात्रे स्वधानमः मातरंतर्पयामि ३ ॐ पितामह्यैस्वधानमः पितामहींस्तर्पयामि ३ ॐ प्रपितामह्यै स्वधानमः प्रपितामहींस्तर्पयामि ३ ॐ अमुत्पत्न्यैस्वधानमः अमुत्पत्नींस्तर्पयामि ३ ॐ सम्बन्धिभ्योमृतेभ्यः स्वधानमः सम्बन्धोमृतांस्तर्पयामि ३ ॐ सगोत्रेभ्योमृतेभ्यः स्वधानमः सगोत्रान्मृतांस्तर्पयामि ३ इतितर्पणविधिः। (पित्रादिकों में जो कोई जीता होय उसका तर्पण न करै और जितने मरगये हों उनका तो अवश्य करै)॥ उद्धृतेदक्षिणेपाणा वुपवीत्युच्यते-

द्विजः। सव्येप्राचीनआवीति निवीतिःकण्ठसज्जने॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अर्थ है कि जैसे वामस्कन्ध के ऊपर यज्ञोपवीत सदा रहताही है परन्तु उस यज्ञोपवीत को दहिने हाथ के अंगुठा में लगाले इस क्रिया के करने से द्विजों का नाम उपवीती होता है सो सब देव कर्मों को उपवीती होके करैं पूर्वाभिमुख होके देवतर्पण करै और देवतीर्थ से कण्ठ में जब यज्ञोपवीत रक्खै और दोनों हाथ के अंगुष्ठा मे यज्ञोपवीत को लगाने से द्विजों की निवीति संज्ञा होती है ब्राह्मतीर्थ से उत्तराभिमुख होके ऋषि तर्पण करना चाहिये और दक्षिण-स्कन्ध में यज्ञोपवीत रक्खै और वाम अंगुष्ठ में यज्ञोपवीत लगाने से द्विजों का नाम प्राचीनावीती होता है दक्षिणाभिमुख प्राचीनावीति और पितृतीर्थ से पितृकर्म तर्पण और श्राद्धकरना चाहिये देवतर्पण में एक बार मन्त्र पढ़के एक अंजलि देवैं ऋषि तर्पण में दोबार मन्त्र पढ़के दो अंजलि देवें दूसरी बार मन्त्र पढ़के दूसरी अंजलि देवै और पितृतर्पण में एक बार मन्त्र पढ़के एक अंजलि देवै दूसरी बार मन्त्र पढ़के दूसरी अंजलि देवै और तीसरी बार मन्त्र पढ़के तीसरी अंजलि देवै॥ अथबलिवैश्वदेवम्। वैश्वदेवस्यसिद्धस्य गृह्येऽग्नौविधिपूर्वकम्। आभ्यःकुर्याद्देवताभ्यो ब्राह्मणोहोममन्वहम्॥ ओं अग्नयेस्वाहा ओं सोमायस्वाहा ओं अग्नीषोमाभ्यांस्वाहा ओं विश्वेभ्योदेवेभ्यःस्वाहा ओं धन्वन्तरयेस्वाहा ओं कुह्वैस्वाहा। ओं अनुमत्यैस्वाहा ओं प्रजापतयेस्वाहा ओं सहद्यावापृथिवीभ्योस्वाहा। मृत्तिका की चतुष्कोण बेदी वा तांबे की रचके लवणान्न को छोड़के जो कि भोजन के लिये पदार्थ बना होय उसमे उसमें दशाहुति देवैं [ ] पीछे इस प्रकार की रेखाओं से कोष्ठ रचके यथा क्रमसे उस २ दिशाओं में भागों को रखदे अपनी २ जगह से ओं सानुगायेन्द्रायनमः इससे पूर्वदिशा में भागदेना ओं सानुगाययमायनमः। दक्षिण

दिशा में भाग रक्खै ओं सानुगायवरुणायनमः। इस मन्त्र से पश्चिम दिशा में भाग रक्खै ओं सानुगायसोमायनमः। इस मन्त्र से उत्तर दिशा में भाग रक्खै ओं मरुद्भ्योनमः। इस मन्त्र से द्वार में भाग रक्खै ओं अद्भ्योनमः। इस मन्त्र से वायव्यकोण में भाग रक्खै ओं वनस्पतिभ्योनमः। इस मन्त्र से अग्निकोण में भाग रक्खै ओं श्रियैनमः। इस मन्त्र से ऐशान्यकोण में भाग रक्खै ओं भद्रकाल्यै नमः। इस मन्त्र से नैर्ऋत्यकोण में भाग रक्खै ओं ब्रह्मपतयेनमः। ओं वास्तुपतयेनमः॥ इन दो मन्त्रों से कोठा के बीच में भाग रक्खै ओं विश्वेभ्योदेवेभ्योनमः। ओं दिवाचरेभ्योभूतेभ्योनमः। ओं नक्तंचारिभ्योभूतेभ्योनमः। इन मन्त्रों से ऊपर हाथ करके कोष्ठ के बीच में तीनों भाग रख देवै ओं सर्वात्मभूतयेनमः। इस मन्त्र से कोष्ठ के पीछे भाग रक्खै अपसव्य करके ओं पितृभ्यःस्वधानमः इस मन्त्रसे कोष्ठ के भीतर दक्षिणदिशा में भाग रक्खै इन सोलहों भागों को इकट्ठा करके अग्नि में रखदे श्वभ्योनमः पतितेभ्योनमः श्वपग्भ्योनमः पापरोगिभ्योनमः वायसेभ्योनमः कृमिभ्योनमः। इन छः मन्त्रों से शाक दाल इत्यादिक सब अन्न मिला के भूमि में छः भाग को रखके कुत्ता वा मनुष्यादिकों को देवै॥ इति बलिवैश्वदेवम्।

इसके पीछे अतिथि की सेवा करनी चाहिये अतिथि दो प्रकार के हैं एक तो विद्याभ्यास करने वाले दूसरे पूर्ण विद्यावाले नाम त्यागी लोग जो कि पूर्ण विद्यावाले पूर्ण वैराग्य और पूर्णज्ञान सत्यवादी जितेन्द्रिय भोजन के समय प्राप्त जो होय उनका सत्कार अन्न जल और आसनादिकों से करै पीछे गृहस्थ लोग भोजन करैं वा साथ में भोजन करावैं अथवा भोजन के पीछे भी आवै तो भी सत्कार करना चाहिये नित्य पंच महायज्ञ करना चाहिये इनके करने में क्या प्रयोजन है इसका यह उत्तर है कि जिस्से इनको करना चाहिये प्रथम तो जिसका

नाम संध्योपासन है सो ब्रह्मयज्ञ है उसके दो भेद हैं पढ़ना पढ़ाना जप परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना और उपासना यह सब मिलके ब्रह्मयज्ञ कहाता है इसका फल तो बहुत लोग जानते हैं और कुछ लिख भी दिया है अब लिखना आवश्यक नहीं इसके आगे दूसरा अग्निहोत्र है और अग्निहोत्र का करना अवश्य है अग्निहोत्र से किस की पूजा होती है उत्तर परमेश्वर की पूजा होती है और संसार का उपकार होता है अग्निहोत्र में जितने मन्त्र हैं वे तो परमेश्वर के स्वरूप स्तुति प्रार्थना और उपासना के वाचक हैं इस्से परमेश्वर की उपासना आती है और संसार का इस्से क्या उपकार है कि वेद ब्राह्मण और सूत्र पुस्तकों में चार प्रकार के पदार्थ होम के लिखे हैं एक तो जिसमें सुगन्ध गुण होय जैसे कि कस्तूरी केशरादिक और दूसरा जिसमें मिष्ट गुण होय जैसे कि मिश्री शर्करादिक और तीसरा जिसमें पुष्टिकारक गुण होय जैसा कि दूध घी और मांसादिक और चौथा जिसमें रोग निवृत्तिकारक गुण होय जैसा कि वैद्यकशास्त्र की रीति से सोमलतादिक औषधियां लिखी हैं उन चारों का यथावत् शोधन उनका परस्पर संयोग और संस्कार करके होम करैं सायं और प्रातः क्योंकि संध्याकाल और प्रातःकाल में मलमूत्र त्याग सब लोग प्रायः कर्त्ते हैं उसका दुर्गन्ध आकाश और वायु में मिलके वायु को दुष्ट करदेता है दुष्ट वायु के स्पर्श से अवश्य मनुष्यों को रोग होता है जैसे कि जहां २ मेला होता है जिस जिस स्थान में दुर्गन्ध अधिक है उस २ स्थान में रोग अधिक देखने में आता है और दुर्गन्ध और दुष्ट वायुसे जिस्को रोग होता है वही पुरुष उस स्थान को छोड़ के जहां सुगन्ध वायु होय उस स्थान में जाने से रोग की निवृत्ति देखने में आती है इस्से क्या निश्चित जाना जाता है कि दुर्गन्ध युक्त वायु से बहुत से रोग होते हैं

र्य लोगों के मलसे जितना दुर्गन्ध होगा जब सब लोग उक्त सुगन्धादिक द्रव्यों का अग्नि में होम करेंगे उस दुर्गन्ध को निवृत्त करके वायु को शुद्ध करदेगा उससे मनुष्यों का बहुत उपकार होगा रोगों के न होने से फिर वे सुगन्धादिकों के परमाणु मेघमण्डल और जलमें जाके मिलेंगे उनके मिलने से सबको शुद्ध करदेंगे जोकि सूर्य की उष्णता का सुगन्ध दुर्गन्ध जल तथा रस के संयोग होने से सब अवयवों को भिन्न २ कर देता है जब अवयव भिन्न २ होते हैं तब लघु होजाते हैं लघु होने से वायु के साथ ऊपर चढ़ जाते हैं जहां पृथ्वी से ऊपर ५० क्रोश तक वायु अधिक है इससे ऊपर वायु थोड़ा है उन दोनों के सन्धि में वे सब परमाणु रहते हैं उससे नीचे भी कुछ रहते हैं जब की सुगन्ध दुर्गन्ध जल को वा रस को हमलोग मिलाते हैं तब वह पदार्थ मध्यस्थ होता है वैसाही वह जल मध्यस्थ होता है जब सुगन्धादिक गुण युक्त जो धूम है उसके परमाणु में अधिक तो जल है तथा अग्नि कुछ पृथ्वी वायु और ये चार मिले हैं परन्तु वेभी वैसे सुगन्धादिक गुण युक्त हैं वे जब मध्यस्थ जल के परमाणु में जाके मिलते हैं तब उनको सुगन्धादिक गुणयुक्त करदेते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं और जो कोई इस विषय में ऐसी शंका करे कि वह जल तो बहुत है होम के परमाणु थोड़े हैं कैसे उस सब जल को वे शुद्ध करेंगे उसका यह उत्तर है कि जैसे बहुत से शाक में अथवा बहुत सी दाल में थोड़ी सी सुगन्धित इलायची इत्यादिक और थोड़ा सा घी करछुल में वा पात्र में रखके अग्नि में तपाने से जब वह जलता है तब धूम उठता है फिर उसको दाल के पात्र में मिला के मुख बन्द करदे और छौंक देदे वह सब धूम जल होके सब अंशों में मिल जाता है फिर वह सुगन्ध और स्वादयुक्त होता है वैसेही थोड़े भी होम के परमाणु सब मध्यस्थ जल के पर-

माणु को शुद्ध करदेंगे फिर जब उसी जल की वृष्टि होगी और वही जल भूमि पर आवैगा उस जल के पीने से वा स्नान करने से रोग की निवृत्ति होजायगी और बुद्धि बल पराक्रम नैरोग्य बढ़ेंगे वैसेही उसी जल से अन्न घास वृक्ष और फल दूध घी इत्यादिक जितने पदार्थ होंगे वे सब उत्तमही होंगे उनके सेवन से भी जितने जीव हैं वे सब अत्यन्त सुखी होंगे और जो होम करने वाले हैं वे भी अत्यन्त सुख पावेंगे इस लोक में अथवा परलोक में क्योंकि अग्नियुक्त सुगन्ध के परमाणु को नासिका द्वार से जब भीतर मनुष्य ग्रहण करता है मल मूत्र त्याग समय में दुर्गन्ध युक्त जितने परमाणु मस्तक में प्राप्त हुये थे उनको निकाल देंगे वा सुगन्धित करदेंगे तब उस मनुष्य के शरीर में सर्दी और आलस्य न होंगे उस्से स्फूर्त्ति और पुरुषार्थ बढ़ेंगे पुष्प वा अतर के सुगन्ध से यह फल न होगा क्योंकि इस सुगन्ध में अग्नि के परमाणु मिले नहीं वे सब जगत् के उपकारक हैं इस्से उनको भी अवश्य सुख रूप उपकार होगा उस पुण्य से और जब अश्वमेधादिक यज्ञ होय तब तो असंख्य सब जीवों को सुख होय इस्से सब राजा धनाढ्य और विद्वान् लोग इसका आचरण अवश्य करैं। तर्पण और श्राद्ध में क्या फल होगा इसका यह समाधान है कि ॥ तृप प्रीणने प्रीणनं तृप्तिः। तर्पण किसका नाम है कि तृप्ति का और श्राद्ध किसका नाम है जो श्रद्धा से किया जाता है (मरे भये पित्रादिकों का तर्पण और श्राद्ध करता है) उस्से क्या आता है कि जीते भये को अन्न और जलादिकों से सेवा अवश्य करनी चाहिये यह जाना गया दूसरा गुण जिनके ऊपर प्रीति है उनका नाम लेके तर्पण और श्राद्ध करेगा तब उसके चित्तमें ज्ञान का संभव है कि जैसे वे मरगये वैसे मुझको भी मरना है मरण के स्मरण से अधर्म करने में भय होगा धर्म करने में प्रीति होगी

तीसरा गुण यह है कि दायभाग बांटने में सन्देह न होगा क्योंकि इसका यह पिता है इसका यह पितामह है इसका यह प्रपितामह है ऐसेही छः पीढ़ी तक सभों का नाम कण्ठस्थ रहैगा वैसेही इसका यह पुत्र है इसका यह पौत्र है इसका यह प्रपौत्र है इससे दायभाग में कभी भ्रम न होगा चौथा गुण यह है कि विद्वानों का श्रेष्ठ धर्मात्माओं होको निमन्त्रण भोजन दान देना चाहिये मूर्खों को कभी नहीं इससे क्या आता है कि विद्वान् लोग आजीविका के बिना कभी दुःखी न होंगे निश्चिन्त होके सब शास्त्रों को पढ़ावैंगे और बिचारेंगे सत्य २ उपदेश करेंगे और मूर्खों का अपमान होने से मूर्खों को भी विद्या के पढ़ने में और गुण ग्रहण में प्रीति होगी पांचवां गुण यह है कि देवऋषि पितृ संज्ञा श्रेष्ठों की है देवसंज्ञा दिव्य कर्म करने वालों की है पठन पाठन करने वालों को तो ऋषि संज्ञा है और यथार्थ ज्ञानियों की पितृ संज्ञा है उनको निमन्त्रण देगा तब उनसे बात भी सुनेगा प्रश्न भी करेगा उससे उनको ज्ञान का लाभ होगा छठवां प्रयोजन यह है कि श्राद्ध तर्पण सब कर्मों में वेदों के मन्त्रों को कर्म करने के लिये कण्ठस्थ रक्खैंगे इससे उस पुस्तक का नाश कभी न होगा फिर कोई उस विद्या का बिचार करेगा तब पदार्थ विद्या प्रगट होगी उससे मनुष्यों को बहुत लाभ होगा सातवां प्रयोजन यह है कि ॥ वसून्वदन्तिवैपितॄन् रुद्रांश्चैवपितामहान्। प्रपितामहांश्चादित्यान् श्रुतिरेषासनातनी ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि वसू जो है सोई पिता है जो रुद्र है सोई पितामह है जो आदित्य है सोई प्रपितामह है ये तीनों नाम परमेश्वरही के हैं इससे परमेश्वर होकी उपासना तर्पण से और श्राद्ध से आई पितृ कर्म में स्वधा जो शब्द है उसका यह अर्थ है कि स्वन्दधातीति स्वधा अपने जनों को ज्ञानादिकों से धारण करै अथवा पोषण करै उसका

नाम है स्वधा स्वधा नाम है परमेश्वर का किन्तु अपने ही पदार्थ को धारण करना चाहिये औरों के पदार्थ का धारण न करना चाहिये अन्याय से अथवा अपने ही पदार्थ से प्रसन्नता करनी चाहिये छल कपट वा परपदार्थ मे पुष्टि की इच्छा न करनी चाहिये इस प्रकार का स्वाहा और स्वधा का अर्थ शतपथ ब्राह्मण पुस्तक में लिखा है इतने सात प्रयोजन तो कह दिये और भी बहुत से प्रयोजन हैं बुद्धिमान् लोग विचार से जान लेवें और बलि वैश्व देव का प्रयोजन तो होम के नाईं जान लेना फिर यह भी प्रयोजन है कि भोजन के समय बलि वैश्व देव करेंगे वेभी सुगन्ध से प्रसन्न हो जांयगे और वह स्थान सुगन्ध युक्त होने से मक्खी मच्छरादिक जीव सब निकल जांयगे उस्से मनुष्यों को बहुत सुख होगा यह प्रयोजन अग्निहोत्रादिक होम का भी जान लेना और अतिथि सेवा से बहुत गुणों की प्राप्ति होगी इत्यादिक बहुत से प्रयोजन हैं इस्से अपने पुत्रों को पिता सब उपदेश करदे उपदेश करके आचार्य के पास अपने सन्तानों को भेजदे कन्याओं की पाठशाला में पढ़ाने वाली और नौकर चाकर सब स्त्रीही लोग रहैं पांचवर्ष का बालक भी वहां न जाय वैसेही पुत्रों की पाठशाला में सब पुरुषही रहैं पुरुष की पाठशाला में पांचवर्ष की कन्या भी न जाय वे कन्या और पुत्र इनका परस्पर मेलभी न होय॥ ब्राह्मणस्त्रयाणांवर्णानामुपनयनङ्कर्त्तुमर्हति। राजन्योद्वयस्यवैश्यो वैश्यस्यैवेतिशूद्रमपि कुलगुणसम्पन्नं मन्त्रवर्जमनुपनीत मध्यापयेदित्येके॥ यह सुश्रुत के सूत्र स्थान के द्वितीयाध्याय का वचन है ब्राह्मण का अधिकार तीन वर्णों के बालकों को यज्ञोपवीत कराने का है क्षत्रिय को क्षत्रिय और वैश्य इन दो वर्णों के बालकों को यज्ञोपवीत कराने का अधिकार है और वैश्य को वैश्यवर्णही का यज्ञोपवीत कराने का अधिकार है और शूद्र

लोगों की कन्या भी कन्याओं के पाठशाला में पढ़ैं शूद्रों के बालक यज्ञोपवीत के विना सब शास्त्रों को पढ़ैं परन्तु वेद की संहिता को छोड़के उनके जे आचार्य हैं वे प्रतिज्ञा पूर्वक नियम बांधें प्रथम तो काल का नियम करें॥ षट्त्रिंशदाब्दिकंचर्यं गुरौत्रैवे-दिकंव्रतम्। तदर्द्धिकंपादिकंवा ग्रहणान्तिकमेववा॥ ब्रह्मचर्या-श्रम का नियम २५।३०।४०।४४।४८ वर्ष तक है अथवा उसका अर्द्ध १८ अथवा ९ नववर्ष अथवा जबतक पूर्ण विद्या न होय तब तक यह मनुस्मृति का श्लोक है पूर्वोक्त सुश्रुत में शरीर की अवस्था धातुओं के नियम से ४ प्रकार की लिखी है॥ वृद्धिर्यौवनंसंपूर्णता किञ्चित्परिहाणिश्चेति। षोडश वर्ष से २५ वर्ष तक धातुओं की वृद्धि होती है और २५ वर्ष से आगे युवाऽवस्था का प्रारम्भ होता है अर्थात सब धातु क्रमसे बलको ग्रहण करते हैं उनके बल की अवधि ४० वें वर्ष सम्पूर्ण होती है उत्तम पुरुष के ब्रह्मचर्य का नियम ४० वर्ष तक होता है और छान्दोग्य उप-निषद में ४४ वा ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य जो कर्त्ता है वह पुरुष विद्या पराक्रम और सब श्रेष्ठ गुणों में उत्तमों में भी उत्तम होगा और ३० से ३६ वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्य का नियम है और २५ से ३० वर्ष तक न्यून से न्यून ब्रह्मचर्य का नियम है इससे न्यून ब्रह्मचर्य का नियम कभी न होना चाहिये जो कोई इससे न्यून ब्रह्मचर्याश्रम करेगा अथवा कुछ भी न करेगा उस को धैर्यादिक श्रेष्ठ गुण कभी न होंगे सदा रोगी, भ्रष्टबुद्धि, विद्या-हीन, कुत्सित, कर्मकारीही होगा क्योंकि जिसके धातुओं की क्षीणता और विषमता शरीर में होगी उस मनुष्य को किसी रीति से सुख न होगा और कन्याओं का २० से २४ वर्ष तक उत्तम ब्रह्मचर्याश्रम है १६ वर्ष से आगे २० वर्ष तक मध्यम ब्रह्मचर्याश्रम का काल है १६ वें वर्ष से १७ वा १८ वर्ष तक अधम ब्रह्मचर्य का काल है १६ वर्ष से न्यून कन्याओं का ब्रह्म-

चर्य कभी न होना चाहिये जो कोई कन्या १६ वर्ष से न्यून ब्र-
ह्मचर्याश्रम को करेगी वह विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम, धैर्या-
दिक गुणों से रहित और रोगादिक दोषों से युक्त होगी सदा
दुःखीही रहेगी इस्से ब्रह्मचर्याश्रम पुरुषों को वा कन्याओं को
न्यून कभी न करना चाहिये ॥ पञ्चविंशततोवर्षे पुमान्नारीतु
षोड़शे समत्वागतवीर्यौतौ जानीयात्कुशलोभिषक् ॥ यह सुश्रुत
का वचन है इसका यह अर्थ है कि १६ वर्ष से न्यून कन्या का
विवाह कभी न करना चाहिये और २५ वर्ष से न्यून पुरुषों
का भी न करना चाहिये और जो कोई इस बात का व्यतिक्रम
करै कि १६ वर्ष से पहिले कन्याओं का विवाह करै और २५
वर्ष से पहिले पुत्रों का विवाह करै उसको राजा दंड दे उनके
माता पिता को भी और जो कोई अपने सन्तानों को पाठशाला
में पढ़ने के लिये न भेजै उसको भी राजा दण्ड देवै क्योंकि
सब लोगों का सत्य व्यवहार और धर्म व्यवहार की व्यवस्था
राजा ही के अधीन है जिस देश का जो राजा होय उसी को इस
व्यवस्था की प्रीति से पालन करना चाहिये सो गुरु जो आचार्य
यह प्रथम तो उक्त नियम को करावे आगे और नियमों कोभी
ऋतंचस्वाध्याय प्रवचनेच सत्यञ्चस्वाध्याय प्रवचनेच तपश्चस्वा-
ध्याय प्रवचनेच दमश्चस्वाध्याय प्रवचनेच शमश्चस्वाध्यायप्रवचने-
च अग्नयश्चस्वाध्याय प्रवचनेच अग्निहोत्रञ्च स्वाध्याय प्रवचनेच
अतिथयश्च स्वाध्याय प्रवचनेच मानुषञ्च स्वाध्याय प्रवचनेच
प्रजाचस्वाध्याय प्रवचनेच प्रजनश्चस्वाध्याय प्रवचनेच प्रजातिश्च
स्वाध्याय प्रवचनेच ॥ यह तैत्तिरीयोपनिषद का बचन है ऋत
नाम है यथार्थ और सत्य २ ज्ञान का ब्रह्मचारी लोग और
अध्यापक लोग सत्य २ बात की प्रतिज्ञा करें कि सत्य २ ही को
मानैंगे मिथ्या को कभी नहीं और कभी असत्य को न सुनेंगे न
कहेंगे स्वाध्याय नाम पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना सत्य २ पढ़ें

और सत्य २ पढ़ावेंगे सत्यही कर्म करेंगे और करावेंगे तप नाम धर्मानुष्ठान का है सदा धर्मही करेंगे और अधर्म कभी नहीं हम लोग जितेन्द्रिय होंगे किसी इन्द्रिय से कभी परपदार्थ और पर स्त्री ग्रहण न करेंगे इसका नाम दम है शम नाम अधर्म की मनसे इच्छा भी न करनी अग्नयश्च नाम अग्नि में जगत् के उपकार के लिये सदा हम लोग होम करेंगे अग्नि-होत्रञ्च नाम अग्निहोत्र का नियम सब दिन पालेंगे अतिथियों की सेवा सब दिन करेंगे मानुषञ्च नाम मनुष्यों में जैसा जिस्से व्यवहार करना चाहिये वैसाही करेंगे बड़ा छोटा और तुल्य इनको जैसा मानना चाहिये वैसा उसको मानेंगे और जिस रीति से प्रजा की उत्पत्ति करनी चाहिये प्रजा का व्यवहार और पालन जैसा करना चाहिये धर्म से वैसाही करेंगे प्रजनश्च नाम वीर्यप्रदान जो करेंगे सो धर्मही से करेंगे प्रजातिश्च नाम जैसा कि गर्भ का पालन करना चाहिये और जन्म के पीछे भी जैसा पालन करना चाहिये वैसाही पालन उसका करेंगे परन्तु ऋतादि करेंगे स्वाध्याय प्रवचन का त्याग कभी नहीं करेंगे स्वाध्याय पढ़ना प्रवचन नाम पढ़ाना ऋतादिकों का ग्रहणही पूर्वक स्वाध्याय और प्रवचन को सदा करना चाहिये इसका विचार सब दिन करेंगे इसके छोड़ने से संसार की बहुत सी हानि होजाती है इस प्रकार से शिष्यों के प्रति पुरुष कन्याओं को स्त्री और पुरुषों को पुरुष शिक्षा करें। वेदमनूच्याचार्योन्ते-वासिनमनुशास्ति सत्यम्वद धर्मञ्चर स्वाध्यायान्माप्रमदः आचा-र्याय प्रियंधनमाहृत्य प्रजातन्तुम्माव्यवच्छेत्सीः सत्यान्नप्रमदित-व्यम् धर्मान्नप्रमदितव्यम् कुशलान्नप्रमदितव्यम् स्वाध्यायप्रवचना भ्यांनप्रमदितव्यम् १ देवपितृकार्याभ्यांनप्रमदितव्यम् मातृदेवो-भव पितृदेवोभव आचार्यदेवोभव अतिथिदेवोभव यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि नोइतराणि यान्यस्माकंसुचरितानि

तानित्वयोपास्यानि नोइतराणि येकेचास्मच्छ्रेयां सोब्राह्मणास्ते-षांत्वयासनेन प्रश्वसितव्यम् श्रद्धयादेयम् अश्रद्धयादेयम् श्रियादे-यम् ह्रियादेयम् भियादेयम् संविदादेयम् अथयदिते कर्म विचि-कित्सा वा वृत्त विचिकित्सावास्यात् ३ ये तत्रब्राह्मणाः समदर्शिनः युक्ता अयुक्ताः अलुक्षाधर्मकामाः स्युः यथातेतत्रवर्तेरन् तथातत्र वर्त्तेथाः एषआदेश एषउपदेश एषावेदोपनिषत् एतदनुशासनम् एवमुपासितव्यम् एवमुचैतदुपास्यम् ११ यह तैत्तिरीयोपनिषद् का वचन है इसी प्रकार से गुरु लोग शिष्यों को उपदेश करैं हे शिष्य तूं सब दिन सत्यही बोल और धर्मही को कर स्वाध्याय नाम पढ़ने में जैसे तुमको विद्या आवै वैसेही कर जब तक विद्या तुमको पूर्ण न होय तब तक ब्रह्मचर्य का त्याग न करना फिर जब विद्या और ब्रह्मचर्य भी पूर्ण होजाय तब जैसा तुमारा सामर्थ्य होय वैसा उत्तम पदार्थ आचार्य को दे के प्रसन्न करना चाहिये और आचार्य भी उनको शीघ्र विद्या होय वैसाही करै केवल अपनी सेवा के लिये सब दिन स्वसमें न रक्खैं कृपा करके विद्या पढ़ावैं छल कपट आचार्य लोग कभी न करैं क्योंकि सत्यगुणों का प्रकाशहो करना उचित है सब शिष्ट लोगोंको जब ब्रह्मचर्य और पूर्ण विद्या भी हो जाय तब उनको विवाह करना उचित है प्रजा का छेदन करना उचित नहीं और सत्य से प्रमाद न करना चाहिये अर्थात सत्य को छोड़ के असत्य से कोई व्यवहार न करना चाहिये धर्मही से सब व्यवहारों को करना चाहिये धर्म से विरुद्ध कोई कर्म न करना चाहिये कुशलता को सब दिन ग्रहण करना चाहिये और दुराग्रह अभिमान को कभी न करना चाहिये नम्रता शरलता से सदा गुण ग्रहण करना चाहिये भूति नाम सिद्धि इनको प्राप्ति में पुरुषार्थ सदा करना चाहिये और पढ़ने पढ़ाने से रहित कभी न होना चाहिये सब दिन पढ़ने पढ़ाने का पुरु-

चाहियें करना चाहिये देवकार्य नाम अग्निहोत्रादिक पितृकार्य नाम श्राद्ध तर्पणादिक उसको कभी न छोड़ना चाहिये माता पिता अतिथि और आचार्य इनकी सेवा कभी न छोड़नी चाहिये क्योंकि उनों ने जो पालन किया है वा विद्या दी है अथवा सत्य जो उपदेश करते हैं इस उपकार को कभी न भूलना चाहिये इनको अवश्य मानना चाहिये और जितने धर्मयुक्त कर्म हैं उनको करना चाहिये और पाप कर्मों को कभी न करना चाहिये माता पिता आचार्य और अतिथि भी शास्त्र प्रमाण से धर्म विरुद्ध जो उपदेश करें अथवा पाप कर्म करावें उनको कभी न करना चाहिये और उनके जो सुकर्म हैं उनको तो अवश्य करना चाहिये उनके जो दुष्टकर्म हैं उनको कभी न करना चाहिये वैसेही मातादिक उपदेश करें कि हमलोग जो सुकर्म करें उनको तो तुम लोगों को अवश्य करना चाहिये हमलोग जो दुष्टकर्म करें उनको कभी न करना चाहिये जो मनुष्य लोगों के बीचमें विद्या वाले धर्मात्मा और सत्यवादी होंय उनका सब दिन सङ्ग करना चाहिये उनसे गुणग्रहण करना चाहिये उनके बचन में और उनमें अत्यन्त श्रद्धा करनी चाहिये शिष्य लोग जब सुपात्र और धर्मात्मा मिलें तब श्रद्धा से उनको जो प्रियपदार्थ हो उसको देवें अथवा अश्रद्धा से भी देना चाहिये श्री नाम लक्ष्मी से देवें दारिद्र्य होवै तो भी दान की इच्छा न छोड़नी चाहिये लज्जा और प्रतिज्ञा से भी देना चाहिये अर्थात् किसी प्रकार से देना चाहिये दान का बंधक भी न करना चाहिये परन्तु श्रेष्ठ सुपात्रों को देना चाहिये कुपात्रों को कभी नहीं किसी को अन्याय से दुःख न देना चाहिये सब लोगों को बन्धुवत् जानना चाहिये और सब लोगों से प्रीति करनी चाहिये किसी से विवाद न करना चाहिये सत्य का खण्डन कभी न करना चाहिये और जो तुमको किसी विषय

वा किसी पदार्थ विद्या में सन्देह होय तब तुम लोग ब्रह्मवित् पुरुषों के पास जाओ वे कैसे होंय कि सर्वशास्त्रवित् निर्वैर पक्षपात कभी न करें वे युक्त अर्थात् योगी अथवा तपस्वी होंय रूक्ष नाम कठोर स्वभाव न होंय और धर्म काम में सम्पन्न होंय उनसे पूछ के संदेह निवृत्ति कर लेना वे जिस प्रकार से धर्म में वर्तमान करैं वैसाही तुमको धर्म में वर्त्तमान होना चाहिये यही आदेश है आदेश नाम परमेश्वर की आज्ञा है यही उपदेश है उपदेश नाम इसी का उपदेश कहना योग्य है यही वेदोपनिषत् है नाम वेदों का सिद्धान्त है और यही अनुशासन है अनुशासन नाम सुनियम और शिष्टाचार है ऐसेही धर्म की उपासना करनी चाहिये इसी प्रकार जानना भी चाहिये इसी प्रकार कहना भी चाहिये गुरु शिष्य को परस्पर ऐसा वर्त्तमान करना चाहिये ॐ सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सहवीर्यं करवावहै तेजस्विना वधीतमस्तु मा विद्विषावहै ॐ शान्तिश्शान्तिश्शान्तिः सहनाम परस्पर रक्षा करैं गुरु तो शिष्यों की कुकर्मों से रक्षा करैं और शिष्य लोग गुरु की आज्ञा पालन और गुरु की सेवा से रक्षा करैं सहैव परस्पर भोग करैं अर्थात जो शिष्य लोग कोई उत्तम अन्न पान वस्त्रादिकों को प्राप्त होंय सो पहिले गुरु को निवेदन करके शिष्य लोग भोजनादिक करैं सहनाम परस्पर वीर्य को करैं वीर्य नाम पराक्रम नाम सत्य २ जो विद्या उसको बढ़ावैं जब गुरु यथावत् परिश्रम से विद्या दान करैंगे तब उनको भी विद्या तीव्र होगी शिष्य लोग यथावत् परिश्रम से और सुविचार से विद्या ग्रहण करैंगे तब उनको भी सत्य २ विद्या तीव्र होगी ऐसे सब गुरु शिष्य विचार करैं कि हम लोगों का पढ़ना पढ़ाना तेजस्वी नाम प्रकाशित होय जिसका शिष्य विद्यावान् नहीं होता उसका जो गुरु है उसी की निन्दा होती है बहुत से एक गुरु के पास पढ़ते हैं उनमें

से कितने तो विद्यावान् होते हैं और कितने नहीं गुरु तो यथावत् पढ़ावेंगे और कोई शिष्य यथावत् विद्या को ग्रहण न करेगा तब तो उस शिष्य की निन्दा होगी इस से इस प्रकार का पढ़ना पढ़ाना करना चाहिये कि सत्य २ विद्या का प्रकाश होय और अविद्या जो अन्धकार उसका नाश होय॥ कामात्मता न प्रशस्ता नचैवेहास्त्यकामता। काम्योहि वेदाधिगमः कर्मयोगश्च वैदिकः॥ मनुष्यों को विषयों में जो कामात्मता नाम अत्यन्त कामना सो श्रेष्ठ नहीं और अकामता नाम कोई पदार्थ की इच्छा भी न करनी वह भी श्रेष्ठ नहीं क्योंकि विद्या का जो होना सो इच्छाही से है धर्म विद्या और परमेश्वर की उपासना की तो कामना अवश्यही करना चाहिये क्योंकि॥ काम्योहि वेदाऽधिगमः। वेद विद्या की जो प्राप्ति है सो कामनाऽधीनही है और वैदिक कर्म जितने हैं वेभी कामनाऽधीनही हैं इस से श्रेष्ठ पदार्थों की कामना सदा करनी चाहिये और अश्रेष्ठ पदार्थों की कामना कभी नहीं॥ सङ्कल्पमूलः कामोवैयज्ञाः सङ्कल्पसम्भवाः व्रतानियमधर्माश्चसर्वे सङ्कल्पजाः स्मृताः काम का मूल सङ्कल्प है अर्थात सङ्कल्पही से काम की उत्पत्ति होती है हृदय से वाह्य पदार्थ की प्राप्ति की सूक्ष्म जो इच्छा उसको सङ्कल्प कहते हैं ब्रह्मचर्यादिक जितने व्रत हैं वे भी कामही से सिद्ध होते हैं पांच प्रकार के यम होते हैं अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्या परिग्रहायमाः। यह योगशास्त्र का सूत्र है इसका यह अर्थ है कि अहिंसा नाम कोई से कभी वैर न करना सत्य जैसा हृदयमें है वैसाही वचन कहना अस्तेय नाम चोरी का त्याग बिना आज्ञा से किसी का पदार्थ न ग्रहण करना ब्रह्मचर्य नाम विद्या बल बुद्धि पराक्रम को यथावत् प्राप्ति करनी अपरिग्रह नाम अभिमान कभी न करना धर्म नाम न्याय का न्याय नाम पक्षपात का त्याग करना जैसे कि अपना प्रिय पुत्र भी दुष्ट कर्म के

करने से मारा जाता होय तोभी मिथ्या भाषण न करै ॥ अकामस्यक्रियाकाचि दृश्यतेनेहकर्हिचित् । यद्यद्धिकुरुतेकिञ्चि-त्तत्तत्कामस्यचेष्टितम्॥ जिस पुरुष को कामना न होय तो उसको नेत्रादिकों की कुछ चेष्टा भी न होय इसे जो २ शरीर में कुछ भी चेष्टा होती है सो २ कामही से होती है ऐसाही निश्चय जानना इसे क्या आया कि काम के बिना कोई भी शरीर धारण नही करसक्ता और खाना पीना भी नहीं कर सक्ता इसलिये श्रेष्ठ पदार्थों की कामना सब दिन करनीही चाहिये दुष्ट पदार्थों की कभी नहीं और जो पुरुषार्थ को छोड़ेगा सो तो पाषाण और काष्ठ को नांई होगा इसे आलस्य कभी न करना चाहिये और पुरुषार्थ को छोड़ना भी नहीं ॥ आचारःपरमोधर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त्त एवच । तस्मादस्मिन्सदायुक्तो नित्यंस्यादात्मवान्द्विजः ॥ शास्त्र को पढ़के सत्य धर्मों का आचरण जो न करै उसका पढ़ना व्यर्थही है सोई परम धर्म है परन्तु वह आचार वेदादिक सत्य शास्त्रोक्त और मनुस्मृत्युक्तही लेना तिस हेतु से इस आचरण नाम धर्माचरण में द्विज लोग अर्थात सब मनुष्य लोग युक्त होंय ॥ आचाराद्विच्युतोविप्रो नवेदफलमश्नुते । आचारेणतुसं-युक्तः संपूर्णफलभाग्भवेत् ॥ जो पुरुष वेदोक्त आचार को नहीं करता उसका जो विद्या का पढ़ना है उसका फल वह नहीं पाता और जो वेदादिकों को पढ़के यथोक्त आचार करता है उसको संपूर्ण सुख रूप फल होता है ॥ योऽवमन्येततेमूले हेतु शास्त्राश्रयात्द्विजः । ससाधुभिर्बहिष्कार्यो नास्तिकोवेदनिन्दकः॥ कुतर्क से जो कोई मनुष्य श्रुति नाम वेद स्मृति नाम धर्मशास्त्र ये दोनों धर्म के प्रकाशक हैं और धर्म के मूल हैं इनको जो न मानै उसको सज्जन लोग सब अधिकारों से बाहर कर देवैं क्योंकि वह नास्तिक है जो वेद नाम विद्या की निन्दा करता है सोई पुरुष नास्तिक होता है॥ वेदःस्मृतिःसदाचारः स्वस्यचप्रि-

यमात्मनः। एतच्चतुर्विधम्प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥ श्रुति स्मृति सत्पुरुषों का आचार और अपने हृदय की प्रसन्नता नाम जितने पाप कर्म हैं उनकी इच्छा जब पुरुषों को होती है तब उसी समय भय, शङ्का और लज्जा से हृदय में अप्रसन्नता होती है और जितने पुण्य कर्म हैं उनमें नहीं होती इस्से जिस २ कर्म में हृदय का अन्तर्यामी प्रसन्न होय वही धर्म है और जिसमें अप्रसन्न होय वही अधर्म जानना इसके उदाहरण चौर्जारादिक हैं इसको साक्षाद्धर्म का ४ प्रकार का लक्षण कहते हैं॥ अर्थकामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानंविधीयते। धर्मंजिज्ञासमानानां प्रमाणम्परमंश्रुतिः॥ जो मनुष्य अर्थोंमें नाम धनादिकों में आसक्त नाम लोभ नहीं कर्त्ते हैं और कामनाम विषयासक्ति में जो आसक्त नहीं नाम फसे नहीं हैं उन्हीं को धर्म का ज्ञान होता है अन्य को कभी नहीं परन्तु जिनको धर्म जानने की इच्छा होय वे वेदादिक शास्त्र पढ़ैं और विचारैं उनको बिना पढ़ने से धर्म का यथार्थ ज्ञान न होगा॥ वेदास्त्यागश्चयज्ञाश्च नियमाश्चतपांसिच। नविप्रदुष्टभावस्य सिद्धिङ्गच्छन्तिकर्हिचित्॥ वेद, विद्या, त्याग, यज्ञ, नियम और तप इतने विप्र दुष्ट नाम अजितेन्द्रिय पुरुष को कभी सिद्ध नहीं होते। इस्से जितेन्द्रियता का होना सब मनुष्यों को आवश्यक है जितेन्द्रिय का लक्षण क्या है कि॥ श्रुत्वास्पृष्ट्वाचदृष्ट्वाच भुक्त्वाघ्रात्वाचयोनरः। नहृष्यतिग्लायतिवा सविज्ञेयोजितेन्द्रियः॥ जिस पुरुष को अपनी निंदा सुनके शोक न होय और अपनी स्तुति सुनके हर्ष न होय तथा दुष्टस्पर्श, दुष्टरूप, दुष्टरस और दुष्टगन्ध को पाके शोक न होय और श्रेष्ठस्पर्श, श्रेष्ठरूप, श्रेष्ठरस और श्रेष्ठगन्ध को प्राप्त होके जिसको हर्ष नहीं होता उसको जितेन्द्रिय कहते हैं अर्थात सब मनुष्यों को यही योग्यता है कि न हर्ष करना चाहिये न शोक किन्तु न शोक में गिरै न हर्ष के मध्यही में सदा बुद्धि को रक्खै

वही सुखका स्थान है ॥ ब्रह्मारम्भेऽवसानेच पादौग्राह्यौगुरोः सदा। संहत्यहस्तावध्येयं सहिब्रह्माञ्जलिःस्मृतः ॥ जब शिष्य गुरू के पास पढ़ने का नित्य आरम्भ करैं तब आदि और अन्त में गुरू को नमस्कार और पादस्पर्श करैं जब तक पढ़ैं तथा गुरू के सन्मुख रहैं तब तक हाथही जोड़ के रहैं इसी का नाम ब्रह्माञ्जलि है जब गुरू उठै तब आपही पहिले उठै जो आप बैठा होय और गुरू आवैं तब अपने उठके सन्मुख जाके गुरू को शीघ्रही नमस्कार करै और उत्तम आसन पर बैठावै आप नीचे आसन पर बैठे और नम्र होके पूंछे अथवा सुनै ॥ नापृष्टःकस्यचिद्ब्रूया न्नचान्यायेनपृच्छतः। जानन्नपिहिमेधावी जड़वल्लोकआचरेत् ॥ जब तक कोई न पूंछे तब तक कुछ न कहै और जो कोई हठ, छल और कपट से पूंछे उससे कभी न कहै जाने तो भी मूर्खों के सामने मौनही रहना ठीक है क्योंकि शठ लोग कभी न मानेंगे इससे उनसे कहना व्यर्थही है ॥ अधर्मेणचयःप्राह यश्चाधर्मेणपृच्छति। तयोरन्यतरःप्रैति विद्वेषम्वाधिगच्छति ॥ जो कोई अधर्म से कहता और जो अधर्म से पूंछता है नाम छल, कपट, दोनों का विरोध होने से किसी का मरण अथवा विद्वेष होजाय तो अवश्य होगा इससे गुरू शिष्य अथवा कोई मनुष्य जो इस शिक्षा को मानेगा और यथावत् करेगा उसको बड़ा सुख होगा ॥ आचार्यपुत्रःशुश्रूषु र्ज्ञानदोधार्मिकःशुचिः। आप्तःशक्तोऽर्थदःसाधुः स्वोध्याप्यादशधर्मतः ॥ आचार्य का पुत्र शुश्रूषु नाम सेवा का करने वाला तथा ज्ञान का देने वाला वा धार्मिक शुचि नाम पवित्र आप्त नाम पूर्ण काम और शक्त नाम समर्थ अर्थद नाम अर्थ का देनेवाला साधु नाम सत्य मार्ग में चलने वाला और सत्य का उपदेश करने वाला इन दश पुरुषों को विद्वान् धर्म और परिश्रम से पढ़ावै जिससे कि वे विद्यावान् होंय क्योंकि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र

और उन सभों को सो वे सब जब तक विद्या वाले न होंगे तब तक यथावत् बुद्धि, बल, पराक्रम, नैरोग्य और धर्म की उन्नति कभी न होगी आर्यावर्त्त देश की उन्नति तभी होगी जब विद्या का यथावत् प्रचार होगा और जब तक उक्त आचार में प्रवृत्त न होंगे तब तक सुख के दिन कभी न आवैंगे क्योंकि ब्राह्मण और सम्प्रदायिक लोग पढ़के यथावत् धर्म में निश्चित तो नहीं होते किन्तु अपनी २ आजीविका और अपना २ सम्प्रदाय जो वेद विरुद्ध पाखण्ड उनही को बढ़ावेंगे और जीविका के लोभ से सब दिन छल कपटही में रहेंगे कभी धर्म में चित्त न देंगे न धर्म को जानेंगे क्योंकि उनको पाखण्डही से सुख मिलता है इससे पाखण्डही को पढ़ावेंगे धर्म को कभी नहीं जब क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र पढ़ेंगे उनको आजीविका नाश का भय तो नहीं है इससे कभी छल कपट से असत्य न कहेंगे इससे सत्यही सत्य प्रवृत्ति होगी और वे क्षत्रियादिक जब तक न पढ़ेंगे तब तक आर्यावर्त्त देश वासियों के मिथ्याचार और पाखण्डों का नाश कभी न होगा जो राजा और जितने धनाढ्य लोग हैं उनको तो अवश्य सब शास्त्रों को पढ़ना चाहिये क्योंकि उनके पढ़े बिना कोई प्रकार से भी विद्या का प्रचार धर्म की व्यवस्था और आर्यावर्त्त देश की उन्नति कभी न होगी उनकी बहुतसी हानि भी होगी क्योंकि उनके अधिकार में राज्य धन और बहुत से पुरुष रहते हैं जब वे विद्यावान्, बुद्धिमान्, जितेन्द्रिय और धर्मात्मा होंगे तब उनके राज्य में धर्म और विद्या का प्रचार होगा उनका धन अनर्थ में कभी न जायगा और उनके सङ्गी सब श्रेष्ठ धर्मात्मा होंगे इससे सब देशस्थों का उपकार होगा केवल आर्यावर्त्त वासियों का नहीं किन्तु सब देशस्थ मनुष्यों को ऐसाही करना उचित है कि पक्षपात का छोड़ना सत्य का ग्रहण करना और जितने मत हैं वे सब मूर्खोंही के

कल्पित हैं और बुद्धिमानों का एकही मत अर्थात सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना है इस से क्या आया कि जो लाभ विद्या के प्रचार से होता है ऐसा लाभ कोई अन्य प्रकार से नहीं होता ये सब श्लोक मनुस्मृति के हैं जो पढ़ना अथवा पढ़ाना सो शास्त्रोक्त प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से सत्य २ परीक्षित कर के ही पढ़ना और पढ़ाना भी॥ इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्॥ यह गोतम मुनि का सूत्र है सो प्रत्यक्ष सब को अवश्य मानना चाहिये॥ अक्षस्य २ प्रतिविषयंवृत्तिः प्रत्यक्षम्। अक्ष नाम इन्द्रिय का है इन्द्रिय इन्द्रिय के प्रति विषय ग्रहण करने वाली जो वृत्ति तज्जन्य जो ज्ञान उसको प्रत्यक्ष कहते हैं सो जब किसी बाह्य व्यवहार की जीव को इच्छा होती है तब मन को संयुक्त होके जीव प्रेरणा कर्त्ता है तब मन इन्द्रियों को अपने २ विषयों के प्रति प्रेरता है तब इन्द्रियों का और विषयों का सन्निकर्ष होता है अर्थात सम्बन्ध होता है सम्बन्ध किसका नाम है कि उन उन इन्द्रिय और विषयों का जो यथावत वृत्ति नाम वर्तमान का होना अथवा ज्ञान का होना उसका नाम है सन्निकर्ष सन्निकर्षोवृत्तिर्ज्ञानं वा। यह वात्स्यायन भाष्य का बचन है इस पुस्तक में बारम्बार न लिखा जायगा परंतु ऐसा जानना कि जो कुछ लिखा जायगा सो गौतम सूत्रादि के अनुसारही से और वात्स्यायनादिक मुनि के भाष्यों के अभिप्राय से लिखा जायगा इसमें जिसको शङ्का अथवा अधिक जानना चाहे सो उन ग्रन्थों में देख ले वैसा प्रत्यक्षज्ञान ठीक २ यथावत् तत्त्वस्वरूप जानना उसके भिन्न जो होगा उसको भ्रम नाम अज्ञान कहा जायगा जैसे कि॥ व्यवस्थितः पृथिव्यांगन्धः अप्सु रसः रूपन्तेजसि वायौ स्पर्शः। ये सूत्र और अभिप्राय वैशेषिक सूत्रकार मुनि के हैं इन्द्रियों से गुणही का ग्रहण होता है द्रव्य का कभी नहीं क्यों-

कि ॥ श्रोत्रग्रहणोयोऽर्थः सशब्दः। यह वैशेषिक का सूत्र है ऐसे सब सूत्र हैं हम लोग श्रोत्र नाम कर्णेन्द्रिय से शब्दही का ग्रहण कर्ते हैं और स्पर्शादिकों का नहीं ऐसेही स्पर्शेन्द्रिय से स्पर्शही का ग्रहण कर्ते हैं तथा नेत्र से रूप का जीभ से रस का और नासिका से गन्ध का ये शब्दादिक आकाशादिकों के गुण हैं गुणोंही को इन्द्रियों से ग्रहण करते हैं आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी इनका ग्रहण इन्द्रियों से कभी नहीं होता मन से तो जीव आकाशादिकों का प्रत्यक्ष ग्रहण कर्त्ता है क्योंकि जो जिसका स्वाभाविक गुण है वह उस्से भिन्न कभी नहीं होता जैसे कि पृथ्वी का स्वाभाविक गुण गन्ध है सो पृथ्वी से भिन्न कभी नहीं रहता और गन्ध से पृथ्वी भी भिन्न नहीं रहती इन दोनों के सम्बन्ध से जीव को गन्ध के ज्ञान होने से पृथ्वी काभी प्रत्यक्ष होता है वैसेही रस, रूप, स्पर्श और शब्दों का जीभ, नेत्र, त्वक् और श्रोत्र से ग्रहण होने से जल, अग्नि, वायु और आकाश का भी मनसे जीव को प्रत्यक्ष होता है सो प्रत्यक्ष किस प्रकार का लेना कि पृथ्वी में जल, अग्नि और वायु के सम्बन्ध होने से रस, रूप और स्पर्श भी ये तीनों गुण देख पड़ते हैं परन्तु तीन गुण स्पर्शादिक वायु आदिकों के संयोग निमित्तही से हैं वैसेही जल में रूप और स्पर्श मिले हैं तथा अग्नि में स्पर्श और वायु में शब्द आकाश में कोई नहीं एक शब्दही अपना स्वाभाविक गुण है वायु में जो शब्द है सो आकाश के संयोग निमित्त से और जल में जो गन्ध है सो पृथ्वी के संयोग से है ऐसेही अन्यत्र जान लेना सो प्रत्यक्ष ज्ञान ऐसा लेना कि अव्यपदेश्य नाम संज्ञा से जो होता है जैसे कि घट एक पदार्थ की संज्ञा है इस संज्ञा से जिसका नाम कि घट है वह घट शब्द के उच्चारण से कि तूं घड़े को ला जब वह घड़ा लेने को चला जिसवक्त उसने घड़े को देखा उस वक्त जो घट संज्ञा सो उस

को न देख पड़ी किन्तु जैसी घटकी आकृति और रूप वही तो देख पड़ा और घट शब्द नहीं फिर वह घड़े को लेके जिसने आज्ञा दी थी उसके पास घड़े को रखके बोला कि यह घड़ा है उसने घड़े को प्रत्यक्ष देखा परन्तु उसमें घड़ा ऐसा जो नाम उसको उसने भी न देखा के जो संज्ञा बिना पदार्थ मात्र का ज्ञान होना उसको अव्यपदेश्य कहते हैं और जो व्यपदेश्य ज्ञान है सो तो शब्द प्रमाण में है प्रत्यक्ष में नहीं और दूसरा प्रत्यक्ष ज्ञान का अव्यभिचारि यह विशेषण है सो जानना चाहिये व्यभिचारिज्ञान इस प्रकार का होता है कि अन्य पदार्थ में भ्रम से अन्यपदार्थ का ज्ञान होना जैसे कि लकड़ी के स्तम्भ में पुरुष का ज्ञान रज्जु में सर्पका सीपमें चांदी और पाषाणादि मूर्त्ति में देव का ज्ञान इत्यादिक ज्ञान सब व्यभिचारि हैं उस समय में तो यथार्थ भ्रमसे देखने में आते हैं परन्तु उत्तरकाल में स्तम्भादिकों का साक्षात् प्रत्यक्ष निर्भ्रम तत्त्वज्ञान के होने से पुरुषादिकों का जो भ्रम से ज्ञान हुआ था सो नष्ट होजाता है इस्से क्या आया कि जिस ज्ञान का कभी व्यभिचारि नाम नाश न होय उसको कहते हैं अव्यभिचारि ज्ञान सो प्रत्यक्ष अव्यभिचारिही लेना अन्य नहीं और इस प्रत्यक्ष का तीसरा विशेषण व्यवसायात्मक है व्यवसाय नाम है निश्चय का और जो जिसका तत्त्व स्वरूप है उसका नाम है आत्मा जबतक उस पदार्थ का तत्त्व नाम स्वरूप निश्चय न होय तब तक व्यवसायात्म ज्ञान नहीं होता और जब उसके स्वरूप का यथावत् ज्ञान का निश्चय होता है उसको व्यवसायात्मक कहते हैं जैसे कि दूर से श्वेत बालुका देखी अथवा घोड़ा देखा उसके नेत्र से सम्बन्ध भी भया परन्तु उसके हृदय में निश्चय न हुआ कि यह वस्त्र अथवा बालू अथवा और कुछ है यह घोड़ा अथवा गैया अथवा और कुछ है जब तक यथावत् वह निकट से न देखेगा

तब तक सन्देह की निवृत्ति न होगी और जब तक सन्देह की निवृत्ति न होगी तब तक सन्देहात्मक नाम भ्रमात्मक ज्ञान रहेगा उसको प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं जानना और जो सत्य २ दृढ़ निश्चित तत्वज्ञान है उसको उक्त प्रकार से प्रत्यक्ष ज्ञान जानना इस प्रकार से थोड़ा सा प्रत्यक्ष के विषय में लिखा परंतु जिसको अधिक जानने की इच्छा होय सो षड्दर्शनों में देख लेवै इससे आगे दूसरा अनुमान प्रमाण है॥ अथतत्पूर्वकं त्रिविधमनुमानं पूर्ववच्छेषवत्सामान्यतोदृष्टञ्च। यह गौतममुनि का सूत्र है अथ नाम प्रत्यक्ष लक्षण लिखने के अनन्तर अनुमान लक्षण का प्रकाश करते हैं तत्पूर्वक नाम प्रत्यक्ष पूर्वक जिसमें पहिले प्रत्यक्ष का होना आवश्यक होय और अनुमान पीछे मान नाम ज्ञान होना उसका नाम अनुमान है सो अनुमान प्रत्यक्ष पूर्वकही होता है अन्यथा नहीं यह अनुमान तीन प्रकार का होता है एक तो पूर्ववत् दूसरा शेषवत् तीसरा सामान्य तो दृष्ट पूर्ववत् इसका नाम है कि जहां कारण से कार्य का ज्ञान होना जैसे बादल के बिना वृष्टि कभी नहीं होती सो बादलों की उन्नति गर्जना और विद्युत् इनको देखके अवश्य वृष्टि होगी ऐसा ज्ञान होता है तथा परमेश्वर के बिना सृष्टि कभी नहीं होती क्योंकि रचना करने वाले के बिना रचना कभी नहीं होती और बादल जो है सो वृष्टि का कारण है परमेश्वर जो है सो जगत् का कारण है यह पूर्ववत् अनुमान है और शेषवत् यह है कि जहां कार्य से कारण का ज्ञान होना जैसे कि पहिले नदी में थोड़ा प्रवाह वेग भी न्यून अथवा सूखी देखते थे फिर जब वह पूर्ण हुई देख के उसके प्रवाह का शीघ्र चलना वृक्ष काष्ठ घासादिक बहे जाते देख के अवश्य ज्ञान होता है कि वृष्टि ऊपर कहीं भई हीं है इस संसार की रचना देख के अवश्य रचना करने वाला परमेश्वरही है इसका नाम शेषवत् अनुमान है तीसरा

सामान्य तो दृष्ट अनुमान है जैसे कि चलकेही स्थान से स्थानान्तर में जाता है किसी पुरुष को अन्य स्थान में कहीं बैठा देखा फिर दूसरे काल में अन्य स्थान में उसी पुरुष को बैठा देखा इससे देखने वाले ने क्या जाना कि यह पुरुष इस स्थानसे चलकेही आया है क्योंकि विना गमन स्थान से स्थानान्तर में कोई भी नहीं जा सक्ता ऐसा सामान्य से नियम है इस प्रकार का सामान्य से दृष्ट अनुमान है उसका गमन तो उसने देखा नहीं परन्तु उसको गमन का ज्ञान होगया अथवा पूर्ववत् नाम किसी स्थान में अग्नि नाम अङ्गारे को काष्ठादिकों में मिलाहुआ और उसमें धूम भी निकलता हुआ देखाथा उसने जान लिया कि अग्नि और काष्ठादिकों का संयोग जब होता है तब धूम अवश्य निकलता है फिर किसी समय उसने दूर स्थान में धूम को देखा देखने से उसको ज्ञान भया कि वहां अग्नि अवश्य है इस प्रकार का अनेकविधि पूर्ववत् अनुमान होता है सो जान लेना शेषवत् नाम किसी ने बुद्धि से विचार करके कहा कि यह पुरुष उत्तम पण्डित है इससे क्या आया कि अन्य ऐसा कोई पण्डित नहीं और मूर्ख भी बहुत से हैं इस स्थान में बिना कहने से ऐसा जाना गया ऐसे अन्य भी बहुत प्रकार का शेषवत् अनुमान जान लेना सामान्य दृष्ट नाम जैसे कि मनुष्य के शिर में प्रत्यक्ष शृङ्ग के नहीं देखने से अदृष्ट मनुष्यों के शिर में भी शृङ्ग का नहीं होना ऐसा निश्चित जाना जाता है इसका नाम सामान्य से दृष्ट अनुमान है इससे आगे तीसरा उपमान प्रमाण है॥ प्रसिद्ध साधर्म्यात्साध्यसाधनमुपमानम्। यह गौतम मुनि का सूत्र है प्रसिद्ध नाम प्रगट साधर्म्य नाम तुल्य धर्मता एक का दूसरे से होना साध्य नाम जिसको जनावै साधन नाम जिससे जनावै जिसकी उपमा जिससे की जाय उसका नाम उपमान प्रमाण है किसी ने किसी से पूछा कि गवय नाम नीलगाय

किस प्रकार की होती है उसने उसे उत्तर दिया कि जैसी यह गाय होती है वैसाही गवय होता है उसने उसके उपदेश को हृदय में रख लिया फिर उसने कभी कालान्तर में किसी स्थान में बन में वा अन्यत्र उस पशु को देखके जान लिया कि यही नीलगाय है क्योंकि गाय के तुल्य होने से ज्ञान का निश्चय होगया अथवा किसीने किसीसे कहा कि तूं देवदत्त नाम मनुष्य के पास जा तब उसने उससे पूछा कि देवदत्त कैसा है उसने उससे कहा कि जैसा यह यज्ञदत्त है वैसाही देवदत्त है फिर वह वहां गया उसने यज्ञदत्त के तुल्य देवदत्त को देखके निश्चय जान लिया कि यही देवदत्त है तब देवदत्त ने कहा कि आपने मुझको कैसे जाना उसने कहा मुझसे किसी ने कहा था कि यज्ञदत्तही के समान देवदत्त है उस यज्ञदत्त के समान होने से आपको मैंने जान लिया इसका नाम उपमान प्रमाण है चौथा शब्द प्रमाण है ॥ आप्तोपदेशः शब्दः । यह गौतममुनि का सूत्र है ॥ आप्तः खलुसाक्षात् कृतधर्मा यथादृष्टस्यार्थस्य चिख्यापयिषया प्रयुक्त उपदेष्टा साक्षात् करण मर्थस्याप्तिस्तया प्रवर्ततइत्याप्तः ऋष्यार्यम्लेच्छानां समानंलक्षणम् ॥ यह वात्स्यायन मुनि का भाष्य है आप्त किसको कहते हैं कि साक्षात् कृतधर्मा जिसने निश्चय करके धर्मही कियाथा करता होय और करै अधर्म कभी नहीं और जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोकादिक दोषों का लेश कभी न होय विद्यादिक गुण सब जिसमें होंय वैर किसी से न होये पक्षपात कभी न करै और सब जीवों के ऊपर कृपा करै अपने हृदय में सत्य २ जानने से जैसा सुख भया वैसाही सब जीवों को सत्य २ उपदेश जनाने से सुख प्राप्त कराने की इच्छा से जो प्रेरित होके उपदेश करै और आप्ति उसका नाम है कि जो जैसा पदार्थ है उसका वैसाही ज्ञान का होना उस आप्ति से युक्त होय नाम सब काम जिसके पूर्ण होंय छल, कपट

और लोभ से जो कभी प्रवृत्त न होय किन्तु एक परमेश्वर की आज्ञा जो धर्म और सब जीवों के कल्याण के उपदेश की इच्छा जिसको होय उसको आप्त कहते हैं सब आप्तों में भी आप्त परमेश्वर है उस आप्त परमेश्वर का और उस प्रकार के उक्त आप्त मनुष्यों का जो उपदेश है शब्द प्रमाण उसको कहते हैं उसी का प्रमाण करना चाहिये इनसे विपरीत मनुष्यों के उपदेश का कभी प्रमाण न करना चाहिये आप्त कोई देश विशेष में होता है अथवा सब देशों में होता है इसका यह उत्तर है कि ऋष्यार्य्यम्लेच्छानांसमानंलक्षणम्। ऋषि नाम यथार्थ मंत्र-द्रष्टा यथार्थ पदार्थों के विचार के जानने वाले उत्तर में हिमालय और दक्षिण में विन्ध्याचल पूर्व में समुद्र और पश्चिम में समुद्र इन चारों के अवधि पर्यन्त देश में रहने वाले मनुष्यों का नाम आर्य्य है इस देश से भिन्न देशों में रहनेवाले मनुष्यों का नाम म्लेच्छ है म्लेच्छ नाम निन्दित नहीं है किंतु(म्लेच्छ-अव्यक्तेशब्दे। इस धातु से म्लेच्छ शब्द सिद्ध होता है उसका अर्थ यह है कि जिन पुरुषों के उच्चारण में वर्णों का स्पष्ट उच्चारण नहीं होता उनका नाम म्लेच्छ है) सब देशों में और सब मनुष्यों में आप्त होने का सम्भव है असम्भव कभी नहीं अर्थात् ऋषि आर्य्य और म्लेच्छ इनमें आप्त अवश्य होते हैं क्योंकि जो किसी मनुष्यों में उक्त प्रकार का लक्षण वाला मनुष्य होगा उसी का नाम आप्त होगा यह नियम नहीं है कि इस देश में होय और अन्य देश में न होय(आर्य्य नाम है श्रेष्ठ का)और जो हिन्दू नाम इनका रक्खा है सो मुसल्मानों ने ईर्ष्या से रक्खा है उसका अर्थ है दुष्ट, नीच, कपटी, कुली और गुलाम इससे यह नाम भ्रष्ट है किंतु(आर्य्यों का नाम हिन्दु कभी न रखना चाहिये॥ आसमुद्रात्तुवैपूर्वादासमुद्रात्तुपश्चिमात्। तयोरेवान्तरंगिर्य्योरार्य्यावर्त्तम्विदुर्बुधाः॥ आर्य्यैरावर्त्तः सआर्य्यावर्त्तः जो

देश आर्य्यों से नाम श्रेष्ठों से आवर्त्त नाम युक्त होय उसका नाम आर्य्यावर्त्त देश है सो देश हिमालयादिक अवधि से कह दिया सो जान लेना वह शब्द प्रमाण दो प्रकार का होता है सू० सद्विधोदृष्टाऽदृष्टार्थत्वात्। जिस शब्द का अर्थ प्रत्यक्ष देख पड़ता है सो तो दृष्टार्थ शब्द है और जिस शब्द का श्रवण तो प्रत्यक्ष होता है और उसका अर्थ प्रत्यक्ष देखने में नहीं आता उसका नाम अदृष्टार्थ शब्द है जैसे कि स्वर्गादिक शब्दों का अर्थ देखनेमें नहीं आता इस प्रकार के शब्द का नाम अदृष्टार्थ शब्द है दृष्टार्थ शब्द यह है कि जैसा पृथिव्यादिक इतने प्रत्यक्षादि के ४ प्रकार के भेद हैं एक तो प्रमाता होता है कि जो पदार्थ को प्रमाणों से जान लेता है जिसका नाम जीव है प्रमाणों का करने वाला प्रमिणोति सप्रमाता येनार्थं प्रमिणोतितत्प्रमाणम् जिससे अर्थ को यथावत् जानै उसका नाम प्रमाण है प्रत्यक्षादिक तो कह दिये जैसे कि नेत्र से जीव जो है सो रूप को जान लेता है योऽर्थः प्रतीयतेतत्प्रमेयम्। जिसको प्रतीति होती है उसका नाम प्रमेय है जैसा कि रूप नेत्र से देखा गया यदर्थविज्ञानंसा प्रमितिः। जो अर्थ का यथावत् तत्त्व विज्ञान होना उसका नाम प्रमिति है प्रमाता प्रमाण, प्रमेय, और प्रमिति इन चार प्रकार की विद्या को भी यथावत् जान लेना चाहिये और भी ४ प्रकार की जो विद्या है उसको जानना चाहिये हेयम् नाम त्याग करने के जो योग्य होय जैसे कि अधर्म और ग्राह्य नाम ग्रहण करने के योग्य जैसा कि धर्म दूसरा तस्यनिवर्तकम् नाम हेय जो अधर्म उसकी निवृत्ति का जो ज्ञान से करना और पुरुषार्थ से तस्य प्रवर्तकम् ग्राह्य जो धर्म उसकी जो प्रवृत्ति हृदय में विचार से और पुरुषार्थ से होनी तीसरा हानमात्यन्तिकम् जो हेय अधर्म का अत्यन्त त्याग कर देना पुरुषार्थ से और विचार से स्थान मानमात्यन्तिकम् नाम ग्राह्य जो धर्म उसकी दृढ़स्थिति हृदय

में हो जानो कि हृदय और आचरण से धर्म का नाश कभो न होय चौथा तस्योपायोऽधिगन्तव्यः । हेय जो अधर्म उसके त्याग के उपाय को प्राप्त होना और धर्म के ग्रहण के उपाय को प्राप्त होना वह उपाय सत्पुरुषों का सङ्ग, श्रेष्ठबुद्धि और सद्विद्या के होने से प्राप्त होता है इतने ४ अर्थ पद होते हैं इनका सम्यक् जानने से निःश्रेयस जो मोक्ष नाम नित्यानन्द परमेश्वर की प्राप्ति और जन्म मरणादिक दुखों को अत्यन्त निवृत्ति हो जाती है इससे इस ४ प्रकार को विद्या को भी सज्जनों को अवश्य जानना चाहिये ४ प्रकार के जो प्रमाण हैं उनका विषय लिखा गया और इनकी परोक्षा भो संक्षेप से इससे आगे लिखो जातो है सो जान लेना ॥ प्रत्यक्षादो नाम प्रामाण्यं त्रैकाल्यासिद्धेः। इत्यादिक परीक्षा में गोतममुनि प्रणीत सूत्रों ही को लिखेंगे सो आप लोग जान लेवें प्रत्यक्षादिकों का प्रमाण नहीं है क्योंकि तीन कालों को असिद्धि के होने से पूर्वा पर सहं-भाव नियम के भङ्ग होने से कि पहिले प्रमाण होता है वा प्रमेय देखना चाहिये कि पहिले जो प्रमाण सिद्ध होय और पीछे प्रमेय तो बिना प्रमेय के प्रमाण किसका होगा वा पहिले प्रमेय होय प्रमाण पीछे होय तो बिना प्रमाण के प्रमेय कैसे जाना जायगा और जो सङ्ग में दोनों का ज्ञान होय तो बिना प्रमेय से प्रमाण की उत्पत्ति हो नहीं इससे किसी प्रकार से भी प्रत्यक्षादिकों का प्रमाण नहीं होसक्ता तथाहि पूर्वं हि प्रमाणसिद्धौ नेन्द्रियार्थसन्निकर्षात्प्रत्यक्षोत्पत्तिः । यह गोतममुनि का सूत्र है जैसे कि गन्धादि विषय का जो प्रत्यक्ष ज्ञान सो गन्धादिकों का और नासिकादिक इन्द्रियों का सम्बन्ध होने से प्रत्यक्ष को उत्पत्ति होतो है अन्यथा नहीं और जो कोई कहै कि पहिले प्रमाण को उत्पत्ति होती है पीछे प्रमेय की अच्छा तो गन्धादिकों का तो सम्बन्ध भी उत्पन्न नहीं भया उनके सम्बन्ध से

बिना प्रत्यक्ष की उत्पत्तिही नहीं होती फिर इन्द्रियार्थ सन्नि-कर्षोत्पन्नं ज्ञानमित्यादि प्रत्यक्ष का जो लक्षण किया है सो व्यर्थ हो जायगा क्योंकि आप ने प्रमाण की उत्पत्ति प्रमेय के सम्बन्ध से पूर्वही मानी है इससे आपके मतमें यह दोष आवेगा अच्छा तो मैं प्रमेयों के सम्बन्ध के पीछे प्रमाणों की उत्पत्ति मानता हूं फिर क्या दोष आवेगा अच्छा सुनो सूत्र ॥ पश्चात्सिद्धौनप्रमाणेभ्यः प्रमेयसिद्धिः। पहिले प्रमेय की सिद्धि मानेंगे तो प्रमाणोंही से प्रमेय की सिद्धि होती है यह जो आप का कहना सो मिथ्या होजायगा जो आप एक सङ्ग प्रमाण और प्रमेय मानेंगे तो भी यह दोष आवेगा सूत्र ॥ युगपत्सिद्धौप्रत्यर्थ-नियतत्वात्क्रमवृत्तित्वाभावोबुद्धीनाम्। यह जो बुद्धि है सो एक विषय को जान कर दूसरे विषय को जान सक्ती है दोनोंको एक समय में नहीं जान सकती जैसे कि एक वस्तु को देखा देख के जब रूप की बुद्धि होती है तब इतना यह वस्तु भारी है उसको न जानैगी और जब भार का मन विचार करता है तब रूपका नहीं कर सकता जब रूप का तब भार का नहीं ॥ सूत्र। युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसोलिङ्गम्। एक काल में दोनों ज्ञानको न ग्रहण करै किन्तु एक को ग्रहण करके फिर दूसरे का ग्रहण करै उसी का नाम मन है वैसेही प्रमाण और प्रमेय एककाल में दोनों का ज्ञान कभी नहीं होता जिस समय प्रमाण का ज्ञान होता है उस समय प्रमेय का नहीं जिस समय प्रमेय का ज्ञान होता है उस समय प्रमाण का नहीं यह सब जीवों को अनुभव सिद्ध बात है इस बात में आप के कहने से दोष आवेगा ऐसा भी कहना आप को उचित नहीं इस पूर्वपक्ष का यह समाधान है कि ॥ सूत्र । उपलब्धिहेतोरुपलब्धिविष-यस्यचार्थस्यपूर्वापरसहभावानियमाद्यथादर्शनम्विभागवचनम् ॥ भाष्य उपलब्धि का हेतु नाम प्रकाशक जिस्से कि ज्ञान होता

है और उपलब्धि का विषय जिसका ज्ञान होता है जैसा कि घटादिक इनका पूर्वा पर सह भाव नाम यह इस्से पूर्व वा यह पर ऐसा नियम नहीं सर्वत्र देखने में आता इस्से जैसा जहां योग्य होय वैसा वहां लेना चाहिये देखना चाहिये कि सूर्य का दर्शन तो पीछे होता है और दो घड़ी रात्रि से पहिलेही प्रकाश हो जाता है उस्से वस्त्रादिक पदार्थों का पहिलेही दर्शन होजाता है जब दीप को जलाते हैं तब दीप का दर्शन तो पहिले होता है फिर दीप के प्रकाश से अन्य सब पदार्थों का दर्शन पीछे होता है सूर्य और दीप अपना प्रकाश आपही करते हैं और अन्य पदार्थों का भी एक कालमें प्रकाश करते हैं यह तो दृष्टान्त हुआ वैसाही प्रमाणों के दृष्टान्त में जानना चाहिये कहीं तो पहिल प्रमाण होता है कहीं प्रमेय अन्य समय में दोनों एकही सङ्ग में होते हैं जैसे कि ॥ सूत्र। त्रैकाल्यासिद्धेः प्रतिषेधानुपपत्तिः। आपने प्रत्यक्षादिक प्रमाणों का जो निषेध किया सो तीनों कालों को मान के किया अथवा नहीं जो आप भूत काल नाम बीते भये कालमें प्रमाणों की सिद्धि न मानेंगे तो आपने निषेध किसका किया और जो भविष्यत्काल में होने वाले प्रमाणों का आपने निषेध किया तो प्रमाण उत्पन्न भी नहीं भये पहिले निषेध कैसे होगा और जो वर्तमान कालमें प्रत्यक्षादि प्रमाण सिद्ध हैं तो तिन्हों का निषेध कोई कैसे करेगा ॥ सूत्र। सर्वप्रमाणप्रतिषेधाच्च प्रतिषेधानुपपत्तिः। किसी प्रमाण को आप न मानेंगे तो आपके प्रतिषेध की प्रमाण से सिद्धि कैसे होगी जब प्रतिषेध में कोई प्रमाण नहीं है तब प्रतिषेध अप्रमाण होगा तब कोई शिष्ट इस प्रमाण के निषेध को न मानेगा वह आप का निषेधही व्यर्थ होगया इस्से आप को भी प्रमाणों को अवश्य मानना चाहिये ॥ सूत्र। त्रैकाल्याप्रतिषेधश्च शब्दादातोद्यसिद्धिवत्तत्सिद्धेः

तीन कालों का निषेध नहीं हो सकता जैसे कि वीणा अथवा बांसुलि वा कोई वादित्र कोई दूर बजाता होय उनका शब्द दूसरे सुनके पूर्व सिद्ध वादित्र को जान लिया जाता है कि यह वीणा का शब्द है और जब वीणा देखी तब भविष्यत्काल में जो होने वाला शब्द उसको जान लिया कि वीणा आगे बजाने से शब्द होगा और जब सम्मुख वीणा को और उसके शब्द को भी एक काल में देखता और सुनता है तब वीणा और वीणा के शब्द को भी जान लेता है वैसीही व्यवस्था प्रमाणों की जान लेना ॥ सूत्र । प्रमेयताचतुलाप्रामाण्यवत् । जैसे कि तुला पदार्थों के तोलने के लिये प्रमाण की नाईं है तुलासेही घृता-दिक द्रव्यों को तौल के प्रमाण कर लेते हैं इसमें तुला तो प्रमाण स्थानी है और घृतादिक प्रमेय स्थानी हैं परन्तु वही तुला दूसरी तुला से तौली जाय तब प्रमेय संज्ञा भी उसकी होती है वैसेही जब प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से रूपादिक विषयों को चक्षुरादिकों से हम लोग देखते हैं तब तो प्रत्यक्षादिक और चक्षुरादिक प्रमाण हैं रूपादिक विषय प्रमेय हैं और जब प्रत्यक्षादिक क्या होते हैं ऐसी आकांक्षा होगी तब वेही प्रमेय हो जायगे क्योंकि ऐसे लक्षण वाले को प्रत्यक्ष प्रमाण कहना और ऐसा लक्षण जिसका होय वह अनुमान होता है इत्या-दिक सब जान लेना तीन प्रकार से शास्त्र की प्रवृत्ति होती है १ एक उद्देश, २ दूसरा लक्षण, और ३ तीसरी परीक्षा, उद्देश जिसका नाम है कि नाम मात्र से पदार्थ की गणना करनी जैसा कि द्रव्य गुण कर्म सामान्य विशेष और समवाय लक्षण जिसका नाम है कि निश्चित जो जिसका धर्म है उससे पृथक् कभी न होय जैसा कि पृथिवी में गन्ध जलमें रस इत्यादिक गन्धही पृथिवी को जनाता है और गन्धही से पृथिवी जानी जाती है गन्ध रसादिकों से विशेष है और गन्ध से रसादिक

विशेष हैं परस्पर ये गन्धादि वे निवर्तक और ज्ञापक हो जाते हैं इसे गन्ध पृथ्वी का लक्षण है और रसादिक जलादिकों का लक्षण हैं। गन्ध का लक्षण नासिका, नासिका का लक्षण मन, मन का लक्षण आत्मा, आत्मा का लक्षण भी आत्माही है और कोई नहीं लक्षण का भी लक्षण होता है वा नहीं लक्षण का लक्षण कभी नहीं होता जो कोई लक्षण का लक्षण कहता है सो मूर्ख पुरुष है वा जिसने ग्रन्थ में लिखा है वह भी मूर्ख पुरुष है क्योंकि पृथ्वी का लक्षण गन्ध है गन्ध का लक्षण नासिका सो नासिका के प्रति गन्ध लक्ष्य है क्योंकि नासिकाही से गन्ध जाना जाता है और नासिका मन से जानी जाती है इसे नासिका का लक्षण मन है नासिका मन का लक्ष्य है मन का लक्षण आत्मा है क्योंकि आत्माही से मन जाना जाता है आत्मा के प्रति मन लक्ष्य है क्योंकि मेरा मन सुखी वा दुःखी है सो आत्मा मन कोही जान के कहता है इसे मन आत्मा का लक्ष्य है (आत्मा और परमात्मा परस्पर लक्ष्य और लक्षण हैं क्योंकि आत्मा परमात्मा को जान सक्ता है और अपने को आप भी जान लेता है तथा परमात्मा सब काल में आत्माओं को जानता है और आप को भी आप सदा जानता है वे अपने आपही को लक्ष्य और लक्षण भी हैं) इसे आगे जो तर्क करना है सो मूढ़ही का धर्म है क्योंकि इसके आगे जो तर्क कुतर्क करता है उसका ज्ञान और बुद्धि नष्ट होजाती है इसे सज्जनों को और बुद्धिमानों को अवश्य जानना चाहिये कि यही ज्ञान की परम सीमा है और यही परम पुरुषार्थ है जो कोई लक्षण का लक्षण कहता है उसके मत में अनवस्था दोष प्रसङ्ग आवेगा कहीं भी अवस्था न होगी क्योंकि लक्षण का लक्षण उसका लक्षण २ ऐसा वाद करता २ मर जायगा कुछ हाथ नहीं आवेगा और जैसा कि लक्षण का लक्षण करता है वैसा लक्ष्य का लक्ष्य

उसका लक्ष्य २ यह भी अनवस्था दूसरी उसके मनमें आवेगी इससे बुद्धिमानों को ऐसी बात न कहनी चाहिये और न सुननी चाहिये कुछ थोड़ी सी प्रमाणों के विषय में परीक्षा लिख दी है और अधिक जानने की जिसको इच्छा होय वह गोतमसूत्र के २ ध्याय से लेके ५ पंचमाध्याय की पूर्त्ति पर्य्यन्त देख लेवै इतने ४ प्रमाण हैं परन्तु ४ चारों में और ४ चार प्रमाण मानना चाहिये॥ नचतुष्ट्वमैतिह्यार्थापत्तिसम्भवाभावप्रामाण्यात्। यह गोतममुनि का पूर्वपक्ष का सूत्र है ४ चारही प्रमाण नहीं किन्तु ८ आठ प्रमाण हैं ऐतिह्य नाम जो बहुत काल से सुनते सुनाते चले आये उसका नाम ऐतिह्य है अर्थापत्ति किसी ने किसी से कहा कि बादल के होनेही से वृष्टि होती है इससे क्या आया कि बिना बादल से वृष्टि नहीं होती इसका नाम अर्थापत्ति है सम्भव नाम मण के जानने से आधा मण पसेरी सेर और छटांक को जो बिचार से ज्ञान होजाय उसका नाम सम्भव है क्योंकि मण ४० सेर का होता है उसका आधा २० सेर होगा २० सेर के चतुर्थांश की पसेरी होगी उसका ५ पांचवां अंश सेर होगा सेर का १६ सोलहवां अंश छटांक होगा ऐसा विचार करने से जो ज्ञान होता है उसका नाम सम्भव है यह सप्तम प्रमाण है आठवां अभाव किसी ने किसी से कहा कि तूं अलक्षित नाम अदृष्ट मनुष्य को ला जो कि तूने नहीं देखा है वह लाके जिसको उसने कभी न देखा था उसी को ले आवेगा देखने के अभाव से उसको ज्ञान होगया इससे अभाव भी आठवां प्रमाण मानना चाहिये इसका समाधान यह है कि॥ सूत्र । शब्दऐतिह्यानर्थान्तरभावादनुमानेऽर्थापत्तिसम्भवाभावानर्थान्तरभावाच्चाप्रतिषेधः । चारही प्रमाण मानना चाहिये उसका जो आप ने निषेध किया सो अयुक्त है क्योंकि आप्तों का उपदेश जो है सो शब्द है उसी में ऐतिह्य भी आगया क्योंकि

देव श्रेष्ठ होते हैं और असुर अश्रेष्ठ होते हैं यह भी तो आप्तोंही के उपदेश से सत्य २ जाना जाता है मूर्खों के उपदेश से कभी नहीं वैसेही प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष को जानना उसका नाम अनु-मान है इस अनुमान में अर्थापत्ति सम्भव और अभाव ये तीनों गणना कर लीजिये इससे चारही प्रमाण का मानना ठीक है यह गोतममुनि का अभिप्राय है पूर्व मीमांसा दर्शन और वैशेषिक दर्शन में प्रत्यक्ष और अनुमान दो प्रमाण माने हैं तथा योग-शास्त्र और सांख्यशास्त्र में प्रत्यक्ष अनुमान और शब्द तीन प्रमाण माने हैं वेदान्त शास्त्र में प्रत्यक्ष अनुमान उपमान शब्द अर्थापत्ति और अनुपलब्धि ये छः प्रमाण माने हैं और जो कोई आठ प्रमाण मानें तो भी कुछ दोष नहीं इन उक्त प्रमाणों से ठीक २ परीक्षा करके शास्त्र को पढ़ै वा पढ़ावै और जो पुस्तक इन प्रमाणों से विरुद्ध होय उनको न पढ़ै और न पढ़ावै इनसे विरुद्ध व्यवहार अथवा परमार्थ कभी न करना और मानना भी न चाहिये ॥(अथ पठन पाठन विधिं वक्ष्यामः) प्रथम तो अ-ष्टाध्यायी को पढ़ै और पढ़ावै सो इस क्रम से वृद्धिरादैच् यह तो पाठ भया वृद्धिः आत् ऐच् यह पदच्छेद भया आदैचां वृद्धि संज्ञा स्यात् यह सूत्र का अर्थ है कि आ, ऐ, और औ, इन तीन अक्षरों को वृद्धि संज्ञा कि वृद्धि नाम है इस प्रकार से पाणिनि मुनिजी को जो बुद्धिमान् अष्टाध्यायी के आठ अध्यायों को पढ़ै सो छः महीने में अथवा आठ महीने में पढ़ लेगा इसके पीछे धातुपाठ को पढ़ै उसमें भवति भवतः भवन्ति इत्या-दिक तिङन्त रूपों को और भावः भावौ भावाः इत्यादिक सुबन्त रूपों को उन्हीं सूत्रों से साथ २ के पढ़ले तीन मास में दशगण दशलकार और बुभूषति इत्यादिक प्रक्रिया के रूपों को भी पढ़ लेगा वही सब अष्टाध्यायी के सूत्रों के उदाहरण और प्रत्युदाह-रण होवेंगे इसके पीछे उणादि और गणपाठ को पढ़ै उसमें वायुः

वायू वायवः इत्यादिक रूप और बहुत से शब्दों का ज्ञान होगा एक मास में उसको पढ़ लेगा उसके पीछे सर्व विश्व उभ उभय इत्यादिक गणपाठ के साथ अष्टाध्यायी की द्वितीयानुवृत्ति नाम दूसरी बार पढ़े उसके सूत्रों में जितने शब्द हैं और जितने पद हैं उनको सूत्रों से सिद्ध कर लेवेगा और सर्वादि शब्दों के सर्वः सर्वौ सर्वे ऐसे पुल्लिङ्ग में रूप होते हैं सर्वा सर्वे सर्वाः इत्यादिक स्त्रीलिङ्ग में रूप होते हैं और सर्वं सर्वे सर्वाणि इत्यादिक नपुंसक में रूप होते हैं इनको भी पढ़ लेवै सूत्रों से साध के ऐसे दूसरी बार अष्टाध्यायी को ४ वा ६ छः मास में पढ़ लेगा इस प्रकार से १६ वा १८ अठारह मास में पाणिनि मुनि के किये ४ चार ग्रन्थों को पढ़लेगा फिर इसके पीछे पतञ्जलि मुनि का किया महाभाष्य जिसमें अष्टाध्याय्यादिक चार ग्रन्थों की यथावत् व्याख्या है बहुत से वार्त्तिक सूत्र हैं सूत्रों के ऊपर और अनेक परिभाषा हैं अनेक प्रकार के शास्त्रार्थ, शङ्का और समाधान हैं उनको यथावत् पढ़ले जब उसको पढ़लेगा तब सब व्याकरण शास्त्र उसका पूर्ण हो जायगा वह महा वैय्याकरण कहावेगा फिर विद्वान् संज्ञा भी उसको हो जायगी सो अठारह १८ महीने में सब महाभाष्य का पढ़ना संपूर्ण हो जायगा ऐसे मिलके ३ वर्ष तक व्याकरण शास्त्र संपूर्ण होगा उसके संपूर्ण पठन होने से अन्य सब शास्त्रों का पढ़ना सुगम हो जायगा इसमें कोई सज्जन को शङ्का मत हो कि यह बात सत्य नहीं है किन्तु इस प्रकार से पढ़ना और पढ़ाना होय तीन ३ वर्ष में संपूर्ण व्याकरण को पढ़े और पूर्त्ति न होय तब शङ्का करनी चाहिये पहिले जो शङ्का करनी सो व्यर्थही है इससे जिन पुरुषों का बड़ा भाग्य होगा वेही इस रीति में प्रवृत्त होंगे और उनको शीघ्र विद्या भी हो जायगी वे बहुत सुख पावेंगे और जो भाग्यहीन हैं वे तो सुख की रीति को कभी न मानेंगे

व्याकरण के नाम से जो जाल रूप कौमुद्यादिक ग्रन्थ चन्द्रिका सारस्वतादिक और मुग्ध बोधादिकों के ५० वर्ष तक पढ़ने से भी जैसा बोध नहीं होता है उस्से हजारगुणा अष्टाध्याय्यादिक सत्य ग्रन्थों के पढ़ने से तीन वर्ष मेंही बोध हो जाता है इसमें बिचार करना चाहिये कि सत्य ग्रन्थों के पढ़ने में बड़ा लाभ होता है वा मिथ्या जालरूप ग्रन्थों के पढ़ने में जालरूप ग्रन्थों के पढ़ने से कुछ भी लाभ नहीं होगा क्योंकि जाल रूप ग्रन्थों में इस प्रकार का व्यर्थ बिवाद लिखा है उसको पढ़ाने और पढ़ने वाले भी वैसेही हठी, दुराग्रही और विरुद्ध वादी होंगे ऐसेही देख भी पड़ते हैं क्योंकि जैसा ग्रन्थ पढ़ेगा वैसीही बुद्धि उसकी होगी इस प्रकार का बड़ा एक जाल बनाया है कि मरण तक एक शास्त्र भी पूर्ण नहीं होता उसको अन्य शास्त्र पढ़ने का अवकाश कैसे होगा कभी न होगा एक शास्त्र के पढ़ने से मनुष्य की बुद्धि संकुचितही रहती है विस्तृत कभी नहीं होती सब दिन उसको शंकाही बनी रहती है सब पदार्थों का निश्चय कभी नहीं होता और जो व्याकरण का पढ़ना है सो तो वेदादिक अन्यशास्त्रों के पढ़ने केही लिये है जब वह एक व्याकरणही में बाद बिवाद करता २ मर जायगा तब हांथ में उसके कुछ भी न आवेगा इस्से सब सज्जन लोगों को ऋषि मुनियों की पठन पाठन की जो रीति है उसी में चलना चाहिये जाली लोगों की रीति में कभी नहीं क्योंकि आर्य्यावर्त्त मनुष्यों के बीच में कपिलादिक ऋषि मुनि जितने भये हैं वे बड़े विद्वान् और बड़े धर्मात्मा पुरुष भये हैं उनके सहस्रांश में भी इस समय जो आर्य्यावर्त्त में मनुष्य हैं वे बुद्धि, विद्या और धर्माचरण में नहीं देख पड़ते इस लिये उनका आचरण हम लोगों को करना उचित है कि उसी से आर्य्यावर्त्त की लोगों की उन्नति होगी अन्यथा कभी नहीं व्याकरण को तीन

र्ष तक सम्पूर्ण पढ़के कात्यायनादि मुनि कृत जो कोश यास्क मुनिकृत जो निघण्टु और यास्क मुनिकृत निरुक्त को पढ़ै और पढ़ावै उसमें अव्ययार्थ एकार्थ कोश और अनेकार्थ कोश नाम और नामियों का आप्तों के किये संकेत से जो सम्बन्ध हैं डेढ़ वर्ष के बीच में उसका ज्ञान होजायगा उसके पीछे पिङ्गल मुनि के किये जो छन्दों के सूत्र भाष्य सहित को पढ़ै पीछे यास्कमुनि के किये काव्यालङ्कार सूत्र और उसके ऊपर वात्स्यायन मुनि के भाष्य को पढ़ै उससे गायत्र्यादिक छन्दों का काव्य अलङ्कार और श्लोक रचने का भी यथावत् ज्ञान छः मास में होवेगा और अमर कोशादिक जो कोश ग्रन्थ और श्रुतबोधादिक जो छन्दो ग्रन्थ वे सब जाल ग्रन्थही हैं इनके दश वर्ष में पढ़ने से भी बोध नहीं होता सो उक्त निघंट्वादिक सत्यशास्त्रों के पढ़ने से दो वर्ष में होगा इससे इनकाही पढ़ना और पढ़ाना उचित है इसके पीछे पूर्व मीमांसाशास्त्र को पढ़ै जो कि जैमिनि मुनि के किये सूत्र हैं उनके ऊपर व्यासमुनि जीकी की अधिकरणमाला व्याख्या के सहित पढ़ै चार मास के बीच में पढ़ लेगा और (इसी शास्त्र के साथ मनुस्मृति को पढ़ै सो एक मास में मनुस्मृति को पढ़लेगा) उसके पीछे वैशेषिकदर्शन जो कि कणादमुनि के किये सूत्र हैं उसके ऊपर गोतममुनि जी का किया जो प्रशस्त पादभाष्य और भरद्वाज मुनिको किये सूत्रों की वृत्ति के सहित को पढ़ै उसके पढ़ने में दो मास जांयगे उसके पीछे न्यायदर्शन जो कि गोतममुनि के किये सूत्र उनके ऊपर वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य उसको पढ़ै इसके पढ़ने में चार मास जांयगे इसके पीछे पातञ्जल दर्शन नाम योगशास्त्र जो कि पतञ्जलि मुनि के किये सूत्र उसके ऊपर व्यासमुनि जी का किया भाष्य इसको एक मास में पढ़ लेगा उसके पीछे सांख्यदर्शन जो कि कपिलमुनि के किये सूत्र उनके ऊपर भागुरि

मुनि का किया भाष्य इसको भी एक मास में पढ़लेगा इसके पीछे (ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्ड, मांडूक्य, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, और वृहदारण्यक इन दश उपनिषदों को) पांच महीने के बीच में पढ़लेगा और इसके पीछे वेदान्तदर्शन को पढ़ै जो कि व्यास मुनि के किये सूत्र उनके ऊपर वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य अथवा बौधायन मुनि का किया भाष्य वा शङ्कराचार्य जी का किया भाष्य पढ़ै जब तक बौधायन और वात्स्यायन मुनि का किया भाष्य मिले तब तक अन्य भाष्य को न पढ़ै इसको छः मास में पढ़लेगा इनको छः शास्त्र कहते हैं इनके पढ़ने में दो वर्ष काल जायगा दोवर्ष के बीच में सब पदार्थ विद्या पुरुष को यथावत् आवैगी और इनके विषय में बहुत से जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं जैसे कि पाराशर स्मृत्यादिक १७ सतरह पूर्व मीमांसा शास्त्र के विषय में जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं तथा वैशेषिकदर्शन और न्यायदर्शन के विषय में तर्कसंग्रह, न्यायमुक्तावली, जगदीशी, गदाधरी, और मथुरानाथी इत्यादिक जालग्रन्थ लोगों ने रचे हैं ऐसेही योगशास्त्र के विषय में हठ प्रदीपिकादिक मिथ्या ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं तथा सांख्य शास्त्र के विषय में सांख्य तत्त्व कौमुद्यादिक जाल ग्रन्थ लोगों ने रचे हैं और वेदान्तशास्त्र के विषय में पञ्चदशी, वेदान्त, संज्ञा, वेदान्तमुक्तावली, आत्मपुराण, योगवाशिष्ठ और पूर्वोक्त दश उपनिषदों को छोड़ के गोपालतापिनी, नृसिंहतापिनी, रामतापिनी और अल्लोपनिषत् इत्यादिक बहुत उपनिषद् जाल करके लोगों ने रची हैं वे सब सज्जनों को त्याग करने के योग्य हैं इन जाल ग्रन्थों में जो कुछ सत्य है सो सत्य शास्त्रोंही का विषय है उसका लिखना ग्रन्थान्तर में अयुक्त है क्योंकि जो बात सत्य शास्त्रों में लिखीही है उसका फिर लिखना व्यर्थ है जैसे कि पीसे भये पिसान को फिर पीसना वैसाही यह है

किन्तु पिसान भी उड़ जायगा तथा सत्यशास्त्र की बात भी उनके हाथ से उड़जायगी और जो सत्यशास्त्रों से विरुद्ध बात है सोतो कपोल कल्पित मिथ्याही है इससे इनका पढ़ना और पढ़ाना मिथ्याही जानना चाहिये इससे कुछ फल न होगा और जो कोई पढ़ता है वा पढ़ेगा एक शास्त्र की मरण तक भी पूर्त्ति न होगी और कुछ बोध भी उसको न होगा इससे सज्जन लोगों को सत्यशास्त्रोंही का पढ़ना और पढ़ाना उचित है जाल ग्रन्थों का कभी नहीं पूर्व पक्ष छः शास्त्रों में भी अन्योन्यविरोध और परस्पर खण्डन देख पड़ता है एक का दूसरे से दूसरे का तीसरे से ऐसाही सर्वत्र है जैसा कि जाल ग्रन्थों में एक शास्त्र के विषय में बहुत सी परस्पर विरुद्ध टीका और मूल ग्रन्थ हैं वैसाही विरोध सत्यशास्त्रों में भी देख पड़ता है जो दोष आप ने जाल ग्रन्थों में दिया वही दोष सत्यशास्त्रों में भी आया फिर सत्य-शास्त्रों का पढ़ना और जालग्रन्थों का न पढ़ना आप कहते हैं इसमें क्या प्रमाण है उत्तर कि यह आप लोगों को जालग्रन्थों के पढ़ने और सुनने से भ्रान्ति होगई है कि सत्यशास्त्रों में भी विरोध और परस्पर खण्डन है यह बात आप लोगों की मि-थ्याही है देखना चाहिये कि आज काल के लोग टीका वा ग्रन्थ रचते हैं सो द्वेष बुद्धिही से रचते हैं कि अपनी बात मिथ्या भी होय तो भी सत्य कर देते हैं तब सब लोग उसको कहते हैं कि वह बड़ा पण्डित है इस प्रकार के जो धूर्त्त मनुष्य हैं वेही टीका वा ग्रन्थ रचते हैं उनमें इसी प्रकार की मिथ्या धूर्त्तता रखते हैं उनको जो पढ़ता है वा पढ़ाता है उसकी भी बुद्धि वैसीही भ्रष्ट हो जाती है सो मिथ्या वाद मेंही प्रवृत्त होता है और सत्य वा असत्य का विचार कभी नहीं कर्त्ता उसको तो यही प्रयोजन रहता है कि दूसरे की सत्य बात को भी खण्डन करके अपनी मिथ्या बात को मण्डन करके जिस किस प्रकार

से दूसरे का पराजय करना अपना विजय करलेना उससे प्रतिष्ठा करना और धन लेना पीछे विषय भोग करना यही आज काल के पण्डितों की क्षुद्रबुद्धि और सिद्धान्त हो गया है इस प्रकार के कितने मौलवी और पादरी लोग भी देखने में आते हैं पण्डितादिकों में कोई जो सत्य कथन करै तब वे सब धूर्त्त लोग उससे विरोध करते हैं उसका नाम नास्तिक रखते हैं और उससे सब दिन विरोधही रखते हैं क्योंकि उनकी बुद्धि वैसीही है इस दोष के होने से सत्य शास्त्रों का जो यथावत् अभिप्राय है उसको जानते भी नहीं इससे वे कहते हैं कि सत्यशास्त्रों में भी परस्पर विरोध है परन्तु मैं आप लोगों से कहता हूं कि छः शास्त्रों में लेशमात्र भी परस्पर विरोध नहीं है क्योंकि इनका विषय भिन्न २ है और जो विरोध होता है सो एक विषय में परस्पर विरुद्ध कथन के होने से होता है जैसे कि एक ने कहा गन्धवाली जो होती है सो पृथ्वी कहाती है इसी विषय में दूसरे ने कहा कि नहीं जो रस वाली होती है सोई पृथ्वी होती है क्योंकि पृथ्वी में चार मिष्टादिकरस प्रत्यक्ष देख पड़ते हैं इस प्रकार के विषय को विरोध जानना चाहिये और जो ऐसा कहै कि गन्धवाली जो पृथ्वी होती है और रसवाला जल होता है सो एक तो पृथ्वी के विषय में व्याख्या करता है और दूसरा जल के विषय में दोनों का विषय भिन्न होने से व्याख्या भी भिन्न होगी परन्तु उसका नाम विरोध नहीं जैसे कि किसी ने ज्वर के विषय में चिकित्सा निदान औषध और पथ्य को लिखा और दूसरे ने कफ के विषय में चिकित्सादिक लिखे उसको विरोध नहीं कहना चाहिये वैसाही षट् शास्त्रों के विषय और भी सब वेदादिक शास्त्रों के विषय में जानना चाहिये जैसे कि (धर्मशास्त्र नाम पूर्व मीमांसा में धर्म और धर्मी दो पदार्थों को मानते हैं) और कर्मकाण्ड जो कि वेदोक्त है

सन्ध्योपासन से लेके अश्वमेध पर्य्यन्त कर्मकाण्ड कहा है अब इसमें आकाङ्क्षा होती है कि धर्म और धर्मी किसको कहते हैं तब इसी को वैशेषिक दर्शन में स्पष्ट व्याख्या की है कि जो द्रव्य है सो तो धर्मी है और गुणादिक सब धर्म हैं फिर भी आकाङ्क्षा होती है कि गुण को क्यों नहीं द्रव्य और द्रव्य को क्यों नहीं गुण कहते उसका विचार न्यायदर्शन में किया है कि जिन प्रमाणों से द्रव्य गुणादिक सिद्ध होते हैं उसको द्रव्य और उन्हीं को गुण मानना चाहिये सो तीनों शास्त्रों से श्रवण नाम सुनना और मनन नाम उसी का विचार करना इस बात तक लिखा उससे आगे जितने पदार्थ अनुमान से सिद्ध होते हैं उतने प्रत्यक्ष से जैसा तीन शास्त्रों में कहा है वैसाही है अथवा नहीं उसको विशेष विचार से और योगाभ्यास से उपासना काण्ड जो कि चित्तवृत्ति के निरोध से लेके कैवल्य पर्य्यन्त उपासना काण्ड कहाता है उसकी रीति योगशास्त्र में लिखी है जो देखना चाहै सो उसमें देख लेवै सब के तत्त्व को यथावत् जानना चाहिये इस लिये योगशास्त्र है फिर कितने भूत और तत्त्व हैं उसकी भिन्न २ गणना और वैसाही निश्चय का होना उस लिये सांख्य शास्त्र का आवश्यक रचन हुआ इन पांच शास्त्रों का महाप्रलय तक व्याख्यान है जिसमें कि स्थूल भूतों का नाश होता है और सूक्ष्मों का नहीं फिर उसी सूक्ष्म भूतों से जैसी उत्पत्ति स्थूल की होती है और जिस प्रकार से प्रलय होता है वह बात सब लिखी है महाप्रलय तक परमाणु और प्रकृत्यादिक सूक्ष्म भूत बने रहते हैं उनका लय नहीं होता फिर कार्य्य और परम कारण का विचार वेदान्त शास्त्र में किया कि सब प्रकृत्यादिक भूतों का एक अद्वितीय अनादि परमेश्वरही कारण है और परमेश्वर से भिन्न सब कार्य्य हैं क्योंकि परमेश्वरही में सब

प्रकृत्यादिक सूक्ष्म भूत रचे हैं सो परमेश्वर के सामने तो संसार सब आदि है और अन्य जीवों के सामने अनादि परमाणु प्रकृत्यादिक भूत भी अनित्य हैं क्योंकि परमाणु और प्रकृति इनका ज्ञान अनुमान से होता है वैसा नाश भी अनुमान से हम लोग जान सक्ते हैं परमेश्वर तो सब जगत का रचने वाला है अन्य ब्रह्मादिक देव और सब मनुष्य शिल्पी हैं क्योंकि नवीन पदार्थ रचने का किसी का सामर्थ्य नहीं है बिना परमेश्वर के जगत् का रचने वाला कोई नहीं है सो वेदान्त शास्त्र में ज्ञान काण्ड का निश्चय किया है जो कि निष्काम कर्म से लेके परमेश्वर की प्राप्ति पर्यन्त ज्ञानकाण्ड है निष्काम कर्म यह है कि परमेश्वर की प्राप्ति जो मोक्ष उसके बिना भिन्न फल कर्मों से नहीं चाहना सो निष्काम कर्म कहाता है इससे विचारना चाहिये कि षट्शास्त्रों में कुछ भी विरोध नहीं है किन्तु परस्पर सहायकारी शास्त्र हैं सब शास्त्र मिलके सब पदार्थ-विद्या छः शास्त्रों में प्रकाश कर दी है और उक्त जो जाल पुस्तक हैं उनमें केवल विरोधही है उनका पढ़ना और पढ़ाना व्यर्थही है किन्तु सत्य शास्त्रों के पठन न होने से और जाल ग्रन्थों के पढ़ने से आर्य्यावर्त्त देश के लोगों की बड़ी हानि हो गई है इससे सज्जन लोगों का ऐसा करना उचित है कि आज तक जो कुछ भ्रष्टाचार भया सो भया इससे आगे हमलोगों के ऋषि मुनि और श्रेष्ठ राजा लोग जो कि पहिले भये थे उनकी जो मर्यादा और वेदादिक सत्यशास्त्रोक्त जो मर्यादा उसी पर चलने से और सब पाखण्डों को छोड़नेही से आर्य्यावर्त्त देश की बड़ी उन्नति होगी अन्य प्रकार से कभी न होगी. इन सब शास्त्रों को पढ़के ऋग्वेद को पढ़े उसका आश्वलायनकृत जो श्रौत सूत्र बहृच जो ऋग्वेद का ब्राह्मण और कल्पसूत्र इनके साथ २ मन्त्रों का अर्थ पढ़े और स्वर को भी पढ़े सो दो वर्ष

के भीतर सब ऋग्वेद को पढ़ लेगा तथा (यजुर्वेद की संहिता उसके साथ २ कात्यायन, श्रौतसूत्र, तथा गृह्यसूत्र तथा शतपथ ब्राह्मण स्वर अर्थ और हस्तक्रिया के सहित यथावत् पढ़ै) डेढ़ वर्ष तक यजुर्वेद को पढ़ लेगा इसके पीछे सामवेद को पढ़ै गोभिल श्रौतसूत्र तथा राणायनश्रौतसूत्र और कल्पसूत्र साम ब्राह्मण तथा गोभिल राणायन गृह्यसूत्र के साथ २ पढ़ै दो वर्ष में सब सामवेद को पढ़लेगा इसके पीछे अथर्ववेद को पढ़ै शौनकश्रौतसूत्र, शौनकगृह्यसूत्र, अथर्वब्राह्मण और कल्पसूत्र के साथ २ को एक वर्ष में पढ़लेगा ऐसे साढ़े छः वा सात वर्ष में चारो वेदों को पढ़लेगा चारो वेदों की जो संहिता है उन्हीं का नाम वेद है फिर उन्हीं वेदों की जितनी अन्य २ शाखा हैं वे सब वेदों के व्याख्यान हैं बिना पढ़े सब बिचार मात्र से आजांयगी तथा आरण्यक बृहदारण्यकादिक व्याख्यान हैं उनको भी बिचार करने से जानलेगा चारों वेदों को पढ़ के आयुर्वेद को पढ़ै जो कि ऋग्वेद का उपवेद है उसमें धन्वन्तरिकृत निघण्टु, चरक और सुश्रुत इन तोनों ग्रन्थों को शस्त्रक्रिया, हस्तक्रिया और निदानादिक बिषयों को यथावत् पढ़ै सो तीन वर्ष में पढ़लेगा और वैद्यकशास्त्र के विषय में शार्ङ्गधरादिक जाल ग्रन्थों को पढ़ना और पढ़ाना व्यर्थही जानना इसके पीछे यजुर्वेद का जो उपवेद धनुर्वेद उसको पढ़ै उसमें शस्त्र बिद्या जो कि शस्त्रों का रचना और शस्त्रों का चलाना और अस्त्र बिद्या जो कि आग्नेयास्त्रादिक पदार्थ गुणों से होते हैं उनको यथावत् रच लेना अग्न्यादिक अस्त्रों के बिषयों का बिस्तार राजधर्म में लिखेंगे और युद्ध समय में व्यूह की रचना यथावत् जान लेवै जैसे कि सूची व्यूह सूई का अग्र भाग तो बहुत सूक्ष्म होता है और उस अग्र भाग से पिछिले २ स्थूल होता है उससे सूत स्थूल होता है इसी प्रकार से सेना

को रचके शत्रु की सेना वा दुर्ग वा नगर में प्रवेश करें तब उसके विजय का सम्भव होता है ऐसेही शकटव्यूह, मकरव्यूह और गरुड़व्यूहादिकों को जान लेवे उसको दो वा तीन वर्ष में पढ़लेगा उसके आगे सामबेद का जो उपवेद गान्धर्व वेद उसको पढ़ै उसमें वादित्रराग, रागिणी, काल-ताल स्वरपूर्वक गान विद्या का अभ्यास करै दोवर्ष में उसको पढ़लेगा इसके आगे अथर्ववेद का जो उपवेद अर्थवेद नाम शिल्पशास्त्र उसमें नाना प्रकार कला यन्त्र और नाना प्रकार के द्रव्यों को मिलाने से नाना प्रकार व्यवहारों के यानों की और दूरवीक्षण, अणवीक्षण, नाम दूरस्थित पदार्थों को निकट देखें और अणवीक्षण नाम सूक्ष्म पदार्थ भी स्थूल देख पड़ें इत्यादिक पदार्थों को रचले जैसे कि अग्नि का ऊर्द्ध्वगमन स्वभाव है और जल का नीचे जाने का स्वभाव है सो किसी पात्र में जल को करके चूल्हे के ऊपर रखदे और उसके नीचे अग्नि करै फिर उतनेही भार वाले पात्र से उस पात्र का मुख बन्द करै जब अग्नि से जल ऊपर उड़ेगा तब इतना बल होजायगा कि ऊपर का पात्र नाचने लगेगा वा गिर पड़ेगा इसी प्रकार से पदार्थों के अनुकूल गुणों को और विरुद्ध गुणों को जानने से पृथ्वीयान, जलयान और आकाश यानादिक पदार्थों को रच लेगा जैसे कि महाभारत में उपरिचरवसु राजा इन्द्रादिक देव तथा राम लङ्का से अयोध्या को आकाश मार्ग से आया उपरिचरादिक राजा लोग और इन्द्रादिक देव वे भी आकाश मार्ग से जाते और आते थे तथा जैसे कि आज काल अङ्गरेज लोगों ने रेल तारादिक बहुत से पदार्थ रचे हैं वे सब शिल्प शास्त्र के विषय हैं और उनसे बहुत से उपकार हैं उसको भी तीनवर्ष में पढ़लेगा पढ़के पीछे अपनी बुद्धि से बहुत सी शिल्प विद्या की उन्नति करलेगा पीछे ज्योतिश्शास्त्र को पढ़ै उसमें

गणित विद्या यथावत् जानै उस्से बहुत सा उपकार होता है दो वा तीन वर्ष में उसको पढ़लेगा और ज्योतिश्शास्त्र में जो फल विद्या है सो व्यर्थही है भृग्वादिक मुनियों के किये सूत्र और भाष्यों को पढ़ैं मुहूर्त्त चिन्तामण्यादिक जालग्रन्थों को कभी न पढ़ै इस प्रकार से साढ़े २७॥ वा २८ वर्ष तक पढ़लेगा संपूर्ण विद्या उसको आजायगी फिर उसको पढ़ने की आवश्यकता कुछ न रहेगी सब विद्याओं से वह पूर्ण होके पुरुषों में पुरुषोत्तम होजायगा और उसके शरीर से संसार में बड़ा उपकार होगा क्योंकि जैसे अपने विद्या को पढ़ा है वैसेही पढ़ावेगा इस्से जैसा मनुष्यों का उपकार होता है वैसा किसी प्रकार से नहीं होता ऐसे ३६ वर्ष की जब आयु होगी तबतक पुरुषों को विद्या भी पूर्ण हो जायगी और जो पुरुष ४०, ४४, और ४८ वर्ष तक ब्रह्मचर्य्य रक्खेगा उस पुरुष के भाग्य और सुख को हम लोग नहीं कह सक्ते कि कितना होगा जिस देश में राज्याभिषेक जिसका होना होय वह तो सब विद्या से युक्त होवै और ३६, ४०, ४४ वा ४८ वर्षतक अवश्य ब्रह्मचर्याश्रम करै उसी को राजा होना उचित है क्योंकि जितने उत्तम व्यवहार हैं वे सब राजाही के आधीन हैं और सब दुष्ट व्यवहारों का बंध करना सो भी राजाही के आधीन है इस्से राजा और धनाढ्य लोगों को तो अवश्य सब विद्या पढ़नी चाहिये क्योंकि जो वे सब विद्याओं को न पढ़ेंगे तो अपने शरीर की भी रक्षा न कर सकेंगे फिर धर्मराज्य और धन की रक्षा तो कैसे करेंगे और जितनी कन्या लोग हैं वे भी पूर्वोक्त व्याकरण, धर्मशास्त्र, वैद्यकशास्त्र, गानविद्या और शिल्पशास्त्र इन पांच शास्त्रों को तो अवश्य पढ़ैं और जो अधिक पढ़ैं तो उनका सौभाग्य बड़ा होगा १६ वर्ष से न्यून ब्रह्मचर्य कन्या लोग कभी न करैं और जो १८, २० वा २४ वर्षतक ब्रह्मचर्याश्रम करेंगी तो उनको

अधिक २ सौभाग्य और सुख होगा जबतक स्त्री और पुरुष लोग उक्त रीति पर ब्रह्मचर्य्य से विद्या प्राप्त न करेंगे तो उनका अभाग्य और दुःखही जानना परस्पर स्त्री और पुरुषों का विरोध और भ्रान्ति होगी जिन व्यवहारों से सुख वृद्धि होती है उनको भी न जानेंगे सर्वदा दीन रहेंगे और प्रमाद से धनादिकों का नाश करेंगे कहीं प्रतिष्ठा और आजीविका भी उनकी न होगी परस्पर व्यभिचारी होंगे उस्से वीर्य्य का नाश होगा फिर बहुत से शरीर में रोग होंगे रोगों से सदा पीड़ित रहेंगे वे मूर्ख होंगे इस्से कभी सुख न पावेंगे इस्से सब स्त्री और पुरुष लोग सब पुरुषार्थ से अवश्य विद्याही को पढ़ें इस्से मनुष्यों को अधिक लाभ कोई नहीं है क्योंकि आपही अपना उपदेष्टा, रक्षक, धर्मग्राहक और अधर्म त्याग करनेवाला होता है इस्से बड़ा कोई लाभ नहीं है विद्या के पढ़ने और पढ़ाने में जितने विघ्न रूप व्यवहार हैं उनको जब तक मनुष्य नहीं छोड़ता तब तक उसको विद्या कभी नहीं होती प्रथम विघ्न बाल्यावस्था में जो विवाह का करना सोई बड़ा विघ्न है क्योंकि शीघ्र विवाह करने से विषयी होगा और विषयही की चिन्ता करेगा शरीर में धातु पुष्ट तो होंगे नहीं और सब धातुओं का सार जो कि सब धातुओं का राजा घर में जैसा कि दीपक प्रकाशक होता है जैसा ब्रह्माण्ड में सूर्य्य प्रकाशक है वैसाही शरीर में वीर्य है इस अपरिपक्व वीर्य और अत्यन्त वीर्य के नाश से बुद्धि, बल, पराक्रम, तेज और धैर्य का नाश हो जाता है आलस्य, रोग, क्रोध और दुर्बुद्धि इत्यादि ये सब दोष उसको हो जांयगे फिर कैसे उसको विद्या होसक्ती है कभी न होगी क्योंकि जितेन्द्रिय, धैर्यवान्, बुद्धिमान्, शीलवान्, विचारवान्, जो पुरुष होता है उसी को विद्या होती है अन्य को नहीं इस्से ब्रह्मचर्य्य का अवश्य करना उचित है दूसरा विद्या का

नाशक विघ्न पाषाणादिक मूर्त्तिपूजन, जटू पुंड, त्रिपुंड्रादिक तिलक, एकादशी, त्रयोदश्यादिकव्रत, काश्यादिक तीर्थों में विश्वास, राम, कृष्ण, नारायण, शिव, भगवती और गणेशादिक नामोंसे पाप नाश होनेका विश्वास यह भी विद्या धर्म और परमेश्वर की उपासना का बड़ा भारी विघ्न है क्योंकि विद्या का फल यही है कि परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना जो कि धर्म रूप है परमेश्वर को यथावत् जानना, मुक्ति का होना यथावत् व्यवहार और परमार्थ का धर्म से अनुष्ठान करना यही विद्या होने का फल है सोई फल मिथ्या बुद्धि से पाषाणादिक मूर्त्ति में और तिलकादिकों ही में मान लेते हैं और सम्प्रदायी लोग मिथ्या उपदेश करके धूर्त्तता और अधर्म का निश्चय करा देते हैं पोछे व सम्प्रदायो लोग ऐसे कहते और उनके चेले सुनते हैं कि मूर्त्ति पूजादिक प्रकारही से आप लोगों को मुक्ति होगी यही परम धर्म है ऐसा सुनके उन विद्याहीन मनुष्यों को निश्चय होजाता है कि यही बात सत्य है सब कहने और सुनने वाले वेसे हैं जैसे कि पशु हैं वे ऐसा भी कहते हैं कि सम्प्रदायी और नाममात्र से जो पण्डित लोग आजीविका के लोभ से यही बात वेद में लिखी है ऐसी बात कहने वाले और सुनने वाले ने वेद का दर्शन भी कभी नहीं किया वेद में इन बातों का सम्बन्ध लेशमात्र भी नहीं है परन्तु अन्ध परंपरा की नांई कहते और सुनते चले जाते हैं उनको सुख वा सत्य फल कुछ भी नहीं होता क्योंकि बाल्यावस्था से लेके यही मिथ्याचार करते रहते हैं कि इसका दर्शन अवश्य करैं और तिलक माला धारण करैं काश्यादिक तीर्थों में जाके वास करैं और नाम स्मरण करैं एकादश्यादिक व्रत करैं और पुष्प ले आवैं चन्दन घसैं धूप दीप करैं नैवेद्य धरैं परिक्रमा करैं पाषाणादिक मूर्त्ति का प्रक्षालन करके जल ग्रहण करैं और कूदैं नाचैं

कूदें और बाजे बजावें रथ यात्रादिकों का मेला करें और परस्पर व्यभिचार करें मेले में उन्मत्तवत् होके घूमते घुमाते इत्यादिक मिथ्या व्यवहारोंही में फसे रहते हैं फिर उनको विद्या लेशमात्र भी न आवैगी क्योंकि मरणतक उनको अवकाशही न मिलेगा फिर कैसे वे पढ़ें और पढ़ावेंगे यह विद्या का नाशक दूसरा विघ्न है तीसरा विघ्न यह है कि माता, पिता और आचार्यादिक पुत्र और कन्याओं को लाड़न मेंही रखते हैं कुछ शिक्षा वा ताड़न नहीं करते इस्से भी विद्या का नाशही होता है चौथा विघ्न यह है कि गुरु, पण्डित और पुरोहित ये तीनों विद्या तो पढ़ते नहीं फिर वे हृदय से यही चाहते हैं कि मेरे चेले और मेरे यजमान मूर्खही बने रहैं क्योंकि वे जो पण्डित हो जांयगे तो हम लोगों का पाखण्ड उनके सामने न चलेगा इस्से हम लोगों की आजीविका नष्ट हो जायगी इस लिये वे सदा पढ़ने पढ़ाने में विघ्नही करते हैं धनाढ्य और राजा लोगों के ऊपर अत्यन्त विघ्न करते हैं कि ये लोग विद्याहीन बने रहैं इनसे हम लोगों की आजीविका बड़ी है धनाढ्य और राजा लोग भी आलस्य और विषय सेवा में फस जाते हैं इस्से वे भी पढ़ना नहीं चाहते धनाढ्य वा राजपुत्र पढ़ना भी चाहैं तो बैरागी आदि सम्प्रदायी और पण्डित लोग छल और कपट रखते हैं यथावत् पढ़ाते भी नहीं यहांतक वे छल और विघ्न करते हैं कि चेला और पुत्र वा बन्धुपुत्र भी विद्यावान् न हो जाय क्योंकि उनकी प्रतिष्ठा होने से मेरी प्रतिष्ठा नष्ट होजायगी इस्से जो कुछ गुण जानते भी हैं उस को छिपा रखते हैं इस लिये विद्या लोप आर्य्यावर्त्त देश में होगया है सब लोगों को विद्या का प्रकाश करना उचित है किसी को भी विद्या गुप्त रखना योग्य नहीं और पांचवां विघ्न यह है कि भङ्गापान, अफीम और मद्यपान करने से बहुत सा प्रमाद

होता है और बुद्धि भी नष्ट होजाती है उससे भी विद्या का नाश होता है छठवां विघ्न यह है कि राजा और धनाढ्य लोगों का घाट, मन्दिर, चेचों में सदावर्त, विवाह, चयोदशाह, व्यर्थस्थान, और बागों के रचने में बहुत धन नष्ट होजाता है किन्तु गृहस्थ लोगों को जितना आवश्यक हो उतनाही स्थान रचैं निर्वाह मात्र विद्या प्रचार में किसी का धन नहीं जाता और विचार के न होने से गुणवान पुरुषों की प्रतिष्ठा भी नहीं होती किन्तु पाखण्डोंही की होती है इससे मनुष्यों का उत्साह भङ्ग होजाता है सप्तम विघ्न यह है कि पांचवें वर्ष पुत्रों वा कन्याओं को पाठशाला में पढ़ने के लिये नहीं भेजते उनके ऊपर राजा का दण्ड न होने से भी विद्या का नाश होता है और विषय सेवा में अत्यन्त फसजाते हैं इससे भी विद्या नहीं होती यह आठवां विघ्न विद्या का नाशक है इत्यादिक और भी विद्या नाश करने के विघ्न बहुत हैं उनको सज्जन लोग विचार करलेवैं जब सोलह वर्ष का पुरुष होय तब से लेके जबतक वृद्धावस्था न आवै तबतक व्यायाम करै बहुत न करै किन्तु ४० बैठक करै और ३० वा ४० दण्ड करै कुछ भीत खम्भे वा पुरुष से बल करै फिर लोट करै उस को भोजन से एक घण्टा पहिले करै सब अभ्यास जब कर चुकै उससे एक घण्टा पीछे भोजन करै परंतु दूध जो पीना होय तो अभ्यास के पीछे शीघ्रही पीवै उससे शरीर में रोग न होगा जो कुछ खाया वा पीया सो सब परिपक्व हो जायगा सब धातुओं की वृद्धि होती है तथा वीर्य्य की भी अत्यन्त वृद्धि होती है शरीर दृढ़ होजाता है और हड्डियां बड़ी पुष्ट होजाती हैं जाठराग्नि शुद्ध प्रदीप्त रहता है और सन्धि से सन्धि हाड़ों की मिली रहती है अर्थात सब अङ्ग सुन्दर रहते हैं परन्तु अधिक न करना अधिक के करने से उतने गुण न होंगे क्योंकि सब धातु शुष्क

और रूक्ष होजाते हैं उस्से बुद्धि भी वैसी रूक्ष होजाती है और क्रोधादिक भी बढ़ते हैं इस्से अधिक न करना चाहिये यह बात सुश्रुत में लिखी है जो देखना चाहै सो देख लेवै उन बालकों के हृदय में वीर्य के रक्षण से जितने गुण लिखे हैं इस पुस्तक में और जितने दोष लिखे हैं वे सब माता पिता और आचार्य्यादिक निश्चय दृष्टान्त देदे के करा देवें जैसे कि वीर्य की रक्षा में सुख लाभ होता है उसका हजारवां अंश भी विषय भोग में वीर्य के नाश करने से नहीं होता परन्तु जैसा नियम सत्यशास्त्रों में कहा है उसका कुछ अंश इसमें भी लिखा है उसप्रकार से जो वीर्य की रक्षा करेगा उसको बहुतसा सुख होगा जो प्रमाद और भांग आदिक नशा करेगा वह पागल भी होजाय तो आश्चर्य नहीं इस्से युक्ति पूर्वक विद्या और बल सेही वीर्य की रक्षा करनी चाहिये अन्यथा वीर्य की रक्षा कभी न होगी जब वीर्य की रक्षा न होगी तब विद्या भी न होगी जब विद्या न होगी तब कुछ भी सुख न होगा उसका मनुष्य शरीर धारण करनाहीं पशुवत होजायगा ॥ सैषानन्दस्यमीमांसाभवति युवास्यात्साधुयुवाध्यापकः आशिष्ठोद्रढिष्ठोबलिष्ठः तस्येयंपृथिवीसर्वावित्तस्यपूर्णास्यात्सएकोमानुष आनन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमानुषा आनन्दाः सएको मनुष्य गन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंमनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः सएको देवगन्धर्वाणामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंदेवगन्धर्वाणामानन्दाः सएकः पितॄणांचिरलोक लोकानामानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतं पितॄणां चिरलोकलोकानामानन्दाः सएकः आजानजानान्देवानामानन्दः श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतमाजानजानान्देवानामानन्दाः सएकः कर्मदेवानामानन्दः येकर्मणादेवानपियन्ति श्रोत्रियस्यचाकामहतस्य तेयेशतंकर्मदेवानामानन्दाः सएकोदेवानामानन्दः श्रोत्रियस्य चाका

महतस्य तेयेशतंदेवानामानन्दाः सएकइन्द्रस्यानन्दः श्रोत्रि-
यस्य चाकामहतस्य तेयेशतमिन्द्रस्यानन्दाः सएकोबृहस्पतेरान
न्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतंबृहस्पतेरानन्दाः सएकः
प्रजापतेरानन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य तेयेशतंप्रजापतेरान
न्दाः सएकोब्रह्मणआनन्दः श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य सयश्चायंपुरु
षेयश्चासावादित्येसएकः॥ यह तैत्तिरीयोपनिषद् की श्रुति है
सो देखना चाहिये कि जैसा विद्या से आनन्द होता है वैसा
कोई प्रकार से आनन्द नहीं होता इसमें इस श्रुति का प्रमाण
है युवावस्था हो साधु युवा नाम उसमें कोई दुष्ट व्यसन न
हो अध्यापक नाम सब शास्त्रों को पढ़के पढ़ाने का सामर्थ्य
जिसको हो अर्थात सब विद्याओं में पूर्ण होय आशिष्ठ नाम
सत्य जिसकी इच्छा पूर्ण हो दृढ़िष्ठ अतिशय नाम अत्यन्त जो
शरीर और बुद्धि से दृढ़ हो अर्थात् कोई प्रकार का रोग जिसके
शरीर में न होय बलिष्ठ नाम अत्यन्त बलवान् होवै और
जिसकी वित्त नाम धनसे सब पृथ्वी पूर्ण होय अर्थात सार्वभौम
चक्रवर्त्ती होवै इसको मनुष्य लोग के आनन्द की सीमा कहते
हैं और जो कोई केवल विद्यावान्ही है और किसी प्रकार की
कामना जिसको नहीं है अर्थात विद्या, धर्म और परमेश्वर
की प्राप्ति के बिना किसी पदार्थ के ऊपर जिसको प्रीति न
होवै ऐसा जो श्रोत्रिय॥ श्रोत्रियंछन्दोऽधीते। यह अष्टाध्यायी
का सूत्र है व्याकरण पठन से लेके वेद पठन तक जिसका पूर्ण
पठन होगया है उसको श्रोत्रिय कहते हैं उस श्रोत्रिय नाम
विद्यावान् को वैसाही आनन्द होता है जैसा कि पूर्वोक्त चक्र-
वर्त्ती को उस्से भी अधिक होने का सम्भव है क्योंकि चक्रवर्ती
राजा को तो राज्य के अनेक कार्य रहते हैं इस्से चित्त की
एकाग्रता नहीं होती और जो वह पूर्ण विद्वान् है सो तो सदा
परमेश्वर के आनन्द में मग्न रहता है लेशमात्र भी दुःख का

उसको सम्भव नहीं है उस चक्रवर्त्ती के मनुष्यानन्द से शतगुण आनन्द मनुष्य गन्धर्वों को है मनुष्य गन्धर्वों के आनन्द से शतगुण अधिक आनन्द देवगन्धर्वों को है देवगन्धर्वों से पितृ-लोग वासियों को शतगुण आनन्द है और पितृलोगों से अधिक शतगुण आनन्द आजान नामक देवों को है आजान देवों से शतगुण आनन्द कर्म देवों को है जो कि कर्मों से देव होते हैं उनसे शतगुण आनन्द देवलोक वासी नाम देवों को है उन देवों से शतगुण आनन्द इन्द्र को है इन्द्र से शतगुण आनन्द बृहस्पति को है और बृहस्पति से प्रजापति को अधिक शतगुण आनन्द है और प्रजापति से ब्रह्मा को अधिक शतगुण आनन्द है जो २ आनन्द चक्रवर्त्ती और मनुष्य गन्धर्वों से शतगुण अधिक २ गणाते आये सो सब आनन्द विद्या वाले पुरुष को होता है क्योंकि जो आनन्द मनुष्य में है सोई सूर्य लोग में आनन्द है किन्तु एकही अद्वितीय परमेश्वर आनन्द स्वरूप सर्वत्र पूर्ण है उस परमेश्वर को विद्यावान् यथावत् जानता है उस परमेश्वर के जानने और उनका यथावत् योग होने से उस विद्वान् को पूर्ण अखण्ड आनन्द होता है उस आनन्द के लेशमात्र आनन्द में ब्रह्मादिक आनन्दित हो रहे हैं और उस आनन्द को जिस ने पाया है उस सुख को कोई गणना अथवा तोलना कभी नहीं कर सक्ता यह आनन्द विद्या के विना किसी को कभी नहीं होसक्ता इससे सब मनुष्यों को विद्या ग्रहण करने में अत्यन्त यत्न करना योग्य है यह ब्रह्मचर्य्याश्रम की शिक्षा तो संक्षेप से लिखी गई इससे आगे चौथे प्रकरण में विवाह और गृहाश्रम की शिक्षा लिखी जायगी॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते तृतीयः समुल्लासः सम्पूर्णः॥ ३॥

अथ विवाहगृहाश्रम विधिम्वच्याम: ॥

पुरुषों का और कन्याओं का ब्रह्मचर्य्याश्रम और विद्या जब पूर्ण होजाय तब जो देश का राजा होय और अन्य जितने विद्वान् लोग वे सब उनको परीक्षा यथावत् करें जिस पुरुष वा कन्या में श्रेष्ठ गुण, जितेन्द्रियता, सत्यवचन, निरभिमान, उत्तमबुद्धि, पूर्णविद्या, मधुरवाणी, कृतज्ञता, विद्या और गुण के प्रकाश में अत्यन्त प्रीति जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक, कृतघ्नता, छल, कपट, ईर्ष्या, इत्यादिक दोष न होवें पूर्ण कृपा से सब लोगों का कल्याण चाहैं उसको ब्राह्मण का अधिकार देवें और यथोक्त पूर्वोक्त गुण जिसमें होंय परन्तु विद्या न्यून होय शूर, वीरता, बल और पराक्रम ये तीन गुण वाला जो ब्राह्मण भया उससे अधिक हो उसको क्षत्रिय करें और जिसको थोड़ो भो विद्या होवै परन्तु व्यापारादिक व्यवहारों में नाना प्रकारों के शिल्पों में देश देशान्तर से पदार्थों का लेआने और लेजाने में चतुर होवै और पूर्वोक्त जितेन्द्रियादिक गुण भी होवै परन्तु अत्यन्त भीरु होवै उसको वैश्य करना चाहिये और जो पढ़ने लगा जिसको शिक्षा भी भई परन्तु कुछ भी विद्या नहीं आई उसको शूद्र बनाना चाहिये इसी प्रकार से कन्याओं की भी व्यवस्था करनी चाहिये इसमें यह प्रमाण है ॥ शूद्रोब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैतिशूद्रताम् । क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैवच ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि विद्यादिक पूर्वोक्त गुणों से जो शूद्र युक्त होवै सो ब्राह्मण होजाय और पूर्वोक्त विद्यादिक गुणों से जो ब्राह्मण रहित होजाय अर्थात् मूर्ख होय सो शूद्र होजाय और जिसमें क्षत्रिय का गुण होवै वह क्षत्रिय जिसमें

वैश्य का गुण होय वह वैश्य अर्थात् जो शूद्र के कुल में उत्पन्न भया सो मूर्ख होय तब तो वह शूद्रही बना रहै और वैश्य के जैसे गुण हैं वैसे गुण उसमें होने से वह शूद्र वैश्य होजाय क्षत्रिय के गुण होने से वह क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण होने से वह शूद्र ब्राह्मण होजाय तथा वैश्य कुल में उत्पन्न भया उसको वैश्य के गुण होने से वह वैश्यही बना रहै और मूर्ख होने से शूद्र होजाय तथा क्षत्रिय और ब्राह्मण के गुण होने से [illegible] क्षत्रिय और ब्राह्मण भी वैसेही क्षत्रिय कुल में जो उत्पन्न [illegible] उसको क्षत्रियवर्ण के गुण होने से वह क्षत्रिही बना रहै [illegible] वैश्य और शूद्र के गुण होने से ब्राह्मण वैश्य और शूद्र भी [illegible] तथा ब्राह्मण के कुल में उत्पन्न भया ब्राह्मण के गुण होने से वह ब्राह्मणही रहै क्षत्रिय वैश्य और शूद्र के गुण होने से क्षत्रिय वैश्य और शूद्र भी वह ब्राह्मण हो जाय ऐसाही मनुष्य जाति के बीच में सर्वत्र जान लेना तैसे चारों वर्णों की कन्याओं में भी उन २ उक्त गुणों के होने से ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या और शूद्रा होजांय उनको वर्ण क्रम से अधिकार भी दिये जांय॥ अध्यापनमध्ययनं यजनंयाजनंतथा। दानम्प्रतिग्रहंचैव ब्राह्मणानामकल्पयत्॥ अध्यापन नाम विद्याओं का प्रकाश करना नाम पढ़ाना अध्ययन नाम पढ़ना यजन नाम अपने घरमें यज्ञों का कराना याजन नाम यजमानों के घरमें यज्ञों का कराना दान नाम सुपात्रों को दान का देना प्रतिग्रह नाम धर्मात्[illegible]ओं से दान का लेना इन षट्कर्मों को करने और कराने म[illegible] को अधिकार देना उचित है प्रजानांरक्षणंदान मिज्याध्ययनमेवच। विषयेष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्यसमासतः॥ प्रजा को यथावत् रक्षा करना अर्थात् श्रेष्ठों का पालन और दुष्टों का ताड़न करना पक्षपात को छोड़ के सुपात्रों को दान देना अपने घरमें यज्ञों का करना और अध्य-

यन नाम सब सत्यशास्त्रों का पढ़ना विषयेषु अप्रसक्ति नाम विषयों में फंस न जाना यह संक्षेप से क्षत्रियों का अधिकार कहा पूर्वोक्त क्षत्रियों को इस अधिकार को देवैं ॥ पशूनांरक्षणं दान मिज्याध्ययनमेवच । वणिक्पथंकुसीदञ्च वैश्यस्यकृषिमेवच ॥ गाय आदिक पशुओं की रक्षा करना सुपात्रों को दान देना अपने घरमें यज्ञों का करना सत्यशास्त्रों का पढ़ना धर्म से व्यापार का करना धर्म से सूद नाम व्याज का लेना और कृषि नाम खेती का करना इन सात कर्मों का अधिकार वैश्यों को देना ॥ एकमेवहिशूद्रस्य प्रभुःकर्मसमादिशत् । एतेषामेववर्णानां शुश्रूषामनसूयया ॥ ये चार श्लोक मनुस्मृति के हैं ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की निन्दा को छोड़ के सेवा करना इस एक कर्म का शूद्रों को अधिकार देना कि तीनों वर्णों को यथावत् सेवा करे ॥ ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्यःकृतः । ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्यांशूद्रोऽअजायत ॥ यह यजुर्वेद की संहिता का मन्त्र है ॥ वेदाहमेतंपुरुषंमहान्तमादित्यवर्णन्तमसःपरस्तात् । यह भी उसी अध्याय का वचन है पुरुष नाम है पूर्ण का पूर्ण नाम परमेश्वर का परमेश्वर के बिना पूर्ण कोई नहीं होसक्ता क्योंकि सावयव और मूर्त्तिमान् जो होता है सो एकही देश में रहता है सर्व देशों में व्यापक नहीं होसक्ता उस अध्याय में परमेश्वरही का ग्रहण होता है क्योंकि पुरुष से सब जगत् की उत्पत्ति लिखी है सो परमेश्वरही से सब जगत् की उत्पत्ति होती है अन्य से नहीं उस परमेश्वर को अवयव का लेशमात्र भी सम्बन्ध नहीं मुख, बाहू, ऊरु और पाद स्थूल २ इतने अवयवों की तो कभी संगति नहीं है क्योंकि सूक्ष्म भी अवयव का भेद परमेश्वर में नहीं होसक्ता फिर स्थूल अवयव का भेद परमेश्वर में कैसे होगा कभी न होगा और इस मन्त्र में तो मुखादिक शब्दों का ग्रहण किया है सो इस अभिप्राय से किया

है कि शरीर में मुख सब अङ्गों से उत्तम अङ्ग है वैसे उत्तम से भी उत्तम गुण जिस मनुष्य में होय वह ब्राह्मण होवे मुख के समीप अङ्ग जैसा कि बाहु वैसाही ब्राह्मण के समीप क्षत्रिय है और हाथ के बल आदिक गुण हैं जिस्से कि दुष्टों का दमन होता है और श्रेष्ठों का पालन अपने शरीर का भी रक्षण शत्रुओं और शस्त्रों के बल हाथ से होसक्ता है वैसाही प्रजा का पालन होगा और हाथ के विना कभी रक्षण जगत् का वा अपना युद्ध में वा दुष्टों से नहीं होसक्ता सो बलादिक गुण जिस मनुष्य में होंय वह क्षत्रिय होवे तथा जब नाम जङ्घा में जब बल होता है तब जहां तहां देशान्तरों में पदार्थों को उठा के लेजाना और देशान्तरों से लेआना हानि और लाभ में स्थिर बुद्धि होना जैसे कि जङ्घा के ऊपर स्थिर होके बैठना होता है इस प्रकार के बेगादिक गुण जिस मनुष्य में होवें वह वैश्य होय तथा पाद जैसे कि सब अङ्गों से नीचे का अङ्ग है जब मनुष्य चलता है तब कङ्कड़, पाषाण, कीच और कांटों पर पैर पड़ते हैं सब शरीर ऊपर रहता है पैरही विष्ठादिकों में पड़ते हैं वैसे मूर्खत्वादिक नीच गुण जिस मनुष्य में होवें सो मनुष्य शूद्र होय इस मन्त्र से ऐसी परमेश्वर की आज्ञा है सो सज्जनों को मानना और करना भी चाहिये सो इस प्रकार से परीक्षा करके वर्ण व्यवस्था अवश्य करना चाहिये वर्ण व्यवस्था बिना जन्म मात्रही से वर्णों के होने से बहुत दोष होते हैं इस्से गुणोंही से वर्णों का होना उचित है और जो वर्णों को न मानें तो विद्यादिक गुण ग्रहण में मनुष्य का उत्साह भङ्ग होजायगा क्योंकि उत्तम गुण वाले को उत्तम अधिकार की प्राप्ति न होगी और गुणहीन को नीच अधिकार की प्राप्ति न होगी तो कैसे मनुष्यों को उत्साह गुण ग्रहण में होगा अर्थात् कभी न होगा इस्से वर्ण व्यवस्था ब

मानना उचित है और जो गुणों के बिना वर्णों को जन्ममात्रही
जन से मानैं तो सब वर्ण और सब गुण नष्ट होजांयगे क्योंकि जन्म
विषयमात्रही से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होंगे तो कोई भी
कहा गुण ग्रहण की इच्छा न करेगा इस्से सब विद्यादिक गुण नष्ट
होजांयगे जैसे कि ब्राह्मण कुल सब कुलों से उत्तम है उस
ब्राह्मणकुल में उत्तम पुरुषोंही का निवास होना उचित है क्योंकि वे
अपने उत्तम कर्मही करेंगे नीच कर्म कभी न करेंगे इस्से उत्तम कुल
की उत्तमता नष्ट कभी न होगी और जो ब्राह्मण कुल में मूर्ख
और नीच पुरुषों के निवास होने से उत्तम कुल की उत्त
मता नष्ट होजायगी क्योंकि वे अभिमान तो ब्राह्मणही का
करेंगे और ब्राह्मण के गुणों को ग्रहण कभी न करेंगे सदा
नीचही कर्म करेंगे इस्से ब्राह्मण कुल की बड़ी निन्दा
उस निन्दा से अप्रतिष्ठा होगी उस्से ब्राह्मण कुल दूषित हो
जायगा इस्से उत्तम गुण वाले को उत्तमही कुल में रखना
उचित है तथा भीरु नाम भयादिक गुण वाले पुरुष को क्षत्रिय
कुल में कभी न रखना चाहिये क्योंकि जिसको भय होगा
सो दुष्टों को कैसे दण्ड और प्रजा का पालन कैसे करेगा
युद्ध भूमि से सदा वह भाग जायगा उसका राज्य शत्रु लोग
लेलेंगे चोर और डांकू लोग सदा उस राजा और प्रजा को
पीड़ा देंगे इस्से उस राजा का राज्य और ऐश्वर्य्य नष्ट होजायगा
इस्से विद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम और पूर्वोक्त निर्भयादिक गुण
युक्तही को क्षत्रिय कुल में रखना चाहिये अन्य को नहीं
तथा व्यापारादिक पशुपालनादिक में जो चतुर और पूर्वोक्त
विद्यादिक गुण से युक्त होवै उसी को वैश्य होना उचित है
जो मूर्खत्वादि गुण युक्त है उसी को शूद्र रखना चाहिये ऐसी
जब व्यवस्था होगी तब ब्राह्मणादिक वर्णों में ब्राह्मणादिकों को
भय होगा कि हम लोग उत्तम गुण ग्रहण न करेंगे और

उत्तम कर्म न करेंगे तो नीच अधिकार नाम शूद्रत्व को प्राप्त हो जांयगे अर्थात् शूद्र होजांयगे और शूद्रादिकों को विद्यादिक गुण ग्रहण में उत्साह होगा क्योंकि हम लोग जो उत्तम गुण वाले होंगे तो उत्तम अधिकार को प्राप्त होंगे अर्थात् द्विज हो जांयगे इससे उत्तमों को तो भय होगा और नीचों का उत्साह होगा इससे ऐसीही व्यवस्था सज्जनों को करना उचित है वर्ण शब्द के अर्थ से भी ऐसी व्यवस्था आती है ॥ प्रियन्ते वर्णाः। कि वर्ण नाम गुणों से जिसका स्वीकार किया जाय उसका नाम वर्ण है ऐसा दृष्टान्त भी सुन्ने में आता है कि विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण भया वत्स क्षत्रिय से ब्राह्मण भया और श्रवण, श्रवण का पिता, श्रवण की माता, वैश्य और शूद्र वर्ण से महर्षि भये मातङ्गऋषि का चांडाल कुल में जन्म था फिर ब्राह्मण होगया यह महाभारत में लिखा है और जाबाल वेश्या के पुत्र से ब्राह्मण होगया यह छान्दोग्य उपनिषद् में लिखा है इत्यादिक और भी जान लेना चाहिये जैसी वर्णों की व्यवस्था गुणों से है वैसी विवाह में व्यवस्था करनी चाहिये ब्राह्मण का ब्राह्मणी, क्षत्रिय का क्षत्रिया, वैश्य का वैश्या और शूद्रका शूद्रा से विवाह होना चाहिये क्योंकि विद्यादिक उत्तम गुणवाले पुरुष से विद्यादिक उत्तम गुणवाली स्त्री का विवाह होने से परस्पर दोनों को अत्यन्त सुख होगा और जो उत्तम पुरुष से मूर्ख स्त्री वा पण्डित स्त्री का मूर्ख पुरुष से विवाह होगा तो अत्यन्त क्लेश होगा कभी सुख न होगा तथा क्षत्रियों के गुणवाले से क्षत्रिय गुणवाली स्त्री का वैश्य गुणवाले पुरुष से वैश्य गुणवाली स्त्री का विवाह होना चाहिये और जो मूर्ख पुरुष कोई शूद्र है उससे मूर्ख स्त्री का विवाह होना उचित है क्योंकि तुल्य स्वभाव के होने से सुख होता है अन्यथा दुःखही होता है रूप की भी परीक्षा होनी चाहिये परस्पर दोनों की

अर्थात् वर और कन्या की प्रसन्नता से विवाह का होना उचित है कन्या वर की परीक्षा करै और वर कन्या की दोनों को परस्पर प्रसन्नता जब होय फिर माता, पिता वा बन्धु विवाह कर देवें अथवा आपही दोनों परस्पर विवाह करलेवें पशुवत् विवाह का व्यवहार करना उचित नहीं जैसे कि गाय वा छेरी को पकड़ के दूसरे के हाथ में दे देते हैं वे लेके चले जाते हैं जैसी इच्छा होय वैसा करते हैं इस प्रकार का व्यवहार मनुष्यों को कभी न करना चाहिये पूर्वोक्त काल के नियमही से विवाह करना चाहिये बाल्यावस्था में नहीं ॥ गुरुणानुमतःस्नात्वा समावृत्तोयथाविधि । उद्वहेतद्विजोभार्यां सवर्णांलक्षणान्विताम् ॥ यह मनु का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि ब्रह्मचर्य्याश्रम से पूर्ण विद्या पढ़के गुरु की आज्ञा लेके जैसी विधि वेद में लिखी है वैसे सुगन्ध्यादिक द्रव्य से मन्त्र पूर्वक स्नान करके शुभ श्रेष्ठ लक्षण युक्त अपने वर्ण की कन्या को वह द्विज ग्रहण करै। महान्त्यपिसमृद्धानिगोऽजाविधनधान्यतः । स्त्रीसम्बन्धे दशैतानि कुलानिपरिवर्जयेत् ॥ बड़े भी कुल होंय गाय, छेरी, अवि नाम भेड़ धन और धान्य से सम्पन्न होवें तो भी दश कुलों की कन्याओं को न ग्रहण करै वे कौन से दश कुल हैं ॥ हीनक्रियं निष्पुरुषंनिश्छन्दोरोमशार्शसम । क्षय्यामयाव्यपस्मारि श्वित्रि कुष्ठिकुलानिच ॥ ये दश कुल हैं हीनक्रिय नाम जिस कुल में यज्ञादिक क्रिया नहीं है और आलस्य भी बहुत सा जिस कुल में होय १ निष्पुरुष नाम जिस कुल में पुरुष न होवें स्त्री २ होवें २ निश्छन्द नाम जिस कुल में वेदादिक विद्या न होय ३ रोम नाम जिस कुल में भालू की नाईं देह के ऊपर लोम होवें ४ शार्श नाम जिस कुल में ववासिर रोग होय ५ क्षयि नाम जिस कुल में धातु क्षीणता दमा रोग होय ६ आमयाविनाम जिस कुल में आंव का विकार होय ७ अपस्मारि नाम जिस कुल

में मिर्गी रोग होय ८ श्वित्रि नाम बाला बिवाह है कुष्ठ होय ९ और कुष्ठि नाम जिस कुल में रहै और आमय १० इन दश कुलों की कन्याओं को विवाह स्थान में ग्रहण न करैं क्योंकि जो रोग पिता माता के शरीर में होता है सोई संतानों में भी कुछ २ रोग आवैगा इस्से उनका ग्रहण करना उचित नहीं ॥ नोद्वहेत्कपिलांकन्यां नाधिकाङ्गीन्नरोगिणीम्। नालोमिकान्नातिलोमान्नवाचाटान्नपिङ्गलाम् ॥ नर्क्ष वृक्ष नदीनाम्नीन्नान्त्यपर्वतनामिकाम्। नपक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नीन्नचभीषणनामिकाम् ॥ कपिला नाम बिलाई की नांई जिस कन्या के नेत्र होवैं उसके साथ बिवाह न करै क्योंकि सन्तानों के भी वैसे नेत्र होंगे नाधिकाङ्गी नाम जिस कन्या के अङ्ग वर से अधिक होवैं अर्थात् कन्या का शरीर लम्बा चौड़ा वर का शरीर छोटा और दुबला होय उनका परस्पर बिवाह न होना चाहिये अर्थात् दोनों के शरीर स्थूल अथवा दोनों के शरीर कृषित होवैं तब बिवाह होना चाहिये परन्तु स्त्री के शरीर से पुरुष का शरीर लम्बा होना चाहिये हाथ के कन्धे तक स्त्री का सिर आवै उस्से अधिक स्त्री का शरीर न होना चाहिये न्यून होय तो होय अन्यथा गर्भ स्थिर न होगा और वंशच्छेद भी होजाय तो आश्चर्य नहीं इस्से स्त्री का शरीर पुरुष के शरीर से छोटाही होना चाहिये रोगिणी नाम स्त्री के शरीर में कोई रोग न होना चाहिये और स्त्री भी पुरुष की परीक्षा करै कि उसके शरीर में स्थिर रोग कोई न होवै कोई महारोग न होय इस प्रकार की कन्या से विवाह न करै कि जिसके शरीर में सूक्ष्म भी लोम न होय और जिसके शरीर के ऊपर बड़े २ लोम होवैं उस्से भी बिवाह न करै वा चाटं नाम बहुत बोलने वाली जो स्त्री है उसके साथ बिवाह न करै अर्थात् परिमित भाषण करै अधिक बकवाद न करै जिसका पीतवर्ण हर्दी की नांई

होय करै और जिसका नक्षत्र के ऊपर कि अश्विनी, भरणी, इत्यादिक तथा वृक्ष के कि आम्रा, अश्वत्था, इत्यादिक और नदी के ऊपर जैसा कि नर्मदा, गङ्गा, इत्यादिक अन्त्य नाम चांडाली, चर्मकारिणी, इत्यादिक पर्वत के ऊपर जिसका नाम होवै जैसे कि हिमालया, विन्ध्याचला, इत्यादिक जिसका पक्षी के ऊपर होय जैसा कि हंसी, काकी, इत्यादिक जिसका सर्प के ऊपर होय जैसे कि सर्पिणी इत्यादिक जिसका दासी इत्यादिक नाम होय जिसका भयङ्करी, चण्डी और भैरवी, काली, इत्यादिक नाम होवै इस प्रकार के नाम वाली स्त्री से विवाह न करना चाहिये नक्षत्रादिक जितने नाम हैं वे सब अयुक्त हैं मनुष्यों के न रखना चाहिये कैसी स्त्री का विवाह होना चाहिये कि ॥ अव्यङ्गाङ्गींसौम्यनाम्नीं हंसवारणगामिनीम्। तनुलोमकेशदशनां मृद्वङ्गीमुद्वहेत्स्त्रियम् ॥ अव्यङ्गाङ्गी नाम जिसके टेढ़े अङ्ग न होवैं अर्थात् सब अङ्ग सूधे होवैं सौम्य जिसका नाम सुन्दर होवै जैसा कि यशोदा, कामदा, धर्मदा, कलावती, सुखवती, सौभाग्यवती, इत्यादिक हंसवारणगामिनीम् जैसे कि हंस और हाथी चलता है वैसी चाल जिसकी होवै ऐसी चलने वाली स्त्री न होय कि ऊंट और काक की नांई चलै तनु नाम सूक्ष्म लोम केश और सूक्ष्म दांतवाली होय जिसके अङ्ग कोमल होवैं ऐसी स्त्री के साथ पुरुष विवाह करै ब्राह्मादिक ८ आठ विवाह मनुस्मृति में लिखे हैं वे कौन हैं कि ॥ ब्राह्मोदैवस्तथैवार्षः प्राजापत्यस्तथासुरः। गान्धर्वोराक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमोधमः ॥ ये सब श्लोक मनुस्मृति के हैं ब्राह्म विवाह उसको कहते हैं कि कन्या और वर का सत्कार करना यथावत् होमादि करके और विद्या शीलादिकों की परीक्षा

करके कन्यादान देना उसका नाम ब्राह्म विवाह है मास वा दोमास पर्य्यन्त होम होता रहै और जामाताही ऋत्विक् होवै यज्ञ के अन्त दक्षिणा स्थान में कन्या देना उसका नाम दैव विवाह है एक गाय और एक बैल वा दो गाय और दो बैल बर से लेके कन्या को देना उसका नाम आर्ष विवाह है प्राजापत्य नाम बर और कन्या से प्रतिज्ञा का होना अर्थात् कन्या बर से प्रतिज्ञा करै कि मैं आप से व्यभिचार, अधर्म और अप्रियाचरण कभी न करूंगी तथा बर कन्या से प्रतिज्ञा करै कि मैं तुमसे व्यभिचार अधर्म और अप्रियाचरण कभी न करूंगा पीछे विधि पूर्वक विवाह होना उसका नाम प्राजापत्य विवाह है आसुर नाम अपने कुटुंबियों को थोड़ा सा धन देना और बर के कुटुंबियों को भी थोड़ा सा धन देना सत्कार के लिये कन्या और बर कों भी थोड़ा २ धन देना होमादिक विधि से विवाह करना उसका नाम आसुर विवाह अर्थात् दैत्यों का विवाह है कन्या और बर के परस्पर प्रसन्न होने से बिवाह का होना उसको गान्धर्व विवाह कहते हैं इसमें माता, पिता और बंध्वादिकों का कुछ प्रयोजन नहीं कन्या और बर ये दोनों आपही से स्वतन्त्र होके सब विधि कर लेवें इसी का नाम गान्धर्व विवाह है कोई कन्या अत्यन्त रूपवती और सब गुणों से जिसकी प्रशंसा अर्थात् हजारहों कन्याओं के बीच में श्रेष्ठ होवै और कहने सुनने से उसका पिता न देता होय कन्या को भी बन्ध करके रक्खै तब वहां जाके बल से कन्या का ले लेना है उसको राक्षस विवाह कहते हैं फिर होमादिक विधि कर के विवाह करलेवैं अर्थात् जैसे कि राक्षस लोग बल से परप-दार्थों को छीन लेते हैं वैसा यह विवाह है अष्टम विवाह यह है कि कहीं एकान्त में कन्या सूती अथवा मत्त अथवा

भांग वा मद्यादिक पीके प्रमत्त हो अथवा कोई रोग से पागल भई होय उस्से समागम करै विवाह के पहिलेही समागम का होना है वह पैशाच विवाह कहाता है वह सब बिवाहों से नोच विवाह है इन आठ विवाहों में ब्राह्म, दैव और प्राजापत्य ये तीन विवाह सर्वोत्तम हैं इन तीनों में भी ब्राह्म अति उत्तम है और गान्धर्व भी श्रेष्ठ है उस्से नीच आसुर, उस्से नीच राक्षस, और सब से नीच पैशाच विवाह है उसको कभी न करना चाहिये ॥ अनिन्दितैःस्त्रीविवाहै रनिन्द्या भवतिप्रजा । निन्दितैर्निन्दितानृणां तस्मान्निन्द्यान्विवर्जयेत् ॥ मनुष्यों को निन्दित विवाह कभी न करना चाहिये जैसो परीक्षा और जो काल लिखा है उस्से विरुद्ध बिवाहों का करना वे निन्दित नाम भ्रष्ट विवाह हैं और भ्रष्ट बिवाहों के करने से उनके सन्तान भी भ्रष्ट होते हैं जैसे कि बाल्यावस्था में विवाह का करना उस्से जो सन्तान होता है वह सन्तान रोगादिक पूर्वोक्त दूषितही होगा श्रेष्ठ कभी न होगा जो परीक्षा के बिना विवाह का करना उस्से बहुत क्लेश होंगे और सन्तान भी बहुत क्लेशित होजांयगे उनके धनादिकों का नाश भी हो जायगा इस्से निन्दित बिवाह मनुष्यों को कभी न करना चाहिये और जो ब्राह्मादिक उत्तम बिवाह हैं उनका काल तथा परीक्षा लिखी है उस रीति से जो बिवाह होते हैं वे अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठ विवाह हैं उन बिवाहों के करने से स्त्री पुरुष और कुटुंबियों को सदा सुखही होगा और उनकी प्रजा भी अनिन्दित अर्थात् श्रेष्ठही होगी सदा माता, पिता और कुटुंबियों को वे पुत्रादिक सन्तान सुखही देवेंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं महाभारत में जितने बिवाह लिखे हैं वे युवावस्थाही में लिखे हैं परस्पर परीक्षा और परस्पर प्रसन्नताही से बिवाह होते थे जैसे कि द्रौपदी,

कुन्ती, गान्धारी, दमयन्ती, लोपामुद्रा, अरुन्धती, मैत्रेयी, कात्यायनी और शकुन्तलादिकों के विवाह इसी प्रकार से हुये थे तथा मनुस्मृति में भी लिखा है ॥ बाल्येपितुर्वशेतिष्ठेत्पाणिग्राहस्ययौवने। पुत्राणांभर्तरिप्रेते नभजेत्स्त्रीस्वतन्त्रताम् ॥ बाल्यावस्था न्यून से न्यून षोड़श वर्ष पर्यन्त होती है तब तक पिता के वश में कन्या रहै और षोड़श वर्ष से लेके २४ वर्ष पर्यन्त जिस वर्ष में विवाह होय तब अपने पति के वश में रहै जब पति न रहै तब पुत्रों के वश में स्त्री रहै स्त्री स्वतन्त्र न होवै क्योंकि स्त्री का स्वभाव चञ्चल होता है इस्से आप कुमार्ग में चलेगी और धनादिकों का नाश भी करेगी इस्से स्त्री को स्वतन्त्र न रखना चाहिये और जो लोग यह बात कहते हैं कि पिता के घरमें कन्या रजस्वला जो होय तो पितादिकों का धर्म नष्ट हो जायगा और पितादिक सब नरक में जांयगे यह बात सत्य है वा नहीं यह बात मिथ्याही है क्योंकि कन्या के रजस्वला होने से पितादिक अधर्मी हो जांयगे और नरक में जावेंगे यह बड़ा आश्चर्य है पितादिकों का क्या अपराध है कि रजस्वला का होना तो स्त्री लोगों का स्वाभाविक है तो सदा होहीगा इसमें पितादिकों का क्या सामर्थ्य है कि बन्द करदेवैं सो यह बात प्रमाण शून्य है बुद्धिमान् इस बात को कभी न मानैं इसमें मनु भगवान का प्रमाण भी है ॥ त्रीणिवर्षाण्युदीक्षेत कुमार्यृतुमतीसती। ऊर्द्ध्वन्तुकालादेतस्माद्विन्देत सदृशंपतिम् ॥ पिता के घरमें कन्या जब रजस्वला होय तब से लेके तीन वर्ष तक विवाह करने के लिये पति की परीक्षा करै तीन वर्ष के पीछे जैसी वह कन्या है वैसेही अपने तुल्य सवर्ण पति को ग्रहण करै कन्या के शरीर में धातु क्षीणादिक रोग न होवैं तो सोलहवें वर्ष रजस्वला होगी इससे पहिले नहीं और जो उक्त रोग होगा तो १५ पन्दरहवें वा १४

चौदहवें अथवा १३ तेरहवें वर्ष कोई कन्या रोगी रजस्वला होजाय तो भी तीनवर्ष पीछे विवाह करेंगे तो १६ सोलहवें १७ सतरहवें वा १८ अठारवें वर्ष विवाह करना उचित है और जब सोलहवें वर्ष रजस्वला होय तो १९ वा २० बीसवें वर्ष विवाह होना चाहिये क्योंकि शरीर से जो रज निकलता है सो स्त्री के शरीर की शुद्धि होती है इस कारण रजस्वला स्त्री के साथ ४ दिन तक सङ्ग करने का निषेध है कि स्त्रीके शरीर से एक प्रकार की उष्णता निकलती है उसके निकलने से नाड़ी और उसका शरीर शुद्ध होजाता है इससे रजस्वला होने के पीछेही विवाह का करना उचित है जो जन्मपत्र देखके विवाह करते हैं सो बात सत्य है वा मिथ्या। यह बात मिथ्याही है क्योंकि जन्मपत्र को तो मिलाते हैं परंतु उनके स्वभाव, गुण, आयु और बल को न मिलाने से सदा उनको क्लेशही होता है इसलिये वह बात मिथ्याही है जन्मपत्र मिलाने का बुद्धिमान लोग सत्य कभी न जानें इसमें प्रमाण भी है॥ उत्कृष्टायाभिरूपाय वरायसदृशायच। अप्राप्तामपितांतस्मै कन्यान्दद्याद्यथाविधि॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि उत्कृष्ट नाम उत्तम विद्यादिक गुणवान् अभिरूप अर्थात् जैसी कन्या रूपवती होय वैसा वर भी होवै और श्रेष्ठ स्वभाव दोनों का तुल्य होय अप्राप्त नाम निकट सम्बन्ध में भी होय तो भी उसी को कन्या देवै अर्थात् दोनों तुल्य गुण और रूपवाले होंय तब विवाह का करना उचित है अन्यथा नहीं इसमें यह मनुस्मृति का प्रमाण है॥ काममामरणात्तिष्ठेद्गृहेकन्यर्त्तुमत्यपि। नचैवैनाम्प्रयच्छेत्तु गुणहीनायकर्हिचित्॥ इसका यह अभिप्राय है कि ऋतुमती कन्या अपने पिता के घरमें मरण तक भी बैठी रहै यह बात तो श्रेष्ठ है परन्तु गुणहीन अर्थात् विद्याहीन पुरुष को कन्या कभी

न देवै अथवा कन्या आप भी दुष्ट पुरुष से विवाह न करै तथा पुरुष भी मूर्ख वा दुष्ट कन्या से विवाह न करै यही गृहस्थों को यथोक्त प्रकार से जैसा कि कहा वैसा विवाह करना सब सुखों का मूल है अन्यथा दुःखही है कभी सुख न होगा जो शीघ्रबोध में ये दो श्लोक लिखे हैं कि ॥ अष्टवर्षाभवे-द्गौरी नववर्षाचरोहिणी। दशवर्षाभवेत्कन्या ततऊर्द्धं रजस्वला॥१॥ माताचैवपिताचैव ज्येष्ठभ्रातातथैवच। त्रयस्तेनरकंयान्ति दृष्ट्वा कन्यांरजस्वलाम्॥२॥ ये दोनों श्लोक मिथ्याही हैं क्योंकि आठवें वर्ष विवाह करने से जो कृष्णवर्ण वाली स्त्री गौर-वर्ण वाली कैसे होगी वा महादेव की स्त्री उसका गौरी नाम है उस्से विवाह कैसे हो सकेगा वैसे रोहिणी नक्षत्र लोक है सो आकाश में रहती है वह जड़ पदार्थ है उस्से विवाह कैसे होगा कभी नहीं होसक्ता जो रोहिणी बलदेव की स्त्री थी वह तो मर गई मरी हुई का विवाह कभी नहीं होसक्ता और दशवर्ष में कन्या होती है यह भी मिथ्याही है क्योंकि जब तक विवाह नहीं होता तब तक कन्याही कहाती है और पिता के सामने तो सदा कन्याही और बन्धु के सामने भगिनी रहती है फिर उसका जो नियम है कि दश वर्ष में कन्या होती है सो बात काशिनाथ की मिथ्याही है जो कहता है कि दशवर्ष के आगे रजस्वला होती है यह भी मिथ्याही है सुश्रुत में १६ वर्ष के आगे धातुओं की वृद्धि लिखी है सो ठीक है उस समय में सोलह वर्ष से लेके आगेही रजस्वला होने का संभव है सो सज्जनों को यही बात मानना चाहिये और काशिनाथ की बात कभी न मानना चाहिये जो उसने यह बात लिखी है कि कन्या रजस्वला होने से पितादिक नरक में जांयगे सो मनुस्मृति वा वेदादिक सत्यशास्त्रों और प्रमाणों से विरुद्ध है इस बात में तो

उसकी बड़ी भारी मूर्खता है क्योंकि माता पितादिकों का क्या दोष है कन्या रजस्वला होने से वे नरक में जांय यह कहना उसका बड़ा पामरपन है पूर्वपक्ष पिता ने काल में विवाह न किया इस्से उनको दोष होता होगा और दश वर्ष के आगे उसको विवाह का फल न होता होगा इस्से उस काशिनाथ ने लिखा होगा उत्तर यह बात भी उसकी मिथ्या है क्योंकि सोलहवर्ष के पहिले कन्या और २५ वर्ष के पहिले पुरुष का विवाह करने से अवश्य पितादिकों को पाप का संभव होता है अथवा उन स्त्री पुरुषों को तो पाप होने का सम्भव होता है किन्तु पाप का फल दुःख है सो बाल्यावस्था में विवाह करने से वीर्य्यादिक धातुओं के नाश और विद्यादिक गुण न होने से अवश्य वे दुःखी होते हैं और होंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं है इस्से इस काशिनाथ का नाम काशिनाश रखना चाहिये क्योंकि काशि नाम प्रकाश का है इसने विद्यादिक गुणों का नाश कर दिया इस्से इसका नाम काशिनाशही ठीक है जो इसने ग्रन्थ का नाम शीघ्रबोध रक्खा है उसका नाम शीघ्रनाश रखना चाहिये क्योंकि बाल्यावस्था में विवाह करने से शीघ्रही रोग होंगे और बहुत रोग होने से शीघ्रही मर जांयगे इस्से इस्का नाम शीघ्रनाशही ठीक है इस प्रकार से श्लोक हम लोग भी रच ले सक्ते हैं ॥ ब्रह्मोवाच । एकवर्षाभवेद्गौरी द्वियामाचैवरोहिणी । त्रियामातुभवेत्कन्या ततऊर्द्ध्वं रजस्वला ॥ १ ॥ मातातस्याःपिताचैव ज्येष्ठोभ्राताथानुजः । एतेवैनरकंयान्ति दृष्ट्वाकन्यांरजस्वलाम् ॥ २ ॥ पूर्वपक्ष ये दो श्लोक कौन शास्त्र के हैं तो मैं पूछता हूं कि काशिनाथ के श्लोक कौन शास्त्र के हैं वे काशिनाथ के ग्रन्थ के हैं तो यह श्लोक मेरे ग्रन्थ के हैं आप के ग्रन्थ का क्या प्रमाण है तो काशिनाथ के ग्रन्थ का क्या प्रमाण है काशिनाथ के ग्रन्थ को तो

बहुत लोग मानते हैं जिसको बहुत मनुष्य मानें वही श्रेष्ठ होय तो जैन यसूमसी और महम्मद के मत को मानने वाले बहुत हैं उनी को मानना चाहिये वे हम लोगों के मत से विरुद्ध हैं इस्से हम लोग नहीं मानते तो आपलोगों का कौन मत है जो वेदोक्त और धर्मशास्त्रोक्त है सोई तो हम लोगों के मत से काशिनाथ का मत विरुद्ध हुआ क्योंकि आप लोगों का मत वेद और मनुस्मृत्युक्तही हुआ उस धर्मशास्त्र में मनुस्मृति भी है इस्से विरुद्ध होने से आप लोगों को काशिनाथ का मत मानना उचित नहीं और आप ने जो श्लोक बनाये उसके आगे ब्रह्मोवाच क्यों लिखा यह दृष्टान्त के लिये लिखा इस्से क्या दृष्टान्त हुआ कि इसी प्रकार से ब्रह्मोवाच, विष्णुरुवाच, नारदउवाच, नारायणउवाच, पाराशरउवाच, वसिष्ठउवाच, याज्ञवल्क्यउवाच, अत्रिरुवाच, अङ्गिराउवाच, युधिष्ठिरउवाच, व्यासउवाच, शुकउवाच, परीक्षितउवाच, कृष्णउवाच, अर्जुनउवाच, इत्यादिक नाम लिखके अष्टादश पुराण अष्टादश उपपुराण, १७ सतरह पाराशरादिक स्मृतियां, निर्णयसिन्धु, धर्मसिन्धु, नारदपंचरात्र, काशिखण्ड, काशिरहस्य, और सत्यनारायणकथा, इत्यादिक ग्रन्थ सम्प्रदायो लोग और पण्डित लोगों ने रच लिये हैं तथा महादेवउवाच, पार्वत्युवाच, भैरवउवाच, भैरव्युवाच, दत्तात्रेयउवाच, इत्यादिक लिख के बहुत तन्त्रग्रन्थ लोगों ने रच लिये हैं यह तो द्राष्टान्त भया जैसे कि मैंने अपने श्लोकों के पहिले अपनी इच्छा से ब्रह्मोवाच लिखा वैसेही इनों ने ब्रह्मोवाच इत्यादिक रख के ग्रन्थ रच लिये हैं इस लिये कि श्रेष्ठों के नाम लिखने से ग्रन्थों का प्रमाण होजाय प्रमाण के होने से सम्प्रदायों और आजीविका की वृद्धि होवै उस्से बिना परिश्रम से धन आवै और बहुत सुख होवैं इस लिये धूर्तता रची है जैसा कि ब्रह्मोवाच मेरा लिखना वृथा है वैसा

उनका भी ब्रह्मोवाच इत्यादिक लिखना वृथाही है और जैसे मेरे श्लोक दोनों मिथ्या हैं वैसे उनके पुराणादिक ग्रन्थ और काशिनाथ का ग्रन्थ आर्य्यावर्त्त देशवासी लोगों के सत्यानाश करने वाले हैं इनको सज्जन लोग मिथ्याही जानें इससे क्या आया कि मरण तक भी कन्या बिवाह के बिना घरमें बैठी रहे तो भी पितादिकों को कुछ दोष नहीं होता परन्तु दुष्ट पुरुष के साथ श्रेष्ठ कन्या अथवा दुष्ट कन्या के साथ श्रेष्ठ पुरुष का बिवाह कभी न करना चाहिये किन्तु तुल्य श्रेष्ठ गुण वालों का परस्पर बिवाह होना चाहिये जो दुष्ट पुरुष के साथ श्रेष्ठ कन्या वा श्रेष्ठ के साथ दुष्ट कन्या का बिवाह होगा तो परस्पर दोनों को दुखही होगा इससे दोनों का परस्पर बिचार करके वर और कन्या का बिवाह करें क्योंकि श्रेष्ठ विवाह से उन्हीं को सुख और दुष्ट बिवाह से उन्हीं को दुःख होगा इसमें माता पितादिकों का कुछ भी अधिकार नहीं उन दोनों के बिचार और प्रसन्नताही से बिवाह होना चाहिये बिवाह में बहुत धन का नाश करना अनुचितही है क्योंकि वह धन व्यर्थही जाता है इससे बहुत राज्य नष्ट होगये और वैश्य लोगों का भी बिवाह में धन के व्यय से दिवाला निकल जाता है सब लोगों का मिथ्या धन का व्यय करना अनुचित है इससे धन का नाश बिवाह में कभी न करना चाहिये एकही स्त्री से बिवाह करना उचित है बहुत स्त्री के साथ बिवाह करना पुरुषों को उचित नहीं स्त्री को भी बहुत बिवाह करना उचित नहीं क्योंकि बिवाह सन्तान के लिये है सो एक स्त्री एक पुरुष को बहुत है देखना चाहिये कि एक व्यभिचारिणी स्त्री अथवा वेश्या वे बहुत पुरुषों को वीर्य्य के नाश से निर्बल कर देती हैं इससे एक पुरुष के लिये एक स्त्री क्या थोड़ी है अर्थात बहुत है एक स्त्री के साथ भी सर्वथा वीर्य्य का नाश करना

उचित नहीं क्योंकि वीर्य के नाश से पूर्वोक्त सब दोष हो जांयगे इससे विवाहिता उसके साथ भी वीर्य का नाश बहुत न करना चाहिये केवल सन्तान के लिये वीर्य्य का दान करना चाहिये अन्यथा नहीं और स्त्री भी केवल सन्तानहो की इच्छा करे अधिक नहीं दोनों परस्पर सदा प्रसन्न रहैं पुरुष स्त्री को सदा प्रसन्न रक्खै और स्त्री पुरुष को विरोध वा क्लेश परस्पर कभी न करैं ॥ संतुष्टोभार्य्ययाभर्त्ता भर्त्रा भार्य्यातथैवच । यस्मिन्नेवकुलेनित्यं कल्याणंतत्रवैध्रुवम् ॥ यह मनुस्मृति का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि स्त्री प्रियाचरण से पुरुष को सदा प्रसन्न रक्खै और पुरुष भी स्त्री को जिस कुल में इस प्रकार की व्यवस्था है उस कुल में दुःख कभी नहीं होता किंतु सदा सुखही रहता है और जो परस्पर अप्रसन्न रहैंगे तो यह दोष आवेगा ॥ यदिहिस्त्रीनरोचेत पुमांसन्नप्रमोदयेत् । अप्रमोदात्पुनःपुंसः प्रजननंप्रवर्त्तते ॥ १ ॥ स्त्रियान्तुरोचमानायां सर्वन्तद्रोचतेकुलम् । तस्यान्त्वरोचमानायां सर्वमेवनरोचते ॥ २ ॥ ये दोनों मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि जो स्त्री प्रीति और सेवा से पुरुष को प्रसन्न न करेगी तो पुरुष को अप्रसन्नता से हर्ष न होगा जब हर्ष न होगा तब प्रजनं नाम वीर्य की अत्यन्त उत्पत्ति और गर्भस्थिति भी न होगी तो स्त्री को पुरुष के अप्रीति से कुछ भी सुख न होगा और जो पुरुष स्त्री को प्रसन्न न रक्खेगा तो उस पुरुष को कुछ भी गृहाश्रम करने का सुख न होगा स्त्री को जो प्रसन्न रक्खेगा उसको सब आनन्द होगा तथाच ॥ पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा पूज्याभूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः ॥ १ ॥ यत्रनार्यस्तुपूज्यन्ते रमंतेतत्रदेवताः । यत्रैतास्तुनपूज्यन्ते सर्वास्तत्राफलाःक्रियाः ॥ २ ॥ शोचन्तिजामयोयत्र विनश्यत्याशुतत्कुलम् । नशोचन्तितुय

चैता वर्द्धन्तेतद्धिसर्वदा ॥ ३ ॥ जामयोयानिगेहानि शपन्त्यप्रतिपूजिताः । तानिकृत्याहतानीव विनश्यन्तिसमन्ततः ॥ ४ ॥ तस्मादेताःसदापूज्या भूषणाच्छादनाशनैः । भूतिकामैर्नरैर्नित्यं सत्कारेषूत्सवेषुच ॥ ५ ॥ ये सब मनुस्मृति के श्लोक हैं इनका यह अभिप्राय है कि पिता, भ्राता, पति और देवर ये सब लोग स्त्रियों की पूजा करैं देखना चाहिये कि पूजा का अर्थ घण्टा, झांझ, झालरी, मृदङ्ग, धूप, दीप और नैवद्यादिक षोड़शोपचारों को पूजा शब्द से जो लेते हैं सो मिथ्याही लेते हैं क्योंकि स्त्रियों को ऐसी पूजा करनी उचित नहीं और न कोई ऐसी पूजा करता है इससे पूजा शब्द का अर्थ सत्कारही है सत्कार जो होता है सो चेतनही का होता है जो सत्कार को जानै इससे स्त्री लोगों का सदा सत्कार करना चाहिये जिससे कि वे सदा प्रसन्न रहैं और उनको यथाशक्ति आभूषणों से प्रसन्न रक्खैं जिन गृहस्थों का बड़ा भाग्य होता है और बहुत कल्याण की जिनको इच्छा होवै वे इस प्रकार से स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं ॥ १ ॥ जिस कुल में नारी लोग रमण नाम आनन्द से क्रीड़ा करती और प्रसन्न रहती हैं तिस कुल में देवता नाम विद्यादिक गुण जिनों से कि वह कुल प्रकाशित होजाता है वे गुण सदा उस कुल में बढ़ते रहते हैं जिस कुल में स्त्रियों का सत्कार और उनको प्रसन्नता नहीं होती उस गृहस्थ की सब क्रिया निष्फल होती है और दुर्दशा भी होती है इससे स्त्रियों को प्रसन्नही रखना चाहिये ॥ २ ॥ और जिस कुल में जामय नाम स्त्री लोग शोक से दुःखित रहती हैं उस कुल का नाश शीघ्रही होजाता है जिस कुल में स्त्री लोग शोक नहीं करतीं अर्थात् प्रसन्न रहती हैं उस कुल की वृद्धि और आनन्द सदा होता है और आज काल आर्य्यावर्त्त में कोई एक राजा वा धनाढ्य बिवाहिता स्त्री को तो कैद की नांई

बन्द करके रखते हैं और आप वेश्या और पर स्त्री के पास गमन करते हैं उसमें अपने धन और शरीर का नाश करते हैं और उनकी विवाहित स्त्रियां रोती और बड़ी दुखित रहती हैं परन्तु उन मूर्ख पुरुषों को कुछ भी लज्जा नहीं आती कि यह स्त्री तो मेरे साथ विवाहित है इसको छोड़ के मैं अन्य स्त्री गमन करता हूं यह मैं न करूं ऐसा विचार उन पुरुषों के मन में कभी नहीं आता अन्य स्त्री और वेश्या गमन जो करते हैं सो तो बुराही काम करते हैं परन्तु बालकों से भी बुरा काम करते हैं यह बड़ा आश्चर्य है कि स्त्री का काम पुरुषों से करते हैं इनको तो अत्यन्त भ्रष्ट बुद्धि सज्जनों को जाननी चाहिये ३ जिन पुरुषों को स्त्री दुःखित होके श्राप देती हैं उन कुलों का नाशही होजाता है जैसे कि कोई विषदान करके कुल का नाश कर देवै वैसेही उन कुलों का नाश हो जाता है इससे सज्जनों को स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये जिस्से कि स्त्री लोग प्रसन्न होके गृह का कार्य धर्माचरण और मङ्गलाचरण सदा करैं ४ तिस्से स्त्रियों का सत्कार सदा करना चाहिये आभूषण, वस्त्र, भोजन और मधुर वाणी से स्त्रियों को प्रसन्न रक्खैं जिनको कि ऐश्वर्य की इच्छा होय वे यज्ञादिक उत्सवों में स्त्रियों का बहुत सत्कार करैं अर्थात् स्त्रियों को प्रसन्नही रक्खैं तथा स्त्री लोग भी सब प्रकार से पुरुषों को प्रसन्न रक्खैं॥ ५

पाणिग्राहस्यसाध्वीस्त्री जीवतोवामृतस्यवा। पतिलोकमभीप्सन्ती नाचरेत्किञ्चिदप्रियम्॥ १॥ जिसके साथ विवाह होय उसको स्त्री सदा प्रसन्न रक्खै जिस्से वह अप्रसन्न होय ऐसी बात कभी न करै सोई स्त्री श्रेष्ठ कहाती है यहां तक कि पति मर भी गया होय तो भी अप्रियाचरण न करै उस स्त्री को सदा श्रेष्ठ पति इस जन्म वा जन्मान्तर में भी प्राप्त होता है॥ १॥ अस्त्रीताऋतुकालेच मन्त्रसंस्कारकृत्पतिः। सुखस्यनित्यंदातेह परलो

कंचयोषितः ॥ २ ॥ वेद मन्त्रों से जिस पुरुष से विवाह का संस्कार भया वही ऋतु काल वा अऋतु काल और इस लोक वा परलोक में नित्य सुख देने वाला है और कोई नहीं इसे विवाहित पुरुष की स्त्री सदा सेवा करै जिस्से कि वह प्रसन्न रहै और घर का जितना कार्य है वह स्त्री के अधिकार में रहै।
सदाप्रहृष्टयाभाव्यं गृहकार्येषुदक्षया । सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्तहस्तया ॥ ३ ॥ सदा स्त्री प्रसन्न होके गृह कार्य चतुरता से करै पाक को अच्छी प्रकार से संस्कार करै जिस्से कि औषधवत् अन्न होय और गृह में जो पात्र लवणादिक पदार्थ और अन्न सदा शुद्ध रक्खै जितने घर हैं उन्हको सब दिन शुद्ध रक्खै जाला धूली वा मलिनता घरमें कुछ भी न रहै घर में लेपन प्रक्षालन और मार्जन करै जिस्से कि घर सब दिन शुद्ध बना रहै और घर के दास दासी नोकर इत्यादिकों पर सब दिन शिक्षा की दृष्टि रक्खै जो पाक करने वाला पुरुष वा स्त्री होवै उसके पास पाक करने समय बैठ के शिक्षा करै जैसो पाक की रीति वैद्यकशास्त्र में लिखी है [illegible] पाक करै और करावै नये घर को बनाना वा सुधारना हो [illegible] को स्त्रीही करावै शिल्पशास्त्र की रीति [illegible] जितना घर का जो कार्य है सो स्त्रीही के आधीन रहै [illegible] में जो नित्य नित्य वा मास २ में खर्च होय वह पति [illegible] भा देवैं और जितना बाहर का कार्य होय सो सब पुरुष के आधीन रहै परस्पर सदा प्रसन्न से घर के कार्यों को करैं घर इस प्रकार का बनावै कि जिसमें सब ऋतु में सुख होय और जिस स्थान में वायु शुद्ध होय चारो ओर पुष्पों की सुगन्ध वाटिका लगावै जिस्से कि सदा चित्त प्रसन्न रहै और व्यर्थ धन का नाश कभी न करैं धर्मही से धन का संग्रह करैं अधर्म से कभी नहीं अच्छे से अच्छा भोजन करैं जो विद्या पढ़ी होवै उसको सदा पढ़ावैं और

विचारते रहैं आज काल के लोग कहते हैं कि स्त्री लोगों को पढ़ना न चाहिये ऐसा विद्याहीन पुरुष कहते हैं वे पाखण्डी और धूर्त्त हैं क्योंकि स्त्री लोग जो पढ़ेंगी तो उनके सामने हमारी धूर्त्तता न चलेगी फिर उनसे धन भी न मिलेगा और वे जब विद्या से धर्मात्मा होंगी तब हम लोगों से व्यभिचार भी न करेंगी बिना व्यभिचार से वे स्त्री धन भी न देंगी फिर हम लोगों का व्यवहार न चलेगा ऐसे आर्य्यावर्त्त देश में गोकुलस्थ गुसांई आदिक सम्प्रदाय हैं कि जिन की व्यभिचार और स्त्रीहो लोगों से बढ़ती होती है वे इस प्रकार का उपदेश करते हैं कि स्त्री लोगों को कभी न पढ़ना चाहिये परन्तु देखना चाहिये कि मनु भगवान ने यथावत् आज्ञा दी है ॥ वैवाहिकोविधिःस्त्रीणां संस्कारोवैदिकस्मृतः। पतिसेवागुरौवासो गृहार्थोग्निपरिक्रिया ॥ ३ ॥-विवाह की जितनी विधि है सो वेदोक्तही है स्त्रियों का विवाह वेद की रीति से होना चाहिये और पति की सेवा अत्यन्त करनी चाहिये यही स्त्री का मुख्य कर्म है और विवाह के पहिले गुरौ वास नाम स्त्री लोग पढ़ने के लिये ब्रह्मचर्य्याश्रम करें और गृह कार्य जानने के लिये अवश्य विद्या पढ़ें अग्नि परिक्रिया नाम अग्निहोत्रादिक यज्ञ करने के लिये अवश्य वेदों को पढ़ें अन्यथा कुछ भी न जानेंगी नित्य स्त्री और पुरुष मिलके अग्निहोत्र प्रातः और सायंकाल करें अन्य यज्ञों की भी सामर्थ्य के अनुकूल करैं और जो विद्या न पढ़ी वा आप न जानती होगी तो अग्निहोत्रादिक यज्ञ और घर के सब कार्य को कैसे करेगी विद्या अन्य के पास होय तो उस विद्या को जिस प्रकार से मिलै उस प्रकार से लेवै क्योंकि मरण तक भी गुण ग्रहण करने की इच्छा मनुष्यों को करनी चाहिये उसी से मनुष्यों को सुख होता है ॥ ४ ॥ स्त्रियोरत्नान्यथोविद्या सत्यंशौचंसुभाषितम्। वि

विद्यानिचशिल्पानि समादेयानिसर्वतः॥ ५ ॥ ये पांच मनुस्मृति के श्लोक हैं स्त्री हीरादिक रत्न सत्यविद्या, सत्यभाषण, पवित्रता, मधुरवाणी, नाम भाषण करने की रीति और विविध अर्थात् अनेक प्रकार के शिल्प ये सब जिस में होवैं उससेही लेना चाहिये भाषण की रीति यह है कि॥ सत्यंब्रूयात्प्रियंब्रूयान्नब्रूयात्सत्यमप्रियम्। प्रियंचनानृतंब्रूयादेषधर्मःसनातनः॥ १ ॥ भद्रंभद्रमितिब्रूयाद्भद्रमित्येववावदेत्। शुष्कवैरंविवादञ्च नकुर्य्यात्केनचित्सह॥ २ ॥ ये दो श्लोक मनुस्मृति के हैं इसका यह अर्थ है कि सत्यही कहै मिथ्या कभी न कहै सदा सब जनों को जो प्रिय लगे वैसाही कहै पूर्वपक्ष प्रिय तो वेश्यागामी पर स्त्री गामी और चोरी करने वाले आदि पुरुषों से उनी बातों को कहै तब उनको अनुकूल प्रिय होता है अन्यथा प्रिय नहीं होता इस्से ऐसाही कहना चाहिये वा नहीं उत्तरपक्ष इसको प्रियवचन न कहना चाहिये क्योंकि वेश्यादिक गमन की इच्छा जब वे करते हैं तभी उनके हृदय में शङ्का भय और लज्जा हो जाती है वह काम तो उनके हृदय को प्रियही नहीं है और उनका आचरण करना भी अधर्म है किन्तु उनका जो निषेध करना है वही ठीक २ प्रिय है जैसे कोई बालक अग्नि पकड़ने को चलै उसको उसकी माता कहै कि तूं अग्नि पकड़ वह वचन बालक को प्रिय न होगा किन्तु आगी में हाथ नावेगा तब हाथ जल जायगा उस्से बालक को अप्रिय होगा अर्थात दुःखही होगा किन्तु बालक को निषेध जो करना है कि तूं आग को मत पकड़ वही वचन उसको प्रिय है प्रिय उसका नाम है कि कभी जिस वचन से किसी का अहित न होय उसको प्रियवचन कहते हैं और सत्य होय वह अप्रिय होय तो उसको न कहै जैसे किसी ने किसी से पूछा कि विवाह किस लिये करना होता है और तेरा जन्म किस प्रकार भया तब उसको इतनाही

कहना उचित है कि विवाह का करना सन्तान के लिये है और मेरा जन्म मेरी माता और पिता से हुआ है जो गुप्त क्रिया है स्त्री से और माता पिता की उसको कहना उचित नहीं यद्यपि यह बात सत्यही है तो भी सब लोगों को अप्रिय के होने से उस बात का कहना उचित नहीं तथा दश पांच पुरुष कहीं बैठे होवें और उस समय में काना, अन्धा, मूर्ख वा दरिद्र पुरुष आवें उनसे वे पुरुष कहें कि काना आओ अन्धा आओ मूर्ख आ वा दरिद्र आओ ऐसा कहना उचित नहीं यद्यपि यह बात सत्य है तो भी अप्रिय के होने से न कहना चाहिये किन्तु देवदत्त आ यज्ञदत्त आओ ऐसा उनसे कहना उचित है फिर आप के आंख में कुछ रोग भया था वा जन्म से ऐसी ही है तब वह प्रसन्नता से सब बात कह देगा जैसी की भई थी इसो इस प्रकार का सत्य होय और वह अप्रिय भी होय तो कभी न कहै। प्रियचनान्तलंब्रूयात्। और जो बात अन्य को प्रिय होय परन्तु वह अनृत अर्थात मिथ्या होय तो उसको कभी न कहै जैसे कि आज काल इन राजा और धनाढ्य लोगों के पास खुशामदी लोग बहुत से धूर्त रहते हैं वे सदा उनको प्रसन्न करने के लिये मिथ्याही कहते रहते हैं आप के तुल्य कोई राजा वा अमीर न हुआ न है और न होगा और जो राजा मध्य दिवस के समय में कहै कि इस समय में आधी रात है तब वे शुश्रूषु लोग कहते हैं कि हां महाराजाधिराज हां देखिये चांद और चांदनी भी अच्छी खिल रही है फिर वे कहते हैं कि महाराज के तुल्य कोई बुद्धिमान् न भया न है न होगा तब तो वह मूर्ख राजा और धनाढ्य प्रसन्नता से फूल के ढोल हो जाते हैं फिर वे ऐसी बात कहते हैं कि महाराज आप के प्रताप के सामने किसी का प्रताप नहीं चलता है आप का प्रताप कैसा है जैसा कि सूर्य और

आदि ऐसा कह २ के बहुत धन हरण कर लेते हैं वे राजा और धनाढ्य लोग उन्हीं से प्रसन्न रहते हैं क्योंकि आप जैसा मूर्ख वा पण्डित होता है उसको वैसेही पुरुष से प्रसन्नता होती है कभी उनको सत्पुरुषों का सङ्ग नहीं होता और कभी सत्पुरुषों का सङ्ग होजाय तो भी वे खुशामदी धूर्त्त राजा और धनाढ्य लोगों की मूर्खता के होने से उनको प्रसन्नता सत्य बात के सुनने से कभी नहीं होती क्योंकि जैसा जो पुरुष होता है उसको वैसाही संग मिलता है ऐसे व्यवहार के होने से आर्य्यावर्त्त देश के राज्य और धन बहुत नष्ट होगये और जो कुछ है उसकी भी रक्षा इस प्रकार से होनी दुर्लभ है जब तक कि सत्य व्यवहार सत्यशास्त्र और सत्सङ्गों को न करेंगे तब तक उनका नाशही होता जायगा कभी बढ़ती न होगी खुशामदी लोगों के विषय में यह दृष्टान्त है कि कोई राजा था उसके पास पण्डित वैरागी और नौकर वे खुशामदी लोग बहुत से रहते थे किसी दिवस राजा के रसोई में बैंगन का शाक मसाले डालने से बहुत अच्छा बना फिर राजा भोजन करने को जब बैठा तब स्वाद के होने से उस शाक को अधिक खाया राजा भोजन करके सभा में आया जहां कि वे खुशामदी लोग बैठे थे उन से राजा ने कहा कि बैंगन का शाक बहुत अच्छा होता है तब वे खुशामदी लोग सुन के बोले कि वाहवा महाराज की नांईं कोई बुद्धिमान् नहीं है महाराज आप देखिये कि जब बैंगन उत्तम है तब तो परमेश्वर ने उसके ऊपर मुकुट रख दिया तथा मुकट के चारों ओर कलंगी रख दी है और बैंगन का वर्ण श्रीकृष्ण के शरीर का जैसा घनश्याम है वैसाही बनाया है और उसका गूदा मक्खन की नांईं परमेश्वर ने बनाया है इस्से बैंगन का शाक उत्तम क्यों न बने फिर जब उस शाक ने बादी की तब रात भर नींद भी न आई और ८

दश बार शौच भी गया उससे राजा बड़ा क्रोधित भया फिर जब प्रातःकाल भया तब भीतर से राजा बाहर आया वे खुशामदी लोग भी आये जब राजा का मुख बिगड़ा देखा तब उन खुशामदी लोगों ने भी उनसे अधिक मुख बिगाड़ लिया फिर वे सब खुशामदी लोग राजा के पास जाके बैठे राजा बोले कि बैंगन का शाक तो अच्छा होता है परन्तु बादी करता है तब वे बोले कि वाहवा महाराज के तुल्य कोई बुद्धिमान् नहीं है एकही दिन में बैंगन की परीक्षा कर ली देखिये महाराज कि जब बैंगन भ्रष्ट है तब तो उसके ऊपर परमेश्वर ने खूंटी गाड़ दी है उस खूंटी के चारो ओर कांटे लगा दिये हैं उस दुष्ट का वर्ण भी कोइले के तुल्य रक्खा है तथा परमेश्वर ने उस का गूदा भी श्वेतकुष्ठ के नांई बना दिया है तब उन खुशामदीयों से राजा ने पूछा कि शाम को तुम लोगों ने मुकुट, कलंगी, घनश्याम और मक्खन के तुल्य बैंगन के अवयव वर्णन किये उसी बैंगन के अवयवों को खूंटी, कांटे, कोइला और कुष्ठ के नांई बनाये हम कौन बात को सत्य मानें कि जो कल शाम को कही थी उसको मानें वा आज के कहे को मानें वाहवा महाराज किस प्रकार के विवेकी हैं कि विरोध को शीघ्रही जान लिया सुनिये महाराज जिस बात से आप प्रसन्न होंगे उसी बात को हम लोग कहेंगे क्योंकि हम लोग तो आप के नौकर हैं सो आप झूंठी वा सच्ची बात कहेंगे उसी बात को हम लोग पुष्ट करेंगे और हम लोग वह साले बैंगन के नौकर नहीं हैं कि बैंगन की स्तुति करैं हम को बैंगन से क्या लेना है हम को तो आप की प्रसन्नता से प्रसन्नता है आप असत्य कहो तो भी हम को सत्य है वे इस प्रकार की सम्मति रखते हैं कि राजा सब दिन नशा करै और मूर्खही बना रहै फिर जब वे और कोई राजा वा धनाढ्य के पास जाते हैं तब उसी की

खुशामद करते हैं जिसके पास पहिले रहते थे उसकी निन्दा करते हैं इस प्रकार से खुशामदी मनुष्यों ने राजाओं की और धनाढ्यों की मति भ्रष्ट कर दी है जो बुद्धिमान् राजा और धनाढ्य लोग हैं इस प्रकार के मनुष्यों को पास भी नहीं बैठने देते न आप उनके पास बैठते तथा न उनकी बात सुनते हैं और जो कोई मिथ्या बात उनके पास कहता है उसी समय उसको उठा देते हैं और सदा बुद्धिमान्, सत्यवादी, विद्यावान् पुरुषों का सङ्ग करते हैं जो कि मुख के ऊपर सत्य २ कहैं मिथ्या कभी न कहैं उन राजाओं और धनाढ्यों को सदा बढ़ती ऐश्वर्य और सुख होता है इससे सज्जनों को श्रेष्ठही पुरुषों का संग करना चाहिये दुष्टों का कभी नहीं सत्य बात के आचरण में निन्दा वा दुःख होय तो भी न भय करना चाहिये भय तो एक परमेश्वर और अधर्मही से करना चाहिये और किसी से नहीं क्योंकि परमेश्वर सब काल में सब बातों को जानता है कोई बात परमेश्वर से गुप्त नहीं रहती इससे सज्जनों को परमेश्वरही से भय करना चाहिये कि परमेश्वर की आज्ञा के विरुद्ध हम लोग कुछ भी कर्म न करैं तथा अधर्म के आचरण से भय करना चाहिये क्योंकि अधर्म से दुःखही होता है सुख कभी नहीं और एक पुरुष की सब लोग स्तुति करैं अथवा निन्दा करैं ऐसा कोई भी नहीं है निन्दा इसका नाम है कि॥ गुणेषुदोषारोपणमसूया तथादोषेषुगुणारोपणमप्यसूयार्थापत्त्या वेद्या ॥ जो कि गुणों में दोषों का स्थापन करना उसका नाम निन्दा है वैसेही अर्थापत्ति से यह आया कि दोषों में गुणों का आरोपण भी निन्दा होती है इससे क्या आया कि ॥ गुणेषुगुणारोपणंस्तुतिः दोषेषुदोषारोपणंचतद्विरोधत्वात् । गुणों में गुणों का जो स्थापन करना और दोषों में दोषों का उसका नाम स्तुति है जो जैसा पदार्थ है उसको वैसाही जानैं अर्थात्

यथावत् सत्यभाषण करना स्तुति है और अन्यथा अर्थात् मिथ्या भाषण करना निन्दा है इसलिये सज्जन लोगों को सदा स्तुति ही करनी चाहिये निन्दा कभी नहीं मूर्ख लोग सत्यबात कहने और सत्याचरण के करने में निन्दा करैं तो भी बुद्धिमान लोगों को दुःख वा भय न मानना चाहिये किन्तु प्रसन्नता ही रखनी चाहिये क्योंकि उनकी बुद्धि भ्रष्ट है इसलिये भ्रष्ट बात भी सदा कहते हैं जैसे वे भ्रष्ट लोग भ्रष्टता को नहीं छोड़ते हैं तो श्रेष्ठ लोग श्रेष्ठता को क्यों छोड़ैं किन्तु भ्रष्टता भ्रष्ट लोगों को भी अवश्य छोड़नी चाहिये यदि सब भ्रष्ट लोग विरोध भी अत्यन्त करैं यहां तक कि मरण को भी अवस्था आजाय तोभी सत्यवचन और सत्याचरण सज्जनों को कभी न छोड़ना चाहिये क्योंकि यही मनुष्यों के बीच में मनुष्यत्व है और इसको छोड़ने से मनुष्यत्व तो नष्ट ही हो जाता है किन्तु पशुत्व भी आजाता है आजीविका भी सत्य से करनी चाहिये असत्य से कभी नहीं इसमें यह मनु भगवान का प्रमाण है। नलोकवृत्तवर्तेतवृत्तिहेतोःकथंचन। इसका यह अभिप्राय है कि संसार में बहुत धूर्तलोग असत्य और पाखण्ड से आजीविका कर्ते हैं वैसे आचरण कभी न करै वृत्ति अर्थात् आजीविका के हेतु भी असत्य भाषणादिक न करै किन्तु सत्यही भाषण से आजीविका करै यही धर्म सनातन है कि अनृत अर्थात् मिथ्या वही दूसरे को प्रिय होय तो कभी न करै किंच सदा सत्य भाषणही करै दूसरा मनु भगवान का श्लोक है कि भद्रंभद्रमित्यादि। भद्र है कल्याण का नाम सो तीन बार श्लोक में पाठ किया है इसो हेतु कि कल्याण कारक वचन सदा कहै जिसको सुनके मनुष्य धर्मनिष्ठ होय और अधर्म त्याग करै शुष्कवैर अर्थात् मिथ्या वैर और विवाद किसी से न करना चाहिये जैसे कि आज काल के पण्डित और विद्यार्थी लोग हठ दुराग्रह और क्रोध से वाद विवाद कर्तेर लड़ पड़ते हैं उनके हाथ सिवाय दुःख के कुछ

भी नहीं लगता है इस से जो कुछ अपने को अज्ञात होय उस विषय को प्रीति पूर्वक विवाद छोड़ कर पूछे आप जो सत्य २ जानता होय सो औरों से कह दे ॥ परित्यजेदर्थकामौयौस्यातां धर्मवर्जितौ। यह मनुस्मृति का वचन है इसका यह अभिप्राय है कि स्वाध्याय अर्थात् विद्या पठन पाठन और धन उपार्जन यदि धर्म से विरुद्ध होवें तो उनको छोड़ दे परन्तु विद्या प्रचार और धर्म को कभी न छोड़े। संतोषंपरमास्थायसुखार्थीसंयतोभवेत् संतोषमूलंहिसुखंदुःखमूलंविपर्ययः। इत्यादिक सब मनुस्मृति के श्लोक लिखेंगे सोजान लना। संतोष इसका नाम है कि सर्वथा प्रसन्न रहैं सदा अत्यन्त पुरुषार्थ रक्खें आलस्य और पुरुषार्थ का छोड़ना संतोष नहीं किन्तु सब दिनपुरुषार्थ में तत्पर रहै सब दिन सुखार्थी और जितेन्द्रिय होवे कभी हर्ष और शोक न करै किंच जितना सुख है सो संतोष से ही है और जितना दुःख होता है सो लोभ होने से होता है॥ इन्द्रियार्थेषुसर्वेषुनप्रसज्येत कामतः अतिप्रसक्तिंचैतेषां मनसासन्निवर्तयेत् ॥ २ ॥ श्रोत्रादि इन्द्रियों के शब्दादिक जो विषय हैं उन में कामातुर हो के प्रवृत्त कभी न होवै किन्तु धर्म के हेतु प्रवृत्त होवै और मन से उन में अत्यन्त प्रीति छोड़ता जाय धर्म और परमेश्वर में प्रीति बढ़ाता जाय ॥ २ ॥ बुद्धिवृद्धिकराण्याशुधन्यानिचहितानिच नित्यंशास्त्राण्यवेक्षेतनिगमांश्चैववैदिकान् ॥ ३ ॥ जो शास्त्र शीघ्रही बुद्धि धन और हित को बढाने वाले हैं उन शास्त्रों को नित्य विचारै जैसे कि छः दर्शन चारों उपवेद और वेदों को नित्य विचारै उनके विचार से अनेक पदार्थविद्या को प्रकाश करै। यथायथाहिपुरुषःशास्त्रंसमभिगच्छति तथातथाविजानातिविज्ञानंचास्यरोचते ॥ ४ ॥ जैसे २ पुरुष शास्त्र का विचार कर्ता है तैसे २ उसका विज्ञानबढ़ता जाता है फिर विज्ञान होने उसको प्रीति होती है और में नहीं ॥ ४ ॥ ऋषियज्ञंदेव-

यज्ञंभूतयज्ञंचसर्वदा नृयज्ञंपितृयज्ञंचयथाशक्तिनहापयेत् ॥ ५ ॥ ऋषियज्ञ अर्थात् पठन पाठन और संध्योपासन१ देवयज्ञ अर्थात् अग्नि होत्रादिक२ भूतयज्ञ अर्थात् बलिवैश्वदेव३ नृयज्ञ अर्थात् अतिथि सेवा४ और पितृयज्ञ नाम श्राद्ध और तर्पण अपने सामर्थ्य के अनुकूल यथा शक्ति करै उन्हें कभी न छोड़ै इतने सब कर्म अविद्वान् पुरुषों के वास्ते हैं और जो ज्ञानी हैं वे तो यथावत् पदार्थविद्या और परमेश्वर को जानते हैं । योगाभ्यास करै सब शास्त्रों को विचारै ब्रह्म विद्या की प्राप्ति और उपदेश भी करै इसमें मनु भगवान का प्रमाण है । एतानेके महायज्ञान्यज्ञशास्त्रविदो-जनाः अनीहमानाःसततमिन्द्रियेष्वेवजुह्वति ॥ ६ ॥ जितने ज्ञानी हैं वे पांच महायज्ञों को ज्ञान क्रिया होम करते हैं बाह्य चेष्टा से नहीं क्योंकि वे यज्ञशास्त्र के तत्वों को जानते हैं उनको अनीहमान अर्थात् बाहर की चेष्टा न देख पड़ै ज्ञान और योगाभ्यास से विषयों को इन्द्रियों में होम करदेते हैं तथा इन्द्रियों को मनमें मनको आत्मा में और आत्मा को परमेश्वर से योग करते हैं उनको बाहर की चेष्टा करना आवश्यक नही ॥ ६ ॥ वाच्येकेजुह्वतिप्राणं प्राणेवाचंचसर्वदा वाचिप्राणेच पश्यन्तो यज्ञनिर्वृत्तिमक्षयाम् ॥ ७ ॥ कितने योगी और ज्ञानी लोग वाणी में प्राण का होम करते हैं कितने प्राण में वाणी का होम करते हैं सदा वाणी और प्राण में यज्ञ की सिद्धि अक्षय अर्थात् जिसका नाश नही होता उसको देखते हैं अर्थात् वाणी तो प्राणही से उत्पन्न होती है और प्राण आत्मा से आत्मा अविनाशी है उसको परमात्मा से युक्त कर देते हैं इससे उनको मुक्तिही हो जाती है फिर कभी उनको दुःख का संग नहीं होता है इससे उन को बाह्य क्रिया का करना आवश्यक नहीं ॥ ७॥ ज्ञानेनैवापरेविप्रा यजन्त्येतैर्मखैः सदा ज्ञानमूलांक्रियामेषां पश्यन्तोज्ञानचक्षुषा ॥ ८ ॥ औ

ज्ञान चक्षु से सब पदार्थों को यथावत् जानते हैं वे ज्ञान ही से ब्रह्म यज्ञादिक पांच महायज्ञों को करते हैं क्योंकि ज्ञानयज्ञों से उनका सब प्रयोजन सिद्ध है एक क्रिया उन को ज्ञानमूलक होती है क्योंकि उनके हृदय मन और आत्मा सब शुद्ध हो गये हैं उन का बाह्य आडंबर करना आवश्यक नहीं बाह्य क्रिया तो उन लोगों के लिये है कि जिनका हृदय और आत्मा शुद्ध नहीं वे अग्नि होत्रादिक यज्ञों को बाह्य क्रिया से अवश्य करें क्योंकि उनके करने विना हृदय शुद्ध नहीं होगा उन ज्ञानियों की सेवा और सङ्ग से ज्ञानोपदेश लेवें जिस्से कि क-र्मियों की भी बुद्धि बढ़े ॥ ८ ॥ आसनाशनशय्याभिरद्भिर्मूलफले-नवा नास्यकश्चिद्वसेद्गेहे शक्तितोनर्चितोतिथिः ॥ ९ ॥ गृहस्थ के घर किसी समय कोई अतिथि आवे तो असत्कृत अर्थात् सत्कार बिना न रहे जैसा अपना सामर्थ्य हो वैसा सत्कार करना चाहिये आसन भोजन शय्या जल कंद और फल से अवश्य स-त्कार करे ॥ ९ ॥ परन्तु ऐसे मनुष्य का सत्कार कभी न करे । पाखण्डिनोविकर्मस्थान् वैडालव्रतिकाञ्छठान् हैतुकान्बकवृत्तींश्च-वाङ्मात्रेणापिनार्चयेत् ॥ १० ॥ पाखंडि अर्थात् वेद विरुद्ध मार्ग में चलने वाले चक्रांकितादिक वैरागी और गोकु-लिये गोसाईं आदिकों का बचन से भी सत्कार गृहस्थ लोग कभी न करें वैसे चोरी वेश्या गमनादिक विरुद्ध कर्म करने वाले पुरुषों का भी सत्कार न करें वैडाल व्रतिक नाम परकार्य के नाश करने वाले अपने कार्य में तत्पर हैं जैसे कि बिलार मूसे का तो प्राण हरले और अपना पेट भरले ऐसे पुरुषों का बचनसेभी गृहस्थ लोग सत्कार न करें शठनाम मूर्खों का भी सत्कार न करें शठ वे होते हैं कि उन्हें बुद्धि न होय और अन्य का प्रमाण भी न करें हैतुका नाम वेद शास्त्र विरुद्ध कुतर्क के करने वाले उनका भी बचन से सत्कार न करें

वक्तीति अर्थात् जैसे वैरागियों में खाखी लोग भस्म लगा लेते जटा बढ़ालेते और काठ की कौपीन धारण कर लेते हैं फिर ग्राम वा नगर के समीप जाके ठहरते और शंखादिक बजादेते हैं अर्थात् सूचना कर देते हैं कि गृहस्थ लोग आवें और हमको धन आदिक पदार्थ देवें जब गृहस्थ लोग आते हैं तब दूर से देख के ध्यान लगाते हैं प्रमाद में छिप भी देखते हैं और उनका धन सब हरण कर लेते हैं उनका गृहस्थ लोग वचन से भी सत्कार न करें ऐसे जितने मंडली बांध के फिरते हैं वैरागी और साधू इत्यादिक उनको साधू न जानना चाहिये, किन्तु बड़ा ठग जानना चाहिये और कितने गृहस्थ लोग सदावर्त्त और क्षेत्र करते हैं वे अनुचित करते हैं क्योंकि बड़े धूर्त गांजा और भांग पीनेवाले तथा चोर और डांकू वैसेही लुच्चे सदावर्तों से अन्न लेते और क्षेत्रों में भोजन कर लेते हैं फिर कुकर्मही करते रहते और हरामी हो जाते हैं बहुत से लोग अपना काम काज छोड़ सदावर्तों और क्षेत्रों के ऊपर घर के सब काम और नौकरी चाकरी छोड़ के साधु वा भिखारी बन जाते हैं फिर संतका अन्न खाते और सोते पड़े रहते हैं अथवा कुकर्म करते रहते हैं इससे संसार की बड़ी हानि होती है सो जो कोई सदावर्त्त क्षेत्र करता है उसमे सज्जन वा सत्पुरुष कोई नहीं जाता इससे उन गृहस्थों का पुण्य कुछ नहीं होता किन्तु पापही होता है इससे गृहस्थ लोग अन्नादिक दान करना चाहैं तो पाठशाला रचलेवें उसी में सब दान करें अथवा जो श्रेष्ठ धर्मात्मा गृहस्थ और विरक्त होवें उन को अन्नादिक देवें और यत्न करें तब उनको बड़ा पुण्य होय पाप कभी न होवै तथा मनु भगवान् का वचन है। वेदविद्याव्रतस्नातान् श्रोत्रियानगृहमेधिनः। पूजयेद्धव्यकव्येन विपरीतांश्चवर्जयेत् ॥ ११ ॥ जिनों ने ब्रह्म चर्य्याश्रम करके

वेदविद्या अर्थात् सब विद्या को पढ़ा है और धर्माचरण से शुद्ध होवें ऐसे श्रोत्रिय अर्थात् विद्वान् और गृहस्थ लोगों का हव्य नाम देवकार्य और कव्यनाम पितृकार्य में गृहस्थ लोग सत्कार करें उन से विपरीत लोगों का सत्कार कभी न करें। ११ ॥ शक्तितोऽपचमानेभ्यो दातव्यं गृहमेधिना संविभागश्च भूतेभ्यः कर्तव्योऽनुपरोधतः ॥ १२ ॥ जो सन्यासी परमहंस विद्यावान् और धर्मात्मा होवें उन की भी गृहस्थ लोग सेवा करें और भी जितने अनाथ होवें अर्थात अन्धे लंगड़े लूले और जिनका कोई पालन करने वाला न होवे उनका भी गृहस्थ लोग पालन करें ॥ १३ ॥ नोपगच्छेत्प्रमत्तोपिस्त्रियमार्त्तवदर्शने। समानशयने चैवनशयीततयासह ॥ १३ ॥ जब स्त्री रजस्वला होय उस दिन से लेके चार दिन तक काम पीड़ा से प्रमत्त भी होय तो भी स्त्री का संग न करै और एक शय्या में स्त्री के साथ कभी न सोवै ।१३॥ रजसाभिप्लुतांनारींनरस्यह्युपगच्छतःप्रज्ञातेजोबलंचक्षुरायुश्चैवप्रहीयते ॥ १४ ॥ जो पुरुष रजस्वला स्त्री से समागम कर्ता है उसको बुद्धि तेज बल नेत्र और आयु ये पांच नष्ट हो जाते हैं क्योंकि स्त्री के शरीर से एक प्रकार का अग्नि निकलता है उससे पुरुष का शरीर रोगयुक्त होता है रोग युक्त होने से बुद्ध्यादिक नष्ट हो जाते हैं॥१४॥ तांविवर्जयतस्तस्यरजसासमभिप्लुताम् प्रज्ञातेजोबलंचक्षुरायुश्चैवप्रवर्द्धते ॥ १५ ॥ जो पुरुष रजस्वला स्त्री का संग नहीं कर्ता उस पुरुष के बुद्धि तेज बल नेत्र और आयु ये सब बढ़ते हैं ॥ १५ ॥ ब्राह्मे मुहूर्त्तेबुध्यतधर्मार्थौचानुचिन्तयेत् कायक्लेशांश्चतन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेवच ॥ १६ ॥ एक प्रहर रात जब रहै तब सब मनुष्य उठें उठके प्रथम धर्म का विचार करैं कि यह २ धर्म की बात हमको करनी होगी तथा यह २ अर्थ नाम व्यवहार की बात अवश्य करना होगा उस धर्म और अर्थ के आचरण में विचार करैं कि परीश्रम थोड़ा होय और

वह कार्य सिद्ध हो जाय और जो शरीर में रोगादि क्लेश हो उनका औषध पथ्य और निदान का इससे यह रोग भया है इन सबको विचारै विचार के उनके निवारण का विचार करै फिर वेदतत्त्वार्थ नाम परमेश्वर को प्रार्थना करै और उठ के मल मूत्रादिक त्याग करै हस्त पाद का प्रक्षालन करें फिर जो वृक्ष दूध वाले होवें उनसे दन्त धावन करें अथवा खैर के चूर्ण वा सूंघनी से युक्त करके दन्त धावन से दांतों को मले और स्नान करै सूर्योदय से पहिले १ वा दो कोस भ्रमण करै एकान्त में जाके संध्योपासन जैसा कि लिखा है वैसा करै सूर्योदय के पीछे घर में आके अग्निहोत्र जैसा जिस वर्ण का व्यवहार पूर्वक लिखा है वैसा करै जब तक पहर दिनन चढ़े तबतक दूसरे प्रहर के प्रारंभ में तर्पण बलिवैश्वदेव और अतिथि सेवा करके भोजन करै तब जो जिसका व्यवहार है उस व्यवहार को यथावत् करें ग्रीष्मऋतु को छोड़के दिवस में न सोवै क्योंकि दिन को सोने से रोग होते हैं और ग्रीष्म में अर्थात् वैशाख और ज्येष्ठ में थोड़ा सोने से रोग नहीं होता क्योंकि निद्रा से शरीर में उष्णता होती है सो ग्रीष्म में उष्णताही अधिक होती हैं जल भी अधिक पीने में आता है फिर जब मनुष्य सोता है तब सब द्वार अर्थात् लोम द्वार से भीतर से जल बाहर निकलता है उससे सब मार्ग शुद्ध हो जाते हैं इससे ग्रीष्म ऋतुमें सोने से रोग नहीं होता है अन्यऋतु में सोनेसे होता है और जो कुछ आवश्यक कार्य होय तो ग्रीष्म ऋतु में भी न सोवै तो बहुत अच्छा है फिर जब चार वा पांच घड़ी दिन रहै तब सब कार्यों को छोड़के भोजन के लिये जावै पहिले शौच स्नानादिक क्रिया करै तदनन्तर बलिवैश्वदेव फिर अतिथि सेवा करके भोजन करै भोजन करके फिर भी संध्योपासन के वास्ते एकान्त में चला जाय संध्योपासन करके फिर अपने अग्निहोत्र स्थान में आके अग्नि-

होच करै जब २ अग्निहोच करै तब २ स्त्री के साथही करै फिर जो जिसका व्यवहार होय वह उसको करै अथवा भ्रमण करै निदान एक प्रहर रात तक व्यवहार करै फिर सोवै दोप्रहर अथवा डेढ़ प्रहर तक फिर उठके वैसेही नित्य क्रिया करै सो मध्यरात्रि के मध्य दो प्रहर में जब २ वीर्य दान करै उसके पीछे कुछ ठहर के दोनों स्नान करैं पीछे अपने २ शय्या में पृथक २ जाके सोवैं जो स्नान न करेंगे तो उनके शरीर में रोगही हो जांयगे क्योंकि उसमें बड़ी उष्णता होती है इसलिये स्नान करने से वह विकार न होगा और वीर्यतेज भी बढ़ेगा इससे उस समय स्नान अवश्य करना चाहिये इसमें मनुभगवान् के वचन का प्रमाण है। भोजनंहिगृहस्थानांसायंप्रातर्विधीयते स्नानंमैथुनिनःस्मृतम् ॥ इसका अर्थ यह है कि दो वेर गृहस्थ लोगों को भोजन करना चाहिये सायं और प्रातः काल जो मैथुन करै तो उसके पीछे स्नान अवश्य करै तथाचश्रुतिःअहरहःसंध्यामुपासीतअहरहरग्निहोत्रंजुहुयात् । इनका यह अभिप्राय है कि सायं और प्रातः काल में दो वेर संध्योपासन और अग्निहोच करै दोई संध्या हैं प्रातः और सायंकाल मध्यान संध्या कहीं नहीं क्योंकि संध्या नाम है सन्धिका सन्धि दो काल होती है प्रातःकाल प्रकाश और अन्धकार की संधि होती है तथा सायं काल प्रकाश और अन्धकार की सन्धि होती है मध्यान में केवल प्रकाशही है इससे मध्यान्ह में संध्या नहीं हो सक्ती । संध्यायन्तिपरंतत्त्वंनामपरमेश्वरंयस्यांसासंध्या । इस समय परमेश्वर का ध्यान कर्ते हैं इससे इसका नाम संध्या है अथवा संधयेहितासंध्या मन और जीवात्मा का परमेश्वर से जिस कर्म से सन्धान होय उसका नाम सन्धि है संधि के लिये जो अनुकूल कर्म होता है उसका नाम संध्या है सो दोई हैं । तस्मादहोरात्रस्यसंयोगेब्राह्मणः संध्यामुपासीत ॥ यह

सामवेद के ब्राह्मण की श्रुति है। (उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यमभिध्यायन् ब्राह्मणोविद्वान्सकलंभद्रमश्नुते) यह यजुर्वेद के ब्राह्मण की श्रुति है इसका यह अभिप्राय है कि जिस्से अहोरात्र अर्थात रात्रि और दिवस के संयोग में संध्या करें जब जीवात्मा बाहर व्यवहार करने को चाहता है तब बहिर्मुख होता है मन और इन्द्रियों को भी बहिर्मुख कर्ता है और जीव भी नेत्र ललाट और श्रोत्र ऊपर के अंगो में विहार कर्ता है जैसे कि सूर्य उदय होकर ऊपर २ विहार कर्ता है वैसे जीव भी जब सोना चाहता है तब हृदय पर्यन्त नीचे के अंगो में चला जाता है रात्रि की नाईं अन्धकार हो जाता है विना अपने स्वरूप के किसी पदार्थ को नहो देखता जैसे कि सूर्य जब अस्त हो जाता है तब अन्धकार होने से कुछ नहीं देख पड़ता है ऐसही जीव के ऊपर आने और नीचे जाने का व्यवहार उसका सन्धान दोनों संध्याकाल में करें इसके सन्धान करने से परमेश्वर पर्यन्त का कालान्तर में मनुष्यों को बोध हो जाता है और जीवका कभी नाश नहीं होता इस्से इसका नाम आदित्य है इस श्रुतिका अर्थ हो गया अर्थात। उद्यन्तमस्तंयान्तमादित्यमभिध्यायन् ब्राह्मणः सकलंभद्रमश्नुते। इसहेतु उदय और सायंकाल की दो संध्या निकलती हैं सो जान लेना तथा मनुस्मृति के श्लोक भी हैं। नतिष्ठतितुयःपूर्वान् नोपास्ते यश्चपश्चिमाम्। सशाधुभिर्वहिष्कार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणः॥ १॥ प्रातःसंध्यांजपंस्तिष्ठेत्साविचीमार्कदर्शनात्। पश्चिमांतुसमासीनः सम्यगृक्षविभावनात्॥ २॥ जो प्रातः और सायम् काल को संध्या नहीं करता उसको श्रेष्ठ द्विज लोग सब द्विज कर्माधिकारों से निकाल देवें अर्थात् यज्ञोपवीत को तोड़ के शूद्र कुल में कर देवें वह केवल सेवाही करे जो कि शूद्र का कर्म है॥ १॥ इस्से दो सन्ध्या निकलती हैं दूसरे श्लोक में सन्ध्या के काल का नियम और दोनों सन्ध्या

हैं दो घड़ी रात से लेके सूर्योदय पर्यन्त प्रातः संध्या के काल का नियम है तथा एक वा आध घड़ी दिन से लेके जब तक तारा न निकलैं तब तक सायं सन्ध्या के काल का नियम है और गायत्री का अर्थ और जैसा ध्यान उसका कहा है वैसाही दोनों काल में करैं और जो कहता है कि मध्यान संध्या क्यों न होय तो उनसे पूंछना चाहिये कि मध्य रात्रि में संध्या क्यों न होय और दो पहर के दो मुहूर्त्त और दो क्षण में संध्या क्यों न होजाय ऐसा कहने से तो हजारों संध्या हो जांयगी और उसके मत में अनवस्था भी आजायगी इस्से उसका कहना मिथ्याही है ॥ २ ॥ अधार्मिकोनरोयोहि यस्यचाप्यनृतं-धनम्। हिंसारतश्चयोनित्यं नेहासौसुखमेधते ॥ ३ ॥ जो नर अधार्मिक अर्थात अधर्म का करने वाला है और जिसका धन भी अनृत अर्थात असत्य से आया होय और नित्य हिंसारत अर्थात पर पीड़ाही में नित्य रहता होय वह पुरुष इस संसार में सुख को कभी नहीं प्राप्त होता ॥ ३ ॥ नसीदन्नपिधर्मेण मनो-ऽधर्मेनिवेशयेत्। अधार्मिकाणांपापानामाशुपश्यन्विपर्ययम् ॥ ४ ॥ यदि मनुष्य बहुत क्लेशित भी होय और धर्म के आचरण से भी बहुत दुःख पावै तो भी अधर्म में मनको प्रविष्ट न करै क्योंकि अधर्म करने वाले मनुष्यों का शीघ्रही विपर्यय अर्थात नाश हो जाता है ऐसा देखने में भी आता है इस्से मनुष्य अधर्म करने की इच्छा कभी न करै ॥ ४ ॥ नाधर्मश्चरितोलोके सद्यःफलतिगौ-रिव। शनैरावर्त्तमानस्तु कर्त्तुर्मूलानिकृन्तति ॥ ५ ॥ जो पुरुष अधर्म करता है उसको उसका फल अवश्य होता है जो शीघ्र न होगा तो देर में होगा जैसे कि गाय जिस समय उसको सेवा करते हैं उस समय दूध नहीं देती किन्तु कालान्तर में देती है वैसेही अधर्म का भी फल कालान्तर में होता है धीरे २ जब अधर्म पूर्ण होजायगा तब उसके करने वालों का मूल अर्थात सुख

के कारणों को छेदन कर देगा इससे वे दुःख सागर में गिरेंगे॥ ५॥ अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति। ततः सपत्नान् जयति समूलस्तु विनश्यति॥ ६॥ जब मनुष्य धर्म को छोड़ के अधर्म में प्रवृत्त होता है तब छल कपट और अन्याय से पर पदार्थों को हरण कर लेता है हरण करके कुछ सुख भी करता है फिर शत्रु को भी अधर्म छल और कपट से जीत लेता है परंतु उसके पीछे जैसा मूल सहित वृक्ष उखड़कर गिर जाता है वैसा मूल सहित उस अधर्म करनेवाले पुरुष का नाश होजाता है॥६॥ इससे किसी मनुष्य को अधर्म करना न चाहिये किन्तु। सत्यधर्मार्यवृत्तेषु शौचेचैवारमेत्सदा। शिष्यांश्चशिष्याद्धर्मेण वाग्बाहूदरसंयतः॥ ७॥ सत्य धर्म और आर्य जो श्रेष्ठ मनुष्य हैं उनमें और उनके आचरण में सदा स्थित हो शौच पवित्रता अर्थात हृदय की शुद्धि और शरीरादिक पदार्थों की शुद्धि करने में सदा रमण करें तथा अपने शिष्य पुत्र और विद्यार्थियों को यथावत धर्म से शिक्षा करें और वाणी बाहु उदर इनका संयम करें अर्थात् वाणी से वृथा भाषण, बाहु से अन्यथा चेष्टा, और उदर का संयम अर्थात भोजन का बहुत लोभ न रक्खें॥ ७॥ नपाणिपादचपलो ननेत्रचपलोऽनृजुः। नस्याद्वाक्चपलश्चैव नपरद्रोहकर्मधीः॥ ८॥ पाणि हाथ पाद अर्थात पैर उनसे चपलता नाम चंचलता न करै तथा नेत्र से भी चपलता न करै अनृजु अर्थात अभिमान कभी न करै सदा सरल होय और वाक् चपल न होवै अर्थात बहुत न बोलै जितना उचित हो उतनाही भाषण करै और पराये का द्रोह अर्थात ईर्ष्या कभी न करै और कर्मही परम पदार्थ है उपासना और ज्ञान कुछ भी नहीं ऐसी बुद्धि कभी न करै किन्तु कर्म से उपासना और उपासना से ज्ञान श्रेष्ठ है ऐसो बुद्धि सदा रक्खै॥८॥ येनास्यपितरोयाताः येनयाताःपितामहाः। तेनयायात्सतांमार्ग-

तेनगच्छन्नरिष्यते ॥ ८ ॥ जिस मार्ग से उसके पिता और पितामह गये हों उसी मार्ग से आप भी जावे उस मार्ग पर जाने से मनुष्य नष्ट नहीं होता किन्तु सुखीही होता है और दुःख कभी नहीं पाता (पूर्वपक्ष) यदि पिता और पितामह कुकर्मी होंय तो भी उनकी रीति से चलना चाहिये वा नहीं (उत्तर) नहीं क्यों कि इसी लिये मनु भगवान ने सतामिति विशेषण दिया है कि यदि पिता और पितामह सत्पुरुष अर्थात् धर्मात्मा होवें तो उन की रीति से चलना और यदि अधर्मी होवें तो उनकी रीति से कभी न चलना चाहिये ॥ ८ ॥ ऋत्विक्पुरोहिताचार्यैर्मातुलातिथिसंश्रितैः। बालवृद्धातुरैर्वैद्यैर्ज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः ॥ १० ॥ मातापितृभ्यांयामीभिर्भ्रात्रापुत्रेणभार्यया। दुहित्रादासवर्गेण विवादंनसमाचरेत् ॥ ११ ॥ ऋत्विक्, पुरोहित, आचार्य, मातुल अर्थात मामा, अतिथि, तथा संश्रित अर्थात मित्र, बालक, वृद्ध, आतुर, नाम दुःखी, वैद्य, ज्ञाति, संबधी अर्थात श्वसुरादिक, बान्धव अर्थात कुटुम्बी, माता, पिता, तथा दमाद, भ्राता, पुत्र, तथा भार्या अर्थात स्त्री, दुहिता अर्थात कन्या, दासवर्ग अर्थात सेवकलोग इनसे विवाद कभी न करे और औरों से भी विवाद न करे विवाद का करना दुःख मूलही है इससे सज्जनों का किसी से विरुद्ध वाद करना न चाहिये ॥ ११ ॥ प्रतिग्रहसमर्थोपिप्रसङ्गन्तत्रवर्जयेत्। प्रतिग्रहेणह्यस्याशु ब्राह्मंतेजःप्रशाम्यति ॥ १२ ॥ प्रतिग्रह लेने में समर्थ अर्थात गुणवान भी होय और उसको लोग देते भी होंय तो भी किसी से दान न लेवे किंतु अध्यायन नाम पढ़ाना याजन नाम यज्ञ का कराना अथवा अपने परीश्रम से आजीविका को करे और जो पुरुष प्रतिग्रह लेता है उसका ब्राह्म तेज अर्थात् विद्या नष्ट हो जाती है क्योंकि वह खुशामदी होजायगा इससे दान का लेना उचित नहीं ॥ १२ ॥ अतपास्त्वनधीयानः प्रतिग्रहरुचिर्द्विजः। अम्भस्यश्मप्लवेनेव सहतेनैवमज्ज-

ति ॥ १३ ॥ जो पुरुष तपस्वी और विद्वान् नहीं और प्रतिग्रह में रुचि रखता है वह उसी दान के साथ पाप समुद्र में डूब मरेगा जैसे कोई पाषाण की नौका से समुद्र वा नदी को तरे वह तरेगा तो नहीं परंतु डूब के मर जायगा वैसेही प्रतिग्रह लेनेवाले मूर्ख की गति होगी ॥ १३ ॥ त्रिष्वप्येतेषुदत्तंहि विधिनाप्यर्जितंधनम् । दातुर्भवत्यनर्थाय परत्रादातुरेवच ॥ १४ ॥ एक तो अविद्वान् दूसरा वैडालव्रतिक तीसरा बकव्रतिक इन तीनों को तो जल का भी दान न देवे और जिसने विधि अर्थात धर्म से धन का संचय किया होय उस धन को तीनों को कभी न देवै जो कोई दाता देगा उसको बड़ा दुःख होगा और परलोक में उन तीन पुरुषों को इस लोक में भी बड़ा दुःख होगा ॥ १४ ॥ यथाप्लवेनौपलेननिमज्जत्युदकेतरन् । तथानिमज्जतोधस्तादज्ञौदातृप्रतीच्छकौ ॥ १५ ॥ जैसे कोई पाषाण की नौका पर चढ़ कै उदक में तरा चाहै वह तर तो नहीं सकेगा परंतु डूब के मर जायगा तैसेही परीक्षा के बिना दुष्टों को जो दान देता है और जो दुष्ट लेने वाले हैं वे सब अज्ञान के होने से अधोगति को जायंगे अर्थात् दुःख और नरक को प्राप्त होंगे उनको कभी कुछ सुख न होगा इस्से परीक्षा करके श्रेष्ठ और धर्मात्माओंही को दान देना चाहिये अन्य को नहीं वैडालव्रतिक और बकव्रतिक मनुष्यों का यह लक्षण है ॥ १५ ॥ धर्मध्वजीसदालुब्धश्छाद्मिकोलोकदम्भकः । वैडालव्रतिकोज्ञेयोहिंस्रःसर्वाभिसन्धकः ॥ १६ ॥ अधोदृष्टिर्नैष्कृतिकः स्वार्थसाधनतत्परः । शठोमिथ्याविनीतश्चबकव्रतचरोद्विजः ॥ १७ ॥ जो मनुष्य धर्मध्वजी अर्थात् धर्म तो कुछ न करै अथवा कुछ करै भी तो फिर अपने मुख से कहै कि मैं बड़ा पंडित वैराग्यवान् योगी तपस्वी और बड़ा धर्मात्मा हूं इसको धर्मध्वजी कहते हैं जो बड़ा लोभी होय अर्थात् जो कुछ पावै सो भूमि में अथवा

जहां तहां रख छोड़े खाने में भी लोभ करे और बड़ा कपटी छली होय लोगों को दंभ का उपदेश करे अर्थात् जैसे कि संप्रदायी लोग उपदेश करते हैं कि तुलसी की माला धारण करने से बैकुंठ को जाता है और सब पापों से छूट जाता है तथा रुद्राक्ष माला धारण करने से कैलास को जाता है और सब पापों से दूर हो जाता है और गङ्गादिक तीर्थ राम शिवादिक नाम स्मरण और काश्यादिकों में मरण से मुक्ति होजाती है इस प्रकार के उपदेश करके दंभ और अभिमान में लोगों को गिरा देते हैं और आप भी गिरे रहते हैं इससे दुःख और बन्धन तो होहोगा और मुक्ति कभी न होगी किंतु धर्माचरण विद्या और ज्ञान इनके बिना मुक्ति कभी नहीं होसकी हिंस्रः नाम रात दिन जिसका चित्त प्राणियों को पीड़ा देने में नित्य प्रवृत्त रहै उसको हिंस्र कहते हैं सर्वाभिसन्धक अर्थात् अपने प्रयोजन के लिये दुष्ट तथा श्रेष्ठों से मेल रक्खे सो मेल धर्म से नहीं किन्तु अधर्महो से धनादिक हरण करने के लिये प्रीति करे उनको सर्वाभिसन्धक कहते हैं यह वैडालव्रतिक का लक्षण है ॥ क्रोध के मारे वा कपट छल से अधोदृष्टि नाम नीचे देखता रहै कोई जाने कि वह बड़ा शान्त और वैराग्यवान् है नैष्कृतिक नाम यदि कोई एक कठिन बचन उसे कहै और उसके बदले में दस कठिन बचन भी उसको कहै तो भी उसकी शान्ति न होय उसको नैष्कृतिक कहते हैं स्वार्थ साधन तत्पर अर्थात अपने स्वार्थ साधन में जो तत्पर अर्थात् किसी को पीड़ा तथा हानि होजाय और वह अपने स्वार्थ के आगे कुछ न गिनै शठ अर्थात मूर्ख जो हठ दुराग्रह से निर्बुद्धि होय और अन्य का उपदेश न मानैं उसको शठ कहते हैं मिथ्या विनीत नाम विनय तथा नम्रता करे सो कुटिलता से करै शुद्ध हृदय से नहीं ऐसे लक्षण वाले को बकव्रतिक कहते हैं अर्थात जैसे बक नाम बकुला जल

के समीप ध्यानावस्थित होके खड़ा रहता है और मत्स्य को देखता भी रहता है जब मत्स्य उसके पेच में आता है तब उस को उठा के खा लेता है तथा जितने धूर्त पाखण्डी होते हैं व दूसरे का प्राण भी हरण कर लेते हैं तिस्पर उनको कभी दया नहीं आती ऐसेही जितने शैव शाक्त गाणपत्य वैष्णवादिक संप्रदाय वाले हैं इनमें कोई लाखों में एक अच्छा होता है और सब वैसेही होते हैं इस्से गृहस्थ लोग इनकी सेवा कभी न करें १७ ॥ सर्वेषामेवदानानांब्रह्मदानंविशिष्यते। वार्यन्नगोमहीवासस्तिलकाञ्चनसर्पिषाम् ॥ १८ ॥ वारि नाम जल अन्न गाय मही अर्थात पृथिवी वास नाम वस्त्र तिल कांचन नाम सुवर्ण सर्पि नाम घी ८ इन सब दानों से ब्रह्म अर्थात वेद विद्या का दान सब से श्रेष्ठ दान है ऐसा अन्य कोई दान नहीं है इस्से सब गृहस्थों को अर्थ सहित वेद पढ़ने और पढ़ाने में शरीर मन और धन से अत्यन्त पुरुषार्थ करना उचित है ॥ १८ ॥ धर्मंशनैस्सञ्चिनुयाद्वल्मीकमिवपुत्तिकाः। परलोकसहायार्थं सर्वभूतान्यपीड़यन् ॥ १९ ॥ सब भूतों को पीड़ा के बिना धीरे धीरे धर्म का संचय मनुष्यों को करना उचित है जैसे कि चींटी धीरे २ मिट्टी को बाहर निकाल के संचय कर देती है तथा धान्य कणों का भी धीरे २ बहुत संचय कर देती हैं वैसेही मनुष्यों को धर्म का संचय करना उचित है क्योंकि धर्मही के सहाय से मनुष्यों को सुख होता है और किसी के सहाय से नहीं ॥ १९ ॥ नामुत्रहिसहायार्थंपितामाताचतिष्ठतः। नपुत्रदारंनज्ञातिर्धर्मस्तिष्ठतिकेवलः ॥ २० ॥ परलोक में सहाय के करने को पिता माता पुत्र तथा स्त्री ज्ञाति नाम कुटुम्बी लोग कोई समर्थ नहीं है केवल एक धर्मही सहायकारी है और कोई नहीं ॥ २० ॥ एकःप्रजायतेजन्तुरेकएवप्रलीयते। एकोऽनुभुंक्तेसुकृतमेकएवचदुष्कृतम् ॥ २१ ॥ देखना चाहिये कि जब

जन्म होता है तब एकही का होता है और मरण होता है तो भी एकही का होता है तथा सुख का भोग करता है तो एकही करता है अथवा दुःख का भोग करता है तो एकही करता है इसमें संग किसी का नहीं इससे सब मनुष्यों को यह उचित है कि अपना पालन वा माता पितादिकों का पालन धर्मही से जितना धनादिक मिलै उतनेही से व्यवहार और पालन करैं अधर्म से कभी नहीं क्योंकि॥ एकःपापानिकुरुते-फलंभुङ्क्ते महाजनः। भोक्तारोविप्रमुच्यन्ते कर्तादोषेणलिप्यते॥ यह महाभारत का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि जो अधर्म करेगा उसका फल वही भोगेगा और माता पितादिक सुख के भोग करने वाले तो हो जायंगे परंतु दुःख जो पाप का फल उसमें से भाग कोई न लेगा किन्तु जिसने किया वही पाप का फल भोगेगा और कोई नहीं॥ २१॥ मृतंशरीरमुत्सृ-ज्य काष्ठलोष्ठसमंक्षितौ। विमुखावान्धवायान्ति धर्मस्तमनुगच्छ-ति॥ २२॥ देखना चाहिये कि जब कोई मर जाता है तब काष्ठ वा लोष्ठ जैसा कि मिट्टी के ढेले को पृथिवी में फेंक के चले जाते हैं वैसे मरे हुए शरीर को अग्नि वा पृथिवी में डाल के विमुख नाम पीठ करके कुटुम्बी लोग चले आते हैं कुछ सहायता नहीं करते॥ २२॥ तस्माद्धर्मंसहायार्थं नित्यंसंचिनु-यात्छनैः। धर्मेणहिसहायेन तमस्तरतिदुस्तरम्॥ २३॥ तिस्से नित्यही सहाय के लिये धीरे २ धर्मही का संचय करें क्योंकि धर्मही के सहाय से दुस्तर जो तम अर्थात् जन्म मरणादिक दुःखसागर का जो संयोग उसका नाश और मुक्ति अर्थात् पर-मेश्वर की प्राप्ति और सर्व दुःख की निवृत्ति धर्मही से होती है अन्यथा नहीं॥ २३॥ धर्मप्रधानंपुरुषं तपसाहतकिल्बिषम्। परलोकंनयत्याशुभास्वन्तंखशरीरिणम्॥ २४॥ जिस पुरुष को धर्मही प्रधान है अधर्म में लवमात्र भी जिसकी प्रवृत्ति नहीं

तथा तप जो धर्म का अनुष्ठान है और पाप का त्याग इससे जिस का पाप नष्ट होगया है उसको वही धर्म परलोक अर्थात् स्वर्ग लोक अथवा परमानन्द परमेश्वर को प्राप्त कर देता है वह किस प्रकार का शरीरवाला होता है भास्वन्त अर्थात तेजोमय वा ज्ञान युक्त, और आकाशवत् अदृष्ट, अच्छेद्य काटने वा दाह करने में न आवै ऐसा उसका सिद्ध शरीर होता है जैसा कि योगियों का ॥ २४ ॥ दृढकारोमृदुर्दान्तः क्रूराचारैरसंवसन्। अहिंस्रोदमदानाभ्यां जयेत्स्वर्गंतथाव्रतः॥ २५ ॥ म० दृढ़कारो अर्थात् जो कुछ धर्म कार्य अथवा धर्म युक्त व्यवहार को करै सो दृढ़ही निश्चय से करै और मृदु अर्थात अभिमानादिक दोष से रहित होय दान्त अर्थात जितेन्द्रिय होय और क्रूराचार अर्थात् जितने दुष्ट हैं उनका साथ कभी न करै किन्तु श्रेष्ठ पुरुषोंही का संग करै दम अर्थात जिसका मन वशीभूत होय दान अर्थात वेद विद्या का नित्य दान करना और अहिंस्र अर्थात किसी से वैर बुद्धि नहीं ऐसाही लक्षणवाला पुरुष स्वर्ग को प्राप्त होता है अन्य नहीं ॥ २५ ॥ वाच्यर्थानियताःसर्वे वाङ्मूलावाग्विनिःसृताः। तांस्तुयःस्तेनयेद्वाचं ससर्वस्तेयकृन्नरः॥ २६ ॥ जिस पुरुष को प्रतिज्ञा मिथ्या होती है अथवा जो मिथ्या भाषण कर्त्ता है उसने सब चोरी करली क्योंकि वाणीही में सब अर्थ निश्चित रहते हैं केवल वचनहीं व्यवहारों का मूल है उस वाणी से जो मिथ्या बोलता है वह सब चोरी आदिक पापों को अवश्य कर्त्ता है इससे मिथ्या भाषण करना उचित नहीं ॥ २६ ॥ आचाराल्लभतेह्यायुराचारादीप्सिताःप्रजाः। आचाराद्धनमक्षय्यमाचारोहन्त्यलक्षणम् ॥ २७ ॥ जो सत्पुरुषों के श्रेष्ठ आचार के करने से आयु, श्रेष्ठ, प्रजा और अक्षय्यधन प्राप्त होते हैं और पुरुष में जितने दुष्ट लक्षण हैं वे सब सत्पुरुषों के आचरण

और संग करने से नष्ट होजाते हैं और श्रेष्ठ लक्षण भी उसमें आजाते हैं इससे श्रेष्ठही आचार को करना चाहिये २७ ॥ दुराचारोहिपुरुषोलोकेभवतिनिन्दितः। दुःखभागीचसततंव्याधितोऽल्पायुरेवच ॥ २८ ॥ दुष्ट आचार करनेवाला पुरुष लोक में निन्दित होता है निरन्तर दुःखीहो रहता है अनेक काम क्रोधादिक हृदय के रोग और ज्वरादिक शरीर के रोगों से शीघ्र मर भी जाता है इससे दुष्टों का आचार कभी न करना चाहिये ॥ २८ ॥ यद्यत्परवशंकर्मतत्तद्यत्नेनवर्जयेत्। यद्यदात्मवशंतुस्यात्तत्तत्सेवेतयत्नतः ॥ २९ ॥ जो जो पराधीन कर्म होय उनको यत्न से छोड़ देवै और जो स्वाधीन होंय उनको यत्न से कर्त्ता जाय ॥ २९ ॥ सर्वंपरवशंदुःखंसर्वमात्मवशंसुखम्। एतद्विद्यात्समासेनलक्षणंसुखदुःखयोः ॥ ३० ॥ जो जो पराधीन कर्म हैं वे सब दुःख रूपही हैं और जो २ स्वाधीन कर्म हैं सो २ सब सुख रूप हैं सुख और दुःख का समास अर्थात संक्षेप से यही लक्षण है सो जान लेवें ॥ ३० ॥ यमान्सेवेतसततंननियमान्केवलान्बुधः। यमान्पतत्यकुर्वाणोनियमान्केवलान्भजन् ॥ ३१ ॥ यमों का निरन्तर सेवन करना चाहिये वे यम पूर्व कह दिये हैं वहीं जान लेना और यमों को छोड़ के पांच जो नियम हैं उनका सेवन करैं वे नियम ये हैं। शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानियमाः। यह योगशास्त्र का सूत्र है शौच नाम पवित्रता रात दिन नहाने धोने में लगा रहै सन्तोष अर्थात् केवल आलस्य से दरिद्र बना रहै तप नाम निरन्तर कृच्छ्र चांद्रायणादिकों में प्रवृत्त रहै स्वाध्याय अर्थात केवल पढ़ने और पढ़ानेही में प्रवृत्त रहै धर्मानुष्ठान अथवा विचार कभी न करै और ईश्वर प्रणिधान अर्थात् स्वार्थ के लिये ईश्वर की प्रसन्नता चाहै ये अर्थ व्यवहारों की रीति से पांच नियमों के किये गये और योगशास्त्र की रीति

से नियमों के इस प्रकार के अर्थ हैं मृत्तिका और जलादिकों से बाह्य शरीर की शुद्धि और शान्त्यादिकों के ग्रहण और ईर्ष्यादिकों के त्याग से चित्त की शुद्धता इसका नाम शौच है धर्मयुक्त पुरुषार्थ करने से जितने पदार्थ प्राप्त होंय उतनेही में संतुष्ट रहै और पुरुषार्थ का त्याग कभी न करै इसका नाम सन्तोष है क्षुधा, तृषा, शीत और उष्ण इत्यादिक द्वंद्वों को सहै और कृच्छ, चांद्रायणादिक व्रत भी करै इसका नाम तप है मोक्ष शास्त्र अर्थात उपनिषदों का अध्ययन करै ऊंकार के अर्थ का विचार और जप करै उसका नाम स्वाध्याय है पाप कर्म कभी न करै यथावत् पुण्यकर्मों को करके सिवाय परमेश्वर की प्राप्ति के फल की इच्छा न करै इसका नाम ईश्वर प्रणिधान है इनको तो करता रहै परन्तु यमों को न करै उस को उत्तम सुख नहीं होता किन्तु यमों का करना उनके साथ गौण नियमों का भी करनाहीं उचित है और केवल नियमों का करना उचित नहीं ऐसे यथावत् विवाह करके गृहस्थ लोग वर्तमान करैं यह जितनी विद्यावाली स्त्री और पुरुष द्विज अर्थात् ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य पूर्वोक्त नियम से करैं विवाह का विधान संक्षेप से लिख दिया और सब मनुष्यों के बीच में स्त्री और पुरुष जो मूर्ख होंय उनका यज्ञोपवीत भी हुआ होय तो उसको तोड़ के शूद्र कुल में करदें उनका परस्पर यथायोग्य विवाह भी होना चाहिये वे सब द्विजों की सेवा करैं और द्विज लोग उनको अन्न वस्त्रादिक उनके निर्वाह के लिये देवें और यह बात भी अवश्य होना चाहिये कि देश देशान्तर से विवाह का होना उचित है क्योंकि पूर्व, उत्तर, दक्षिण और पश्चिम देशों में रहने वाले मनुष्यों में परस्पर विवाह के करने से प्रीति होगी और देश देशान्तरों के व्यवहार भी जाने जांयगे बला-दिक गुण भी तुल्य होंगे और भोजन व्यवहार भी एकही होगा

इस से मनुष्यों को बड़ा सुख होगा जैसे कि पूर्व दक्षिण देश की कन्या और पश्चिम उत्तर देश के पुरुषों से विवाह जब होगा और पश्चिम उत्तर देश के मनुष्यों की कन्या और पूर्व तथा दक्षिण देश में रहने वाले पुरुषों से विवाह होगा तब बल बुद्धि पराक्रमादिक तुल्य गुण हो जांयगे पत्र द्वारा और आने जाने से परस्पर प्रीति बढ़ेगी और परस्पर गुण ग्रहण होगा और सब देशों के व्यवहार सब देशों के मनुष्यों को विदित होंगे परस्पर विरोध जो है सो नष्ट होजायगा इस से मनुष्यों को बड़ा आनन्द होगा पूर्वपक्ष जैसे स्त्री मर जाती है तब पुरुष का दूसरी बार विवाह होता है वैसे स्त्री का पति मरने से विधवाओं का विवाह होना चाहिये वा नहीं उत्तर विवाह तो न होना चाहिये क्योंकि बहुत बार विवाह की रीति जो संसार में होगी तो जब तक पुरुष के शरीर में बल होगा तब तक वह स्त्री उसके पास रहेगी जब वह निर्बल होगा तब उसको छोड़ के दूसरे पुरुष के पास जायगी जब दूसरा भी बल रहित होगा तब वह तीसरे के पास जायगी जब तीसरा भी बल रहित होगा तब चौथे के पास जायगी ऐसी स्त्री जब तक वृद्धा न होगी तब तक बहुत पुरुषों का नाश कर देगी जैसे कि एक वेश्या बहुत पुरुषों को नष्ट कर देती है वैसे सब स्त्री हो जांयगी और विषदानादिक भी होने लगेंगे इस से द्विज कुल में दोबार विवाह का होना उचित नहीं स्त्रियों का और पुरुषों का भी बहुत विवाह होना उचित नहीं क्योंकि पुरुषों को भी वीर्य की रक्षा करनी उचित है जिस से शरीर में बल पराक्रमादिक भी मरण तक बने रहैं और एक पुरुष बहुत स्त्री के साथ विवाह करता है यह तो अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है इस को कभी न करना चाहिये तथा कन्या और बर का पिता जो धन लेके विवाह करते हैं यह भी अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है जैसे कि आज

काल कान्यकुब्जों में है बहुत गृहस्थ इस से दरिद्र होजाते हैं धन के नाश होने से दरिद्र लोग बिवाह करने में बड़ा दुःख पाते हैं बहुत कन्या वृद्ध होजाती हैं और बिवाह के बिना वृद्ध होके मर भी जाती हैं इस से इस दुष्ट व्यवहार को छोड़ना उचित है और बंगाले में कुलीन लोगों में बहुत स्त्रियों के साथ एक पुरुष बिवाह कर लेता है एक जो वह मर जाय तो एक के मरने से वे सब स्त्री बिधवा होजाती हैं यह भी अत्यन्त दुष्ट व्यवहार है इसको सज्जनों को छोड़नाही चाहिये और जो बिधवा होजाती हैं उनका कुछ आधार नहीं होने से भी बहुत अनर्थ होते हैं वे कन्या बाल्यावस्था वा युवावस्था में बिधवा होजाती हैं बहुत दुःखी होती और वे कुकर्म भी करती हैं बहुत गर्भहत्या और बालहत्या भी होती है इस से बिधवाओं का पति के बिना रहना भी उचित नहीं क्योंकि इस से बहुत अनर्थ होते हैं इस से इस व्यवहार का रहना भी उचित नहीं फिर क्या करना चाहिये कि प्रथम तो जब पूर्ण युवावस्था होय तब बिवाह होना चाहिये जिस से कि बिधवा भी बहुत न होंगी फिर जब कोई बिधवा होय तब छः पीढ़ी अथवा अपने गोत्र और अपनी जाति में देवर अथवा ज्येष्ठ जो संबंध से होय उस से बिधवा का पाणिग्रहण होना चाहिये परन्तु स्त्री की इच्छा से जब (जिस स्त्री का पति मर जाय और मरने का शोक भी निवृत्त होजाय अर्थात् त्रयोदश दिवस के अनन्तर जब कुटुम्ब के श्रेष्ठ मनुष्य बिधवा स्त्री के पास जाके उस से पूछें कि तेरी क्या इच्छा है जो वह बिधवा कहै कि मेरी इच्छा न सन्तान और न नियोग की है तब तो वह स्त्री चांद्रायणादिक व्रत तथा परमेश्वर का ध्यान और धर्म का अनुष्ठान करै ऐसेही मरण तक धर्म का आचरण करै दूसरे पुरुष का मन से भी चिन्तन न करै और जो बिधवा कहै कि मेरा पुत्र के बिना निर्वाह न

होगा तब सब पुरुषों के सामने देवर वा ज्येष्ठ का पाणिग्रहण करले उससे एक वा दो पुत्र उत्पादन करले अधिक नहीं इसमें ऋग्वेद के मन्त्र का प्रमाण है॥ कुहस्विद्दोषाकुहवस्तोरश्विना-कुहाभिपित्वंकरतः कुहोषतुः कोवांशयुत्राविधवेवदेवरंमर्य्यंनयो-षाकृणुतेसधस्थआ। इसका यह अभिप्राय है कि स्त्री और पुरुष ये दोनों के प्रति प्रश्न की नाईं कहा है आप दोनों दोषा अर्थात रात्रि कुह नाम कौन स्थान में बास करते भये और किस स्थान में अश्वि नाम दिवस में बास किया था किस स्थान में इन दोनों ने अभिपित्वं अर्थात प्राप्ति इन पदार्थों की की थी इन दोनों का निवासस्थान किस देश में था और शयुत्रा नाम शयनस्थान इन दोनों का किस स्थान में है यह दृष्टान्त भया और इससे यह अभिप्राय भी आया कि स्त्री और पुरुष का बियोग कभी न होना चाहिये सब दिन स्थान और सब देशों में संगही संग रहैं अब यह दृष्टान्त है कि जैसे विधवा देवर के साथ रात्रि दिवस और प्राप्ति का करना एक देश में बास एक स्थान में शयन और संग २ रहती है और देवर को सधस्थ अर्थात स्थान में आकृणुते अर्थात स्वीकार करके रमण और सन्तानोत्पत्ति करती है वैसे उन दोनों से भी वेदमन्त्र से पूंछा गया और देवर शब्द का निरुक्त में भी अर्थ लिखा है कि॥ देवरःकस्मात्द्वितीयोवरउच्यते। देवर अर्थात विधवा को जो दूसरा वर पाणिग्रहण करके होता है उस पुरुष को देवर कहते हैं इस निरुक्त से वर का बड़ा भाई अथवा छोटा भाई वा और कोई भी विधवा का जो दूसरा वर होय उसी का नाम देवर आया इस मन्त्र से विधवा का नियोग अवश्य करना चाहिये यह अर्थ आया और (मनुस्मृति में भी लिखा है)॥ देवराद्वासपिण्डाद्वास्त्रियासम्यङ्नियुक्तया। प्रजेप्सिताधिगन्तव्या-सन्तानस्यपरिक्षये॥ १ ॥ देवर अथवा छः पीढ़ी देवर वा

ज्येष्ठ के स्थान में कोई पुरुष होय उससे विधवा स्त्री का नियोग करना चाहिये और जिसका उस स्त्री के साथ नियोग भया वह उस स्त्री के साथ गमन करे परन्तु जिस स्त्री को सन्तान की इच्छा होय और सन्तान के अभाव में भी नियोग का होना उचित है ॥ १ ॥ विधवायांनियुक्तस्तुघृताक्तोवाग्यतोनिशि। एक-मुत्पादयेत्पुत्रंनद्वितीयंकथंचन ॥ २ ॥ द्वितीयमेकेप्रजनंमन्यन्ते-स्त्रीषुतद्विदः। अनिर्वृत्तंनियोगार्थंपश्यन्तोधर्मतस्तयोः ॥ ३ ॥ जो विधवा के साथ नियुक्त होय सो रात्रि के दोनों मध्य प्रहरों में घृत का शरीर में लेपन करके ऋतुमती विधवा को वीर्य प्रदान करै मौन करके अर्थात बहुत मोहित होके क्रीड़ाशक्त न होय किन्तु सन्तानोत्पत्ति मात्र प्रयोजन रक्खै ॥ २ ॥ कोई एक आचार्य ऋषि लोग ऐसा कहते हैं कि दूसरा भी पुत्र विधवा को होना चाहिये क्योंकि एक पुत्र जो हो जाता है उससे नियोग का प्रयोजन सब सिद्ध नहीं होता ऐसेही धर्म से विचार करके कहते हैं कि दो पुत्र का होना उचित है ॥ ३ ॥ विधवायांनियोगार्थेनिर्वृत्तेतुयथाविधि। गुरुवच्चस्नुषावच्चवर्तेया-तांपरस्परम् ॥ ४ ॥ विधवा में नियोग का जो प्रयोजन कि दो पुत्र का होना सो विधि पूर्वक जब होगया उसके पीछे वह विधवा नियुक्त पुरुष को गुरुवत् मानै और वह पुरुष उस विधवा को पुत्र की स्त्री की नाई मानै अर्थात फिर समागम कभी न करै और जैसे कि पहिले सब कुटुम्बियों के साम्हने पाणिग्रहण किया था और नियम भी किया था कि जब तक दो पुत्र न होवें तब तक नियोग रहै फिर वैसे फिर भी सब कुटुंबियों के साम्हने दोनों कह देवें कि हम लोगों का नियम पूर्ण होगया अब हम लोग वैसा काम न करेंगे ॥ ४ ॥ नियु-क्तौयौविधिंहित्वावर्त्तेयातांतुकामतः। तावुभौपतितौस्यातांस्नु-षागगुरुतल्पगौ ॥ ५ ॥ फिर जो वे दोनों विधि अर्थात उस

मर्यादा को छोड़ के कामातुर होके समागम करैं तो पतित होजांय क्योंकि ज्येष्ठ और कनिष्ठ इन दोनों को जैसे पुत्र वा गुरु की स्त्री से गमन करने का पाप होता है वैसाही पाप होता है अर्थात फिर कभी परस्पर कामक्रीड़ा न करैं ॥ ५ ॥ नान्यस्मिन्विधवानारीनियोक्तव्याद्विजातिभिः । अन्यस्मिन्हिनियुंजानाधर्मंहन्युःसनातनम् ॥ ६ ॥ उक्त प्रकार से भिन्न पुरुष के साथ विधवा का नियोग कभी न करैं अपने कुटुम्बही में करैं जिस्से स्त्री जहां की तहां बनी रहै और सन्तान से भी कुल की वृद्धि बनी रहै क्षय कभी न होय जो और किसी पुरुष के साथ नियोग करेंगे तो स्त्री हाथ से जायगी और सन्तान की हानि होने से कुल की भी हानि होगी फिर जो कुल की वृद्धि करना सो सनातन धर्म नष्ट होजायगा इस्से अपनेही कुटुंब में नियोग करना उचित है इस बात की सज्जन लोग शीघ्रही प्रवृत्ति करैं क्योंकि इसके विना विधवा लोगों को अत्यन्त दुःख होता है और बड़ा पाप होता है संसार में इस बात के करने से यह दुःख और पाप कभी न होंगे॥५॥ ज्येष्ठोयवीयसोभार्यांयवीयान्वाग्रजस्त्रियम् । पतितौभवतोगत्वा नियुक्तावप्यनापदि ॥ ६ ॥ ज्येष्ठ कनिष्ठ की तथा कनिष्ठ ज्येष्ठ की स्त्री से नियुक्त भी होवें तो भी आपत्काल के विना अर्थात दो पुत्र होने के पीछे जो गमन करैं तो पतित होजांय इस्से आपत्कालही में नियोग का विधान है ॥ ६ ॥ यस्याम्रियेतकन्यायावाचासत्येकृतेपतिः । तामनेनविधानेननिजोविंदेतदेवरः ॥७॥ जिस कन्या का पाणिग्रहण मात्र तो होजाय और पति का समागम न होय तो उस स्त्री का देवर के साथ विवाह होना उचित है ॥ ७ ॥ परंतु इस प्रकार से दोनों विधान करैं ॥ यथाविध्यधिगम्यैनांशुक्लवस्त्रांशुचिव्रताम् । मिथोभजेताप्रसवात्सकृत्सकृदृतावृतौ ॥ ८ ॥ यथाविधि विधवा से देवर विवाह करके

परस्पर ऋतु२में एक२वार समागम करैं परंतु वह स्त्री शुक्ल वस्त्र धारण करै परंतु जिसका श्रेष्ठ आचार होय उसी का तो और दुष्टाचार वाले का नहीं ८ मा चेदक्षतयोनिःस्यात् गतप्रत्यागतापिवा पौनर्भवेनभर्त्रा सा पुनःसंस्कारमर्हति॥ ६॥ जो स्त्री अक्षतयोनि अर्थात विवाह तथा जाने आने मात्र व्यवहार तो हुआ हो परंतु पुरुष से समागम न भया होय तो पौनर्भव पुरुष अर्थात (विधवा के नियोग से) जो उत्पन्न भया होय उसके साथ उस विधवा का विवाह ही होना उचित है ॥ ६ ॥ यह विधवा नियोग का प्रकरण पूरा होगया (जो विधवा नहीं है और किसी प्रकार का आपत्काल है उनके लिये ऐसा विधान है कि जिसका पति परदेश चला जाय और समय के ऊपर न आवै उस स्त्री के लिये इस प्रकार का विधान शास्त्र में है और पुरुष के लिये भी है (प्रोषितो धर्मकार्यार्थं प्रतीक्ष्योऽष्टौनरःसमाः। विद्यार्थं षट्यशोर्थं वा कामार्थं त्रींस्तु वत्सरान्॥ १०॥ जो पुरुष स्त्री को छोड़ के परदेश को जाय और जो धर्म ही के लिये गया हो तो आठ वर्ष पर्यन्त स्त्री पति की मार्ग प्रतीक्षा करै, और जो उस समय वह न आवै तो स्त्री पूर्वोक्त प्रकार से नियोग करके पुत्रोत्पत्ति करै, और जो पति बीच में आ जाय तो नियोग छूट जाय जिस से विवाह किया गया था उसी के पास स्त्री रहै और किसी उत्तम विद्या पढ़ने वा कीर्ति के लिये गया होय तो छः वर्ष तक परीक्षा करै तथा काम वा धन के लिये गया होय कि मैं धन ला के खूब विषय भोग करूंगा उसकी तीन वर्ष तक स्त्री प्रतीक्षा करै फिर उक्त प्रकार से नियोग करके पुत्रोत्पत्ति कर लेवे ॥ १० ॥ संवत्सरंप्रतीक्षेत द्विषन्तीयोषितंपतिः । ऊर्द्धं संवत्सरात्त्वेनांदायं हृत्वानसंवसेत्॥ ११॥ जो दुष्टता करके स्त्री प्रतिकूल हो जाय अर्थात अपने पिता वा भाई के पास रुष्ट होके चली जाय तो पति एक वर्ष पर्यन्त राह देखै फिर दाय अर्थात जो कुछ स्त्री को गहना आदिक दिया था उसको लेके उसका सङ्ग न करै अर्थात दूसरा विवाह कर लेवे ॥ ११ ॥ मद्यपासाधुवृत्ता च प्रतिकूला च या भवेत्। व्याधिता वाधिवेत्तव्या हिंस्रार्थघ्नी च सर्वदा ॥ १२ ॥ जो स्त्री मद्य पीती होय तथा विपरीत ही चलै कि

आज्ञाकोनमानैव्याधिनामरोगयुक्तहोजाय वाविषादिकदेकेकोई मनुष्यकोमारडाले औरघरकेपदार्थोंकोसदानाशकर्तीहोय तो उसस्त्रीकोछोड़केदूसराविवाहकरलेवै ॥ १२ ॥ वन्ध्याष्टमेधिवेद्याऽब्देदशमेंतुमृतप्रजा। एकादशेस्त्रीजननीसद्यस्त्वप्रियवादिनी॥१३॥ विवाहकेपीछे८आठवर्षतकगर्भनरहै, औरवैद्यकशास्त्रकीरीतिसे परीक्षाभीकरले फिरअष्टमेवर्षदूसराविवाहकरले औरवन्ध्याका यथावत्पालनकरैपरंतुसमागमनकरैऔरजिसकेसंतानहोकेमर जांय औएकभीनजीयेतो१०मेंवर्षदूसराविवाहकरलेवै औरउसको अन्नवस्त्रादिकदेवैऔरजिसस्त्रीसेकन्याहीबहुतहोवें पुत्रएकभीनहो यतो ११ग्यारहवेंवर्षदूसराविवाहकरले औरउसस्त्रीकापालनकरै जोदुष्टस्त्रीहोय औरअप्रियवचनबोलै तोउसकोशीघ्रहीछोड़केदू-सराविवाहकरलेवै १३ वैसापुरुषभीदुष्टहोजाय, तोस्त्रीभीउसको छोड़केधर्मसेनियोगकरकेपुत्रोत्पत्तिकरलेऔरएकयहभीव्यवहार है इसकोजाननाचाहिये किअपनेशरीरसेपुत्रनहोय अर्थातरोग सेवीर्यहीनहोगयाहोयअथवापीछेकिसीरोगसेनपुंसकहोगयाहोय तोअपनेस्वजातिकेपुरुषसेवीर्यलेकेपुत्रोत्पत्तिकरालेवै परन्तुधर्मसे व्यभिचारसेनहोंइसीप्रकारसे१२पुत्रमनुस्मृतिमेंलिखेहैं जिसकोट खनेकीइच्छाहोयसोदेखलेवैनियोगमेंऔरक्षेत्रजादिकपुत्रोंकेहो-नेमें महाभारतमें दृष्टान्तभीहै जैसेकिचित्रांगदऔरविचित्रवीर्य दोनोंजबमरगए तबबड़ेभाईजोव्यासजीउनकेवीर्यसे तीनपुत्रउ-त्पन्नकरालिये एकधृतराष्ट्र,दूसरापाण्डु,तीसराविदुर येतीनपुत्र सबसंसारमेंप्रसिद्धहैं औरयुधिष्ठिर,भीम,अर्जुन,नकुलऔरसह-देवयेपांचऔरोंकेनियोगसेउत्पन्नभयेहैं यहबातसंसारमेंप्रसिद्धहै, इस्सेनियोगकाकरना औरक्षेत्रजादि पुत्रोंकाहोना शास्त्रकीरीति और युक्तिसेठीकहै इसमेसबश्लोक मनुस्मृतिकेलिखेहैं(पूर्वपक्ष) औरस्मृतिकेश्लोकक्योंनहीलिखे(उत्तरपक्ष)अन्यस्मृतियोंका वेदोंसे विरोध औरवेदमें प्रमाणभीकिसीकानहीहै ऋषिमुनियोंकीकिई

भीकोईस्मृतिनहीं (सिवायमनुस्मृतिके)॥ यहै किस्वनमनुरवदत्त-
द्वै षजंभेषजतायाः। (यहछांदोग्यउपनिषदकीश्रुतिहै) इसकायह
अभिप्रायहै किजोकुछमनुजीनेउपदेशकियाहै सोयथावतवेदोक्त
है औरसत्यहीहै जैसेकिरोगकेनाशकरनेकाऔषधवैसाहोहै यह
एकमनुस्मृतिहीकावेदमेंप्रमाणमिलताहैऔरकिसीस्मृतिकानहीं
औरसबलोगोंकोभीयहबातसम्मतहै॥ (किवेदार्थोपनिबन्धृत्वात्प्रा-
धान्यं हिमनोस्मृतम्। मन्वर्थविपरीतायासास्मृतिर्नप्रशस्यते॥
इसश्लोककेसबपंडितलोगकहतेहैंकिमनुस्मृतिकेअनुकूलजोस्मृति
उसकोमाननाचाहिये औरउससेविरुद्धकिसीस्मृतिकानहीं सोएक
बातमें तोपंडितोंकीऔरमेरीसम्मतहोगई परन्तुएकबातमें विरो-
धहोताहै किमनुकेअनुकूलस्मृतियोंकोवेमानतेहैं औरमैंनहीं
मानता क्योंकिमनुस्मृतिकेअनुकूलतोतबकोईस्मृतिहोगीजबमनु-
स्मृतिकेअर्थहीकोकहै फिरमनुजीनेतोवहअर्थकहदियाहै उसका
कहनादूसरीबारव्यर्थहै, क्योंकिपीसेभयेपिसानकाजोपीसना सो
व्यर्थहीहोताहै औरमनुस्मृतिमें जोउपदेशकरनाथा सोसबकर
दियाहै कुछबाकीनहींरक्खा इससेभीअन्यस्मृतिकाहोनाव्यर्थहीहै
इसबातकोपंडितलोगविचारकरलेवें तोबहुतअच्छीबातहै और
महाभारतमेंभीजहांरप्रमाणलिखातहांरमनुस्मृतिहीकालिखा
और किसीस्मृतिका नहीं इससे जानाजाताहै किमनुष्योंने ऋ-
षियोंकेनामप्रमाणकेवास्ते लिख २ के जालअपनेप्रयोजनकेवास्ते
बनालियाहै औरजोयहबातकहतेहैं कि कलौपाराशरीस्मृतिः।।
सोतोअत्यन्तअयुक्तहै क्योंकिद्वापरकेअन्तमें व्यासजीने मनुस्मृति
काहीप्रमाणलिखा सोक्योंलिखा शङ्कराचार्यजीनेभीमनुस्मृतिका
हीप्रमाणलिखाहै औरजोसत्यबातहैउसकासबदिनप्रमाणहोता
है इसमें कुछशङ्कानहीं इससेजोपुरुषकहतेहैंकिकलीमें पाराशरी
स्मृतिकाप्रमाणहैसोमिथ्याबातहै औरपाराशरीस्मृतिकेआरंभमें
यहबातलिखीहैकिऋषिलोगोंनेव्यासजीकेपासजाकेपूछाआपहम

सेवर्णाश्रमयथावत्‌कहैं तबउनसेव्यासजीनेकहाकिमैंयथावत्‌वर्णा-
श्रमधर्मोंकोनहींजानता इससे मेरेपिताजोपाराशरउनसेचलके
पूछें वेसबधर्मोंकोयथावत्‌कहैंगे फिरउनकेपासजाके तबलोगोंने
प्रश्नकिया औरपाराशरजोउनसेकहनेलगे उसमेंहोपाराशरजोने
कहाकि कलौपाराशराःस्मृताः इसमेंविचारनाचाहिये किव्यास
जीवेदादिकसबशास्त्रजाननेवाले वर्णाश्रमधर्मकोक्यानहोंजानतेथे
किन्तु अवश्यहीजानतेथे औरपाराशर अपनेमुखसेकैसेकहेंगे कि
कलौमेंपाराशरउक्तधर्मोंकोमाननायहअयुक्तहै औरउसीमेंऐसे२
अयुक्तश्लोकलिखेहैं किकोईबुद्धिमानउनकाप्रमाणभीनकरै जैसे
कि। पतितोपिद्विजश्रेष्ठोनचशूद्रोजितेन्द्रियः। निर्दुग्धावापिगौः-
पूज्यानचदुग्धवतोखरी॥१॥ अश्वालम्भंगवालम्भंसन्यासंपलपैतृ-
कम्। देवराच्चसुतोत्पत्तिं कलौपंचविवर्जयेत्॥ नष्टे मृतेप्रव्रजिते·
क्लोवेचपतितेपतौ। पञ्चस्वापत्सुनारीणां पतिरन्योविधीयते ३॥
इनमेंदेखनाचाहिये किकुकर्मीजोहैसोईपतितहोताहै वहश्रेष्ठ
कैसेहोगाकभीनहोगा औरजितेन्द्रियअर्थात्‌श्रेष्ठकर्मकरनेवाला
पुरुषहै सोश्रेष्ठकैसेहोगा किन्तुकभीनहोगा औरगायतोपशु
है, सोपशुकोक्यापूजाकरनाउचितहै कभीनहीं किन्तुउसकोतो
यहीपूजाहै किघास,जलइत्यादिकसेउसकीरक्षाकरना सोभीदु-
ग्धादिकप्रयोजनकेवास्तेअन्यथानहीं औरगधोकीभोपूजावैसोही
होतीहै जिसकोप्रयोजनरहताहै वहप्रयोजनकेवास्तेकर्ताहीहै॥
१॥ औरदूसराश्लोकअश्वालम्भनामअश्वमेधगवालम्भनामगोमेध
औरसन्यासग्रहण औरमांसकापिण्डदान औरविधवासेदेवरके
नियोगसेपुत्रोत्पत्ति येपांचसबकालमेंकरनाचाहिये इनकात्याग
कभीनहीं इनसेबड़ासंसारकाउपकारहै औरकुछपापनहीं इसके
कहनेसेअजामेधादिकोंकात्यागनहींआया अश्वमेधऔरगोमेधका
गोमारनाउससे बड़ासंसारकाउपकारहै सोपहिलेकहदिया।और
संन्यासकात्यागकरैतोअर्थात्‌पाखण्डकरेगा जैसेकिवैरागीआदिक

उस्से तोसंसारकीबड़ीहानिहोतो इस्से संन्यासकाहोनाअवश्यहै,+ ~~औरमांसकेपिण्डदेनेमेंभीकुछपापनहीं~~ क्योंकि यदन्नाःपुरुषालोकातदन्नाःपितृदेवता ॥ १ ॥ यहमहाभारतकावचनहै। मधुपर्केतथायज्ञेपित्र्यदैवतकर्मणि। अत्रैवपशवोहिंस्यानान्यत्रेत्यब्रवीन्मनुः।२॥ जोपदार्थआपखायउसीसेपञ्चमहायज्ञकरै अर्थात्पितृदेवपूजाभीउसीसेकरै अर्थात्श्राद्धऔरहोमउसीकाकरै मधुपर्क विवाहादिक औरगोमेधादिकयज्ञ औरदेवपितृकार्य इनमेंमांसकोजोखाताहोय तोउसकेवास्ते मांसकेपिण्डकरनेका विधान है इस्से ~~मांसकेपिण्ड देनेमेंभीकुछपापनहीं~~/देवराज्ये छमे नियोगकाविधिलिखदिया सोवहीजानलेना कलिमेंपांचोंकोनकरनाभी यहबातमिथ्याहीहै २ अर्थातपरदेशकोपतिचलागयाहोय तोस्त्री दूसरापतिकरले फिरजोपूर्वविवाहितपतिआजायतोदोनोंमेंबड़ा बखेड़ाहोगा क्योंकिएककहेगामेरीस्त्रीहै दूसराकहेगामेरीस्त्रीहै फिरक्यावआधी२स्त्रीकोकरलेंवापारीलगालें सोइसप्रकारकाकहनामिथ्याहीहै औरपांचप्रकारकेआपत्कालमेंछटहीआपत्आवेगीतावहस्त्रीक्याकरैगीइस्सेयतीनोंस्लोकमिथ्याहीहैंवैसेहीपाराशरीमेंमिथ्याअयुक्तबहुतस्लोककहेहैं औरजोकोईसत्यहैसोमनुस्मृतिहीकाहै इस्सेपाराशरीकाप्रमाणकरना सज्जनोंको उचितनहीं औरजैसीपाराशरीवैसीयाज्ञवल्क्यादिकस्मृतियांहै इस्से मनुस्मृति कोछोड़केऔरकिसीकाप्रमाणकरनाउचितनहीं इसवास्तेजहां२ प्रमाणलिखावहां २ मनुस्मृतिहीकालिखागया।जबजिसदिनस्त्री रजस्वलाहोय उसदिनसेलेके१६सोलहदिनतकऋतुकालहै उनमेंसेपहिलेकेचारदिनत्याज्यहैं और११ग्यारहवां,और१३तेरहवां दिनछोड़देना औरअमावस्याऔरपौर्णमासीभीत्याज्यहै अर्थात सोलहमेंसे८आठदिनबाकीरहे उनमेंसेभीछठवां,आठवां,दशवां और१२वांदिन वीर्यदानकरनेमेंअच्छेहैं क्योंकिइनदिनोंमेंस्त्रीके शरीरकोधातु समसभावसेतुल्यवर्तमानरहतीहैं और५वां,७वां

और ८ वां ये तीन दिन मध्यम हैं क्योंकि उस दिन स्त्री के धातु औंका अधिक बल होता है सो पहिले ४ चार दिनों में वीर्यदान करेगा तो प्रायः पुत्र ही होगा अथवा कन्या होगी तो श्रेष्ठ ही होगी और जो तीन दिनों में वीर्यदान करेगा तो प्रायः कन्या होगी और नपुंसक भी हो जाय तो आश्चर्य नहीं इससे ४ चार दिन अथवा ७ सात दिन वीर्य्य दान के उत्तम और मध्यम हैं, अन्य दिन में समागम करेगा तो क्षीणबल सन्तान होगा इससे ११ ग्यारहवां वा १३ तेरहवां अमावस्या और पौर्णमासी दिन में वीर्यदान करेगा तो वीर्य नष्ट हो जायगा और जो सन्तान होगा सो भी नष्ट होगा रोग के होने से क्योंकि उन दिनों में स्त्री की धातु विषम हो जाती हैं एक २ मास में स्त्री स्वभाव से रजस्वला होती है, सो उक्त प्रकार के सोलह दिन के पीछे स्त्री का समागम कभी न करै क्योंकि मिथ्या वीर्य नष्ट होगा और गर्भ कभी न रहेगा इससे मिथ्या वीर्य का नाश कभी न करना चाहिये जिस दिन से गर्भ होवे उस दिन से लेके एक वर्ष तक स्त्री का त्याग करना अवश्य चाहिये क्योंकि गर्भ का नाश और पुरुष का बल भी नष्ट हो जाता है इससे एक वर्ष तक त्याग अवश्य करना चाहिये जो पुरुष परस्त्री अथवा वेश्या गमन से वीर्य नाश करते हैं वे बड़े मूर्ख हैं क्योंकि उनका वीर्य मिथ्या हो जायगा और बड़े रोग होंगे जो कभी गर्भ रहेगा तो भी उसको कुछ फल नहीं क्योंकि जिसकी स्त्री है उसी का सन्तान होगा और वीर्य देनेवाले का नहीं और वेश्या से जो पुत्र होगा सो भडुआ ही होगा और जो कन्या होगी तो वह वेश्या ही होगी इससे वीर्य देनेवाले को कुछ लाभ नहीं सिवाय हानि के और रोग भी उनको बड़े २ होते हैं जिससे की बड़ा दुःख पाते हैं क्योंकि जब परस्त्री गमन को इच्छा करता है अथवा जिस वक्त समागम करता है, तब उसके हृदय में भय, शंका और लज्जा पूर्ण होती है कि इस कर्म को कोई न जानै जो कोई जानेगा तो मेरी दुर्दशा हो जायगी एक तो यह अग्नि, दूसरा मैथुन का अग्नि और तीसरा चिन्ताग्नि कि रात दिन उसी चिन्ता से जलता जायगा ये तीनों अग्नि से उसको धातु सब दग्ध हो जा-

तोहैं इससे महारोगीहोकेमरजाताहै औरयहबड़ापापभीहै इससे मनुष्यवासोअल्पायुहोजातेहैं औरजोवेश्यागमनकर्ताहै कुत्ताकी नांईवहपुरुषहै क्योंकिजैसेकुत्तासबकाजूंठ औरछांटकियेअन्नको खालेताहै उसकोघृणानहीहोती वैसेहीघृणाकेनहोनेसेसज्जनलोग उसपुरुषकोकुत्तेकेनांईजानें औरजोव्यभिचारिणीस्त्री औरवेश्या उनकोभीकुत्तीकोनांईजानें क्योंकिइनकोभीघृणानहींहोतीहै और देखना चाहिये किमालीऔरखेतीकरनेवालेलोग अपनेबागमें औरअपनेहीखेतमेंइच्छाअन्नबोतेहैं अन्यकेबागवाखेतमेंनहीं ये मूर्खभीहैं तोभीपराएबागवाखेतमेंकभीकुछनहींबोतेऔरजोलौंडे बाजीकरतेहैं वेतोसूवरवाकौवेकीनांईहैं क्योंकिजैसेसूवर वा कौवे विष्टासेबड़ीप्रीतिरखतेहैं औरअरुचिकभीनहींकरतेवैसेवेभीपुरुष विष्टाजिसमार्गसेनिकलतीहै उसमार्गमेंबड़ीप्रीतिरखतेहैं, इससे इसप्रकारकेजोमनुष्यहैंवेमूर्खसेबढ़करहैं किवीर्यजोसबबीजोंमेंउ-त्तमबीजहै उसकोव्यर्थनष्टकरतेहैं औरकेवलपापहीकमातेहैं जो युक्तिसेवीर्यकेरखनेमेंसुखहोताहै उतनासुखलाखवक्तस्त्रीकेसमा-गमसेभीनहींहोताऔरजब४८वा४४वा४०वा३६वर्षतकब्रह्मचर्या-श्रमसेवीर्यकीरक्षाकरें फिरजबपूर्णबलशरीरमेंहोजायऔरस्त्रीभी ब्रह्मचर्य्याश्रमकरकेपूर्णयुवतीहोजाय तबजोउनदोनोंकोएकवार विषयभोगमेंसुखहोताहै सोबाल्यावस्थामेंविवाहकरनेसेलाखवक्त समागममेंभीसुखनहींहोता औरसंतानभीरोगयुक्तनष्टभ्रष्टहोते हैं जोब्रह्मचर्याश्रमकरनेवालेकेसन्तानहोंगे तोबड़े सामर्थ्यवान् धनवान्शूरवीरविद्यावान्औरसुशीलहीहोंगे इससे वारंवारलि-खनेकायहीप्रयोजनहै किब्रह्मचर्याश्रमतथाविद्याकेबिनामनुष्यश-रीरधारनाहीनष्टहै सदाधर्मयुक्तपुरुषार्थसेविद्या,धनतथाशरीर औरनानाप्रकारकेशिल्प इनोंकीवृद्धिहीकरनीउचितहै औरस्त्री लोगोंकेछः दूषणहैं उनकोस्त्रीलोगछोड़दें औरसबपुरुषछोड़ादेवें। पानन्दुर्जनसंसर्गःपत्याचविरहोटनम् । स्वप्नोन्यगेहवासश्चनारी-

संदूषणानिषट् ॥ यह मनु का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि पानं अर्थात मद्य और भंगादि का नशा का करना दुर्जनसंसर्ग अर्थात दुष्ट पुरुषों का संग होना पत्या विरह अर्थात पति और स्त्री का वियोग नाम स्त्री अन्यदेश में और पुरुष अन्यदेश में रहै अटन अर्थात पति को छोड़के जहां तहां स्त्री भ्रमण करै जैसे कि नाना प्रकार के मंदिरों में तथा तीर्थों में स्नान के वास्ते और बहुत पाखण्डियों के दर्शन के वास्ते स्त्री का भ्रमण करना स्वप्नोन्यगेहवासश्च अर्थात अत्यन्त निद्रा अन्य के घर में स्त्री का सोना और अन्य के घर में वास करै पति के बिना और अन्य पुरुषों के संग का होना ये छः अत्यन्त दूषण स्त्रियों के भ्रष्ट होने के वास्ते हैं कि इन छः कर्मों ही से स्त्री अवश्य भ्रष्ट हो जायगी इसमें कुछ संदेह नहीं और पुरुषों के वास्ते भी ऐसे बहुत दूषण हैं ॥ मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा नवि- क्तासनो भवेत्। बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति ॥ माता और स्वसा अर्थात भगिनी दुहिता नाम कन्या इनके साथ भी एकान्त में निवास कभी न करै और अत्यन्त संभाषण भी न करै और नेत्र से उनका स्वरूप और उनकी चेष्टा न देखै जो कुछ उनसे कहना वा सुनना होय सो नीचे दृष्टि करके कहै वा सुनै इसका क्या आया कि जितनी व्यभिचारिणी स्त्री वा वेश्या और जितने वेश्यागामी वा परस्त्रीगामी पुरु- ष हैं उनमें प्रीति वा संभाषण अथवा उनका संग कभी न करै इस प्रकार के दूषणों से ही पुरुष भ्रष्ट हो जाता है क्योंकि यह जो इन्द्रियग्राम अर्थात मन और इन्द्रियां ये बड़े प्रबल हैं जो कोई विद्वान अथवा जितेन्द्रिय वा योगी वे भी इस प्रकार के संगों से भ्रष्ट हो जाते हैं तो साधारण जो गृहस्थ वा मूर्ख वह तो अवश्य भ्रष्ट ही हो जायगा इस वास्ते स्त्री वा पुरुष सदा इन दुष्टसङ्गों से बचे रहैं और जो स्त्रियों को अत्यन्त बन्धन में रखते हैं यह भी बड़ा भ्रष्ट काम है क्योंकि स्त्रियों को बड़ा दुःख होता है श्रेष्ठ पुरुषों का तो दर्शन भी न हो होता और नीच पुरुषों से भ्रष्ट हो जाती हैं देखना चाहिये कि परमेश्वर ने तो सब जीवों को स्वतन्त्र रचे हैं और उनको मनुष्य लोग बिना अपराध से परतन्त्र अर्थात बन्धन में रख देते हैं। वे

बड़ापापकर्त्तेहैं सोइसबातकोसज्जनलोगकभीनकरैं यहबातमुस-ल्मानोंकेराज्यसेप्रवृत्तभईहै आगेनथी कौन्ती,गान्धारीऔरद्रौपद्यादिक,स्त्रियांराजसभामें जहांकिराजालोगोंकी सभाहोती थी औरवार्तासंभाषणकरतीथीं अपनेपतिकोपंखा औरजलादिकोंसे सेवाभीकरतीथीं औरगार्गीमैत्रेयीइत्यादिक ऋषिलोगोंकीस्त्रियां भीसभामेंशास्त्रार्थकरतीथीं यहबातमहाभारत औरबृहदारण्यक उपनिषद्मेंलिखीहै इसकोअवश्यकरनाचाहिये, मुसल्मानलोगों काजबराज्यभयाथा तबजिसकिसीकी कन्या वा स्त्री कोपकड़लेते, औरभ्रष्टकरदेतेथे उसीदिनसेश्रेष्ठआर्य्यावर्त्तदेशवासीलोगस्त्रियों कोघरमेंरखनेलगे औरस्त्रीलोगभीमुखकेऊपरवस्त्ररखनेलगीं सो इसबातकोछोड़देनाचाहियेक्योंकिइसव्यवहारमेंसिवायदुःखके सुखकुछनहींजैसेदाक्षिणात्यलोगोंकीस्त्रियांवस्त्रधारणकरतीहैं वैसा हीपहिलेथा क्योंकिकभीवस्त्र अशुद्धनहीरहता सबदिनजैसेपुरुषों केवस्त्रशुद्धरहतेहैं वैसेस्त्रीलोगोंकेभीशुद्धरहतेहैं इससे इसप्रकारका वस्त्रधारणकरनाउचितहै, स्त्रीलोगोंकोपतिकीसेवा औरतीर्थ के स्थानमें सास,श्वसुर इनतीनोंकीसेवाजोहै सोई उत्तम कर्म है और अपने घरका कार्य और धनादिकोंकी रक्षा करना और सबकुटुंबमेंपरस्परप्रीतिकाहोना सबदिनविद्या औरनानाप्रकार केशिल्पोंकीउन्नतिस्त्रीलोगकरैंऔरपुरुषलोगभीघरमेंकलहनकरैं परस्परप्रसन्नहोकरहना यहीगृहस्थलोगोंकाभाग्यऔरसुखकीउन्नतिहै यहगृहस्थलोगोंकोशिक्षासंक्षेपसेलिखदिया औरजोविस्तारसेदेखनाचाहै तोवेदादिकसत्यशास्त्रऔरमनुस्मृतिमेंदेखलेवै इसकेआगेवानप्रस्थ औरसन्यासियोंकेविषयमें लिखाजायगा॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषा विरचिते चतुर्थः समुल्लासः संपूर्णः॥ ४॥

अथवानप्रस्थसन्यासविधिंवक्ष्यामः। ब्रह्मचर्याश्रमंसमाप्यगृही भवेत् गृहीभूत्वावनीभवेत् वनीभूत्वाप्रव्रजेत् यहवृहदारण्यकउपनिषद्कीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिब्रह्मचर्याश्रम अर्थात्यथावत् विद्याओंकोपढ़के फिरगृहाश्रमीहोय फिरवानप्रस्थहोय औरवानप्रस्थहोकेसन्यासीहोय ऐसाक्रमहैकिइसमें जितनेंश्लोक लिखेंगेवेसबमनुस्मृतिहीके जानलेउसकेआगेम०ऐसाचिन्हलिख देंगे। एवंगृहाश्रमेस्थित्वाविधिवत्स्नातकोद्विजः। वनेवसेत्तुनियतोयथावद्विजितेन्द्रियः॥ १॥ इसप्रकारसेविधिवत्गृहाश्रममेंरहकेस्नातकद्विज अर्थात्विद्यावाले ब्राह्मण,क्षत्रियऔरवैश्य,येतीनों वानप्रस्थहोवें सोवनमेंजाकेवासकरै यथावत्निश्चयकरकेऔरजितेन्द्रियहोकेसोकिससमयवानप्रस्थहोयकि १॥गृहस्थस्तुयदापश्येत वलीपलितमात्मनः। अपत्यस्यैवचापत्यं तदारण्यंसमाश्रयेत् २ म०जबगृहस्थावलीअर्थातशरीरकाचर्मढीलाहोजाय पलितनाम केशश्वेतहोजांयऔरउसकापुत्रब्रह्मचर्यसेसबविद्याओंकोपढ़केविवाहकरलेवै फिरजबपुत्रकाभीपुत्रहोय तबवहगृहस्थवनकोचला जाय॥२॥ संत्यज्यग्राम्यमाहारंसर्वंचैवपरिच्छदम्। पुत्रेषुभार्यांनिक्षिप्यवनंगच्छेत्सहैववा॥ ३॥ म०ग्रामोंकेजितनेपदार्थहैं उन सभोंकोछोड़देऔरअच्छेवस्त्रादिकभीछोड़दे अर्थातनिर्वाहमात्र लेजाय उसकोभीछोड़दे वनमेंजाकेअपनीस्त्रीको पुत्रकेपासरखदे अथवास्त्रीजोकहैकिसेवाकेवास्तेमैंचलूंगीतोसंगमेंलेकेवनकोदोनों जाय जोस्त्रीकहैकिमैं पुत्रोंकेपासरहूंगी तोउनकोछोड़के एकाकी जाय॥ ३॥ अग्निहोत्रंसमादाय गृह्यंचाग्निपरिच्छदम्। ग्रामादरण्यंनिःसृत्य निवसेन्नियतेन्द्रियः॥ ४॥ म० अग्निहोत्रकीसब सामग्रीअर्थातकुण्डऔरपात्रादिकोंकोलेके ग्रामसेनिकलकेजितेन्द्रियहोकेवनमेंवासकरै॥ ४॥ मुन्यन्नैर्विविधैर्मेध्यैःशाकमूलफलेनवा। एतानेवमहायज्ञान् निर्वपेद्विधिपूर्वकम्॥ ५॥ म०मुन्यन्न नाममुनियोंकेविविधजोअन्नसांवाकाचावलजोकिवनमेंबिनाबोए

होतेहैं वेमेध्यहोतेहैं अर्थात बुद्धिवृद्धि करनेवालेहैं उनसेशाकजो कि पत्रऔर पुष्पमूलनामकन्द जोकिभूमिमेंसेनिकलतेहैं औरफल इनसेपूर्वोक्तपंचमहायज्ञोंकोविधिपूर्वकनित्यकरै॥ ५ ॥ वसीतचर्मचीरंवासायंस्नायात्प्रगेतथा। जटाश्चबिभृयान्नित्यं श्मश्रुलोमनखानिच ॥ ६॥ भ० मृगचर्मअथवाचीरजोकिवृक्षोंकेछालसेहोता है उसकोधारणकरै शरीरकीरक्षाकेवास्ते सायंकालऔरप्रातःकालदोवेरस्नानकरै जटादाढ़ीमोंछलोमऔरनखइनकोनित्यधारणकरै अर्थातगृहाश्रममेंइनकाधारणकरनाचाहिये सोईलिखा है ॥ ६ ॥ केशान्तःषोडशेवर्षे ब्राह्मणस्यविधीयते। आद्वाविंशात्क्षत्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ ७ ॥ भ०सोलहवर्षमेंब्राह्मण २२वर्षमेंक्षत्रिय२४वर्षमेंवैश्यऔरशूद्रभीदाढ़ीमोंछ औरनखकभीनरक्खें इस्सेयहांवानप्रस्थकेवास्तेधारणलिखा॥ ७॥ यद्भक्ष्यंस्यात्ततोदद्यात्बलिंभिक्षांचशक्तितः। अम्मूलफलभिक्षाभिरर्चयेदाश्रमागतान्॥ ८ ॥ भ०जोआपभक्षणकरैउसीसेपंचमहायज्ञसामर्थ्यकेअनुकूलकरै जलमूलनामकन्दफल औरभिक्षाइनसेअपने आश्रममें कोईअतिथिआवै उसकाभीसत्कारकरै॥ ८॥ स्वाध्यायेनित्ययुक्तःस्याद्दान्तोमैत्रःसमाहितः। दातानित्यमनादातासर्वभूतानुकम्पकः॥ ९ ॥ भ० स्वाध्याय अर्थातशास्त्रकेविचार अथवायोगाभ्यास मेंनित्ययुक्तहोय औरदान्तनामउदारतासेसबइन्द्रियोंकोजीतेसब सेमित्रतारक्खे समाहितनामशरीरऔरचित्तकासमाधानरक्खे अपनेयकर्मकाभीसमाधानरक्खै नित्यऔरोंकोदेवैआपकिसीसेन लेवै औरसबजीवोंकेऊपरकृपारक्खै पक्षपातकभीयथावत्‌करै॥ ९॥ नफालकृष्टमश्नीयादुत्सृष्टमपिकेनचित्। नग्रामजातान्यार्तोपिमूलानिचफलानिच ॥ १० ॥ भ० फालकृष्टअर्थातहलकेजोतनेसे जो चमेंजोकुछहोताहै उसकोकभीनग्रहणकरै औरखेतवाखरिहानमेंकूड़ाभयाजोअन्न उसकाभीग्रहणनकरै औरजोग्रामकेमूल वाफलउनकोग्रहणकभीनकरै॥१०॥ अग्निपक्वाशनोवास्यात्कालपक्क-

भुगेचवा। अश्मकुट्टोभवेद्वापिदन्तोलूखलिकोपिवा॥ ११॥ भ० अग्निपक्काशनअर्थातअग्निमेंपकाकेखावै कालपक्कभुगअर्थातजोआप सेहरुचोंमेंफलपकजांय उनकोखावे अश्मकुट्टअर्थातपाषाणसेकूटर के फलादिकोंकोखाय दन्तोलूखलिकनाम दांततोमूसलकीनांई औरमुखउलूखलकीनांई वैसेहोहाथसे फलादिकलेके मुखऔर दांतोसेखालेवै ११॥ सद्यःप्रच्चालकोवास्यातमासमंचयिकोपिवा। षण्मासनिचयोवास्यात्समानिचयएववा॥ १२ ॥ भ० एकतोयह दीचाहैकिजितनेमेंअपनानिर्वाहहोयउतनाहोलेआवै दूसरेदिन केवास्ते नरक्खै दूसरीयहदिच्चाहैकिमासभरकेवास्ते फलादिकों कासंचयकरलेवै अथवाछःमासपर्यन्तकासंचयकरलेवै यहतीसरो दीचाहै चौथीदीच्चायहहैकिसालभरकासंचयकरले इत्यादिक बहुतवानप्रस्थकेवास्ते व्रतलिखेहैं १२॥ ग्रीष्मेपंचतयास्तुवर्षास्वभ्राटकाशिकः। आर्द्रवासास्तुहेमन्तेक्रमसोवर्द्धयंस्तपः॥१३॥ भ० ग्रीष्मनामवैशाखज्येष्ठमेंजबसूर्यदशघंटाकेऊपरआवैतबचारोदिशाओंमेंअग्निकरदे आपबीचमेंबैठे जबतकतीननबजैंतबतकऔर वर्षाकालमेंमैदानमेंबैठे औरअपनेऊपरछायाकुछनरहै शीतकाल मेंगीलेवस्त्रधारणकरै इत्यादिकप्रकारोंसेअत्यन्तउग्रतपकरै क्योंकि विनातपअन्तःकरण शुद्धनहोहोता और इन्द्रियोंकाजय भीनहीं होता इससेअवश्यतपकरनाचाहिये॥१३॥ अग्नीनात्मनिवैतानान्समारोप्ययथाविधि। अनग्निरनिकेतःस्यान्मुनिर्मूलफलाशनः॥ २४॥भ० जपतपसेमनऔरइन्द्रियांसबवशीभूतहोजांय तबअग्नि आहवनीहगार्हपत्यदाच्चिणात्यसभ्यऔरआवसथ्य यहपांचप्रकार का अग्नि होता है औरवैतान अर्थात इष्टियों की सामग्री और अग्निहोत्र की सामग्री उनको वाह्यक्रिया को छोड़दे क्योंकिगि तनीवाह्यक्रियाहैं वेमनकीशुद्धीकेलियेहैं, सोजबमनशुद्धहोजाय तबउनकेकरनेकाकुछप्रयोजननहीं किन्तुकेवलभीतरकीजोक्रिया अर्थातयोगाभ्यासऔरविचारइन्होंकोकरै॥ १४ ॥ अप्रयत्नःसुखा-

र्थेषुब्रह्मचारीशराशयः । शरणेष्वममश्चैवृक्षमूलनिकेतनः १५ ॥ भ० शरीरवाइन्द्रियोंकेसुखकीकुछइच्छानकरै किन्तुउनकात्याग हीकरै औरब्रह्मचारीरहै अर्थातअपनीस्त्रीसंगमेभीहोयतोभीउससे संगकभीनकरै किन्तुस्त्रीतोवनमेंसेवाकेवास्ते होहै औरभूमिमेंश-यनकरै शरणअर्थातजहां२रहै अथवाबैठे उसमेंममताकियहमेरा होहै ऐसाअभिमान कभीनकरै किन्तुवहांसेकोईउठादे तो उठ केचलाजाय दूसरीजगहजाकेबैठे क्रोधादिककुछभीनकरै, किन्तु प्रसन्नहीरहै॥ १५ ॥ तापसेष्ववविप्रेषुयाचिकंभैक्षमाहरेत्। गृह-मेधिषुचान्येषुद्विजेषुवनवासिषु ॥ १६ ॥ वनमेंअन्यजितनेवानप्रस्थ लोगहोवें उनसेअपनेनिर्वाहमात्र भिक्षाकरलेअधिकनहीं अथ-वाब्राह्मणक्षत्रियऔरवैश्ययेतीनोंगृहाश्रमीवनमेंरहतेहोवें उनसे अपनेनिर्वाहमात्रभिक्षाकरले ॥ १६ ॥ ग्रामादाहृत्यवाश्नीयादष्टौ-ग्रामान्वनेवसन्। प्रतिगृह्यपुटेनैवपाणिनाशकलेनवा॥ १७ ॥ भ० जबदृढ़जितेन्द्रियहोजाय तोभीवनमेरहे परंतुकभी२ग्राममेंचला आवैभिक्षाकरनेकेवास्ते अपनेदोहाथ वाएकहाथमें जोगृहस्थों कोघरमेंअन्नभयाहोय उसकोप्रीतिसेजितनाकोईदेवैउतनालेलवै परन्तुआठग्राममात्रले फिरउसकोलेके वनमेंचलाजाय जहांकि जलहोय वहांबैठकेआठग्रासखालेअधिकनहीं ॥ १७ ॥ एताश्चा-न्याश्चसेवेतदीक्षाविप्रोवनेवसन् । विविधाश्चौपनिषदीरात्मसंसिद्ध-येश्रुती ॥ १८ ॥ भ० ऋषिभिर्ब्राह्मणैश्चैवगृहस्थैरेवसेविताः । वि-द्यातपोविवृद्ध्यर्थंशरीरस्यचशुद्धये ॥ १९ ॥ भ० इनदीक्षाओंकोऔर अन्यदीक्षाओंकोभीवनमेंरहनाभया वहवानप्रस्थसेवनकरै नाना प्रकारकीजोउपनिषदोंकीश्रुति उनकोआत्मज्ञानअर्थातब्रह्मविद्या केवास्तेनित्यविचारै ॥ १८ ॥ ऋषियोंनेअर्थातयथावत्वेदकेमन्त्रो केअर्थजाननेवाले औरब्राह्मणोंनेअर्थातब्रह्मविद्याके जाननेवालों ने औरगृहस्थोंनेअर्थातपूर्णविद्यावाले धर्मात्माओंने जिनश्रुति-योंका सेवनकियाहोय उनकोनित्ययोगाभ्यास औरज्ञानदृष्टि से

विचारकरैं क्योंकिविद्या अर्थातब्रह्मविद्या औरतप अर्थात योग सिद्धिइनकोटद्धिके औरशरीरको शुद्धिकेवास्ते अर्थात दशेन्द्रियां पांचप्राण मन,बुद्धि,चित्तऔरअहंकार इन १९ सतत्वोंके मिल नेसेलिंगशरीरकहाताहै इसकशुद्धिकेवास्ते ॥ १९ ॥ आसांमहर्षिचर्याणांत्यक्त्वान्यतमयातनुम्। वीतशोकभयोविप्रोब्रह्मलोकेमहीयते॥२०॥ म० इनमहर्षियोंकीक्रियाओंकेमध्यकिसीक्रियाको करकेशरीरछूटजाय तोभीवहविद्वानशोकभयादिकदुःखोंसे छूटके ब्रह्मलोकअर्थात परमेश्वरकोप्राप्ति अथवाउत्तमस्वर्गकीप्राप्तिउसे हातीहै।२० वनेषुचविहृत्यैवंतृतीयंभागमायुषः।चतुर्थमायुषोभागं त्यक्त्वासंगान्परिव्रजेत्॥२१॥ म० इसप्रकारसेवानप्रस्थाश्रमकोयथावत् आयुकेतीसरेभागकोसमाप्तिपर्यन्त वनोंमेंविहारकरकेजव आयुकाचतुर्थभाग अर्थात७०सत्तरवर्षकेऊपर आयुकेचतुर्थभाग मेंसवसंगोंका अर्थातस्रीयज्ञोपवीत शिखादिककोछोड़के परिव्राट् अर्थातसवदेशान्तरमेंभ्रमणकरैंकिसीपदार्थमेंमोहवापक्षपातकभी नकरैं वहस्रीअपनेपुत्रोंकेपासचलीजाय अथवावनमेंतपश्चर्याकरै ॥ २१ ॥ इसमेंकोईशंकाकरै कियज्ञोपवीतादिकचिन्होंकेछोड़नेसे क्याहोताहै अर्थातइनकोनछोड़नाचाहिये उत्तर अच्छायज्ञोपवीतादिकचिन्होंकेरखनेसेक्याहोताहै पूर्वपक्षयज्ञोपवीतादिकोंसे द्विजदेखपड़ताहै औरविद्याकेचिन्हसे विद्याकीपरीक्षाभीहोतीहै उत्तर किजवसंसारकेव्यवहार औरअग्निहोत्रादिक वाह्यक्रियां जिनमेंउपवीतिनिवीति औरप्राचीनावीति यज्ञोपवीतसेक्रियाकरनीहोतीहैं उनअग्निहोत्र वाह्यक्रियाओंकोतोछोड़दिया और कहींप्रतिष्ठाविद्यासेकरानीउसकोनहीं फिरयज्ञोपवीतादिकका रखनाउसकोव्यर्थहीहै इसमेंयहप्रमाणहै। प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिं तस्यांसर्ववेदसंहुत्वाब्राह्मणःप्रव्रजेत्॥ यहयजुर्वेदकेब्राह्मणकीश्रुति है इसकायहअभिप्रायहै किप्राजापत्यइष्टिकोकरकेउसमें सर्ववेद सवेदसविहलाभे ओ२यज्ञोपवीतादिक वाह्यचिन्हप्राप्तक्रयेथे उन

सभोंको छुत्वानामत्यक्त्वा अर्थात छोड़के ब्राह्मणविद्यान् । नवाननया वैराग्य इत्यादिक गुणवाला परिव्रजेत् परित: सर्वत: व्रजेत् सब संसार के बन्धनों से मुक्त होके सन्यासी होजाय। लोकेषणायाश्च वित्तैषणायाश्च पुत्रेषणायाश्चोत्थायाथ भिक्षाचर्यं चरति । यह वृहदारण्यक उपनिषद्की श्रुति है इसका यह अभिप्राय है कि लोकेषणा अर्थात लोक को जन निन्दा करैवा स्तुति करै और अप्रतिष्ठा करै तोभी जिसके चित्त में कुछ हर्ष और शोक होय और जितने लोकके विषय भोग हैं, स्त्री धन हस्त्यश्व चन्दनादिक इनसे उठके अर्थात इनको तुच्छ जानके जैसे वे हर्ष शोकके देनेवाले हैं वैसेयथावत समझके सत्यधर्म और मुक्ति अर्थात सब दु:खोंकी निवृत्ति और परमेश्वरकी प्राप्ति इनमें स्थिर होके आनन्दमें रहै और किसीका पक्षपात अथवा किसीसे भय कभी न करै वित्तेषणा अर्थात धनकी इच्छा और धनकी प्राप्तिमें प्रयत्न और लोभ किसु भ को धन अधिक होय और जितने धनाढ्य हैं उनसे धन प्राप्तिके वास्ते बहुत प्रीति करै द्रव्यको बड़ा पदार्थ जानके संचय करना और दरिद्रों से धनके नहीं होनेसे प्रीति का न करना और धनाढ्यों की स्तुति न करना इन सब बातोंका जो छोड़ना उसका नाम वित्तैषणाका त्याग है पुत्रेषणा अर्थात अपने पुत्रोंमें मोह का करना वा जे सेवक लोग हैं उनसे मोह अर्थात प्रीति करना और उनके सुखमें हर्षका होना और उनके दु:खमें शोकका होना उसका पुत्रेषणा नाम है एषणा नाम इच्छाका तीन पदार्थोंमें होना इन तीनों एषणाओंसे जो बहुत नहीं है वही सन्यासी होता है और पक्षपात रहित भी सन्यासी यथावत् होता है क्योंकि जितने ब्रह्मचारी, गृहस्थ और वानप्रस्थ हैं उनको बहुत व्यवहारोंके होनेसे बुद्धिमान होय तोभी भय, शंका और लज्जा कुछ किसी व्यवहारमें रहती ही है और जो सन्यासी होता है उसको किसी संसार सम्बन्धी व्यवहारका करना आवश्यक नहीं वा किसी मनुष्यसे शंका, लज्जा, भय और पक्षपात कभी नहीं होता । आश्रमादाश्रमं गत्वा हुतहोमो जितेन्द्रिय: । भिक्षाबलिपरिश्रान्त: प्रव्रजन्त्यत्र-

ईते॥ २२ ॥ भ० आश्रमसेआश्रमकोजाकेअर्थातक्रमसेब्रह्मचर्याश्रमादिकतीनोंकोकरके यथावत् अग्निहोत्रादिक यज्ञोंकोकरके जितेन्द्रियजबहोजाय भिक्षादेदेऔरबलीअर्थातबलीवैश्वदेवकरके परिश्रान्तअत्यन्तश्रमयुक्तजबहोय तबसन्यासलेतोउसका सन्यास यथावतबढ़ताजायखंडितनहोय ॥ २२ ॥ ऋणानित्रीण्यपाकृत्यमनोमोक्षेनिवेशयेत्। अनपाकृत्यमोक्षन्तुसेवमानोब्रजत्यधः॥ २३ ॥ भ० तीनऋणअर्थातऋषिपितृऔरदेवऋण इनकोकरके मोक्षके वास्तेसन्यासमेंचित्तप्रविष्टकरै औरइनतीनोंकोनकरकेजोसन्यास कोइच्छाकरताहै सोनीचेगिरपड़ताहै उसकोमोक्षनहीप्राप्तहोता २३ ॥ वेकौनतीनऋणहैं अधीत्यविधिवद्वेदान्पुत्रांश्चोत्पाद्यधर्मतः। इष्ट्वाचशक्तितोयज्ञैर्मनोमोक्षेनिवेशयेत्॥ २४॥ भ० विधिवतअर्थातउक्तप्रकारसे ब्रह्मचर्याश्रमकोकरके सबवेदोंकोपढ़ै अर्थसहित औरअङ्गउपवेद औरछःशास्त्रसहितपढ़ै फिरपढ़केयथावतपढ़ावै, क्योंकिविद्याकालोपइसप्रकारसेकभीनहोगा यहप्रथमऋषिऋण है इसमें जपऔरसंध्योपासनभीजानलेना सबमनुष्योंकेऊपरयह परमेश्वरकीआज्ञाहै किब्रह्मचर्याश्रमसेविद्याओंकोपढ़नाऔरपढ़ाना इसकेबिनासबआश्रमनष्टहैं जैसेकिमूलकेबिना वृक्षनष्टहो जाताहै उक्तप्रकारसेपुत्रोंकोशिक्षा धर्मकोविद्यापढ़ने औरपढ़ाने कोकरै अपनीकन्याअथवाअपनापुत्र विद्याकेबिनाकभीनरहै सब श्रेष्ठगुणवालेहोवैंऐसाकर्ममातापिताकोकरनाउचितहै औरजो अपनेसन्तानोंकोश्रेष्ठगुणवालेनकरेंगे तोउनमातापिताओंनेबालककोजैसामारडाला फिरमारनातोअच्छा परन्तुमूर्खरखना अच्छानहीं इसीमेंउक्तप्रकारसेतर्पण औरश्राद्धभीजानलेना यह दूसरापितृऋणहै फिरगृहाश्रममेंयथावतअग्निहोत्रादिकोंकाअनुष्ठानकरै जिससेकिसबसंसारकाउपकारहोय इससे उसकाभीबड़ा उपकारहै अर्थातपुण्यसेसुखपाताहै सोइनतीनऋणोंकोउतारके मोक्षअर्थातसन्यासकरनेमेंचित्तदेवै अन्यथानहीं॥ २४ ॥ अनधी-

त्यद्विजोवेदानसुत्पाद्यतथासुतान्। अनिष्ट्वाचैवयज्ञैश्चमोक्षमिच्छन्-व्रजत्यधः॥ २५॥ भ० द्विजअर्थातब्राह्मणक्षत्त्रियऔरवैश्यवेदोंकोन पढ़के यथावतधर्मोंसे पुत्रोंकाउत्पादनभीनकरें अग्निहोत्रादिक यज्ञभीनकरें फिरजोमोक्षअर्थात्सन्यासकीइच्छाकरै सन्यासतो उसकानहोगाकिन्तुसंसारहीमेंगिरपड़ेगा॥ २५॥ एकबाततोस-न्यासकेक्रमकीहोगई दूसरीयहबातहैकि प्राजापत्यांनिरूप्येष्टिंस-र्ववेदसदक्षिणाम्। आत्मन्यग्नीन्समारोप्य ब्राह्मणःप्रव्रजेगृहात्॥ २६॥ भ० प्राजापत्यइष्टिकासबयथावत्निरूपणकरके उसमेंसर्व-वेदसअर्थातयज्ञोपवीतादिकजितनेचिन्हप्राप्तभयेथे उनकोदक्षिणा मेंदेकेऔरपूर्वोक्तपांचअग्नियोंकोआत्मामेंसमारोपणकरकेब्राह्म-णअर्थातविद्वानवानप्रस्थकोभीनकरै अर्थात्गृहाश्रमहीसेसन्यास लेलेवै॥ २६॥ योदत्वासर्वभूतेभ्यःप्रव्रजत्यभयंगृहात्। तस्यतेजोम-यालोकाभवन्तिब्रह्मवादिनः॥ २७॥ भ० जोसबभूतोंकोअभयदान अर्थात ब्रह्मविद्यादानदेके घरसेहीसन्यास लेताहै तिसको तेजो-मयलोकप्राप्तहोताहै अर्थातपरमेश्वरहीप्राप्तहोतेहैं फिरकभीज-न्ममरणमेंवहपुरुषनहीआता सदाआनन्दमेंहीपरमेश्वरको प्राप्त होकेरहताहै॥२७॥ आगारादभिनिष्क्रान्तःपवित्रोपचितोमुनिः। समयोढेषुकामेषुनिरपेक्षःपरिव्रजेत्॥ २८॥ भ० आगारअर्थात ब्रह्मचर्याश्रमसेभीसन्यासलेले परंतुअभिनिष्क्रान्तजबअन्तर्मुखमन होजाय किविषयसेवाकी इच्छाथोड़ीभीनहोय औरपवित्रगुणोंसे अर्थात शमदमादिकोंसे उपचित नाम जबयुक्त होय और मुनि अर्थात मनन शील सत्य२ विचार वाला होय और सब कामों कोजीतले कोईकामउसकेमनको अधर्ममेंनलगासके स्थिरचित्त होय निरपेक्षकिसीसंसारकेपदार्थकी सिवायपरमेश्वरकीप्राप्तिकी अपेक्षानहो यतबब्रह्मचर्याश्रमसेभीसन्यासलेवैतोभीकुछदोषनहीं २८॥ इसमेंश्रुतियोंकाभीप्रमाणहै यदहरेवविरजेततदहरेवप्रा-व्रजेद्वनाद्वागृहाद्वा १ ब्रह्मचर्यादेवप्रव्रजेत् २ ॥ यहयजुर्वेदकेब्राह्मण

कोऽभु, तिरहैइसकायहअभिप्रायहैकिजिसदिनपूर्णवैराग्यहोय उसी दिन सन्यासीहोजाय वानप्रस्थाश्रम अथवा गृहाश्रमसे औरजब पूर्णविद्याऔरपूर्णवैराग्यऔरपूर्णज्ञान, औरविषयभोगकीइच्छा कुछभीनहोय तोब्रह्मचर्याश्रमसेहीसन्यासलेलवैतोभीकुछदोषन- नीं पूर्वपक्षयहबातपरमेश्वरकीआज्ञासेविरुद्धहै क्योंकिपरमेश्वर काअभिप्रायप्रजाकीवृद्धिकरनेमेंजामाजाताहै औरप्रजाकीहानिमें नहीं जोकोईसन्यासलेगा सोविवाहनकरेगा इस्से संसारकीवृद्धि नहोगी इसवास्ते सन्यासकालेनाउचितनहीं जबतकजियेतबतक गृहाश्रममें रहकेसंसारकेव्यवहार औरशिल्पविद्याओंकोउन्नति करै इस्से सन्यासकाकरना उचितनहीं किन्तु ब्रह्मचर्याश्रमसेवि- द्यापढ़केगृहाश्रमहीमेंरहनाउचितहै उत्तरपक्षऐसाकहनाउचि तनहींक्योंकिब्रह्मचर्याश्रमनहोगातोविद्याकीउन्नतिनहोगी और गृहाश्रमनकरनेसे आगेमनुष्यकीउत्पत्ति संसारकाव्यवहारयेसब नष्टहोजांयगे औरवानप्रस्थके नहोनेसे मनभी शुद्धनहोगा और सन्यासकेनहोनेसे सत्यविद्या औरसत्योपदेशकी उन्नति नहोगी पाखंडऔरअधर्मका खण्डनभीनहोगा इस्से संसारकी उन्नतिका नाशहोगा क्योंकिज्ञानकीवृद्धिहोनेसे सबसुखोंकीवृद्धिहोतीहै अ- न्यथानहीं इसमेंदेखनाचाहिये।ब्रह्मचारीकोपढ़नेसेरातदिनअ- वकाशहीनहीरहताऔरगृहस्थकोभीबहुतव्यवहारकेहोनेसेचित्त फसाहीरहताहै औरवानप्रस्थकातपहीमेंचित्तरहताहै औरकुछ विचारभीकरताहै जोसन्यासीहोगा वह विचारकेविना अन्यव्यव- हारहीनरहेगा इस्से पृथ्वीमेलेकेपरमेश्वरपर्यन्तपदार्थोंकायथा- र्थविचारकरकेऔरोंकोभीउपदेशकरेगा सबदेशोंमेंभ्रमणकरेगा इस्से सबदेशोंकेमनुष्योंकोउसकेसंग औरसत्यउपदेशके सुननेसेब- ड़ालाभहोगा जोगृहस्थहोगा उसकाजहां २ घरहै वहां २ प्रायः रहेगाअन्यत्रभ्रमणनकरसकेगा इस्से सन्यासकाहोनाभीउचितहै परमेश्वरन्यायकारीहै औरविद्याकीउन्नतिभीचाहताहै जिसको

विषयभोगकीइच्छानहोगी उसकोपरमेश्वरकैसेआज्ञादेगें कितू विवाहकर जैसेकिकोईपुरुषको रोगकुछनहीं उस्से वैद्यकहैकितू कुछऔषधखा वहऔषधक्योंखायगा औरजिसकोभोजनकरनेकी इच्छानहोय उसकोकोईवलसे कहेकितू अवश्यभोजनकर तोवह विनाक्षुधाकेभोजनकैसेकरेगाकिन्तु कभीनकरेगा ऐसेहीजिसको विषयभोग औरसंसारकेव्यवहारोंकीइच्छानहीं वहविवाह और संसारकेव्यवहारकैसेकरेगा कभीनकरेगा संसारकेजनोंमेंकुछप्रयोजन न होने से सबके मुख पर सत्यही कहेगा अपने सामने जैसा राजा वैसोही प्रजा को समुझेगा इसवास्ते जिस पुरुषको विद्या, ज्ञान, वैराग्य, पूर्णजितेन्द्रियता होय और विषय भोग कीइच्छानहोय उसीको सन्यासलेना उचितहै अन्यको नहीं जैसे किआजकलआर्य्यावर्त्तदेशमेंबहुत ससंप्रदायीलोगहोगयेहैंवेकेवल धूर्त्तातासेपरायाधनहरणकरलेतेहैं औरपराईस्त्रीकोभ्रष्टकरदेते हैं औरमूर्खतातथापक्षपातकेहोनेसे मिथ्याउपदेशकरके मनुष्यों कीबुद्धिनष्टकरदेतेहैंऔरअधर्ममेंप्रवृत्तकरादेतेहैंइस्सेइनकातोबन्दहीहोनाउचितहै क्योंकिइनकेहोनेसेसंसारकाबहुतअनुपकार होताहै ॥ कपालंवृक्षमूलानिकुचैलमसहायता। समताचैवसर्वस्मिन्नेतन्मुक्तस्यलक्षणम् ॥ २९ ॥ म० कपालअर्थातभिक्षापात्रवृक्षके जडमेंनिवास औरकुत्सितवस्त्र औरसबकेऊपरसमबुद्धि नकिसीमे प्रीति औरनकिसीसेवैर यहमुक्तपुरुष अर्थातसन्यासीका लक्षण है ॥ २९ ॥ नाभिनन्देतमरणंनाभिनन्देतजीवितम। कालमेवप्रतीक्षेतनिर्देशंभृतकोयथा ॥ ३० ॥ म० जोसन्यासीहोयसोमरने औरजीनेमेंशोकवाहर्षनकरै किन्तु कालकोप्रतीक्षाकियाकरै जब मरणसमयआवैतबशरीरछोड़दे शरीरसेमोहकुछनकरै जैसाकि छोटानौकरस्वामीकीआज्ञाजबहोतीहै तभीवहकामकरनेलगता है जहांकहैवहांचलाजाताहै औरसन्यासीकिसीपदार्थसे सिवाय परमेश्वरकेमोहवाप्रीतिनकरै ॥ ३०॥ दृष्टिपूतंन्यसत्पादंवस्त्रपूतंज-

लंपिवेत्। सत्यपूतांवदेद्वाचंमनःपूतंसमाचरेत्॥ ३१॥ भ० इसका अर्थतो पहिलेकरदियाहै परन्तु सन्यासधर्मकेप्रकर्णमें लिखनेका यहप्रयोजनहैकिबहुतलोगकहतेहैं किसन्यासोकिसीकोउपदेशन करै इनसेपूछनाचाहिएकि सत्यपूतांवदेद्वाक्यं सत्यअर्थातप्रमाण औरविचारसे यथावत निश्चयकरके सत्यउपदेशकरै सबविद्यासे जोपूर्ण विद्वान् सन्यासी सोतो उपदेश न करै और जितने पाखण्डो मूर्खलोग हैंवे उपदेश करैं तभीतो संसार का सत्यानाश होताहै जितनेमूर्खपाखण्डी उनकातो ऐसाप्रबन्धकरनाचाहिए कि वेउपदेशहीनकरनेपावें औरजितने विद्वानसन्यासी लोगहैं वे सदाउपदेशकियाकरैं अन्यकोईनहीं अन्यथामूर्खपाखण्डियोंकेउपदेशसेदेशकानाशहोताहै जैसेकिआजकालआर्यावर्त्त देशकीअवस्थाभईहै॥ ३१॥ क्रुध्यन्तंप्रतिनक्रुध्येदाक्रुष्टःकुलंवदेत्। सप्तद्वारावकीर्णाञ्चनवाचमनृतांवदेत्॥ ३२॥ भ० जोकोईक्रोधकरै उससे सन्यासीक्रोधनकरै औरकोईनिन्दाकरैउसकोभीकल्याणका उपदेशकरै किञ्चसप्तद्वारमुखनासिकाकेदोछिद्रदोछिद्रआंखके औरकानकेइनसातद्वारोंमेंजोवाणीविखररहीहै उससेमिथ्याकभी नकहै अर्थातसन्यासीसदासत्यहीबोलै॥ ३२॥ क्लृप्तकेशनखश्मश्रुःपात्रीदण्डीकुसुम्भवान्। विचरेन्नियतोनित्यं सर्वभूतान्यपीडयन् ॥ ३३॥ भ० केशसिरकेसबबालनखऔरश्मश्रु अर्थातदाढ़ीमोंछइनकोकभोनरक्खै अर्थातछेदनकरादेवैपात्रीएकहीपात्ररक्खै और एकही दंड रक्खै इससे तीनदण्डोंका धारना पाखण्डही है जैसाकिचक्रांकितोंका कुसुंवा रंगसेरंगेवस्त्रपहिरैं औरगेरूवाहृतिकाकेरंगेनहीं अथवाश्वेतवस्त्रधारणकरैं निश्चयबुद्धिहोकेसबभूतोंसेरागद्वेषछोड़केअपनेब्रह्मानन्दमेंविचरै॥ ३३॥ एककालंचरेद्भैक्षंनप्रसज्जेतविस्तरे। भैक्षे प्रसक्तोहियतिर्विषयेष्वपिसज्जति॥ ३४॥ एकवेरभिक्षाकरै अत्यन्तभिक्षामेंआसक्तनहोय क्योंकिजो भोजनमेंआसक्तहोगा सोविषयमेंभीआसक्तहोगा॥ ३४॥ विधूमे-

सन्नमुसलेव्यङ्गारेभुक्तवज्जने। इत्ते शरावसंपाते भिक्षांनित्यंय-तिश्चरेत्॥ ३५॥ भा० जबगांवमेंधूम नदेखपड़े मूसलवाचक्कीकाशब्दनसुनपड़े किसीकेघरमेंअंगारनदेखपड़े सबगृहस्थलोगभोजन करचुकें औरभोजनकरके पत्तीऔरभकोरेबाहरकोफेंकदेवें उस समयसन्यासीगृहस्थलोगोंकेघरमें भिक्षाकेवास्ते नित्यजांय और जोऐसाकहतेहैंकिहमपहिलेहीभिक्षाकरेंगे यहउनकापाखंडही जानना क्योंकिगृहस्थलोगोंकोपीड़ाहोतीहै औरजोविरक्तहोके वैरागीआदिकअपनेहाथमेलेकेकरतेहैं वेबड़ेपाखण्डीहैं॥ ३५॥ अलाभेनविषादीस्यात् लाभेचैवनहर्षयेत्। प्राणयात्रिकमात्रःस्यात् मात्रासंगाद्विनिर्गतः॥ ३६॥ भा० जबभिक्षाकालाभनहोयतबवि-षादनकरै औरलाभमेंहर्षनकरै प्राणरक्षणमात्र प्रयोजनरक्खै भिक्षामेंप्रसक्तनहोय औरविषयोंकेसंगोंसेपृथककरहै॥ ३६॥ अभि-पूजितलाभांस्तु जुगुप्सेतैवसर्वशः। अभिपूजितलाभैश्चयतिर्मुक्तोपिबध्यते॥ ३७॥ भा० अत्यन्तश्रेष्ठपदार्थ स्तुत्यादिकउनकी निंदा हीकरै क्योंकिस्तुत्यादिक बन्धनहीकरनेवाले हैं मुक्तभीहोयतो भी इससे बद्धहीहोजाताहै॥ ३७॥ अल्पान्नाभ्यवहारेण रहःस्था-नासनेनच। ह्रियमाणानिविषयैरिन्द्रियाणिनिवर्तयेत्॥ ३८॥ इ-न्द्रियाणिनिरोधेनरागद्वेषक्षयेणच। अहिंसयाचभूतानाम् मृत-त्वायकल्पते॥ ३९॥ भा० इन्द्रियोंकानिरोधरागद्वेषऔरअहिंसा इनचारोंकाजोत्यागकर्ताहै सोईमोक्षकाअधिकारीहोताहै अन्य कोईनहीं॥ ३९॥ दूषितोपिचरेद्धर्मं यत्रतत्राश्रमेरतः। समस-र्वेषुभूतेषुनलिंगंधर्मकारणम्॥ ४०॥ भा० जिसकिसीआश्रममेंदोष युक्तपुरुषभीहोय परन्तु धर्महीकोकरै औरसबभूतोंमेंसमबुद्धि अ-र्थातरागद्वेषरहितहोय सोईपुरुषश्रेष्ठहै जितनेबाह्यचिन्हहैं य-ज्ञोपवीतदंड दोनोंकोधारणकरैऔरधर्मनकरैतो धारणमात्रही सेकुछनहीहोसक्ता औरतिलक,छापा,मालायेतो सबपाखण्डोंही केचिन्हहैं इनकोतोकभीनधारनाचाहिये॥ ४०॥ फलंकतकवृक्ष-

स्वयद्यप्यंबुप्रसादकम्। ननामग्रहणादेवतस्यवारिप्रसीदति ४१। म० यद्यपिकतकनामनिर्मलीङ्चकाफल जलकोशुद्धकरनेवालाहै सोजबउसकोपीसकेजलमेंडाले तबतोजलशुद्धहोजाताहै और जो पीसकेनडाले कतकहृच्चस्यफलायनमः ऐसा माला लेकेजप कियाकरै वाउसकानाम जलकेपासलियाकरै, उस्से जलकभीनशुद्ध होगावैसेहीनाममात्रसेकुछनहींहोताजबतकधर्मनहींकरता ४१ प्राणायामाब्राह्मणस्य त्रयोपिविधिवत्कृताः। व्याहृतिप्रणवैर्युक्ताविज्ञेयंपरमंतपः ॥ ४२ ॥ म० ओमभूः,ओमभुवः,ओमस्वः,ओम् महः,ओम्जनः,ओमतपः,ओम्सत्यं इसमन्त्रकाहृदयमेंउच्चारणकरै पूर्वोक्तरीतिसे तीनबारभीप्राणोंका निग्रहकरै तोभी उससन्यासीकापरमतपजानना ॥ ४२ ॥ दह्यन्ते ध्मायमानानांधातूनांहियथामलाः। तथेन्द्रियाणांदह्यन्ते दोषाःप्राणस्यनिग्रहात् ४३ ॥ म० जैसेसुवर्णादिकधातुओंको अग्निमेंतपानेसेमैलनष्टहोजाताहै वैसेहीप्राणकेनिग्रहसेइन्द्रियोंकेमलभस्महोजातेहैं। ४४ ॥ प्राणायामैर्दहेद्दोषान्धारणाभिश्चकिल्बिषम्। प्रत्याहारेणसंसर्गान्ध्यानेनानीश्वरान्गुणान् ॥ ४५ ॥ म० प्राणायामोंसेसबइन्द्रियऔरशरीरकेदोषोंकोभस्मकरदे औरधारणयोगशास्त्रकीरीतिसकरै उस्से विरागऔरइसजीहृदयमेंपापउसकोछोड़ादे प्रत्याहारसेइन्द्रियोंकाविषयोंसेनिरोधकरकेसबदोषोंकोजीतले औरध्यानसेअल्पज्ञादिकअनीश्वरके जितनेगुणउनकोछोड़ादे अर्थातसर्वज्ञादिकगुणसम्पादनकरै ॥ ४५ ॥ उच्चावचेषुभूतेषु दुर्ज्ञेयामकृतात्मभिः। ध्यानयोगेनसंपश्येद्गतिमस्यांतरात्मनः ॥ ४६ ॥ म० स्थूलऔरसूक्ष्मउनमेंजोपरमेश्वरव्याप्तहै औरअपनेशरीरमेंजोअपनाआत्मा और परपरमात्माउनकोजोगतिनामज्ञान उसकोसमाधिसेसम्यकदेखले जोदुष्टलोगोंकोदेखनेमेंकभीनहींआती ॥ ४६ ॥ सम्यक्दर्शनसम्पन्नःकर्मभिर्ननिबध्यते। दर्शनेनविहीनस्तु संसारंप्रतिपद्यते ॥ ४७ ॥ म० जबसन्यासीसम्यकज्ञानसेसम्पन्नहोताहै तबकर्मोंसेबद्ध

नहीं होता और जो ज्ञान से हीन सन्यासी है सो मोक्ष को तो नहीं प्राप्त होता किन्तु संसार ही में गिर पड़ता है ॥ ४७ ॥ अहिंसयेन्द्रियासंगैर्वैदिकैश्चैव कर्मभिः। तपसश्चरणैश्चोग्रैः साधयन्तीह तत्पदम् ॥४८॥ भ० वैर इन्द्रियों से विषयों का असंग वैदिक कर्म का करना अत्यन्त उग्र तप इन्हों से मोक्षपद को सिद्ध लोग प्राप्त होते हैं अन्यथा नहीं ॥४८॥ अस्थिस्थूणं स्नायुयुतं मांसशोणितलेपनम्। चर्मावनद्धं दुर्गन्धिपूर्णं मूत्रपुरीषयोः ॥ ४९ ॥ म० जराशोकसमाविष्टं रोगायतनमातुरम्। रजस्वलमनित्यं च भूतावासमिमं त्यजेत् ॥ ५० ॥ म० हाड़ जिसका खंभा है नाड़ियों से बांधा भया मांस, और रुधिर का ऊपर लेपन चाम से ढपा हुवा दुर्गन्ध मूत और विष्टा से पूर्ण ॥ ४९ ॥ जरा और शोक से युक्त रोग का घर क्षुधा तृषादिक पीड़ाओं से नित्य आतुर और नित्य ही रजस्वल अर्थात् जैसे रजस्वला स्त्री नित्य जिसकी स्थिति नहीं और सब भूतों का निवास ऐसा जो यह देह इसको सन्यासी योगाभ्यास से छोड़दे ॥ ५० ॥ नदीकूलं यथा वृक्षो वृक्षं वा शकुनिर्यथा। तथा त्यजन्निमं देहं कृच्छ्राद् ग्राहाद्विमुच्यते ॥ ५१ ॥ म० जैसे वृक्ष जब नदी के तट से जल में गिर के चला जाय वैसे ही समाधियोग से इसको छोड़े तब बड़ा भारी जन्म मरण रूप संसार के सब दुःख से छूट के मुक्त हो जाय ॥ ५१ ॥ प्रियेषु स्वेषु सुकृतमप्रियेषु च दुष्कृतम्। विसृज्य ध्यानयोगेन ब्रह्माभ्येति परं पदम् ॥ ५२ ॥ म० जितने अपने सेवा करने वाले उन में ध्यानयोग से सब पुण्य को छोड़दे और दुःख देनेवाले पुरुषों में सब पापों को छोड़दे इस से पापपुण्यरहित अत्यशुद्ध होता है तब सनातन परमोत्कृष्ट ब्रह्म उसको प्राप्त होता है फिर कभी दुःखसागर में नहीं आता ॥ ५२ ॥ यदा भावेन भवति सर्वभावेषु निस्पृहः। तदा सुखमवाप्नोति प्रेत्य चेह च शाश्वतम् ॥ ५३ ॥ म० जब सब प्रकार से सन्यासी का अन्तःकरण और आत्मा शुद्ध हो जाता है, उसका यह लक्षण है कि किसी पदार्थ में मोह नहीं होता तब वह पुरुष जीता भया और मृत्यु हो के निरन्तर ब्रह्म सुख उसको प्राप्त होता है अन्यथा नहीं ॥ ५३ ॥ अ-

मेनविधिनासर्वांस्त्यक्त्वासंगानशनैःशनैः। सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तोब्रह्मण्येवावतिष्ठते॥ ५४॥ भा० इसविधिसेंनितनेदेहादिक अनित्यपदार्थहैं इनकोधीरे २छोड़ औरहर्ष,शोक,सुख,दुःख,शीत,उष्ण रागद्वेष,जन्ममरणादिकसबद्वन्द्वोंसेछूटकेशीतोभया अथवाशरीर छोड़केब्रह्महीमेंसदारहताहै फिरदुःखसागरमेंकभीनहींगिरता क्योंकि पूर्व सबदुःखों कोभोगसे अनुभव किया है फिरबड़े भाग्य और अत्यन्तपरिश्रमसेपरमेश्वरकीप्राप्तिभई क्यावहमूर्खहै किपरमानन्दकोछोड़केफिरदुःखमेंगिरकेकभीनगिरेगा ॥ ५४ ॥ ध्यानिकं सर्वमेवैतद्यदेतदभिशब्दितम् । नह्यनध्यात्मवित्कश्चित्क्रियाफलमुपाश्नुते॥ ५५ । भा० सन्यासकायहीमार्गहै किनित्यध्यानावस्थित होके एकान्तमेंसबपदार्थोंकायथावतज्ञानकरना सोइसप्रकरण मेंसबध्याननाममात्रसेकहदिया परन्तु इसकायथावतविधानपातञ्जलदर्शनमेंलिखाहै वहांसबदेखलेवें अन्यथासिद्धकभीनहोगा क्योंकिप्राणायामादिकअध्यात्मविद्याजोकोईनहींजानता उसको सन्यासग्रहणका कुछफलनहींहोता उसकासन्यासग्रहणहीव्यर्थ है ॥ ५५ ॥ अधियज्ञंब्रह्मजपेदधिदैविकमेवच । आध्यात्मिकञ्चसततंवेदान्ताभिहितंचयत् ॥ ५६ ॥ भा० अधियज्ञब्रह्मजोओंकारउसकाजपउसकाअर्थजोपरमेश्वरउसमेंनित्यचित्तलगावे औरअधिदैविकइन्द्रियांऔरअन्तःकरणउसकेदिशादिकदेवताओंचादिकों केउनकाजोपरस्परसंबंधउसकोयोगसेसाक्षात्करै औरअध्यात्मिक जीवात्मा औरपरमात्माका यथावतज्ञान औरप्राणादिकोंकानिग्रहइसकोयथावतकरै तबउसपुरुषकामोक्षहोसक्ताहै अन्यथानहीं॥ ५६ ॥ एषधर्मोऽनुशिष्टो वोयतीनांनियतात्मनाम् । वेदसन्यासिकानांतुकर्मयोगंनिबोधत॥ ५७ ॥ भा० मुख्य सन्यासीनियतात्मानामजिनकाआत्मास्थिरशुद्धहोगयाहै उनकाधर्मऋषिलोग सेमनुजीकहतेहैं मैंनेकहदिया औरजोवेदसन्यासिकअर्थातगौण सन्यासीउसकाकर्मयोगमुझसेआपसुनलेवें॥ ५७ ॥ ब्रह्मचारीह-

हस्थस्तथानप्रस्थोयतिस्तथा। एतेगृहस्थप्रभवाश्चत्वारःपृथगाश्रमाः ॥ ५८ ॥ भ० ब्रह्मचारीगृहस्थवानप्रस्थऔरसन्यासी येचारोंगृहस्थाश्रमसेउत्पन्नहोतेहैं, पृथक२ क्योंकिगृहाश्रमनहोय तोमनुष्यकीउत्पत्तिहीनहोय फिरब्रह्मचर्यादिक आश्रमकभीनहोंगे इससे उत्पत्तितथासबआश्रमोंकाअन्नवस्त्रस्थान औरधनादिकदानोंसेगृहस्थलोगहीपालनकर्तेहैं इनदोबातोंमेंगृहस्थहीमुख्यहैं विद्याग्रहणमेंब्रह्मचारीतपमेंवानप्रस्थविचारयोगऔरज्ञानमेंसन्यासीश्रेष्ठहै ॥ ५८ ॥ सर्वेपिक्रमशस्त्वेतेयथाशास्त्रंनिषेविता। यथोक्तकारिणंविप्रंनयन्तिपरमाङ्गतिम् ॥ ५९ ॥ भ० सबआश्रमीयथावत् शास्त्रोक्तक्रमजोधर्माचरणउससेचलनेवालेपुरुषोंकोवेआश्रमोंकेजितनेव्यवहारश्रेष्ठहैं उनसेसबआश्रमीलोगमोक्षपासकतेहैं परन्तु बाहरदेखनेमात्रभेदरहैगा उनकाभीतरव्यवहारसन्यासवत एकहीहोगा ॥ ५९ ॥ चतुर्भिरपिचैवैतैर्नित्यमाश्रमिभिर्द्विजैः। दशलक्षणकोधर्मःसेवितव्यःप्रयत्नतः ॥ ६० ॥ भ० ब्रह्मचारीआदिकसब आश्रमीलक्षणहैजिसधर्मकेउसधर्मकानित्यसेवनकरैं वे लक्षणयेहैं ॥ ६० ॥ धृतिःक्षमादमोऽस्तेयंशौचनिन्द्रियनिग्रहः। धीर्विद्यासत्यमक्रोधोदशकंधर्मलक्षणम् ॥ ६१ ॥ भ० धर्महैनामन्यायकान्यायहैनामपक्षपातकाछोड़ना उसकापहिलालक्षणअहिंसाकिसीसेवैरनकरना दूसरालक्षणधृतिकिअधर्मसेचक्रवर्तीराज्यभीमिलताहोय तोभीधर्मकोछोड़केचक्रवर्तीराज्यकाग्रहणनकरना तीसरा लक्षणक्षमाकोईस्तुतिवानिन्दाअथवावैरकरैतोभीसबकोसहले परन्तुधर्मकोनछोड़ै तथासुखदुःखादिकभीसबसहले परन्तु अधर्म कभीनकरैदमनामचित्तसेअधर्मकरनेकोइच्छानकरै इसकानाम हैदमअस्ते यअर्थातचोरीकात्याग किसीकापदार्थआज्ञाकेविनाले लेनाइसकानामचोरीहै इसकाजोसदात्यागउसकानामहैअस्तेय शौचनामपवित्रतासदाशरीरवस्त्रस्थानअन्नपात्र औरजलतथाष्टतादिकशुद्धदेशमेंनिवासरागद्वेषादिककात्यागइसकानामशौचहै

इन्द्रियनिग्रह श्रोत्रादिक इन्द्रियों को अधर्म में कभी न जावें और इन्द्रियों को सदा धर्म में स्थिर रक्खें तथा पूर्वोक्त जितेन्द्रियता का करना इस का नाम इन्द्रियनिग्रह है शास्त्र सत्यपठन, सत्पुरुषों का संग योगाभ्यास सुविचार एकान्तसेवन परमेश्वर में विश्वास और परमेश्वर की प्रार्थना स्तुति और उपासना शील संतोष का धारण इन से सदा बुद्धि की वृद्धि करनी इस का नाम धी है विद्या नाम पृथिवी से ले के परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों का ज्ञान होना जो जैसा पदार्थ है उस को वैसा ही जानना उस का नाम विद्या है सत्य सदा भाषण करना पूर्वोक्त नियम से अक्रोध नाम क्रोध काम लोभ मोह शोक भयादिकों का त्याग उस का नाम अक्रोध का त्याग है इतने संक्षेप से धर्म के ग्यारह लक्षण लिख दिये परन्तु वेदादिक सत्य शास्त्रों में धर्म इत्यादिक सहस्रों लक्षण लिखे हैं जिस को इच्छा होय उन शास्त्रों में देख लेवै अब इस के आगे अधर्म के लक्षण लिखे जाते हैं अधर्म नाम अन्याय का अन्याय नाम पक्षपात का न छोड़ना इस के भी एकादश लक्षण हैं पहिला लक्षण अहिंसा अर्थात वैरबुद्धि का करना॥ ६२॥ परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म मानसम्॥ ६२॥ म० पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यमपि सर्वशः। असंबद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्॥ ६३॥ म० अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः। परदारोपसेवा च शारीरं त्रिविधं स्मृतम्॥ ६४॥ म० परद्रव्य हरण करने को छल कपट और अन्याय से इच्छा यह दूसरा लक्षण अधर्म का है और तीसरा लक्षण पर का अनिष्टचिन्तन अन्य जीवों को दुःख देना अपना सुख चाहना चौथा वितथाभिनिवेश अर्थात मिथ्या निश्चय जो जैसा पदार्थ है उस को वैसा न जानना किन्तु विपरीत ही जानना जैसे कि विद्या को अविद्या और अविद्या को विद्या जानना सत्य असत्य और श्रेष्ठ असाधु इन को असत्य और अश्रेष्ठ असाधु जानना और पाषाणादिक मूर्त्ति और उन के पूजने से देवबुद्धि और मुक्ति का होना इत्यादिक मिथ्या निश्चय से जान लेना ये तीन मन से अधर्म के लक्षण उत्पन्न होते हैं पारुष्य नाम कठोर वचन बो-

लना जैसेकिआगच्छकाणइत्यादिक इसकानामपारुष्यहै मिथ्या भाषणनामअसत्यकाबोलनादेखनेसुननेऔरहृदयसेविरुद्धबोलना उसकानामअसत्यभाषणहै पैशून्यनामचुगलीखानाजैसेकिकिसीने धनदेनेकोकहावादिया उससे राजाके वाअन्यकेसमीपजाकेउसकी कार्यकोहानिकरनी औरउनकेसामनेउसकीनिन्दाकरनीअर्थात अन्यपुरुषकीप्रतिष्ठावासुखदेखकेहृदयसेबड़ादुःखितहोयफिरजहां तहांचुगलीखाताफिरै इसकानामपैशून्यहै असंबद्धप्रलापनामपूर्वापरविरुद्धभाषणऔरप्रतिज्ञाकोहानि जैसेकिभागवतादिकऔर कौमुद्यादिकग्रन्थोंमें पूर्वापरविरुद्धऔरमिथ्याभाषणहैं इसकानामअसंबद्धप्रलापहै अदत्तानामुपादानं बिनाआज्ञासेपरपदार्थका ग्रहणकरना अर्थातचोरीविधानकेबिना हिंसानामपशुओंकाहननकरना अपनीइन्द्रियोंकीपुष्टकेवास्ते मांसकाखाना औरपशुओंकामारना यहराक्षसविधानहै औरयज्ञकेवास्ते जोपशुओंको हिंसाहैसोविधिपूर्वकहननहै औरजिनपशुओंसेसंसारकाउपकारहोताहै उनपशुओंकोकभीनमारनाचाहिए क्योंकिइनकोमारनेसे आगेपशुदूधऔर घीकी उत्पत्तिहो मारीजातीहै औरइन्होंसेसंसारका पालनहोताहै इससेपशुओंकी स्त्रियोंकोतो कभीन मारनाचाहिए औरजोइनपशुओंकोमारनाहै इसकानामअविधानसेहिंसाहै परदारोपसेवनपरस्त्रीगमन अर्थातवेश्या वा अन्य किसीकीस्त्रीकेसाथगमनकरनाऔरअन्यपुरुषोंकेसाथस्त्रीलोगोंका गमनकरनादोनोंकोतुल्यपापहै येएकादशअधर्मकेलक्षणकहदिये इनसेअन्यभी वेदादिकशास्त्रोंमें अभिमानादिक सहस्रों अधर्मके लक्षणलिखेहैं सोउनकेबिनापठनऔरअधर्मनजाननेमेंकभीज्ञान नहीहोसक्ता धर्मऔरअधर्मसबमनुष्योंकेवास्तेएकहीहैं इनमेंभेद नही जितनेभेदहैं वेसबभ्रमहीसेहैं क्योंकिसबका ईश्वरएकहीहै इससे उसकी आज्ञाभी सबकेवास्ते एकरसहीं निश्चित होनीचाहिए किन्तु जोसत्यबातवाअसत्यबातहै सोतोसर्वत्रएकहीहोतीहै

उसीको जितने बुद्धिमान लोगजानतेहैं वेकिसो जालवा बन्धनमें नहींगिरते किन्तु धर्महोकरते हैं औरअधर्मको छोड़देतेहैं यही बुद्धिमानोंकामार्गहै औरजितनेसंप्रदायजाल,पाखण्डहैं वेमूर्खोंहीकेहैं चारोंआश्रमवालेपुरुषधर्महोकासेवनकरैं अधर्मकाकभी नहीं॥ दशलक्षणकंधर्ममनुतिष्ठन्समाहितः। वेदान्तंविधिवच्छ्रुत्वासन्यास्येदनृणोद्विजः॥ ९५॥ म० दशलक्षणऔरएकयोगशास्त्रकीरीतिसेएवंग्यारहलक्षणजिसधर्मकेलक्षणकहदिये उसधर्मका अनुष्ठानयथावत्करैं समाहितचित्तहोकेवेदान्तशास्त्रकोविधिवत् सुनके अनृणजोद्विजनामब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,येतोनविद्वानहैं वे यथाक्रमसेसन्यासग्रहणकरैं॥ ९५॥ सन्यस्यसर्वकर्माणि कर्मदोषानपानुदन्। नियतोवेदमभ्यस्यपुत्रैश्वर्येसुखंवसेत्॥ ९६॥ म० बाह्यजितनेकर्मउनकात्यागकरै औरआभ्यन्तरयोगाभ्यासादिकजितनेकर्मउनकोयथावतकरै इससे सबकर्मदोषअर्थातअन्तःकरणकी मलिनतारागद्वेषइत्यादिकोंकोछोड़ादै निश्चितहोके वेदकाअभ्यासदाकरै औरअपनेपुत्रोंसेअन्नवस्त्रशरीरनिर्वाहमात्रलेलेवे नगरकेसमोपएकान्तमेंजाकेवासकरै नित्यघरसेभोजन आच्छादन करै हानिवालाभमेंकुछदृष्टिनदेकिसोकाजन्मवामरणहोय घरमें तोभीकुछउसमेंमोहवाद्वेषनकरै अपनीमुक्तिकेसाधनमेंसदातत्परहै॥ ९६॥ एवंसन्यस्यकर्माणि स्वकार्यपरमोस्पृहः। सन्यासेनापहत्यैनःप्राप्नोतिपरमाङ्गतिम्॥ ९७॥ म० इसप्रकारसेसबबाह्यकर्मोंकोछोड़दे स्वकार्यजोमुक्तिकाहोना अर्थातसबदुःखोंसेछूटकेपरमेश्वरकोप्राप्तहोना इसकार्यमेंतत्परहोय इससे भिन्नपदार्थकीइच्छाकभीनकरै इसप्रकारकेसन्यासमे सबपापोंकानाशकरदे औरपरमगतिजोमोक्षउसकोप्राप्तहोजाय पूर्वपक्षसन्यासीधातुओंकास्पर्शकरैवानहींउत्तर अवश्यधातुओंकास्पर्शकविनाकिसीकानिर्वाहनहीहोसक्ता क्योंकिभूआदिकधातुओंकास्पर्शभाषावासंस्कृत बोलनेमेंनिश्चितहोकरेगा औरविर्यादिक७सातधातुओंकाभोस्प-

र्श निश्चित होगा और सुवर्णादिक जितनी धातु हैं उनका भी स्पर्श हो-
गा पूर्वपक्ष ॥ यतीनांकांचनंदद्यात्तांबूलंब्रह्मचारिणम्। चौराणा-
मभयंदद्यात्सनरोनरकंव्रजेत्॥ इस श्लोक से यह आपका कथन विरुद्ध
हुआ सन्यासी को सुवर्ण ब्रह्मचारी को तांबूल चौरों को अभय का देने
वाला पुरुष नरक में जाता है ॥ उत्तरपक्ष ब्रह्मोवाच गृहीणांकाञ्चनं
दद्यादित्यं वै ब्रह्मचारिणाम्। चौराणांमासनन्दद्यात्सनरोनरकंव्रजे-
त्॥ इससे आपका कहना विरुद्ध हुआ जैसा कि मेरा वचन उस श्लोक से
यह कौन शास्त्र का श्लोक है अच्छा वह कौन शास्त्र का है यह तो पद्धति का
है अच्छा तो यह हमारी पद्धति का है और ब्रह्मा का कहा है ऐसा श्लोक
ब्रह्मा जी क भी न रचेंगे अच्छा तो यह मैं ने रचा है जैसा कि वह किसी ने
रच लिया है ये दोनों श्लोक अर्थ विचारने में मिथ्या होते हैं क्योंकि सन्यासी
को काञ्चन नाम सुवर्ण के देने से इन ने नरक लिखा इस में पूछना चाहिए
कि चांदी हीरादिक रत्न भूमि राज्य और स्थान देने से तो नरक को नहीं
जायगा और ब्रह्मचारी के विषय में भी जान लेना चौर के विषय में जो इ-
सने लिखा सो तो ठीक है और सर्व मिथ्या कथन है अच्छा तो श्लोक का
ऐसा पाठ है॥ यदिहस्ते धनन्दद्यात्तांबूलंब्रह्मचारिणम्। अन्यत्पूर्ववत्
यह भी मिथ्या श्लोक है क्योंकि यती के पात्र और आगे वा वस्त्र से बांध के
धन देने में तो पाप न होगा इस से ऐसी जो बात कहना सो मिथ्या ही है
और जो धन में दोष अथवा गुण है सो सर्वत्र तुल्य होते हैं जैसा उपद्रव धन
के रखने में गृहस्थों को होता है इस से सन्यासी को धन के रखने में कुछ अ-
धिक उपद्रव होगा क्योंकि गृहस्थों के स्त्री पुत्र और भृत्यादिक रक्षा कर-
ने वाले हैं उसको कोई नहीं शरीर के निर्वाह मात्र धन रख ले तब तो
विरक्त को भी कुछ दोष नहीं और जो अधिक रक्खेगा सो तो मोक्षपद
को प्राप्त हो के संसार में गिर पड़ेगा जैसे कि वैरागी, गुसांई बहुत सम-
हन्त और मठधारी हो गये हैं जैसे कि गृहस्थों से भी नीच हो जाते हैं और
सांई धन को पा के अमीर हो जाता है इस से क्या आया कि पहिले तो अ-
धिकार के बिना सन्यासग्रहण ही न हीं करना चाहिए जब तक विद्या

ज्ञान, वैराग्य, और जितेन्द्रियता, पूर्ण न होजाय तबतक गृहाश्रमही में रहना उचित है इससे धातुस्पर्श धनदेने और लेनेमें दोष करते हैं यहबातमिथ्याहीहै उनको कोईदे और विरक्त लेवै अथवा न लेवै अपनी२ इच्छाकेआधीनव्यवहारहै एकबातदेखनाचाहिए किजोविद्वानसोसबपदार्थोंकागुणऔरदोषजानताहै उसकोदेनेवालास्वर्ग जायसोतोठीकबातहै परन्तु नरकको वहजाताहै यहबातअत्यन्त नष्टहै वहविद्वानजोसन्यासीसत्कार औरउत्तमपदार्थोंकीप्राप्ति मेंहर्षकभीनकरेगा अस्त्कारऔरअनिष्टपदार्थोंकीप्राप्तिमेंशोक नकरेगा सोदेनेलेनेवाले दोनोंधर्मात्मा औरविद्यावानहोंगे तब तोउभयचसुखहीसक्ताहै औरजोदोनोंकुकर्मीहैं तोपापहीहैजैसे किचक्रांकितादिक वैरागीऔरगोकुलिये, गुसांईऔर नान्हक, कबिरादिकोंकेसम्प्रदायीलोगहैं औरमूर्खब्रह्मचारी गृहस्थवानप्रस्थ औरसन्यासीइनकोंदेनेमेंपापहीहोगा पुण्यकुछनहीं क्योंकिपुण्य तोविद्वान औरधर्मात्माओंकोदेनेमेंहै अन्यथानहीं चारवर्णऔर चारआश्रम इनकीशिक्षा संक्षेपसेलिखदिया औरविस्तारसेजो देखनाचाहै सोवेदादिकसत्यशास्त्रोंमेंदेखलेवै इससेआगेराजाऔर प्रजा केविषयमें लिखाजायगा॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषा विरचिते पंचमस्समुल्लासः संपूर्णः॥ ५॥

अथराजाप्रजाधर्मान्व्याख्यास्यामः॥ राजधर्मान्प्रवक्ष्यामियथावृत्तोभवेन्नृपः। सम्भवश्चयथातस्य सिद्धिश्चपरमोयथा॥ १॥ म० राजधर्मोंकोमनुभगवानकहतेहैं किमैंकहूंगा जिसप्रकारसेराजाकोवर्तमानकरनाचाहिए जिनगुणोंसेराजाहोताहै औरजिन

कर्मोंकेकरनेसेपरमसिद्धिहोतीहै किराज्यकरै औरसद्गतिभीउस-
कोहोय इसकोयथावतप्रतिपादनआगे२कियाजायगा ॥ १ ॥ ब्राह्मं
प्राप्तेनसंस्कारंक्षत्रियेणयथाविधि । सर्वस्यास्ययथान्यायंकर्त्तव्यं
परिरक्षणम् ॥ २ ॥ भ० जैसाब्राह्मणोंका संस्कारहोताहै वैसाही
सबसंस्कारयथाविधिजिसकाहोताहै अर्थातसबविद्याओंमेंपूर्णबल
बुद्धि,पराक्रम,तेज,जितेन्द्रियताओरशूरवीरता जिसमनुष्यमेंइस
प्रकार केगुणहोवें औरकोईमनुष्य उसदेशमें विद्यादिकगुणोंमें
उससे अधिकनहोय ऐसेपुरुषकोदेशकाराजाकरनाचाहिए तबवह
देशआनन्दितऔरअत्यन्तसुखीहोताहै अन्यथानहीं उसराजाका
मुख्यहीधर्महैकिअपनीप्रजाकीयथावत्रक्षाकरै ॥ २ ॥ अराज-
केहिलोकेस्मिन्सर्वतोविद्रुतेभयात् । रक्षार्थमस्यसर्वस्य राजानम-
सृजत्प्रभुः ॥ ३ ॥ भ० जिसदेशमेंधर्मात्माराजाविद्वाननहींहोता उ-
सदेशमेंभयादिकदोष संसारमेंबहुतहोजातेहैं इसवास्ते राजाको
परमेश्वरनेउत्पन्नकियाहै कियहसबजगत्कोरक्षाकरै औरजगतमें
अधर्मनहोनेपावै ॥३॥ इन्द्रानिलयमार्काणामग्नेश्चवरुणस्यच चंद्र-
वित्तेशयोश्चैवमात्रा निर्हृत्यशाश्वतीः ॥ ४ ॥ भ० इन्द्रअनिलनाम
वायुअर्कनामसूर्य,अग्नि,वरुण,चन्द्र,वित्तेशअर्थातकुवेर इनआठ
राजाओंकीनीतिऔरगुणोंसे मनुष्यराजाहोनेकाअधिकारीहोता
है तैसेहीइन्द्रकागुण शूरवीरतादाताकाहोना इन्द्रजैसाप्रजाकी
रक्षा सबप्रकारसेकरताहै तैसेहीराजा,वायुकागुण,बल औरदूत
द्वारासबप्रजाकोवर्तमानकाजाननाजैसाकिवायुसबकेहृदयमेंव्याप्त
होकेधारणकरतीहै औरसबमर्मोंकोजानताहैयमकागुणपक्षपातको
छोड़ना सदान्यायहीकरनाअन्यायकभीनहीं जैसाकिभरतराजा
नेअपनेपुत्रजोअन्यायकारी ९ नवउनकाखड्गसेशिरच्छेदनकर
दिया औरसगरनेअपनाएकजोपुत्रअसमंजा थोड़ेअपराधसेवनमें
निकालदिया यहबातमहाभारतमें विस्तारसेलिखीहै किअपनेपुत्र
काजबपक्षपातनकिया तोऔरका कैसेकरेंगे अर्कनामसूर्य जैसा

कि सब पदार्थों को तुल्य प्रकाश करता है और अन्धकार का नाश कर देता है ऐसे ही राजा सब राज्य में प्रजा के ऊपर तुल्य प्रकाश करै और अधर्म करनेवाले जितने दुष्ट अन्धकाररूप उनका नाश करदे और जैसे अग्नि में प्राप्त भया पदार्थ दग्ध हो जाता है वैसे ही धर्म नीति से विरुद्ध करनेवाले पुरुषों को दग्ध अर्थात यथावत दण्ड देवै जैसा कि अग्नि सूखे वा गीले पदार्थों का भस्म कर देता है और मित्र वा शत्रु जब२ अधर्म करैं तब२ कभी दण्ड के बिना न छोड़ै वरुण का गुण ऐसे पाश अर्थात बन्धनों से दुष्टों को बांधे कि फिर छूटने न पावें और कभी छूटें तो ऐसा दुःख पावें कि उस दुःख का विस्मरण कभी न होय जिससे अधर्म में उनका चित्त कभी न जाय चन्द्र का गुण जैसे कि चन्द्रमा सब प्राणियों को तथा स्थावर औषधियों को शीतल प्रकाश और पुष्टि से आनन्दयुक्त कर देता है और राजा अपनी प्रजा के ऊपर कृपादृष्टि रक्खै और प्रजा की पुष्टि कि किसी प्रकार से प्रजा दुःखित न होवै सदा प्रसन्न होरहै कुबेर का गुण जैसे कि कुबेर बड़ा धनाढ्य है धन की वृद्धि और धन की रक्षा यथावत करता है वैसे राजा भी धन की रक्षा सदा करै जिससे कि राजा के ऊपर ऋण वा दरिद्र कभी न होवै अपने वा प्रजा के ऊपर जब आपत्काल आवै तब उस धन से अपनी वा प्रजा की रक्षा करलेवें इन आठ गुणों से राजा होता है अन्यथा नहीं ॥ ४ ॥ सोऽग्निर्भवति वायुश्च सोऽर्कः सोमः स धर्मराट् । स कुबेरः स वरुणः स महेन्द्रः प्रभावतः ॥ ५ ॥ भ० प्रभाव अर्थात गुणों ही से अग्नि, वायु, आदित्य, सोम, धर्मराज, कुबेर, वरुण और महेन्द्र नाम इन्द्र राजा हो इन गुणों से जब युक्त होता है तब वही राजा ये आठ नाम वाला होता है ॥ ५ ॥ कार्य्यं सोऽवेक्ष्य शक्तिञ्च देशकालौ च तत्त्वतः । कुरुते धर्मसिद्ध्यर्थं विश्वरूपं पुनः पुनः ॥ ६ ॥ भ० सो राजा कार्य और शक्ति नाम सामर्थ्य देश और काल तत्त्व अर्थात यथावत इनको विचार के करै कि किस के वास्ते कि धर्म सिद्धि के वास्ते वारंवार विश्वरूप धारण करता है ॥ ६ ॥ यस्य प्रसादे पद्मा श्रीर्विजयश्च पराक्रमे । मृत्युश्च वसति क्रोधे सर्वतेजोमयो हि सः ॥ ७ ॥ भ० जिसकी कृपा से

दरिद्रहोवेसोधनाढ्यहोजाय और अल्पासेदुष्टदरिद्रहोजाय और पराक्रममेंनिश्चयकरकेविजयहोय इसमें राजासर्वतेजोमयहोताहै और जिसकेक्रोधमेंदुष्टोंकामृत्युहीवासकरताहोयअर्थातसबप्रकार केगुणवलपराक्रमजिसमेंहोवेंवहीराजाहोसक्ताहैअन्यथानहीं ७।
तस्माद्धर्मंयमिष्टेषुसव्यवस्येन्नराधिपः। अनिष्टंचाप्यनिष्टेषुतंधर्मं-नविचालयेत्॥ ८॥ म० जोराजाधर्मकोइष्टअर्थातधर्मात्मा और विद्वानोंकेऊपरनिश्चितकरै तथाअनिष्ट अर्थातमूर्ख औरदुष्टोंके बीचमेंदण्डकीव्यवस्थाकरैउसधर्मकोकोईमनुष्यनछोड़े किन्तुसब लोगकरैं जिस्सेधर्मात्माऔरविद्वानोंकीवढ़तीहोय औरमूर्खऔर दुष्टोंकी घटी इसहेतु अवश्य इसव्यवस्थाकोकरै॥ ८॥ तस्यार्थे-सर्वभूतानांगोप्तारंधर्ममात्मजम्। ब्रह्मतेजोमयंदंडमसृजत्पूर्वमी-श्वरः॥ ९॥ म० उसराजाकेलियेदण्डकोपरमेश्वरनेपूर्वहीसेउत्प-न्नकियावहदण्डकैसाहैकिब्रह्मतेजोमयब्रह्मपरमेश्वरऔरविद्याका नामहैउनकाजोतेजअर्थातसत्यव्य२वस्थावहीदण्डकहलाताहैफिर वहदण्डकैसाहैकिपरमेश्वरहीमेउत्पन्नभया क्योंकिपरमेश्वरन्या-यकारीहै उसकोआज्ञा न्यायहीकरनेकीहै उसीकानाम दण्डहै औरजोन्यायहैकिपक्षपातकाछोड़नासोईधर्महै जोधर्महैसोईसब भूतोंकीरक्षाकरनेवालाहैअन्यकोईनहींऔरवहदण्डराजाकेआ-धीनरक्खागयाहै क्योंकिवहीराजासमर्थहैइसदण्डकेधारणकरने मेंअन्यकोईनहींजोकोईराजाकहैकिधर्मकीवातहमनहींसुनते तो उसकाकहनामिथ्याहैक्योंकिधर्मनकरेगातोराजाऔरधर्मकास्था-पनतथापालनभीनकरेगा वहराजाहीनहीं राजातोवहहोताहै किधर्मकायथावतस्थापन और अधर्म काखण्डन करै यहीराजा का मुख्य पुरुषार्थ है ९॥ तस्यसर्वाणिभूतानिस्थावराणिचराणि-च। भयाद्भोगायकल्पन्तेस्वधर्मान्नचलन्तिच॥१०॥ म० उसदण्डके भयसेही जितनेजड़ औरचेतनभूतहैं दंडकेनियमसे वसबभोगमें आतेहैं अपना२जोपुरुषार्थ अर्थातअधिकार उसमेंयथावतचलते

हैं अपनेस्वधर्म अर्थातजो२ जिसकाव्यवहारकरनेकाअधिकारउससे भिन्नमार्गमेंकभीनहींचलते ॥ १० ॥ तंदेशकालौशक्तिञ्चविद्यांचावेक्ष्यतत्वतः। यथार्हतःसंप्रणयेन्नरेष्वन्यायवर्त्तिषु ॥ ११ म० उस दण्डकोअन्यायकरनेवालेजोमनुष्यहैं उनमेंयथावतस्थापनकरें अर्थात्यथावतदण्डदेवे परन्तुदेशकालसामर्थ्य औरविद्याइनसेयथावततत्त्वका बिचारकरकेदण्डदे क्योंकिअदण्ड्यपुरुष अर्थातधर्मात्माको कभीनदण्डदियाजाय औरअधर्मात्मा पुरुषदण्डकेबिनात्यागकभीनकियाजाय ॥ ११ ॥ सराजापुरुषोदण्डःसनेताशासिताचसः। चतुर्णामाश्रमाणांचधर्मस्यप्रतिभूःस्मृतः ॥ १२ ॥ राजा पुरुषनेताअर्थात व्यवस्थामें सबजगत्को चलानेवाला शासिताअर्थातयथावतशिक्षकदण्डहीहै किञ्चराजाऔरप्रजास्थ मनुष्यसब तुल्यहीहैं जैसाराजामनुष्यहै वैसाहीऔरसबमनुष्यहैं इसवास्ते मनुभगवान्नेंलिखा किदण्डहीराजा,दण्डहीपुरुष,दण्डहीनेता औरदण्डहीशासिता,जिसमेंयथावतविद्यादिकगुण औरदण्डकी व्यवस्थाहोयसोईराजाहै, अन्यकोईनहीं औरब्रह्मचर्याश्रमादिक चारआश्रमऔरचारोवर्णोंकायथावतस्थापनतथाउनकारक्षनकरनेवालादण्डहीहै किन्तुप्रतिभूःअर्थातजामिनहै इसकेबिनाधर्मयावर्णाश्रमव्यवस्थानष्टहोजातीहै कभीनहींचलती उसव्यवस्थाके बिनाजितनेउत्तमव्यवहारहैंवेतोनष्टहीहोजातेहैंकिन्तुभ्रष्टव्यवहारभीहोजातेहैं जैसेकिआजकालआर्यावर्त्तदेशकीव्यवस्थाहै ॥ १२ ॥ दण्डःशास्तिप्रजाःसर्वादण्डएवाभिरक्षति। दण्डःसुप्तेषुजागर्त्ति दण्डंधर्मंविदुर्बुधाः ॥ १३ ॥ मं० सबप्रजाकोदण्डहीशिक्षाकरताहै औरदण्डहीसबजगत्कारक्षकहै जबप्राणीसोजातेहैंतबप्रायमृतक होजातेहैं परन्तुदण्डहीनहींसोताइससे सबआनन्दसेसोकेउठतेहैं उठकेअपना२कामकाजऔरआनन्दकरतेहैं औरजोदण्डसोजाय तोजगत्कानाशहीहोजाय इससे जोदण्डहैसोईधर्महैऐसाबुद्धिमान लोगोंकादृढ़निश्चयहै ॥ १३ ॥ समीक्ष्यसधृतस्सम्यक्सर्वारञ्जयतिप्र-

का:। असमीक्ष्यप्रणीतस्तु विनाशयतिसर्वतः॥१४॥ भ० उसदण्ड
कोसम्यक्विचारकरकेजोधारणकरताहै वहराजासबप्रजाकोप्रस-
न्नकरदेताहैऔरजोविचारकेविनादण्डदेताहै वाआलस्य,मूर्खता
सेदण्डकोछोड़देताहै वहीराजासबजगत्कानाशकरनेवालाहोता
है राजृदीप्तौइसधातुसेराजाशब्दसिद्धहोताहै दीप्तिनामप्रकाशका
है जोसबधर्मोंकाप्रकाश औरअधर्म माचकानाश करै उसका
नामराजाहै औरजाऐसानहींहैउसकानामराजातोनहीरखना
चाहिए किन्तुउसकानामडाकूऔरअन्धकाररखनाचाहिये।१४।
दुष्येयुःसर्ववर्णाश्चभिद्येरन्सर्वसेतवः। सर्वलोकप्रकोपश्चभवेद्दण्ड-
स्यविभ्रमात्।१५॥ भ० दण्डकेनाशसेसबवर्णाश्रमनष्टहोजातेहैं
तथाधर्मकीजितनीमर्यादाहैंभीसबनष्टहोजातीहैं औरसबलोगोंमें
प्रकोपअर्थातअधर्मपूर्णहोजाताहै इससे दण्डकोकभीनछोड़नाचा-
हिए॥१५॥ यत्रश्यामोलोहिताक्षोदण्डश्चरतिपापहा। प्रजास्त-
त्रनमुह्यन्तिनेताचेत्साधुपश्यति॥१६॥ भ० जिसदेशमेंश्यामवर्ण
रक्तजिसकेनेत्र ऐसाजोपापनाश करनेवालादण्डविचरताहै उस
देशमेंप्रजामोहवादुःखकोनहीप्राप्तहोती परन्तु,दण्डकाधारणक-
रनेवालाराजाविद्वानऔरधर्मात्माहोयतोअन्यथानहींकैसाराजा
होयकि॥१६॥ तस्याहुःसंप्रणेतारंराजानंसत्यवादिनम्। समी-
क्ष्यकारिणंप्राज्ञंधर्मकामार्थकोविदम्॥१७॥ भ० इसदण्डका
सम्यक्चलानेवालासत्यवादीकिकभीमिथ्यानबोलै औरजोकुछक-
रैसोविचारहोसेसत्य२करै असत्यकभीनहींप्राज्ञअर्थातपूर्णविद्या
औरपूर्णबुद्धिजिसकीहोय धर्मअर्थऔरकाम इनकोयथावतजान-
ताहोय उसकोदण्डचलानेका अधिकारीकहतेहैं औरकिसीको
नहीं॥१७॥ तंराजाप्रणयन्सम्यक्त्रिवर्गेणाभिवर्द्धते। कामात्मा
विषमःक्षुद्रोदण्डेनैवनिहन्यते॥१८॥ भ० उसदण्डअर्थातधर्म
कोराजायथावतनिश्चयसेकरेगा तोधर्मअर्थऔरकामयेतीनराजा
केसिद्धहोजायगेऔरजाकामात्माअर्थातवेश्या,परस्त्री,लौंडे,इत्या-

दिकों के साथ फंसा रहता है तथा नम्रता, शील, नीति, विद्या, धैर्य, बुद्धि, बल, पराक्रम तथा सत्य, इन्हों का संग इनको छोड़ के विषम नाम कुटिल अर्थात अभिमान ईर्षा, द्वेष, मात्सर्य और क्रोध इनसे युक्त होके कर्म विपरीत करने से वह राजा विषम पुरुष हो जाता है नीच बुद्धि नीच संग नीच कर्म और नीच स्वभाव इत्यादिक दोषों से पुरुष जब युक्त होगा तब वह पुरुष नाम राजा चुद्र हो जायगा जब धर्म नीति से दण्ड यथावत् न कर सकेगा तब उसी के ऊपर दण्ड आके गिरेगा सो दण्ड से हत हो जायगा जैसे कि आज काल आर्यावर्त्त देश के राजाओं की दशा नित्य देखने में आती है ॥ १८ ॥ दण्डोहि सुमहत्तेजो दुर्द्धरश्चाकृतात्मभिः। धर्माद्विचलितं हन्ति नृपमेव सबान्धवम् ॥ १९ ॥ ततो दुर्गं च राष्ट्रं च लोकं च सचराचरम्। अन्तरीक्षगतांश्चैव मुनीन्देवांश्च पीडयेत् ॥ २० ॥ भ० दंड जो है सो बड़ा भारी तेज है उसका धारण करना मूर्ख लोगों को कठिन है जब वे दण्ड अर्थात धर्म से विचल जाते हैं तब कुटुम्ब सहित राजा का वह दण्ड नाश कर देता है ॥ १९ ॥ तदनन्तर दुर्ग जो किला राष्ट्र नाम राज्य चर अचर लोग अन्तरिक्ष में रहने वाले अर्थात सूर्य चन्द्रादिक लोगों में रहने वाले अथवा मुनि नाम विचार करने वाले देव नाम पूर्ण विद्या वाले उनका नाश और अत्यन्त पीड़ा करता है इससे क्या आया कि पक्षपात को छोड़ के यथावत दण्ड करना चाहिए तभी सुख की उन्नति होगी और जो दण्ड को यथावत न्याय से न करेंगे तो उनका ही नाश हो जायगा ॥ २० ॥ सोऽसहायेन मूढेन लुब्धेनाकृतबुद्धिना। न शक्यो न्यायतो नेतुं सक्तेन विषयेषु च ॥ २१ ॥ भ० सो श्रेष्ठ पुरुषों के सहाय से रहित मूढ़ नाम मूर्ख, लुब्ध नाम बड़ा लोभी, अकृतबुद्धि जिसको बुद्धि नहीं है सो राजा मूर्ख है वह न्याय से दंड कभी न दे सकेगा क्योंकि जो जितेन्द्रिय होता है वही राज्य करने का अधिकारी होता है और जो विषयासक्त तथा मूढ़ सो कभी दण्ड देने वा राज्य करने को समर्थ नहीं होता ॥ २१ ॥ राजा कैसा होना चाहिए कि ॥ शुचिना सत्यसन्धेन यथाशास्त्रानुसारि-

या। प्रणेतुं शक्यते दण्डः सुसहायेन धीमता॥ २२ ॥ भा० शुचि जो बाहर भीतर अत्यन्त पवित्र होय सत्यधर्म से सदा जिसका सम्यक् आचरण है तथा जैसो शास्त्र में परमेश्वर की आज्ञा है वैसा ही करै सुसहाय अर्थात् सत्पुरुषों का सङ्ग जो करता है और बड़ा बुद्धिमान वही राजा दण्ड व्यवस्था करने को समर्थ होता है अन्यथा नहीं॥ २२॥ वृद्धांश्च नित्यं सेवेत विप्रान्वेदविदः शुचीन्। वृद्धसेवी हि सततं रक्षोभिरपि पूज्यते २३॥ भा० जितने ज्ञान वृद्ध विद्या वृद्ध तपोवृद्ध, पवित्र विचक्षण वेदवित् धर्मात्मा धैर्यवान् होवें उनको ही राजा नित्य सेवा और सङ्ग करै जो इन पुरुषों का राजा संग करैगा तो उसका राक्षस अर्थात् दुष्ट पुरुष भी सत्कार और आज्ञा करैंगे ॥ २३ ॥ एभ्योऽधिगच्छेद्धि नियं विनीतात्मापि नित्यशः। विनीतात्मा हि नृपतिर्न विनश्यति कर्हिचित्॥ २४ ॥ जो राजा विनीतात्मा होवै अर्थात् सब श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न भी होवै तो भी उत्तम पुरुषों से विनय को ग्रहण करै क्योंकि जो अभिमानादिक दोषों से रहित और विद्या नम्रतादिक गुणों से युक्त होता है उस राजा का कभी नाश नहीं होता॥ २४॥ त्रैविद्येभ्यस्त्रयीं विद्यां दण्डनीतिं च शाश्वतीम्। आन्वीक्षिकीं चात्मविद्यां वार्त्तारम्भांश्च लोकतः॥ २५ ॥ भा० तीनों वेदों को जो पाठ स्वर और अर्थ सहित पढ़ा होवै उससे तीनवेदों को राजा यथावत पढ़ै दण्डनीति जो कि सनातन राजधर्म शिक्षा अर्थात् देने की जो व्यवस्था है इसको भी पढ़ै तथा आन्वीक्षिकी जो न्यायशास्त्र, आत्मविद्या और श्रेष्ठ मनुष्यों से कहने पूछने और निश्चय करने के वास्ते वार्त्ताओं का आरंभ इनको राजा यथावत् पढ़ै और पढ़के यथावत् करै॥ २५ ॥ इन्द्रियाणां जये योगं समातिष्ठेद्दिवानिशम्। जितेन्द्रियो हि शक्नोति वशे स्थापयितुं प्रजाः॥ २६ ॥ भा० राजा रात दिन इन्द्रियों के जीतने में नित्य ही प्रयत्न करै क्योंकि जो जितेन्द्रिय राजा होता है वही प्रजा को वश में स्थापन करने में समर्थ होता है और जो अजितेन्द्रिय अर्थात् कामी सो तो आप ही नष्ट भ्रष्ट हो जाता है फिर प्रजा को वश कैसे करेगा इससे क्या आया कि जो शरीर, मन और इ-

न्द्रिय इनकोवशमेंरखताहै सोईराजाप्रजाको वशमेंकरताहै अ-
न्यथा कभी प्रजावसमेंराजाकेनहीं होती जब तक प्रजावश में न-
होगी तबतकनिश्चलराज्यकभीनहोगा इसमें जोजितेन्द्रियहोयउ-
सकोहीराजाकरनाचाहिए अन्यकोनहीं ॥ २६ ॥ दशकामसमु-
त्थानितथाष्टौक्रोधजानिच । व्यसनानिदुरन्तानि प्रयत्ने नविवर्ज-
येत् ॥ २७ ॥ भ० जोराजाकामीहोताहैउसमेंदशदुष्टव्यसनअवश्य
होंगे औरजोराजाक्रोधीहोगा उसमेंआठदुष्टव्यसनअवश्यहोंगे
उनकोअत्यन्तप्रयत्नसेछोड़दे अन्यथाराजाही राज्यसहितनष्टहो
जाताहै ॥ २७॥ फिरक्याहोगाकि। कामजेषुप्रसक्तोहिव्यसनेषुम-
हीपतिः । वियुज्यतेऽर्थधर्माभ्यां क्रोधजेष्वात्मनैवतु ॥ २८ ॥ भ०
जोराजा कामसेउत्पन्नभये जोदशदुष्टव्यसनउनमें जबफसजायगा
तबउसकाअर्थनामद्रव्य औरराज्यादिकसबपदार्थ तथाधर्मइनसे
रहितहोजायगा अर्थातदरिद्रऔर पापीहोजायगा औरक्रोधसे
उत्पन्नहोतेहैं जोआठदुष्टव्यसनउनमेंफसजानेसेवहआपराजाहो
मरजाताहै इससे इनअठारहदुष्टव्यसनोंकोराजाछोड़दे जोअपने
कल्याणकोइच्छाहोवै कौनसे१८अठारहदुष्टव्यसनहैं ॥ २८ ॥ मृ-
गयाक्षोदिवास्वप्नःपरिवादःस्त्रियोमदः । तौर्यत्रिकंवृथाट्याचकाम
जोदशकोगणः ॥ २९ ॥ भ० मृगयानामशिकारकाखेलना अक्ष-
नामफांसाओंसेक्रीड़ा वा द्यूतकाकरना दिवास्वप्नदिवसमेंसोना
परिवादनामवृथावार्त्तावाकिसीकोनिन्दाकरना स्त्रीनामवेश्याओ-
रपरस्त्रीगमन तोअत्यन्तभ्रष्टहै किन्तुअपनीजोविवाहितस्त्रीउससे
भीकामसेआसक्तहोके अत्यन्तफसजाना वास्त्रीमेंअत्यन्तवीर्यका
नाशकरना मदनामभांग,गांजा,अफीमऔरमद्यइनकासेवनक-
रना तौर्यत्रिकंनृत्यकादेखनाऔरकरनावादित्रोंकाबजानावासु-
नना गानकासुनना वाकरानावृथाट्यानाम वृथाजहांतहांभ्रमण
करना अथवावृथावार्त्तावाहास्यकरना यहकामसेदशव्यसनसमू-
हगणउत्पन्नहोतेहैं इसकोप्रयत्नसेराजाछोड़दे इसकोजानछोड़ै

गा तो धर्म और अर्थ अर्थात धनसहित राज्य नष्ट होजायगा इसमें कुछ सन्देह नहीं क्रोधसे आठ उत्पन्न जो दुष्ट व्यसन वे ये हैं ॥ २९ ॥ पैशुन्यं साहसंद्रोह ईर्ष्यासूयार्थदूषणम्। वाग्दण्डजंचपारुष्यं क्रोधजोपिगणोऽष्टकः ॥ ३० ॥ भ० पैशुन्यनाम चुगली करना साहस नामबिचारकेबिना अन्यायसे परपदार्थका हरणकरलेना अभिमानबलयुक्त होके द्रोहनाम सज्जनों से भी प्रीति का न करना ईर्ष्या नाम पर सुख न सहना असूयानाम गुणोंमें दोष और दोषों में गुणोंका कहना अर्थदूषणनाम अपने पदार्थों का वृथा नाश करना अथवा अभिमानसे दूसरे के कहे अर्थ में अनर्थका लगाना वाग्दण्डज पारुष्यनाम बिनाबिचारे मुखसे बोलदेना अथवा कठोरवचन का कहना इसकानामवाक् है पारुष्य बिनाबिचारे दण्डकादेना वा अपराधकेबिना किसीको दण्डदेना अपराधके ऊपरभी पक्षपात से मित्रादिकोंको दण्डकानदेना यह क्रोधसे आठदुष्टव्यसनयुक्तगण उत्पन्न होताहै इसको अत्यन्तप्रयत्नसे राजाछोड़दे अन्यथा अपने शरीरसहित शीघ्रही राज्यकानाश होजाताहै इन दोनोंगणोंकाजोमूल है सोयहहै ॥ ३० ॥ द्वयोरप्येतयोर्मूलं सर्वेकवयोविदुः। तंयत्नेनजयेल्लोभंतज्जावेतावुभौगणौ ॥ ३१ ॥ भ० जिससे कामज और क्रोधज दोनों गण उत्पन्न होतेहैं अर्थात सबपाप और सब अनर्थों का मूल लोभही है ऐसा सब विद्वान लोगजानतेहैं उसलोभको प्रयत्नसे राजा छोड़दे क्योंकि लोभहीसे दोनोंगण पूर्वोक्त कामज और क्रोधज उत्पन्न होतेहैं इससे राजा और सज्जनलोग जो सबपापोंकामूल उसीको छेदनकरदेवें इसके छेदनसे सब अनर्थ और पापनष्ट होजायगे जैसेकि मूलछेदनसे वृक्षनष्ट होजातेहैं ॥ ३१ ॥ पानमक्षाःस्त्रियश्चैवमृगयाचयथाक्रमम्। एतत्कष्टतमंविद्याच्चतुष्कंकामजेगणे ॥ ३२ ॥ भ० पाननाम मद्यादिकनशाकाकरना अक्षतथास्त्री मृगया पूर्वोक्त सबजानलेना येचारकामजगणमें अत्यन्तदुष्टहैं ऐसाराजाजाने ॥ ३२ ॥ दण्डस्यपातनंचैववाक्पारुष्यार्थदूषणे। क्रोधजेपिगणेविद्यात्कष्टमेतत्त्रि-

कं सदा ॥ ३३ ॥ भ० दण्डकानिपातन वाकपारुष्य और अर्थदूषण ये तोन क्रोधके गणमें अत्यन्तदुष्ट हैं १८ अठारहमेंसे येसात अत्यन्तदुष्ट हैं ॥ ३३ ॥ सप्तकस्यास्यवर्गस्यसर्वचैवानुषंगिणः। पूर्वंपूर्वंगुरुतरं-विद्याद्व्यसनमात्मवान्॥ ३४ ॥ भ० चारकामकेगणमें और तीनक्रोधकेगणमें सर्वबयेअनुसंगीहैं किएकहोवैतो दूसराभीहोजाय इन सातोंमेंपूर्व२ अत्यन्तदुष्टहैं ऐसाविचारवान्कोजाननाचाहियेजैसेकिअर्थदूषणसेवाक्‌पारुष्यदुष्टहैवाक्‌पारुष्यसेदण्डकानिपातनदंडकेनिपातनसेशिकारशिकारसेस्त्रियोंकासेवन इससेअक्षक्रीड़ा और सबसेमद्यादिकपानदुष्टहै ऐसानिश्चितसबसज्जनोंको जाननाचाहिए ॥ ३४ ॥ व्यसनस्यचमृत्योश्चव्यसनंकष्टमुच्यते। व्यसन्यधोऽधो-व्रजतिस्वर्यात्यव्यसनीमृतः॥ ३५ ॥ भ० व्यसन और मृत्यु इनदोनोंमें जोव्यसनहै सोमृत्युमेंभीबुराहै क्योंकिजोव्यसनीपुरुषहै सोपापोंमेंफसकेनीच २ गतिकोचलाजाताहै और जाव्यसनरहितपुरुषहै सोमरजायतोभीस्वर्ग अर्थातसुखकोप्राप्तहोताहै इससेजिसकाबड़ा दुष्टभाग्यहोताहै वहीदुष्टव्यसनमेंफसजाताहै औरजिसकाभाग्य अच्छाहोताहै वहदुष्टव्यसनोंसेदूररहताहै ॥ ३५ ॥ मौलान्शास्त्र-विदःशूरान्लब्धलक्ष्यान्कुलोद्गतान्। सचिवान्सप्तचाष्टौवा प्रकुर्वीतपरीक्षितान्॥ ३६ ॥ भ० फिरराजासातवाआठपुरुषोंकोअपनेपासरखलेवकैसेहोवैंकिबड़े उदारसबशास्त्रकेजाननेवाले शूरवीर, जिनोंनेप्रमाणोंसे पदार्थविद्यापढ़लियाहै श्रीमानोंकेउत्तम कुलमेंजिनकाजन्महोय उनकोयथावत्परीक्षाकरके राजा देखले क्योंकिराज्यकेकार्य एकसेकभीनहींहोसक्ते इससे जितने पुरुषोंसे अपनाकामहोसके उतनेपुरुषोंकीपरीक्षाकर२केरखले उनसेयथावतकामलेवै परन्तु बिना परीक्षा मूर्खकोकभी नरक्खै और बिनाउनसभासदोंकीसम्मतिसेकिसीछोटेकामकोभीराजास्वतन्त्र होकेनकरै औरजोस्वाधीनहोके कुकर्मीराजाकरै तोवेसभासद् पुरुष राजाकोदण्डदें फिरदण्डसेभी नमानैतो उसको निकालके

दूसरा राजा उसी वक्त बैठादें ॥३६॥ सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च। सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति ॥ ३७ ॥ भ० सेनापति राज्य करनेके योग्य राजा दण्ड देनेवाला सर्वलोकाधिपति अर्थात् राजाके नीचे मुख्य सर्वोपरि जिसका नाम दीवान कहते हैं ये चार अधिकार वेद और सब सत्यशास्त्र इनमें पूर्ण विद्वान् होवें उनहीको देवें अन्यको नहीं क्योंकि ये चार अधिकार मुख्य हैं बिना विद्वानोंके ये चार अधिकार यथावत नहीं होते और जो मूर्ख काम, क्रोधादिक, दोषयुक्त इनको देने से ये चार अधिकार नष्ट होजांयगे इसवास्ते अत्यन्त परीक्षा करके चार पुरुष विद्वानोंको चार अधिकार देना चाहिए जिस्से कि विजय राज्य वृद्धि धर्म न्याय और सब व्यवहारोंकी यथावत व्यवस्था होय अन्यथा सब राज्य और ऐश्वर्य नष्ट होजाते हैं ॥३७॥ तेषामर्थे नियुञ्जीत शूरान्दक्षान्कुलोद्गतान्। शुचिनाकरकर्मान्तेभीरूनन्तर्निवेशने ॥ ३८ ॥ भ० उन अमात्योंके समीप राज्य कार्य करनेके वास्ते राजा शूर चतुर, कुलीन पवित्र जो होवें उनको राजा रखदेवै अमात्य उनसे सब राज्य कार्योंको सिद्ध करें उनमेंसे जितने शूर होवें उनको जहां२ शंका वा युद्ध वहां२ रखदें और जितने भीरु होंय उनको भीतर गृहके अधिकारमें रक्खै जहांकि स्त्रीलोग और कोश वहां डरनेवालोंको रक्खे और जहां शूरवीर लोगोंका काम होय वहां शूरवीरोंको रक्खै। ३८॥ दूतं चैव प्रकुर्वीत सर्वशास्त्रविशारदम्। इङ्गिताकारचेष्टज्ञं शुचिं दक्षं कुलोद्गतम् ३९॥ भ० फिर राजा दूतको रक्खै वह दूत कैसा होय कि सब शास्त्र विद्यासे पूर्ण होय मनुष्यको हृदयकी बात गमन शरीरकी आकृति और चेष्टा इनसे जान लेना जोकि उसके हृदयमें होय पवित्र चतुर और बड़े कुलका जो पुरुष होय ऐसे पुरुषको राजा दूतका अधिकार देवै ३९॥ अनुरक्तः शुचिर्दक्षः स्मृतिमान्देशकालवित्। वपुष्मानभीर्वाग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यते ॥ ४० ॥ भ० फिर वैसेको दूत करै कि राजामें बड़ी प्रीति जिसकी होय दक्ष नाम बड़ा चतुर एक वक्त कही बातको कभी न भूलै और जैसा देश जैसा काल वैसी बातको जानै वपुष्मान् नाम रूप

बल और शूरवीरता जिस में होय वीतभी नाम किसी से जिसको भय न होय वाग्मी बड़ा वक्ता धृष्ट और प्रगल्भ होवे ऐसा जो दूत राजा का होय सो श्रेष्ठ होता है ॥ ४० ॥ अमात्ये दण्ड आयत्तो दण्डे वैनयिकी क्रिया। नृपतौ कोशराष्ट्रे च दूते सन्धिविपर्ययौ ॥ ४१ ॥ म० दण्ड देने का जितना व्यवहार वह सर्वशास्त्रवित धर्मात्मा पुरुषों के आधीन रक्खे और दण्ड अन्याय से न होने पावे किन्तु विनयपूर्वक ही होवे कोश और राज्य यह दोनों राजा के अधिकार में रहैं सन्धि नाम मिलाप विपर्यय नाम विरोध ये दोनों दूत के आधीन राजा रक्खे ॥ ४१ ॥ तत्स्यादायुधसम्पन्नं धनधान्येन वाहनैः। ब्राह्मणैः शिल्पिभिर्यन्त्रैर्यवसेनोदकेन च ॥ ४२ ॥ म० तत् नाम दुर्ग किला सब प्रकार के आयुध धनधान्य नाम अन्न वाहन सवारी ब्राह्मण विद्वान शिल्पी नाम कारीगर लोग नाना प्रकार के यन्त्र तथा घास आदिक चारा और उदक नाम जल इन से पूर्ण सदा रहै कमती किसी बात की न होय ॥ ४२ ॥ तस्य मध्ये सुपर्याप्तं कारयेद्गृहमात्मनः। गुप्तं सर्वर्तुकं शुभ्रं जलवृक्षसमन्वितम् ॥ ४३ ॥ म० उसके श्रेष्ठ देश में सब प्रकार से श्रेष्ठ अपना घर राजा रहने को बनवावै सब प्रकार से उस स्थान की रक्षा करै और सब ऋतुओं में जिस घर में सुख होवे शुभ्र नाम सुफेद वह घर होवे चारों ओर घर के जल और श्रेष्ठ २ वृक्ष हरे २ पेड़ रहैं उस में आप रहै सब राज्य को देखभाल करै और सब के ऊपर सदा दृष्टि रक्खे जिस्से कोई अन्याय न करने पावे ॥ ४३ ॥ तदध्यास्योद्वहेद्भार्यां सवर्णां लक्षणान्विताम्। कुले महति सम्भूतां हृद्यां रूपगुणान्विताम् ॥ ४४ ॥ म० उस स्थान में रह के अपने वर्ण की सब श्रेष्ठ लक्षणों से युक्त और बड़े कुल में उत्पन्न भई अत्यन्त हृदय को प्रसन्न करनेवाली उत्तम जिसका रूप और सब विद्यादिक श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न स्त्री के साथ राजा विवाह करै देखना चाहिए कि ब्रह्मचर्याश्रम से सब विद्या का पढ़ना सब राज्यकार्य का प्रबन्ध करना और सब व्यवहारों को यथावत जानना पीछे राजा का विवाह मनु भगवान् ने लिखा इस से क्या आया कि-४८ वा ४४ वा ४० चालीसवां वर्ष में राजा को वि-

ब्याहकरनाउचितहै इससेपहिलेकभीनहीं औरस्त्रीभी२०वर्षसेऊपर
२५वर्षतककीहोनाचाहिए तबराजाकासन्तानसर्वोत्तमहोय अ-
न्यथानष्टभ्रष्टहोजाता है ॥ ४४ ॥ पुरोहितंचकुर्वीतवृणुयादेवच-
र्त्विजम् । तेऽस्यगृह्याणिकर्माणिकुर्युर्वैतानिकानिच ॥ ४५ ॥ म०
सबशास्त्रोंमेंविशारदनामनिपुण धर्मात्माजितेन्द्रियऔरसत्यवादी
जोकिपूर्वोक्तलक्षणवालाब्राह्मणकोपुरोहितकरै औरऋत्विजभी
वैसेहीकोकरै एराजाकेजितनेअग्निहोत्रादिकगृह्यकर्मऔरइष्टि-
यांउनकोनित्यकरैं ॥ ४५ ॥ यजेतराजाक्रतुभिर्विविधैराप्तदक्षिणैः । ध-
र्मार्थंचैवविप्रेभ्योदद्याद्भोगान्धनानिच ॥ ४६ ॥ म० अग्निष्टोमसे
लेकेजितने अश्वमेधतकयज्ञहैं उनमेंसेकोईयज्ञको राजाकरै सो
पूर्णक्रियाऔरपूर्णदक्षिणासेकरै जितनेविद्वान औरधर्मात्माहोवैं
उनकोनानाप्रकारकेभोजनकरावैऔरदक्षिणाभीदेवै ॥ ४६ ॥ सां-
वत्सरिकमाप्तैश्च राष्ट्रादाहारयेद्बलिम् । स्याच्चाम्नायपरोलोकेवर्ते-
तपितृवन्नृषु ॥ ४७ ॥ म० श्रेष्ठपुरुषोंकेद्वारावर्ष२केप्रजासेकरोंको
राजालियाकरै केवलवेदविहितऔरधर्मशास्त्रोक्तआचारमेंतत्पर
होवै जितनीप्रजामेंकन्यायुवती औरवृद्धहोवैं इनकोकन्याभगिनी
औरमाताकीनांईराजाजानै जितनेबालकयुवाऔरवृद्धउनकोपुत्र
भाई औरपिताकीनांईराजाजानै अधिकक्याकिसबप्रजाकोपुत्रकी
नांईजानै औरअपनेपिताकीनांईवर्तमानकरै ॥ ४७ ॥ अध्यक्षान्वि-
विधान्कुर्यात्तत्रतत्रविपश्चितः । तेऽस्यसर्वाण्यवेक्षेरन्नृणांकार्या-
णिकुर्वताम् ॥ ४८ ॥ म० जहां२जैसा२कामहोय वहां२नानाप्र-
कारकेमन्त्रियोंकोरखदेवै सबप्रजाकेसुखकेवास्ते सबकार्योंकोदे-
खतेरहैं औरव्यवस्थाकर्त्तारहैं जिससेकिअधर्मनहोनेपावै परन्तुवे
मूर्खनहोवैंकिन्तु सबविद्वानहीहोवैं ॥ ४८ ॥ आवृत्तानांगुरुकुला-
द्विप्राणांपूजकोभवेत् । नृपाणामक्षयोह्येष निधिर्ब्राह्मोऽभिधीयते ॥
४९ ॥ म० नतंस्तेनानचामित्राहरन्तिनचनश्यति । तस्माद्राज्ञा-
निधातव्योब्राह्मणेष्वक्षयोनिधिः ॥ ५० ॥ म० नस्कन्दतेनव्यथतेनवि-

नश्यतिकर्हिचित् । परिष्टमग्निहोत्रे भ्योब्राह्मणस्यमुखेहुतम् ५१ ॥ भ० जोब्रह्मचर्याश्रमसेगुरुकुलमेंगुरुकेपास विद्यापढ़केपूर्णविद्वान होकेआवें उनकोराजायथायोग्यसत्कारकरे औरयथायोग्यउनकोअधिकारभीदेवे जिस्सेकिसत्यविद्याका लोपकभीनहोय किन्तु सबविद्यासबमनुष्योंकेबीचमें सदाप्रकाशितरहे अर्थातपुरुषमात्रो विद्यारहितनरहनेपावे यहीराजाओंकाअक्षयनिधिअर्थातअक्षय पुण्यहैजोकिब्रह्मनामवेदकायथावतपढ़नाऔरयथावतवेदोक्तकर्मों काकरना इस्से आगेकोईपुण्यनहीहैक्योंकि ॥ ४९ ॥ जितनेधनहैं सुवर्णरजतादिकपुत्रदाराऔरशरीरउनकोचोरलेसक्ते हैं शत्रुभी हरणकरसक्ते हैं औरउनकानाश भीहोजाताहै परन्तु जोविद्या निधिहैउसकोनचोरनशत्रु हरसक्ते हैं औरनकभीउसकानाशहोताहै इस्से राजालोगोंको विद्याकाप्रकाशरूपजोनिधि उसकोविद्वानोंकेबीचमेंस्थापनकरनाचाहिए औरनित्यउसकाप्रचारकरना चाहिए ॥ ५० ॥ जोविद्यानिधिहैउसकोकोईउठाईगिराउठानहीं सक्ता नउसकोव्यथाअर्थातकभीपीड़ाहोतीहै अग्निहोत्रादिकजितनेयज्ञहैं उनसेयहजोविद्यारूपयोगऔरमुखमेंब्रह्मकेजाननेवाले अथवापढ़नेवाले केमुखरूपवेदिमेंहोम अर्थातविद्याकाजो स्थापन करनाहै सोविशिष्टअर्थातश्रेष्ठहै इस्से राजालोगोंकोअवश्य२चाहिए किशरीर,मन औरधनसेअत्यन्तप्रयत्न विद्याकेप्रचारमेंकरें इसीसेराजालोगोंकाऐश्वर्यपूर्ण आयु,बल,बुद्धिऔरपराक्रमसदा अधिकहोतेहैं ॥ ५१ ॥ संग्रामेष्वनिवर्त्तित्वं प्रजानांचैवपालनम् । शुश्रूषाब्राह्मणानांच राज्ञांश्रेयस्करंपरम् ॥ ५२ ॥ भ० संग्रामों मेंकभीनिवृत्तनहोना किजबतकउसशत्रुकोनजीतले तबतकउपाय मेंहीरहै किन्तु भागनेकेसमयमेंभागभीजाना औरपराक्रमकेसमयमेंपराक्रमकरना इसकानामशूरवीरपनाहै जोकिपशुकीनांई मारखामावामरजाना इसकानामशूरवीरतानहीं किन्तु बुद्धिही सेविजयहोताहै अन्यथाकभीनहीं प्रजाओंकापालनकरना जितने

विद्वानसत्यवादीधर्मात्माब्राह्मण अर्थातब्रह्मवित्सबविद्याओंमेंपूर्ण उनकायथावतसत्कारकरना यहीराजालोगोंकाकल्याणकरनेवालापरमश्रेष्ठकर्महै अन्यकोईनहीं॥ ५२॥ आहवेषुमिथोऽन्योऽन्यं जिघांसन्तोमहीक्षितः। युध्यमानाःपरंशक्त्यास्वर्गंयान्त्यपराङ्मुखाः॥ ५३॥ म० प्रजाकेपालनकरनेकेवास्ते श्रेष्ठधर्मात्माओंका यथावतपालन औरदुष्टोंकाताड़नकरनेकेलिये जितनाअपनासामर्थ्य उसेयथावतसबपुरुषमिलके परस्परजोराजालोगइननदुष्टोंकाकरतेहैं उसमेंअपनेभीमरणसे जोशंकानहींकरतेहैं औरयुद्धमें पीठनहीदेखातेहैं अर्थातकभीयुद्धसेभागतेनहींपरमहर्षऔरशूरवीरतासेजोयुद्धकरतेहैं उनकाइसलोकमेंअखण्डितराज्यहोताहै औरमरजांयतोमरनेकेपीछे परमस्वर्गकोप्राप्तहोतेहैं क्योंकिउनराजालोगोंकाजितनाकर्महै सोसबधर्मकेवास्ते होहै औरशूरवीरतासेउत्साहपूर्वकनिर्भयसमयमेंदेहकाजोछोड़ना सोईस्वर्गजानेकाकारणहै॥ ५३॥ युद्धमेंधर्मसेइतनेनियमराजालोगोंकोअवश्य माननाचाहिए। नकूटरायुधैर्हन्याद्युध्यमानोरणोरिपून्। नकर्णिभिर्नापिदिग्धै र्नाग्निज्वलिततेजनैः॥ ५४॥ म० नचहन्यात्स्थलारूढन्नक्लीबन्नकृताञ्जलिम् नमुक्तकेशन्नासीनन्नतवास्मीतिवादिनम्॥ ५५॥ नसुप्तन्नविसन्नाहंननग्नन्ननिरायुधम्। नायुध्यमानंपश्यन्तंनपरेणसमागतम्॥ ५६॥ म० नायुधव्यसनप्राप्तन्नार्तन्नातिपरीक्षतम् नभीतन्नपरावृत्तंसतांधर्ममनुस्मरन्॥ ५७॥ म० कूटआयुधअर्थातकपट,छल,सेकोईकोकभीयुद्धमेंनमारे रिपुनामशत्रुओंकाकर्णिनामकुटिलशस्त्र विषसेयुक्तशस्त्रसेतथाअग्निसे तपायेहुएशस्त्रोंसेशत्रुकोकभीनमारे॥ ५४॥ जोआसनमेंबैठाहोय नपुंसकहाथकोजोड़ले जिसकेशिरकेबालखुलजांय मैंआपकाहूं मुझकोमतमारोजोऐसाकहै॥ ५५॥ जोसोताहोय जोयुद्धसेभागखड़ाहोय विषादकोप्राप्तभयाहोय वानग्नहोगयाहोय आयुधसेरहित किजिसकेहाथमेंशस्त्रनहोय जोयुद्धनकरताहोय वादेखनेको

आयाहोय अथवादूसरेकेसाथआयाहोय मूर्छितहोगयाहोय शस्त्रकेप्रहारसेदुःखितहोगयाहोय औरशस्त्रोंकेलगनेसे शरीरमेंछेदनहोगयाहोय भयभीतहोगयाहोय भूमिमेंखड़ाहोवनाम नपुंसकऔरभयमेहाथजोड़ले इनकोयुद्धमेंराजाकभीनमारे क्योंकिसत्पुरुषराजाओंकायहीधर्महै जोयुद्धकरनेकोआवै शूरवीरतासे उसीकोमारे अन्यकोनहीं किन्तु पकड़केसुखमेंअपनेवशमें उसीवस्त्रकरलेओहोऔरबालकहैं उनकोमारनेकीइच्छाभी राजालोगनकरें क्योंकिजोयुद्धकीइच्छावायुद्धनहीकर्त्तेहैं उनकेमारनेमें बड़ापापहैइस्से कभीइनकोनमारे ॥ ५७ ॥ औरजोराजाकाभृत्यहोय वहयुद्धनकरैवायुद्धमेभागजाय अथवाछल,कपट,रक्खै युद्धमेंउसकोबड़ाभारीपापहोताहै । यस्तुभीतःपराहत्तःसंग्रामेहन्यतेपरैः । भर्त्तुर्यद्दुष्कृतंकिंचित्तत्सर्वंप्रतिपद्यते ॥ ५८ ॥ भ० जोभृत्यभययुक्तहोकेयुद्धसेभागजाताहै औरभागेहुएकोभीशत्रुलोगमारडालें तोबड़ीकृतघ्नताउसनेकिया क्योंकिराजानेउसकापालन औरसत्कारकियाथा सोयुद्धकेवास्तेहीकियाथा सोयुद्धउनसेकुछकियानहीं राजाकेकियेकोनाशकरनेसे वहकृतघ्नहोताहै औरजोराजाकाकुछपापउसकोवहीप्राप्तहोताहै ॥ ५८ ॥ यच्चास्यसुकृतंकिंचिदमुत्रार्थमुपार्जितम् । भर्त्तातत्सर्वमादत्ते पराहत्तहतस्यतु ॥ ५९ ॥ भ० उसभृत्यनेजोकुछपरलोककेवास्ते पुण्यकियाथा इससबपुण्यकोराजालेलेताहै औरउसभृत्यकोघोरनरकहोताहैसुखकभीनहीयहीधर्मस्वामी औरसबसेवकोंकाभीहै किजोजिसकास्वामीवाजोजिसकाभृत्यवेपरस्पर हितकरनेहीमेंसदाप्रहत्तरहैं छलऔरकपटमनसेभीनकरें अन्यथादोनोंअधर्मीहोतेहैं ॥ ५९ ॥ रथाश्वंहस्तिनंछत्रंधनंधान्यंपशून्स्त्रियः । सर्वद्रव्याणिकुप्यञ्चयोयज्जयतितस्यतत् । ६० ॥ भ० रथघोड़ाहाथीछाता,धनधान्यपशुगायछेरी,आदिकस्त्री औरवस्त्रादिकसबद्रव्य घीवातेलकाकुप्पा इनकोजोयुद्धकरनेवालाजीतेसोईलेवेहै उनमेंसेराजाकुछनले ॥ ६० ॥ राज्ञश्चदद्युरुद्धारमित्ये-

षाबैदिकीश्रुतिः। राज्ञाचसर्वयोधेभ्योदातव्यमपृथग्जितम् ९१॥
भ० परन्तुसबभृत्यलोगसोलहवांहिस्साउनद्रव्योंमेंसेराजाकोदेवें जोराजाऔरसेना मेंमिलकेजीताहोय द्रव्यमिलाभया उसमेंसे राजाभीसोलहवांहिस्साक्षत्रियोंकोदेवे इसमेंराजाअधिकवान्यूनता कभीनकरै क्योंकिइसकेबिनायुद्धमेंउत्साहकभीकोईनकरेगा ९१।
अलब्धमिच्छेद्दण्डेन लब्धं रक्षेदवेक्षया। रक्षितंवर्द्धयेद्वृद्ध्यावृद्धंदानेननिःक्षिपेत्॥९२॥ भ० चारभेदहैंपुरुषार्थकेअलब्धजोराज्यादिकउनकोदण्डसेग्रहणकरै जोप्राप्तभयाउसकोखूबबुद्धिऔर प्रीतिसेरक्षाकरै औररक्षितपदार्थोंकाव्याजादिकउपायोंसेबढ़ावै औरजोबढ़ाभयाधन उसकोविद्यादान यज्ञधर्मात्माओंकापालनऔरअनाथोंकेपालनमेंलगावै इनमेंसेभीवेदादिकसत्यशास्त्रोंकेपढ़नेऔरपढ़ानेहीमें बहुधाधनखर्चकरै अन्यमेंनहीं॥९२॥
बकवच्चिन्तयेदर्थान्सिंहवच्चपराक्रमेत्। वृकवच्चावलुम्पेत शशवच्चविनिष्पतेत्॥९३॥ भ० राजासबअर्थोंकेसंग्रहकरनेमेंअत्यन्तबुद्धिसेविचारकरै जैसाकिमत्स्यादिकग्रहणकरनेकेवास्ते बकुलाध्यानावस्थितहोकेविचारकरताहै वैसेराजाध्यानावस्थितहोकेसबअर्थोंकाविचारकरै युद्धसमयमेंसिंहकीनांईपराक्रमकरै जिस्से विजयहोवै औरपराजयकभीनहोय आपत्कालमेंअथवादुष्टोंकेनिग्रहकरनेकेवास्ते ऐसागुप्तरहै जैसाकिचीतावाभेड़ियाऔरखरहाजैसेअपनेबिलसेनिकलकेकूदताहौड़ताचलाजाताहै वैसेहीराजाशत्रुकीसेनासे निकलकेभागजाय वाछिपजाय अथवाकिला तोड़नेमेंऔरशत्रुग्रहणकरनेमेंपराक्रमकरै॥९३॥ शरीरकर्षणात्प्राणाःक्षीयन्ते प्राणिनांयथा। तथाराज्ञामपिप्राणाः क्षीयन्तेराष्ट्रकर्षणात्॥९४॥ भ० जैसेशरीरदुर्बलकरनेसेबलादिकजोप्राणवेक्षीणहोजातेहैं वैसेहीराज्यकेनाश अर्थात्अरक्षणसे राजालोगोंकेभीप्राणक्षीणहोजातेहैं अर्थात्राज्यसहितनष्टहोजातेहैं॥९४॥ यथाल्पाऽल्पमदन्त्याद्यं वार्योकोवत्सषट्पदाः। तथाल्पाऽल्पोग्रही-

नञ्चोराष्ट्राद्राष्ट्राद्विकःकरः । ६५॥ भ० जैसे जोंक बछड़ा और भौंरा थोड़ा२ विषय दूध और पुष्परसको ग्रहण करते हैं उनका नाश कभी नहीं करते वैसे ही राजा प्रजासे थोड़ा२ कर ग्रहण करे साल२ में॥ ६५ ॥ परस्परविरुद्धानांतेषांचसमुपार्जनम् । कन्यानांसम्प्रदानांच कुमाराणांचरक्षणम् ॥ ६६ ॥ भ० अब सब आमात्योंके साथ वा प्रजास्थ पुरुषोंके साथ कोई व्यवहारके निश्चयके वास्ते राजा विचार करै उनमें जिस बातमें परस्पर विरोध होय उसमें से विरुद्धांशको छोड़ाके सिद्धान्तमें सबको जब एकता होय उस बातका आरंभ करै अन्यका नहीं कन्याओंका सोलहवें वर्षसे पहिले विवाह कभी न होने पावै तथा चौबीसवर्षके आगे कन्या विवाहके विना कभी न रहने पावे जिसको की विवाहकी इच्छा होय तथा कुमार पुरुषोंका २५ वर्षके पहिले विवाह किसीका न होने पावै और ४०,४४ वा ४८, वर्षके आगे विवाहके विना पुरुष भी न रहैं तब तक कन्या और पुरुषोंको विद्यादान राजा करै और उनसे करावे तथा उनकी रक्षा भी राजा करावे जिस्से कि कोई भ्रष्ट न होवै और विद्याहीन भी कोई कन्या वा पुरुष न रहै यही राजा लोगोंका परम धर्म और परम पुरुषार्थ है जिस्से सब व्यवहार उत्तम होते हैं अन्यथा नहीं और जिस पुरुष वा कन्याको विवाहकी इच्छा न होवै उसके ऊपर राजा वा अन्यका कुछ बल नहीं॥ ६६ ॥ दूतसंप्रेषणंचैव कार्यशेषंतथैवच । अन्तःपुरप्रचारञ्चप्रणिधीनांचचेष्टितम् ६७ । दूतको भेजना और उस्से सब यथावत् व्यवहारोंका जानना कार्यशेष नाम दूतनाका कार्य सिद्धि होगया और दूतनाका कार्य सिद्ध नाको है उसको विचारसे यथावत् पूर्ण करै जिस नगरमें वा जिस स्थानमें रहै उन मनुष्योंका यथावत् अभिप्राय जानले प्रणिधी नाम दूतो अथवा दासी दूनको भी चेष्टाको यथावत् जाने जिस्से कि कोई विघ्न न होने पावै ६७ ॥ कृत्स्नं चाष्टविधंकर्मपञ्चवर्गंचतत्त्वतः । अनुरागापरागौचप्रचारंमण्डलस्यच॥ ६८॥ भ० ये आठ विध जो कर्म राजा आमात्य सेना कोश और राज्य ये पांच वर्ग हैं जिसमें उसके कर्मको तत्त्वसे जाने और उसको

रच्चाभीकरै अपनेमेंसबकोप्रीति वाअप्रीति तथामण्डलके राजाओंकाव्यवहार औरउनकेमनकोइच्छाइमकोयथावत्राजाजानतारहै जिस्से आपत्कालअकस्मात्कभीनआवै॥ ६८॥ मध्यमस्यप्रचारञ्च विजिगीषोश्च चेष्टितम्। उदासीनप्रचारंच शत्रोश्चैवप्रयत्नतः॥ ६९॥ अपनेऔरपरराज्यकीसीमामें जोराजाहोय विजिगीषुनामशत्रुकेतरफसेजोभीतनेकोआवै उदासीनजोअपनेवाशत्रुके पच्चमेनहोवैऔरशत्रु,इनचारोंकीचेष्टाऔरअभिप्रायकोयथावत्राजाजानलवै अन्यथासुखकभीनहोगा इस्सेअत्यन्तप्रयत्नपूर्वक राज्यकेमूलजितनेहैं उनकोकहै औरतत्परहोकेजानेजानकेयथावत्व्यवस्थाकरै॥ ६९॥ इनकोसामअर्थात्मिलाप,दानअर्थात्धनकादेना भेदनामपरस्परसभोंकोतोड़फोड़रक्खे औरदण्डयेचार राजालोगोंकेसाधनहैं परन्तु उनचारोंमेंसेमिलापउत्तमहै उस्से नीचेदाम औरभेदसबसेकनिष्टदण्डहै इस्से तीनउपायसेजबकार्य सिद्धिनहोवैतबदण्डकरै इनकातत्वयहहै किजिस्से बहुतधर्मात्मा होवें औरदुष्टनहोवें ऐसेउपाय विद्यादिकदानोंसे राजासदाकरतारहै एकतोचक्रप्रकारसेयुवावस्थामेंब्रह्मचर्याश्रमसेविद्याकोपढ़केविवाहकाहोना औरपांचवेंवर्षपुत्रवाकन्याको पढ़नेकेवास्ते न भेजें तोउनकेमातापितादिकोंकोऊपरराजाअवश्यदण्डकरै यथावत्पठनऔरपाठन कीव्यवस्थाकरै जोकोईइसमर्यादाकोभङ्गकरै विद्यादिकगुणग्रहणनकरै तबउसमनुष्यकोशूद्रकाअधिकारदेदेवै औरशूद्रादिकनीचोंमेंकोईउत्तमहोवै उसकोयथायोग्यद्विजका अधिकारदेवै जैसेकिब्राह्मण,चत्रियवावैश्योंकेदुष्टपुत्रवाकन्यामूर्ख होजांय तबउनकोशूद्रकुलमेंरखदे औरशूद्रादिकोंमेंजबद्विजत्यअधिकारकेयोग्यहोवैं तबयथायोग्यद्विजकाअधिकारदेवै अर्थात्द्विज बनादेवै तबजिसब्राह्मणचत्रियवावैश्यकेपुत्रवाकन्या एकदोतीनवा जितनेशूद्रहोगयेहोंय उनकेबदलेपुत्रवाकन्याओंकोराजागिन२के देवै तथाशूद्रादिकोंकोभीक्योंकिजिसकोएकहीपुत्रवाकन्याहै और

वहशूद्रहोगया अथवाशूद्रकोपुत्र वाकन्याद्विजहोगई फिरउनका
वंशतोछिन्नहीहोगया दूसराराजालोगोंसेयथायोग्य गिन२केलिये
जांयश्रौरदियेभीजांयदूसरीबातयहहैकिवेदादिकसत्यशास्त्रोंकाअ-
त्यन्तप्रचारकरै श्रौरजोकोईशास्त्रपुस्तकरचैवापढ़ैपढ़ावै उसकोरा-
जाशिरच्छेदनतकदण्डदेवै जिस्से किकोईमिथ्याशास्त्रपुस्तकनरचै
तीसरीबातयहहैकिजबकोईजितेन्द्रिय,पूर्णविद्यावान,पूर्णज्ञान-
वान,सत्यवादीदयालुश्रौरतीव्रबुद्धिवालाविवाहकरना श्रौरविरक्त
होनाचाहैउसकोराजायथावत्परीक्षाकरकेश्राज्ञादेवै श्रौरकहदे
किश्रापसत्यविद्यासत्यउपदेशकाप्रचारसंसारमेंकरैंउसकाश्राकार
स्वभावश्रौरगुणपत्रमेंलिखेश्रौरग्राम२ नगर२मेंविदितकरदेजिस्से
किकोईपुरुषउसका अपमाननकरै श्रौरउसके वेषवानामसे कोई
फिरनेनपावै चौथीबातयहहैकिकोईमूर्ख,धूर्त्त,अधर्मीश्रौरमिथ्या
वादीविरक्तनहोनेपावै क्योंकिउसकेविरक्तहोनेसेसबसंसारकोबुद्धि
भ्रष्टहोजातीहैजैसोउसकीभ्रष्टबुद्धिहोगीवैसाहीउपदेशकरेगाश्र-
च्छाकहांसेकरेगाइस्सेऐसापुरुषविरक्तनहोनेपावैजोविरक्तहोयतो
उसकोपकड़केदण्डदे पांचवीबातयहहैकिजोकोईकर्मकाण्डकाश्र-
धिकारीहोय उसकोकर्मकाण्डमेंरक्खै सोकर्मकाण्डवेदोक्तलेना
तन्त्रवापुराणकोएकबातभीनलेनी पूर्वमीमांसाश्रर्थातजैमिनिजो
व्यासजीकेशिष्यकेकियेसूत्रोंकेश्रनुसार कर्मकाण्डकीव्यवस्थाराजा
नित्यरक्खै संध्योपासन,श्रग्निहोत्रसेलेकेश्रश्वमेधतककर्मकाण्डहै
उसकेदोभेदहैं एकतोसकामदूसरानिष्काम सकाम यहकहताहै
किविषयभोगऐश्वर्यकेवास्ते कर्मकाकरना श्रौरनिष्कामयहहैकि
कर्मोंसेमुक्तिहीकाचाहना उस्से भिन्नपदार्थोंकोचाहनानहींउ-
समेंवेदकेजोमन्त्रहैंवेहीदेवहैं इनसेभिन्नकोईदेवनहींश्रौरमन्त्रों
के कहनेवाले परमेश्वरपरमदेवहैं ऐसाहीनिश्चय पूर्वमीमांसा-
दिकों श्रौरनिरुक्तादिकोंमेंकियाहै दूसराउपासनाकाण्डहैसोभी
वेदोक्तहीलेना उसकेव्यवस्थाकेनिमित्तपातञ्जलिमुनिकेसूत्रश्रौर

उसके ऊपर व्यासमुनिजी का किया भाष्य तथा दश उपनिषद् इन्हों को रक्खे इनमें जैसी उपासना की व्यवस्था है उसी पूर्वक आप और अपनी प्रजा को चलावै पाषाणादिक मूर्त्ति पूजनादिक उपासना को नहीं इससे इसको छोड़ना छोड़ाना ही उचित है तीसरा ज्ञानकाण्ड है उसमें पृथ्वी से लेके परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों का यथावत तत्त्वज्ञान का होना इसका विधान वेद दश उपनिषद् और व्यासजी का किया शारीरक सूत्र उनकी रीति से ज्ञानकाण्ड की व्यवस्था करै उसमें आप राजा चलै और प्रजा को भी चलावै और जितने पूर्वोक्त शैव वैष्णव शाक्तादिक पाखण्ड लिखे हैं उनको कभी न प्रचलित करै क्योंकि ये सब पाखण्ड है तीनों काण्ड में नहीं है उनसे विरुद्ध ही हैं इन पाखण्डों के चलने में राजा और राज्य नष्ट हो जाते हैं सो अत्यन्त प्रयत्नों से इन पाखण्डों का अंकुर मात्र भी न रहने पावै जैसे कि आज काल आर्यावर्त्त देश में मण्डली की मण्डली फिरती हैं लाखों पुरुषों में विरक्तता धारण किया है यह मिथ्या जाल ही है इन लाखों में कोई एक पुरुष विरक्तता के योग्य है और सब पाखण्ड में रहे हैं इनकी राजा यथावत् परीक्षा करै सत्यवादी, जितेन्द्रिय, सब विद्याओं में निपुण और शान्त्यादिक गुण जिसमें होय उसको तो विरक्त ही रहने दे इससे जितने विपरीत होंय उनको यथायोग्य हलग्रहणादिक कर्मों में राजा लगादेवै इस व्यवस्था को अवश्य करै अन्यथा कभी सुख न होगा॥ सन्धिं च विग्रहं चैव यानमासनमेव च। द्वैधीभावं संश्रयञ्च षड्गुणांश्चिन्तयेत्सदा॥ ६५॥ सन्धि नाम मिलाप विग्रह नाम विरोध यान नाम यात्रा किंवा चढ़के ऊपर चढ़ना आसन नाम युद्ध का न करना और अपने राज्य का प्रबन्ध करके घर में बैठ रहना द्वैधीभाव नाम दो प्रकार का बल अर्थात सेना रचलेना इन छः गुणों का विचार किया है सो मनुस्मृति में विचार लेना और भी बहुत प्रकार के राजकर्मों का उसी में विचार किया है सो देखलेवैं॥ प्रमाणानि च कुर्वीत तेषां धर्म्यान्यथोदितान्। रत्नै श्च पूजयेदेनं प्रधानपुरुषैः सह॥ ६६॥ म० जिस राजा को जीत लेवसे नियम करदे कि

अबहमतुमकोबोलावैं वाजैसीआज्ञाकरैं उसकोयथावतकरनाऔ-रमेरेअमात्यकेतुल्यहोके यथोक्तमेरोआज्ञाकरो यथावततुमधर्मसेसबकामकरोअन्यायमतकरोपराजयकेशोकनिवारणकेनिमित्तराजाऔरराजाकेसबपुरुषमिल्के उनकोरत्नादिकदेके उसराजाकोप्रसन्नकरैं जिस्से किउसकोपराजयसेदुःखभयाहोय उसकासत्कारसेनिवारणहोजाय फिरउनकोयथावतआजीविकाकरदे जिस्से उनके भोजनादिकोंका निर्वाहहोसके उतनो जीविका करदे औरजोराजाधर्मसेराज्यकरै विद्या, बुद्धि, बल, पराक्रम, औरजितेन्द्रियहोय उस्से नयुद्धकरै नउस्से राज्यलेनेकोइच्छाकरै किन्तु उसकोबन्धुऔरमित्रवतजानै॥ ६६॥ प्राज्ञं कुलीनं शूरं च दक्षं दातारमेव च। कृतज्ञं धृतिमन्तञ्च कष्टमाहुररिं बुधाः॥ ६७॥ म० पण्डित, कुलीन, शूर, वीर, चतुर, दाता, कृतज्ञ और धैर्यवान पुरुषसेवैरकभीनकरै जोकभीवैरकरैगा तोउसको दुःखहीहोगा ऐसेपुरुषकापराजयकभीनहींहोसक्ता॥ ६७॥ एवं सर्वमिदं राजा सह संमन्त्र्य मन्त्रिभिः। व्यायाम्याप्लुत्य मध्याह्ने भोक्तुमन्तःपुरं विशेत्॥ ६८॥ म० इसप्रकारसेसर्वराजसम्बन्धीजोकर्म उसकाविचार मन्त्रियोंकेसाथकरके व्यायामनामदण्डमुद्गरकरके सिंहकीनांई अथवा नटकीनांई अभ्यासकरकेमध्याह्नसमयकेपहिलेभोजनकरै भोजनकरकेन्यायघरमेंजाके सबन्यायोंकोयथावतकरै जितनीराजसम्बन्धीबातेंलिखीहैं ये सबमनुस्मृतिसप्तमाध्यायकीहैं यहांतोसंक्षेपसलिखीहैं विस्तारसे देखाचाहैतोवहांदेखलै एकयहबातअवश्य होनीचाहिए कि जोमनुष्य राजाहो उसीकी आज्ञामें चलैं यह बातठीकनहीं क्योंकिराजातोप्रतिष्ठा औरमानकेवास्ते सर्वोपरि है परन्तुविचारकरनेकोएकपुरुषसमर्थनहींहोताजितनेदेशवाअन्यदेशमेंबुद्धिमानपुरुषहोवैंउनसबकोराजाएकसभारक्खै उससभा मेंआपभीरहैफिरसबपुरुषोंकेविचारसेजोबातठीक२ठहरे उसबात कोसबकरैं इसक्याआयाकिजोराजाअन्यायकारीहोजाय तोउस-

कोनिकालबाहरकरैं औरउसीकेस्थानमेंउत्तमलक्षणवालेक्षत्रियको बैठादेवैं क्योंकिराजातोप्रजाकेभयसेअन्यायनकरसकेगा औरप्रजा राजाकेभयसे अन्यायनकरसकैगी राजाजबअन्यायकरैतबउसको यथावत्दण्डदेदे॥कार्षापणंभवेद्दण्ड्योयत्रान्यःप्राकृतोजनः। तत्रराजाभवेद्दण्ड्यःसहस्रमितिधारणा ६९॥ भ० जिसअपराधमेंप्रजास्थ पुरुषकेऊपरएकपैसादण्डहोय उसीअपराधकोजोराजाकरैउसकेऊपरहजारपैसादण्डहोय यहकेवलउपलक्षणमात्रहै किप्रजासे हजारगुनोदंडराजाकेऊपरहोय क्योंकिराजाजोअधर्मकरेगा तो धर्मकापालनकौनकरेगा कोईभीनकरेगाइसमेंदोनोंकेऊपर दण्ड कोव्यवस्थाहोनीचाहिए ॥ ६९॥ अष्टापाद्यन्तुशूद्रस्यस्तेयेभवतिकिल्विषम्। षोडशैवतुवैश्यस्यद्वात्रिंशत्क्षत्रियस्यच ॥ ७० ॥ ब्राह्मणस्यचतुःषष्टिःपूर्णंवापिशतंभवेत् । द्विगुणावाचतुःषष्टिस्तद्दोषगुणविद्धिसः ७१॥ जितनापदार्थकोईचोरावैवहमूर्खवाबालकनहोय किन्तु गुणऔरदोषोंकोजानताहोवै सोजोशूद्रचोरहोयतोउससे आठ गुणदण्डले वैश्यसे सोलहगुण,क्षत्रियसे३२गुण,और१०० वा१२८ गुणदण्डराजाब्राह्मणसेलेवै क्योंकिश्रेष्ठहोकेनीचकर्मकरै उसको अधिकहीदण्डहोनाचाहिए॥ ७१ ॥ पिताचार्यःसुहृन्माताभार्यापुत्रःपुरोहितः । नादण्ड्योनामराज्ञोस्तियस्स्वधर्मेनतिष्ठति ७२ ॥ भ० पिताआचार्यविद्यादातासुहृत्नाममित्रमाता भार्यानामस्त्री पुत्रऔरपुरोहितजब२अपराधकरैं तब२कभीदण्डकेबिनानछोड़ै क्योंकिराजाकेसामनेकोई अपराधीअदण्ड्यनहीं क्योंकिस्वधर्ममें स्थितनरहै॥ ७२॥ अदण्ड्यान्दण्डयन्राजादण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डयन्। अयशोमहदाप्नोतिनरकंचैवगच्छति ७३॥भ० जोराजाअन्याय करनेवालेकोदण्डनहींदेता औरअनपराधीकोदण्डदेताहै उसकोबड़ीअपकीर्तिहोतीहै औरनरककोभी वहजाताहै इससे राजा कोअवश्यचाहिएकिपक्षपातकोछोड़के यथावत्दण्डव्यवस्थारक्खै किसीकापक्षपातकभीनकरै इससे क्याआयाकि किसीनेमनुष्य ति

वाअन्यजनसेऐसेस्तोकप्रसिद्धकियाहोय किब्राह्मणवासन्यासीआदि-
कोदण्डनदेनाउसकोसज्जनलोगमिथ्याहीमानैं ॥ ७३ ॥ क्योंकि
धर्मोविद्धस्त्वधर्मेणसभांयत्रोपतिष्ठते । शल्यंचास्यनकृन्तन्तिविद्धा-
स्तत्रसभासदः ॥७४॥ म० धर्मऔरअधर्मसेविद्धअर्थातघायलभया
राजाऔरसभासदोंकेपासधर्मऔरअधर्मदोनोंआवैंफिरउसध-
र्मका जोघावउसकोराजाऔरसभासदननिकालैंजसेकिघावकोऔ-
षध्यादिकयत्नोंसेअच्छाकरतेहैंवैसेहीधर्मात्माकासत्कारऔरदुष्टों
केऊपरदण्ड जिससभामें यथावत नहोगा उससभाके राजाऔर
सभासदसबमनुष्योंकोंमुरदाहोजानना तथा जहां२ शिष्टपुरुषोंको
अथवासत्यासत्य निश्चयकेवास्तेसभाहोवै फिरजिससभामें सत्यका
स्थापननहोयऔरअसत्यकाखण्डनवेभीसबसभासदमूढ़हीहैं और
मुरदेक्योंकि ॥७४॥ सभांवानप्रवेष्टव्यंवक्तव्यंवासमंजसम् । अब्रु-
वन्विब्रुवन्वापिनरोभवतिकिल्विषी ॥ ७५ ॥ म० पुरुषप्रथमतोस-
भामेंप्रवेशहीनकरै औरजोसभामेंप्रवेशकरै तोसत्यहीकहै मिथ्या
कभीनकहै क्योंकिजानताभयापुरुषसत्यासत्यकोनकहै अथवाजैसा
जानताहोय उससे विरुद्धकहैतोभीवहमनुष्यपापीहोजाताहै इससे
क्याआयाकिजैसाजोपुरुष हृदयसेजानताहोय वैसाहीकहै उससे
विरुद्धकभीनकरै क्योंकिसत्यबोलनाहीसबधर्मोंकामूलहै औरअ-
सत्यअधर्मकामूलहै इसमेंमहाभारतकाप्रमाणहै नसत्याद्विपरो-
धर्मोनानृतात्पातकंपरम् । इसकायहअभिप्रायहैकिसत्यबोलनेसे
बढ़करकोईधर्मनहींऔरमिथ्याबोलनेसेबढ़करकोईपापनहीं इससे
सत्यभाषणहीसदाकरनाचाहिए मिथ्याकभीनहीं ॥ ७५ ॥ यत्रध-
र्मोह्यधर्मेणसत्यंयत्रानृतेनच । हन्यतेप्रेक्षमाणानांहतास्तत्रस-
भासदः । ७६ ॥ म० जिसराजाकीसभामें धर्म अधर्मऔरसत्यका
राजातथाअमात्योंकेदेखतेभी अनृतनाशकरताहै फिरवेन्यायन-
करैं तथासर्वत्रसभामें उनकोभीसज्जनलोग नष्टहीजानैं क्योंकि
॥ ७६ ॥ धर्मएवहतोहन्तिधर्मोरक्षतिरक्षितः । तस्माद्धर्मोनहन्त-

न्योमानोधर्मोहतोवधीत्॥ ७७॥ भ० जोपुरुषधर्मकानाशकरता है अर्थातधर्मकोछोड़के अधर्मकरताहै उसकोअवश्यही धर्ममार डालताहै उसअधर्मीकीरक्षाकरनेको ब्रह्मादिकदेवभीसमर्थनहीं औरपरमेश्वरभीअपनीआज्ञाकोअन्यथानहींकरते क्योंकिपरमेश्वरतोसत्यसङ्कल्पहीहै इस्से जैसीआज्ञाविचारकेयथावतकियाहै वहीरहतीहै किअधर्मकरैसो अधर्मकाफलपावै औरधर्मकरैसो धर्मका औरजोपुरुषधर्मकोरक्षाकरताहै उसकीधर्मभीसदारक्षा करताहै उसकानाशकरनेकोतीनोंलोकमेंकोईभीसमर्थनहीं इस्से सबसज्जनलोगधर्मकानाशऔरअधर्मकाआचरणकभीनकरैं ७७

वृषोहिभगवान्धर्मस्तस्ययःकुरुतेह्यलम्। वृषलन्तंविदुर्देवास्तस्माद्धर्मंनलोपयेत्॥ ७८॥ भ० जोमनुष्यधर्मकालोप अर्थातधर्मको छोड़केअधर्मकरताहै वहीशूद्रवाभंडुवाहै क्योंकिवृषनामधर्मका है औरभगवान्भीतीनोंलोकमेंधर्महीहै जोआज्ञाकरनेवालाहै सोआज्ञासेभिन्ननहीं क्योंकिउसकेआत्मरूपहीआज्ञाहै उसधर्मकोजोत्यागकरताहै उसकोदेवनाम विद्वानलोगशूद्रवा भंडुवाको नाईंजानतेहैं इस्से धर्मकात्यागकभीनकरनाचाहिए॥ ७८॥

एकएवसुहृद्धर्मो निधनेप्यनुयातियः। शरीरेणसमंनाशं सर्वमन्यद्धिगच्छति॥ ७९॥ भ० देखनाचाहियेकिसबजगतमेंएकधर्महीसब मनुष्योंकामित्र है अन्यकोईनहीं क्योंकिधर्ममरनेकपीछेभीसाथदेताहै औरधर्मसेभिन्न जितनेपदार्थहैं वेशरीरकेछोड़नेके साथही छूटजातेहैं परन्तु धर्मकासंगसदाबनारहताहै इस्सेधर्मकोकोईकभीनछोड़ै॥ ७९॥

पादोधर्मस्यकर्त्तारं पादःसाक्षिणमृच्छति। पादःसभासदःसर्वान्पादोराजानमृच्छति॥ ८०॥ भ० जिससभा मेंअन्यायहोताहै उससभामेंयहबातहोतीहै किजोअधर्मकोकरता है उसकोअधर्मकाचौथाहिस्साप्राप्तहोताहै उसकेजोमिथ्यासाक्षी हैं उनकोअधर्मकाहटलियांशमिलताहै जितनेसभासदहैं किराजा केअमात्य उनकोएकअंशअधर्मका राजाकोमिलताहै अर्थातउस

अधर्म के चार हिस्से होजाते हैं और चारों को उक्त प्रकार से एक २ हिस्सा मिलजाता है॥ ८० ॥ राजा भवत्यनेनास्तु मुच्यन्ते च सभासदः। एनो गच्छति कर्त्तारं निन्दार्हो यत्र निन्द्यते॥ ८१ ॥ म० जिस सभा में धर्म और अधर्म का विवेक यथावत् होता है कि यथावत् पक्षपात को छोड़ के सत्य २ ही न्याय होता है उस सभा के राजा साक्षी और अमात्य सब धर्मात्मा होजाते हैं और जिसने अधर्म किया उसी के ऊपर सब अधर्म होता है कि वही अधर्म का फल भोगता है राजादिक आनन्द से पुण्य का फल भोगते हैं दुःख कभी नहीं इससे राजा अमात्य और साक्षी पक्षपात से अन्याय कभी न करें॥ ८१ ॥ बाह्यैर्विभावयेल्लिङ्गैर्भावमन्तर्गतं नृणाम्। स्वरवर्णेङ्गिताकारैश्चक्षुषा चेष्टितेन च॥ ८२ ॥ म० जब कोई वादी प्रतिवादी का न्याय करने लगै तब बाहर के चिन्हों से भीतर के भाव को जान लेवे उसका शब्दरूप इङ्गित नाम सूक्ष्म हृदय और नाड़ी की चेष्टा आकृति तथा नेत्र की चेष्टा और बाह्य अंगों की भी चेष्टा इनसे सत्य २ निश्चय कर ले कि इनने अपराध किया है और इनने नहीं किया एक बात यह भी परीक्षा की है जो हाथ के मूल में धमनी नाड़ी और हृदय उनको वैद्यकशास्त्र की रीति से स्पर्श करके यथावत् परीक्षा करै फिर यथावत् दण्ड और अदण्ड करै इन १८ अठारह स्थानों में विचार की व्यवस्था है॥ ८२॥ तेषामाद्यमृणादानं निःक्षेपोऽस्वामिविक्रमः। संभूय च समुत्थानं दत्तस्यानपकर्म च॥ ८३॥ वेतनस्यैव चादानं संविदश्च व्यतिक्रमः। क्रयविक्रयानुशयो विवादः स्वामिपालयोः॥ ८४ ॥ सीमाविवादधर्मश्च पारुष्ये दण्डवाचिके। स्तेयं च साहसं चैव स्त्रीसंग्रहमेव च॥ ८५ ॥ स्त्रीपुंधर्मो विभागश्च द्यूतमाह्वय एव च। पदान्यष्टादशैतानि व्यवहारस्थिताविह॥ ८६ ॥ एषु स्थानेषु भूयिष्टं विवादं चरतां नृणाम्। धर्मं शाश्वतमाश्रित्य कुर्यात्कार्यविनिर्णयम्॥ ८७ ॥ म० ऋण का लेना और देना १ निक्षेप के दो भेद हैं जो गिनके तौल के वा किसी के पास पदार्थ रक्खै उसका नाम निक्षेप है दूसरा गुप्त बांध के किसी के पास धरावट रक्खो और

आधेर धनसे व्यवहारकरना २ अस्वामिविक्रयनाम अन्यकापदार्थकोईबेचले वाकिसीकापदार्थकोईदबाले३ संभूयसमुत्याननाम धर्मार्थयज्ञार्थ वा दक्षिणाकेवास्ते धनदियाजाय इनमें विवादका होनावाअन्यथाकरना ४ औरदियेभयेपदार्थकोछिपाले ५ नौकरी काटदेनावानदेना अथवानलेना ६ प्रतिज्ञाकाभंगकरना ७ बेचनाऔरखरीदना ८ पशुओंकास्वामीऔरउनकेपालनेवालेमेंविवादकाहोना सीमामेंविवादकाहोना १० कठोरबचन औरबिना विचारे दण्डदेना ११ चोरी १२ साहसनामपरस्परस्त्रीपुरुषोंका व्यभिचारऔरडांकूपना १३ किसीकोस्त्रीकोबलसेवाफुसलाकरले लेना १४ स्त्रीऔरपुरुषोंकेपरस्परनियमउनकोभंगकरना १५दायभाग १६ द्यूतनामजूवा १७ और जोप्राणिअर्थात स्त्रीपुत्रकुटुम्बगाय हस्ती,अश्वादिकपशुओंकोदवाकरद्यूतकाकरना उसकानामसमाह्वयहै १८ इनअठारहव्यवहारोंमें प्रजामेंअत्यन्तविवादहोता है इनकाउक्तलक्षणदूतप्रेषण औरपूछनेसेराजायथावतन्यायकरै इनन्यायोंकाविधानयथावत्मनुस्मृतिके अष्टमाध्याय औरनवमाध्यायकीरीतिसेकरनाचाहिये॥ ८७॥ दातव्यं सर्ववर्णेभ्योराज्ञाचौरैर्हृतंधनम्। राजातदुपयुञ्जानश्चौरस्याप्नोतिकिल्बिषम् ८८॥ जोप्रजामेंचोरीहोयतोउसमेंजितनेपदार्थचोरीजांयउनसबपदार्थों कोचोरोंकानिग्रहकरके जोजिसकापदार्थ चोरीगयाहोय उसको चोरीमेलेकेपदार्थकेस्वामीकोराजादेदे औरजोचोरनपकड़ाजाय औरपदार्थनमिले तोअपनेपाससेराजादेदेक्योंकिइसीवास्ते राजा काहोनाआवश्यकहै प्रजानित्यराजाकोदेतीहैइसवास्ते किअपना पालनराजायथावत्करै जोयथावत्पालननकरेगाऔरप्रजासेधनलेगातोवहीराजाचोरऔरडाकूकेपापकाभागीहोगाजोचोरोंसे मिलके चोरीकेधनकोग्रहण करनेकीइच्छाकरै वहराजानहीं है किन्तु वहीचोरऔरडांकूहै ॥ ८८॥ यादृशाधनिभिःकार्याव्यवहारेषुसाक्षिणः। तादृशान्संप्रवक्ष्यामियथावाच्यमृतंचतैः॥ ८९॥

भ० राजाऔरधनिकलोगोंकोजिसप्रकारकेसाक्षीव्यवहारोंमेंकरनाचाहिए उनकोयथावतकहतेहैं औरसाक्षियोंकोजैसासत्य२ हीकहनाचाहिए ॥ ८९ ॥ गृहिणः पुत्रिणोमौलाःक्षत्रविट्शूद्रयोनयः । अर्थ्युक्ताःसाक्ष्यमर्हन्तिनयेकेचिदनापदि ॥ ९० ॥ भ० गृहस्थपुत्रवालेऔरवेउदारहोवैं फिरक्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, शूद्रवर्णोंमें सेकार्यवाला पुरुषजिनकोकहै कियेमेरेसाक्षीहैं औरकोईआपत् कालकेबिनानहोय ॥ ९० ॥ आप्ताःसर्वेषुवर्णेषु कार्याःकार्येषुसाक्षिणः । सर्वधर्मविदोऽलुब्धाविपरीतांस्तुवर्जयेत् ॥ १०० ॥ भ० ब्राह्मणादिक सबवर्णोंमें जोआप्त बड़ाधर्मात्मा, सत्यवादी औरजितेन्द्रियहोवै तथासर्वधर्मको जानताहोय और काम, क्रोध, लोभ, मोह, भयशोकादिक दोषजिसमेंनहोवैं सत्यबोलनेहीका जिसका नियमहोय ऐसेहीकोराजाऔरप्रजासाक्षीकरैं इनसेविपरीतमनुष्योंकोकभीसाक्षीनकरैं ॥ १०० ॥ नार्थसम्बन्धिनोनाप्तानसहायानवैरिणः । नदृष्टदोषाःकर्तव्यानव्याध्यार्त्तानदूषिताः ॥ १०१ ॥ भ० जितनेपरस्परव्यवहारसेसबन्धरखतेहोंय अनाप्तनामजिनमेंकाम क्रोध, लोभ, मोह, भयमूर्खत्वादिदोषहोवैं सहायकारीहोवेंवाशत्रु होवैं जोवादीप्रतिवादीकेदोष वा गुणोंकोजानताहोय रोगसेआर्त्तहोय वादुष्टकर्मकोकरनेवाले इसप्रकारकेमनुष्योंकोराजावाप्रजासाक्षीकभीनकरैं ॥ १०१ ॥ नसाक्षीनृपतिःकार्योनकारुककुशीलवौ । नश्रोत्रियोनलिंगस्थो नसंगेभ्योविनिर्गतः ॥ १०२ ॥ भ० राजाकारुकनामशिल्पी कुशीलवनामकुटारीसेआजीविकाकरनेवाले श्रोत्रियनामवेदपढ़ानेवाला लिंगस्थब्रह्मचारीऔरवानप्रस्थ संगेभ्योविनिर्मुक्तनामसन्यासीइनकोभीराजावाप्रजासाक्षीनकरैं क्योंकि कारुक और कुशीलव तो मूर्ख हैं राजा न्यायकरनेवाला होताहै वेदपाठी, ब्रह्मचारी, वानप्रस्थऔरसन्यासीइनकोसाक्षीकरनेसे पढ़नापढ़ानातपऔरविचारमें विघ्नहोगा इससेइनकोसाक्षी नकरनाचाहिये । १०२ ॥ नाध्यधीनोनवक्तव्योनदस्युर्नविकर्मकृत् ।

नदृष्टोनशिशुर्नैकोनान्त्योनविकलेन्द्रियः॥ १०३ ॥ भ० पराधीनवऋण्यनाम लिखाने सेसाक्षीहोवे डांकू विरुद्ध कर्मकरनेवाला द्वद्ध बालकनीचऔरअजितेन्द्रिय तथाएकहीपुरुषसाक्षी इनकोराजा वाप्रजाकभीसाक्षीनकरैं॥ १०३॥ नार्त्तोनमत्तोनोन्मत्तोनक्षुत्तृष्णोपपीडितः। नश्रमार्त्तोनकामार्त्तोनक्रुद्धोनापितस्करः॥ १०४ ॥ भ० दुःखीमत्तनाम भांगमद्यादिकपीनेवाला उन्मत्तनामपागल क्षुधा औरतृषासे जोपीड़ितहोवे श्रमकरकेदुःखीहोवे कामातुर क्रोधीऔरचोर इनकोराजाऔरप्रजासाक्षीकभीनकरैं ॥ १०४ ॥ स्त्रीणांसाक्ष्यंस्त्रियःकुर्युर्द्विजानांसदृशाद्विजाः। शूद्राश्चसन्तःशूद्राणामन्त्यानामन्त्ययोनयः॥ १०५ ॥ भ० विद्यासत्यभाषणजितेन्द्रियजोस्त्रियांहोवें वस्त्रियोंकोसाक्षीहोवें द्विजोंकेसदृशसत्यवादी द्विज शूद्रोंकेसत्यवादीशूद्र चांडालादिकोंकेसत्यवादी चांडालादिकसाक्षीहोवें अन्यकोईनहीं औरभीमनुस्मृतिकेअष्टमाध्यायमेंविस्तार सेसाक्षीकाविधानलिखाहै जोदेखाचाहैसोदेखले। १०५ ॥ साहसेषुचसर्वेषुस्तेयसंग्रहणेषुच। वाग्दण्डयोश्चपारुष्येनपरीक्षेतसाक्षिणः॥ १०६ ॥ जितनेबलात्कारकेकर्मचोरीपरस्त्रीसेव्यभिचारवा ग्रहणकठोरबचनवा विनाबिचारेदण्डकादेना इनकर्मोंमेंसाक्षीकीपरीक्षाहीराजानकरै किन्तु यथावत्‌विचारकरके इनकोदण्ड देना उचित है ॥ १०६ ॥ सत्येनपूयतेसाक्षी धर्मःसत्येनवर्द्धते । तस्मात्सत्यंहिवक्तव्यंसर्ववर्णेषुसाक्षिभिः॥ १०७॥ भ० सत्यबोलने सेसाक्षी पवित्र और मिथ्या बोलने से महापापी होता है धर्म भीसत्यबोलनेहीसे बढ़ताहै इस्से सबमनुष्यों कोसत्यही साक्षी देनीचाहिएमिथ्याकभीबोलनानहीं॥ १०७॥ आत्मैवह्यात्मनःसाक्षीगतिरात्मातथात्मनः। मावमंस्थाःस्वमात्मानंनृणांसाक्षिणमुत्तमम्॥ १०८॥ भ० साक्षीसेपूछनाचाहिये कितेरेआत्माकासाक्षीतूंहीहै औरतेरीसद्गतिकाकरनेवालाभीतूंहीहै क्योंकिजोतूं सत्यबोलेगातोतुझकोकभीदुःखनहीगा औरमिथ्याबोलनेसेसदातूं

दुःखीहीरहेगा इसमेंकुछसन्देहनहीं इससे हेमित्रसबसाक्षियोंमें सेउत्तमजोसाक्षीअपनाआत्मा उसकामिथ्याबोलनेसे अपमानतूं मतकर औरजोतूंअपमानस्वात्माकाकरेगा तोकिसीप्रकारसेतेरीसद्गतिनहींहोगी किन्तु असद्गतिहीहोगी इससे सत्यहीसाक्षीबोलै मिथ्याकभीनहीं ॥ १०८ ॥ ब्रह्मघ्नोयेस्मृतालोकायेचस्त्रीबालघातिनः । मित्रद्रुहःकृतघ्नस्य तेतेस्युर्ब्रुवतोमृषा ॥ १०९ ॥ भा० ब्रह्मघ्न नामब्रह्मवित्पुरुषोंकामारनेवाला औरवेदोक्तकर्मोंकात्यागीस्त्री और बालकोंकामारनेवाला मित्रकाद्रोही कृतघ्नइनकोजैसेकुम्भीपाकादिकदुःखरूपीलोकऔरजन्मप्राप्तहोतेहैं वेतुझकोसबहोवेंजो तूंसत्यनबोलै ॥ १०९ ॥ जन्मप्रभृतियत्किंचित्पुण्यंभद्रत्वयाकृतम् । तत्ते सर्वंशुनोगच्छेद्यदिब्रूयास्त्वमन्यथा ॥ ११० ॥ हेभद्रहेसाक्षिन् जोतूंमिथ्याकहेगा तोतैनेंजितनापुण्यजन्मभरकियाहैवहसबतेरा पुण्यकुत्तेकोप्राप्तहोय इससे तूंसत्यबोलै ॥ ११० ॥ एकोऽहमस्मीत्यात्मानंयस्त्वंकल्याणमन्यसे । नित्यंस्थितस्तेहृद्येषपुण्यपापेक्षितामुनिः ॥ १११ ॥ हेकल्याणतूंजानताहैकिमैंएकहीहूं ऐसातूंमतजान क्योंकिन्यायकारीसर्वज्ञजोपरमेश्वरसबजगतमेंव्यापीनित्यस्थितहै सोईतेरेहृदयमेंभीव्यापकहै तेराजोपापवापुण्यइनसबकोयथावत्जानताहै इससे तूंपरमेश्वर औरअधर्मसे भयकरकेसत्यहीबोल ॥ १११ ॥ यमोवैवस्वतोदेवोयस्तवैषहृदिस्थितः । तेनचेदविवादस्ते मागंगांमाकुरून्गमः ॥ ११२ ॥ भा० जो यमनाम यथावत् न्यायसेव्यवस्थाकरनेवाला वैवस्वतनामसूर्यादिकसबजगत्काप्रकाशकरनेवाला देवनामस्वप्रकाश स्वरूपसर्वान्तर्यामी तेरेहृदयमें भीनित्यस्थितहै उसपरमेश्वरसे शत्रुतावाविवाद तुझकोनकरना होय तोतूंसत्यहीबोलऔरजोतूंपरमेश्वरहीसेविरोधरक्खेगातो तुझकोकभीसुखनहोगा औरजोतूंसत्यहीबोलेगा तोगङ्गावाकुरुक्षेत्रमेंप्रायश्चितकरना वाराजदण्डमेंदण्ड अथवापरलोक परजन्ममेंनरकादिकसबदुःखोंकोप्राप्तितुझकोकभीनहोगी इससे तुझकोअ-

वश्यसत्यहीबोलनाचाहिये मिथ्याकभीनहीं ॥ ११२ ॥ यस्यविद्वान् हिवदतःक्षेत्रज्ञोनाभिशंकते। तस्मान्नदेवाःश्रेयांसंलोकेऽन्यंपुरुषंविदुः ॥ ११३ ॥ भ० जिसपुरुषकाक्षेत्रज्ञजोहृदयस्थआत्मा विद्वाननाम सबपापपुण्यकोजाननेवाला सोईअपनाआत्माजिसकर्म मेंशंकानहींकरताहै जिसमेंभयशङ्का औरलज्जाहोवै उसकर्मको कभीनहींकरता किसत्याचरणऔरसत्यबचनहीबोलताहै उससेअधिकअन्यधर्मात्मापुरुषकोईनहीं ऐसादेवनामविद्वान्लोगनिश्चितजानतेहैं औरभीमनुस्मृतिकेअष्टमाध्यायमें बहुतसाबिस्तारलिखाहै सोदेखलेना व्यवहारोंकोनिश्चयकरनेकेवास्तेदूतकाभेजना औरउक्तप्रकारोंसेयथावत्निश्चयहीसत्ताहै अन्यथानहीं ॥ ११३ ॥ उपस्थमुदरंजिह्वाहस्तौपादौचपञ्चमम्। चक्षुर्नासाचकर्णौचधनंदेहस्तथैवच। ११४ ॥ भ० उपस्थनामलिंगेन्द्रिय,उदर,जिह्वा,हस्त पाद,चक्षु,नासिका,कान,धनऔरदेहयेदशदण्डदेनेकेस्थानहैं इन्हीं मेंदण्डका स्थापनहोताहै ॥ ११४ ॥ वाग्दण्डंप्रथमंकुर्याद्धिग्दण्डंतदनन्तरम। तृतियंधनदण्डन्तुवधदण्डमतःपरम् ॥ १०५ ॥ भ० प्रथम तो वाग्दण्ड करै कि ऐसा काम कोईदुष्ट न करै दूसराधिक्दण्ड कितुझकोधिकारहै दुष्टतैंनेंनीचकर्मकिया तीसरा धनदण्डकिउससे धनलेलेना चौथावधदण्डकिउसकोमारडालना ॥ ११५ ॥ अनादेयस्यचादानादादेयस्यचवर्जनात्। दौर्बल्यंख्याप्यतेराज्ञःसप्रेत्येहचनश्यति ॥११६॥ राजाजोनलेनेकीवस्तुहैउसकोकभीनले औरलेनेकाअपनाजोकरउसमेंसेएककौड़ीभीनछोड़ै क्योंकिइससेराजाको दुर्बलताजानीजातीहै उसराजाकाइसलोक वापरलोकमें नाशहोहोताहै इससे क्याआयाकि राजाअपने अंशोंकोप्रजासेयथावत्लेताहै औरप्रजाकेअंशकोकभीग्रहणनहींकरता सोईराजाश्रेष्ठहै ॥ ११६ ॥ यस्त्वधर्मेणकार्याणिमोहात्कुर्यान्नराधिपः। अचिरात्तंदुरात्मानंवशेकुर्वन्तिशत्रवः ॥ ११७ ॥ भ० जो राजा अन्याय तथा मोहसे कार्योंको करताहै उसराजाका

थोड़ाहोनाथाहोजाताहै क्योंकिउसकोबहुलोग थोड़ाहीबयामें कर लेतेहैं ॥ ११७ ॥ संभोगोदृश्यतेयत्र नदृश्येतागमःक्वचित्। आगमः कारणंतत्र नसंभोगइतिस्थितिः ॥ ११८ ॥ प्रजामेंभोगनानाप्रकार का देखपड़े उसकों राजा विचारकरै किआमदनी इनकोकहां से होती है जोआमदनी निश्चितहोय तोकुछ चिन्तानहीं और जोनौकरीव्यापारवाकुछउद्यमनकरै औरभोगनानाप्रकारकाकरताहोय उसकोपकड़केराजादण्डदे क्योंकिअवश्ययहचौर्यादिक कुकर्मकरताहोगा इसकेपासधनकहांसेआया भोगकाकारण आगमहीहै औरसंभोगकाकारण संभोगकभीनहीं ऐसीमर्यादा है इसकोराजाअवश्यपालनकरै ॥ ११८ ॥ धर्मार्थंयेनदत्तंस्यात्कस्मै चिद्याचतेधनम्। पश्चाच्चनतथातत्स्यान्नदेयंतस्यतद्भवेत् ११९ ॥ भ० किसीनेकिसीकोपठनपाठनअग्निहोत्रादिकयज्ञसुपात्रोंकोदेनेकेवास्तेवाअपनभोजनादिकनिर्वाहकेनिमित्तधनदियागया किइतनेकामकेहेतु हमआपको धनदेतेहैं सोआपइतनाही कामइससे करैं औरपुण्यकेवास्ते दानदियाहोय फिरवहवैसाकर्मनकरै कि वेश्यागमन,वानशादिकप्रमादउसधनसेकरैतोउससे सबधनलेलियाजाय जिसनेकिदियाथावहीलेले औरजोउसकोवहनदेतोराजा उसकोपकड़केदण्डसेदिलादे ॥ ११९ ॥ धनुःशतंपरीहारोग्रामस्यस्यात्समन्ततः। शम्यापातास्त्रयोवापि त्रिगुणोनगरस्यतु ॥ १२० ॥ भ० गांवकेचारोंओर१००सौधनुष्य परिमाणसेमैदानरक्खे धनुष्यहोताहै साढ़ेतीनहाथका अथवाकोईबलवानपुरुषएकदण्डाको लेके खूबबलसेफेंके जहांवहदण्डपड़े उससे फिरफेंके उसस्थानसेभी तीसरीबारफेंकेजहांवहदण्डाजायवहांतकमैदानरक्खै इसमेंसौ धनुष्यसेकुछअधिकमैदानरहेगा औरनगरकेचारोंओरतिगुणमैदानरक्खै क्योंकिग्रामवानगरमें वायुशुद्धरहेगा इससे रोगथोड़े होंगे औरपशुओंकोसुखहोगा इसवास्तेअवश्यइतनामैदानरखनाचाहिए १२०॥ परमंयत्नमातिष्ठेत्स्तेनानांनिग्रहेनृपः। स्तेना-

नांनिग्रहादस्ययशोराष्ट्रंचवर्द्धते १२१॥ भ० चोरोंकेनिग्रहमेंराजा अत्यन्तयत्नकरै क्योंकिचारोंऔरदुष्टोंके निग्रहसेराजाकीकीर्त्ति औरराज्यनित्यबढ़तेचलेजातेहैं अन्यथानहीं ॥ १२१ ॥ रक्षन्धर्मेणभूतानि राजावध्यांश्चघातयन्। यजतेऽहरहर्यज्ञैः सहस्रशतदक्षिणैः ॥१२२ ॥ भ० औराजाधर्मनामन्यायसेसवभूतोंकोरक्षाकरताहै औरदुष्टोंकोदण्डसेमारताहै वहराजासहस्रोंलाखैंकड़ोंदक्षिणोंसे अर्थात्लक्षऔरकोटिदक्षिणोंसेजानों किनित्ययज्ञहीकरता है क्योंकिराजाकामुख्यधर्मयहीहै श्रेष्ठोंकापालनऔरदुष्टोंकाताडनकरना॥ १२२॥ अरक्षितारंराजानं बलिंषट्भागहारिणम्। तमाहुःसर्वलोकस्यसमग्रमलहारकम्॥ १२३ ॥ भ० जोराजाधर्मसेयथावत्प्रजाकापालननहींकरता औरप्रजासेधान्यमें षष्ठांशइत्यादिककरोंकोलेताहै वहराजाकरक्यालेताहैकिसबसंसारकेमलोंकोखाताहै औरसबकेजैसेविष्टादिकोंकोशुद्धिकरताहैचांडाल वैसाहीवहराजाहै ॥ १२३॥ निग्रहेणचपापानांसाधूनांसंग्रहेणच। द्विजातयइवेज्याभिःपूयन्तेसततंनृपाः॥ १२४॥ भ० जोराजापापी पुरुषोंकों अत्यन्तउग्रदण्डदेताहै औरश्रेष्ठोंकोरक्षा तथासन्मान करताहैवहराजासदापवित्रहैऔरस्वर्गकाभागीहैजैसेकिद्विजाति लोगविद्या,तपऔरयज्ञोंसेपवित्ररहतेहैं॥ १२४ ॥ यःक्षिप्तोमर्षयत्यार्त्तैस्तेनस्वर्गेमहीयते। यस्त्वैश्वर्यान्नक्षमतेनरकंतेनगच्छति ॥ १२५ ॥ भ० जोराजाआर्त्तनामदुःखीलोगगालीतकभीदें तोभीसहनकरताहै सोईराजास्वर्गमेंपूज्यहोताहै औरजोऐश्वर्यकेअभिमानसेकिसीकासहननहींकरता इसीसेवहराजा नरककोजाता है क्योंकिजोसमर्थहैउसीकोसहनकरनाचाहिए औरजोनिर्बलहै सोतो अपनेहीसेसहनकरेगा ॥ १२५ ॥ राजभिर्धृतदण्डास्तु कृत्वापापानिमानवाः। निर्मलाःस्वर्गमायान्तिसन्तःसुकृतिनोयथा ॥ १२६ ॥ भ० जिनकेऊपरअपराधकरनेसेराजाओंकादण्डहोता है फिरवेइसलोकमें आनन्दपातेहैं औरमरनेकेपीछे उत्तमस्वर्ग

कोप्राप्तहोतेहैं जैसेकिधर्मात्मासुकृतिलोग॥ १२६ ॥ येनयेनयथांगेनस्तेनोनृषुविचेष्टते । तत्तदेवहरेत्तस्य प्रत्यादेशायपार्थिवः॥ १२७॥ भ० जिसर अंगसेजैसार कर्ममनुष्योंकेबीचमेंकरैं चोरलोग उसअंगको अर्थातजिसमे चोरीकरनेकेवास्ते चेष्टाकरैं उसकानेच निकालदें जोजीभसेचोरीकाउपदेशकरैतोउसकोजीभकाटले पग औरहाथसे किसीकीवस्तुउठावै तोराजाउसकापग,हाथ काटले क्योंकिएककोदण्डदेनेसे सबलोगउसदुष्टकर्मको छोड़देतेहैं दण्ड जोहोताहै सोसबजगत्केमनुष्योंकेवास्ते उपदेशहै॥ १२७ ॥ अनेनविधिनाराजाकुर्वाणस्तेननिग्रहम् । यशोऽस्मिन्प्राप्नुयाल्लोकेप्रेत्यचानुत्तमंसुखम् ॥ १२८ ॥ भ० इसविधिसेचोरोंकानिग्रहकरता है वहराजाइसलोकमेंअत्यन्तकीर्त्तिकोप्राप्तहोताहै औरमरकेअत्यन्तउत्तमस्वर्गकोप्राप्तहोताहै इससे चोरोंकानिग्रह अत्यन्तप्रयत्नसेराजाकरै ॥१२८ ॥ वाग्दुष्टात्तस्कराच्चैव दण्डेनैवचहिंसतः । साहसस्यनरःकर्ता विज्ञेयःपापकृत्तमः॥ १२९ ॥ भ० जोपुरुष दुष्टवचन कहना सिखलाता वा चोरीका उपदेश करताहै और किसीकोमरवाडालताहै छलकपटसेवहसाहसिक पुरुषकहाताहै जैसेकिगुंडेऔरवैराग्यादिकसंप्रदायवाले वेसबपापियोंमेंभी बड़े पापीहैं क्योंकिपापीतो आपहीदुष्टहोताहै औरजितनेदुष्टउपदेश करनेवालेहैं वेसबजगत्कोदुष्टकरदेतेहैं इससे ॥१२९॥ नमित्रकारणाद्राजा विपुलाद्वाधनागमात् । समुत्सृजेत्साहसिकान्सर्वभूतभयावहान्॥ १३०॥ भ० जितनेपुरुषसाहसिकनाम दुष्टकर्मकरने औरकरानेवालेहोंय अर्थातअधर्मकाउपदेश,चोरी,परस्त्री,वेश्यागमनऔरजुवाइनकोकरनेवालेसबसाहसिकगिनलेनाउनकोमित्रकारणसे औरउनसेबहुतधनलाभहोताहोय तोभीइनकोराजा नछोड़ै क्योंकिसबभूतोंकोभय देनेवालेवेहीहैं ॥ १३० ॥ गुरुंवाबालवृद्धौवाब्राह्मणंवाबहुश्रुतम्। आततायिनमायान्तंहन्यादेवाविचारयन् ॥ १३१ ॥ गुरुवापुत्रअथवापितावालकवावृद्धवाब्राह्म-

थ कि सब शास्त्रों को पढ़ा हुआ वा और बहुश्रुत नाम सब शास्त्रों को सुनने वाला वह जो आततायी नाम धर्म को छोड़ के अधर्म में प्रवृत्त भया होय तो इन पुरुषों को मार डालना उचित है इस में कुछ विचार न करना क्योंकि दण्ड होवे सब शिष्ट हो जाते हैं बिना दण्ड कोई नहीं इस से सब को उग्र दण्ड का होना उचित है कि कोई अपराधी पुरुष दण्ड के बिना रहने न पावै॥ १३१॥ परदाराभिमर्षेषु प्रवृत्तान्नॄन्महीपतिः। उद्वेजनकरैर्दण्डैश्छिन्नयित्वा प्रवासयेत्॥ १३२॥ म॰ जो पुरुष पर स्त्री गमन में प्रवृत्त होवे वा अन्य पुरुषों से स्त्री लोग गमन करैं उनके ललाट में चिन्ह करके देश बाहर निकाल दे जो पहिले चोरी करै उसके ललाट में कुत्ते के पंजा को नांई लोहे का चिन्ह अग्नि में तपा के लगा दे कि मरण तक वह चिन्ह न बिगड़े फिर जो दूसरी बार वही पुरुष चोरी करै तो हाथ वा पग उसका राजा काट डाले और फिर भी चोरी करै वा करावै तो पहिले दिन नाक काट ले दूसरे दिन कान तीसरे दिन जीभ चौथे दिन नख निकाल ले पांचवें दिन आंख छठवें दिन शिरच्छेदन कर दे सब मनुष्यों के सामने जिस्से कि फिर चोरी की इच्छा भी कोई न करै और जो पर स्त्री वा वेश्या के पास गमन करै अथवा पर पुरुषों से स्त्री लोग गमन करैं उनके ललाट में पुरुष के लिंग इन्द्रिय का चिन्ह अग्नि में तपा के लगा दे जिस्से कि मरण तक लज्जा और अप्रतिष्ठा उनको होवे उनको देख के और कोई इन कर्मों में प्रवृत्त न होय क्योंकि॥ १३२॥ तत्समुत्थो हि लोकस्य जायते वर्णसंकरः। येन मूलहरोऽधर्मः सर्वनाशाय कल्पते॥ १३३॥ म॰ इन्हीं कर्मों से प्रजा के मनुष्य वर्णसंकर और पापी हो जाते हैं जिस्से कि मूल सहित धर्म नष्ट हो जाता है इस्से इनके निग्रह में राजा अत्यन्त यत्न करै॥ १३३॥ भर्त्तारं लंघयेद्या तु स्त्री ज्ञातिगुणदर्पिता। तां श्वभिः खादयेद्राजा संस्थाने बहुसंस्थिते॥ १३४॥ म॰ जो स्त्री जाति और गुणों के अभिमान अथवा मूर्खता से विवाहित पुरुष को छोड़ के अन्य पुरुष से व्यभिचार करती है उसको नगर ग्राम वा देश की स्त्रियों और पुरुषों के सामने कुत्तों से चिथवा डाले इस रीति से उस-

कामरण होजाय जिस्से कि अन्यकोई स्रोऐसाकामकभीनकरै १३४॥ पुमांसंदाहयेत्पापं शयनेतप्तआयसे । अभ्यादध्युश्चकाष्ठानि तत्रद ह्येतपापकृत् ॥ १३५ ॥ भ० जोपुरुषपरस्त्रीसेगमनकरै उसकोलो- हेके पर्यंक अग्निसेतपा औरनीचेकाष्ठोंसे अग्निकरके व्यभिचार रूपपापकरनेवालेपुरुषकोसोलादे उसीकेऊपरउसकाशरीरदग्ध होजाय और मरजाय यह भी कर्म सबपुरुष और स्त्रियोंके सा- मनेही होना चाहिए जिस्से कि सबको भय होजाय फिर ऐसा कामकोईपुरुषनकरै ॥ १३५ ॥ यस्यस्तेनःपुरेनास्तिनान्यस्त्रीगोनदु- ष्टवाक् । नसाहसिकदण्डघ्नौसराजाशक्रलोकभाक् ॥ १३६ ॥ भ० जिसराजाकेपुर वाराज्यमें चोर परस्त्रीगामी दुष्टवचनकाकहने- वाला साहसिकऔरदण्डघ्नअर्थातजोदण्डकोनमानै येसबनहींहैं वहराजाशक्रलोकअर्थातस्वर्गकेराज्यकाभागीहोताहै अन्यथान- हीं॥ १३६ ॥ एतेषांनिग्रहोराज्ञः पंचानांविषयेस्वके । साम्राज्य कृत्सजात्येषुलोकेचैवयशस्करः ॥ १३७॥ भ० जिसराजाकेराज्य में पूर्वोक्तपांचदुष्टपुरुषनहींहोते वहराजासबराजाओंके बीचमें सम्राट्चक्रवर्तीहोनेकेयोग्यहै औरलोगोंमेंबड़ीकीर्तिकाकरनेवा- लाहै॥ १३७ ॥ दास्यंतुकारयन्लोभाद्ब्राह्मणःसंस्कृतान्द्विजान् । अनिच्छतःप्राभवत्याद्राज्ञादण्ड्यःशतानिषट् ॥ १३८ ॥ भ० जोब्रा- ह्मणभीद्विजलोगोंसेसेवाकरातेहैंउनकीइच्छाकेबिनाउनकोराजा छःसैमुद्रादण्डकरै क्योंकिसेवाकरनाबुद्धिमान् श्रेष्ठलोगोंकाधर्म नहीं वहव्यवहार शूद्रहीकाहै क्योंकिजोमूर्खपुरुषहै वहअन्यका कामबिनासेवाकेक्याकरेगा १३८॥ अहन्यहन्यवेक्षेतकर्मान्तान्वा- हनानिच । आयव्ययौचनियतावाकरान्कोषमेवच ॥ १३९ ॥ भ० नित्य २ राजा सबराज कर्मोंमें अपने अधिकारी अमात्य चेष्टा वाकर्मवाहन, हस्ती,अश्व,रथ, औरनौकादिक आयनाम पदा- र्थोंकाआना व्ययनामपदार्थोंकाखर्च पदार्थोंकासमूहशस्त्रोंका समूहऔरधनकाकोश इनकोयथावत्देखतारहै किकोईपदार्थवा

कोईकर्मनष्टवाअन्यथानहोय ॥ १३९ ॥ एवंसर्वानिमान्राजाव्यवहारान्समापयन्। व्यपोह्यकिल्बिषंसर्वंप्राप्नोतिपरमांगतिम् १४०॥ भ० इसप्रकारसेसबव्यवहारोंको न्यायपूर्वकजोराजाकरताहै वह सबपापोंसेछूटके परम गतिजोमोक्ष उसको प्राप्त होता है जिस व्यवहारको कियाचाहै उसकोसम्यक् विचारकेकरै जिससे किवह कार्यपूर्णहोजाय अपूर्ण कभीनरहै ॥ १४० ॥ अनंशौक्लीवपतितौजात्यंधबधिरौतथा। उन्मत्तजड़मूकाश्च येचकेचिन्निरिन्द्रियाः॥ १४१ ॥ भ० क्लीवनामनपुंसकपतितनामपापीजन्मसेअंध तथाबधिरउन्मत्तनामपागलजड़नाम मूर्ख,मूकऔरजोविद्याहीनवाअजितेन्द्रिय,काम,क्रोधादिकोंमेंये सबदायभागनपावैं क्योंकियेदाय भागपावेंगे तोसबपदार्थोंकाव्यर्थनाशकरदेंगे इससे राजाकोयह बातअवश्यकरनीचाहिए अपनेपुत्र वाप्रजाके सन्तानोंको जितने पदार्थराज्यऔरधनादिकउनमेंसेकुछनदिलावै औरजोकोईमूर्खतावामोहसेउनकोदायभागदेवै तोउसकोराजादण्डदे औरनपुन्सकादिकोंसेदियेहुएपदार्थकोलेकेयथावत्रक्षाकरै क्योंकिमूर्खोंकेहाथपदार्थवा अधिकारआवेगा तोशीघ्रसबकानाशकरके आप छोटेरिद्रबनजांयगे फिरराजाकेराज्यमें सबदरिद्रताछायजायगी फिरराजाकोभीकुछप्राप्तिप्रजासेनहोसकेगी इससे राज्यऔरधनादिकजितनेप्रजाओंकेपदार्थहैं उनपदार्थोंकोराजाकभीनदे और नदिलावै जोसम्यक्विद्या,बुद्धिऔरविचारमें उनपदार्थोंकोरक्षा मेंयोग्यहोय उसकोसम्यक्परीक्षाकरके उनपदार्थोंकास्वामीउसकोकरदेअन्यथानहीं॥ १४१ ॥ सर्वेषामपितुन्याय्यंदातुंशक्त्यामनीषिणा। ग्रासाच्छादनमत्यन्तंपतितोह्यददद्भवेत्॥ १४२ ॥ परन्तु उननपुंसकादिकोंकोअपनेसामर्थ्यकेयोग्य वहदायभागलेनेवाला भोजन,वस्त्रऔरउनकास्थानादिकसेयोगक्षेममेंयथावत्करै जोवह भोजनादिकभीउनकोनदेतोपतितहोजाय औरराजाउसकोदण्ड भीदे इससे क्याआयाकिभोजनऔरवस्त्रादिकोंकेविनावेदुःखीनर-

हैं और जो उनका पुत्र योग्य होय तो उसके पिता के दायभाग को राजा
दिलावै इस बात को राजा प्रयत्न से करै अन्यथा राज्यवृद्धि नहीं होगी
राजा अपनी प्रजा की रक्षा और हित में सदा प्रवृत्त रहै और प्रजा भी
राजा की रक्षा तथा हित में प्रवृत्त रहै जो प्रजा को आपत्काल आवै तो
राजा सब प्रयत्नों से प्रजा की रक्षा करै अर्थात राजा को आपत्काल कि-
सी प्रकार का आवै तो प्रजा सब मनुष्य राजा का सब प्रकार से सहाय
करैं क्योंकि प्रजा राजा के पुत्र की नांई होती है पिता को अवश्य चाहि-
ए कि अपनी प्रजा की सदा रक्षा करै तथा प्रजा पुत्र की नांई जैसे कि पिता
को पुत्र रक्षा करता है वैसे राजा की प्रजा रक्षा करै और जिस बात से
प्रजा को पीड़ा होय उस बात को राजा कभी न करै तथा राजा को जिस
बात मे दुःख होय उस बात को प्रजा कभी न करै जैसे कि जिन पशुओं
वा जिन पदार्थों से सब प्रजा का उपकार होता है उसका राजा कभी वि-
नाश न करै जैसे कि गाय, भैंस, छेरी, बैल और ऊंट तथा गधादिक इ-
नको कभी न मारै और न मरवावै क्योंकि दुग्ध, घृत, अन्नादिक और
सब व्यवहार इन्हीं से सब मनुष्यों का चलता है तथा राजा का भी इ-
नका मारना दोनों को अनुचित ही है राजा भृत्य तथा युद्ध से
निवृत्त कभी न होवै क्योंकि युद्ध से निवृत्त होगा तो उसी वक्त शत्रु लोग
सब पदार्थों को छीन लेंगे तथा मार डालेंगे वा अत्यन्त दुःख देंगे जब
युद्ध का समय आवै तब राजा जल, अन्न, मनुष्य, शस्त्र, यान सब पदार्थों
की पूर्त्ति रक्खै जिस्से कि किसी पदार्थ के बिना दुःख किसी को न होवै
और युद्ध में युद्ध का आचार विचार रक्खै युद्ध करते भी जांय और खाते
पीते भी जांय कुछ शंका न रक्खै उस वक्त जूते, वस्त्र, शस्त्र, धा-
रण किये रहैं युद्ध और भोजन भी करते जांय ऐसा न करैं कि वस्त्र, जूते श-
स्त्र इत्यादिक सब छोड़ के हाथ गोड़ धोके भोजन करैं तब तक शत्रु
लोग मार डालैं देखना चाहिए कि युधिष्ठिर जी के राजसूय और अ-
श्वमेध यज्ञ में सब समुद्र पार द्वीप भूगोल के सब राजा आये थे वे सब
ब्राह्मण, क्षत्रियों के साथ एक पंक्ति में भोजन करते थे और विवाह भी

उनकापरस्परहोताथा जैसेकिकाबिलकन्धारकीकन्या गान्धारी, धृतराष्ट्रसेविवाहोगईथी तथामद्रीईरानदेशकीराजाकीकन्या पांडुसेविवाहीगईथी अर्जुनकेसाथनाग अर्थातअमेरीकाके लोगोंकी कन्या विवाही गई थी इत्यादिक व्यवहार महाभारतमें लिखेहैं औरशूद्रहीसबब्राह्मणऔरक्षत्रियादिकोंकेघरमें पाककरानेवाले थे जिनकानामसूदऐसाप्रसिद्धथा जोशूद्रपाककरनेवालाहोताहै उसकोसूदऐसीसंज्ञाहोतीथी क्योंकिब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य,वेतोविद्यापठन और पाठन तथा नाना प्रकार के पुरुषार्थ और शिल्पविद्यासे पदार्थोंका रचन इन्हीमें सदा प्रवृत्त रहैं रसोई आदिकसेवासबलोगोंकोशूद्रहीकरैं अर्थातब्राह्मण,क्षत्रिय,औरवैश्यइनको भोजन एकताही होनी चाहिए जिस्से कि परस्पर प्रीति होवै औरभोजनकेबड़े २ बखेड़े हैं वेसबनष्टहोजांय कोईपरदेश कोजाताहै तबपाचादिकोंकाभारगधेकीनांईउठायाकरताहै तथा मांजनाऔरचौकादेना अन्न,काष्ठ,अग्न्यादिकको अपनेहाथसेले आना औरबनाना गमनसेबड़े पीड़ितहोकेआये फिरभीसमयके ऊपरभोजनकानहोना इस्से बड़े दुःखहोतेहैं इस्से ब्राह्मण,क्षत्रिय, औरवैश्यइनकेएकभोजनहोनेसेकिसीकोकिसीप्रकारकादुःखनहीं होगा क्योंकिशूद्रहीसबकरदेगा औरखिलावैपिलावैगा परन्तुब्राह्मणादिकोंहीके पदार्थसबपाचादिकहोवैं शूद्रकेघरकेनहीं शुद्धहोकेबनावै औरब्राह्मणादिकविद्यादिकश्रेष्ठपदार्थोंकी उन्नतिकरैं जिस्से किसबसुखहोवैं इस्से इसबातको राजालोग अवश्यकरैं इसकेविनाउनकोउन्नतिनहींहोनीहै देखनाचाहिएभोजनकेपाखण्डोंसेआर्यावर्त्त देशकानाशहोगया ब्राह्मणादिक चौकादेनेलगे ऐसाचौकादिया कि राज्य,धन औरस्वतन्त्रादिक सुखोंके ऊपर चौकाहीफेरदिया किसबआर्यावर्त्त देशको सफाचटकरदिया इस्से राजालोगोंकोचाहिएकिव्यर्थपाखण्डप्रजामेंनहोनेदेवैं विवाह काजिसकालमेंजैसापूर्वनियमलिखाहै औरपरीक्षाउसीप्रकारसे

राजाकरवावे ब्रह्मचर्याश्रमकन्या वा पुरुषकाजबहो।जाय तभीवि-
वाहकोआज्ञाराजादे कियहोसब सुख औरधर्मका मूलहै अन्य-
नहीं सबदेशदेशान्तरस्थपुरुषोंसेभोजनविवाह औरपरस्परप्रीति
रक्खें प्रजामें जितनेधर्मात्मा,बुद्धिमान्,पक्षपातरहितऔरसबवि-
द्याओंमेंपूर्ण इनकीसम्मतिसेसबकामऔरसबनियमकिआकरें कि
जिसकेऊपर सबप्रजाप्रसन्नहोवें वहीराजाहोय उसदेशकेसबप्र-
जा उसराजाको प्रसन्नरक्खें ऐसेसबपरस्पर विद्या और सबगु-
णोंकीउन्नतिकरें अर्थात्राजाऔरसभाकीसम्मतिकेविना प्रजामें
कुछकर्मनहोवे औरप्रजाकीसम्मतिकेविनासभाऔरराजाकुछकर्म
नकरें किन्तुदोनोंकीसम्मतिकेबिनाकुछराजकार्यनहोनेपावे क्यों-
किइसकेहोनेस उसदेशमेंकभीदुःखके दिननआवेंगे सदाआनन्द
होरहेगा ॥ १४२ ॥ चोरदोप्रकारकेहोतेहैं एकतोप्रसिद्धदूसराअ-
प्रसिद्ध प्रसिद्धवेहोतेहैं किहाटधारीडांकू औरपाखण्डी जैसेकिवै-
राग्यादिक मन्दिररचके सबमनुष्योंसेफुसलाने वादुष्टउपदेशवु-
द्धिभ्रष्टकरके धनादिकपदार्थोंकोहरणाकरलेतेहैं यहांतककिमनु-
ष्योंकोमूडकेचेलाबनालेतेहैं इनकोराजादण्डसेनिवृत्तकरदे पूर्व-
पक्षइनकोदण्डनदेनाचाहिए क्योंकिवतोप्रसन्नतासेधन देतेऔर
लेतेहैं औरप्रसन्नतासेउनकोदेतेहैं इनकेऊपरदण्डकाहोनाउ-
चितनहीं उत्तर इनकोअवश्यदण्डदेनाचाहिए क्योंकिजैसेकोई
पुरुषछोटेबालककोफुसलाके वाकुछपुष्पफलवाखानेकोचीजहाथ
मेंदेके वस्त्र,आभूषण,वाधनादिक पदार्थोंको प्रसन्नतासेलेलेता
है औरबालकभीउसकोप्रसन्नतासेदेदेताहै फिरलेकेवहभागजा-
ता है फिरउसकेऊपरराजादण्डकरताहीहै वैसेहीजितनेप्रजामेंवि-
द्या, बुद्धि औरविचारहीनपुरुषहैं वेबालककीनांईहैं उनमेंसेभी
प्रसादचरणोदक,कण्ठी,माला,छापाऔरतिलक एकादश्यादिक
महात्मसुनाना तीर्थनामस्मरण औरस्तोत्र,पाठइत्यादिकोकोसु-
नाना इत्यादिकछलधनादिसेकपदार्थोंकोलेतेहैं फिरउनकेऊप-

रदण्डक्योंनकरनाचाहिए किन्तुअवश्यहीकरनाचाहिए जोरा-
जाइनकोदण्डनदेगा तोउसकोप्रजासबभ्रष्टहोजायगी औरराज्य
काभीनाशहोजायगा क्योंकिवेअधर्मकरतेहैंऔरकरातेहैं नामर-
खतेहैंधर्म और वेदका चलातेहैं पाखण्डको इससे इसगासको
राजाअवश्यछेदनकरदे किकोईउसकेदेशमेंपाखण्डीनरहैऔरन
होनेपावै वेपाषाणादिकोंकोमूर्त्तियोंकोवनाऔरमन्दिरकोरचके
उनमेंउनमूर्त्तियोंकोवैठाके उनकानामशिवनारायणादिकरखते
हैं कलावत्त्‌झूठेवा सच्चे आभूषणोंकोपहिराके फिरघड़ी, घंटा,
नगारा, रणसिंघाऔरशंखइत्यादिकोंकोबजाके मूर्खोंकोमोहित
करके सबधनादिकपदार्थोंको हरणकरलेतेहैं जैसेकिडांकूलोग
नगारादिकबजाकेप्रसिद्धधनहरलेतेहैं इनठगोंकोदण्डकेबिनाक-
भीनछोड़नाचाहिए क्योंकि ॥ अज्ञोभवतिवैबाल: पिताभवतिम-
न्त्रद: । अज्ञंहिबालमित्याहु:पितेत्येवचमन्त्रदम् ॥ १४३ ॥ म०
इसमेंमनुभगवान्‌काप्रमाणहै किजोअज्ञानीहैसोईबालकहै और
ज्ञानीअर्थात्‌सत्यउपदेश औरविचारकाकरनेवालासोईपिताहो-
ताहै इससे क्याआयाकिजोअज्ञानीहै उसकोबालककहनाचाहि-
ए ॥ १४३ ॥ जितनेदुकानदारप्रसिद्धचोरउनकेऊपरभीराजाअत्य-
न्तदृष्टिरक्खै किवेप्रसिद्धचोरीकभीनकरनेपावैं ॥ तुलामानंप्रती-
मानंसर्वंचस्यात्सुलक्षितम् । षट्सुषट्सु चमासेषुपुनरेवपरीक्षये-
त् ॥ १४४ ॥ म० तुलानामतराजूकोदण्डीऔरतराजूकीपरीक्षाक-
रै पक्ष२मास२वाछटहे२मास क्योंकिदुकानदारलोगवीचकासूत
औरदोनोंपल्ले दण्डीकेवीचमें छेदकरके पाराभरदेतेहैं उससे लेते
हैं तबअधिकलेलेतेहैं औरदेतेहैं तबन्यूनदेतेहैं जबबुद्धिमान्‌जाय
तबओरभाव जबमूर्खजायतबओरभावऐसाकरकेमूड़लेतेहैं प्रती-
मानअर्थात्‌प्रतिमानाम छटांकआदिकउसकोघटावढ़ालेतेहैं उ-
ससेभीअधिकलेतेहैंऔरन्यून देतेहैं फिरमहाजनऔरसाहूकार
बनेरहतेहैं परन्तु वेबड़े ठगहैं जैसेकिव्यासअर्थात्‌एकादशीभाग-

व्रतादिकोंकीकथाकरनेवाले औरमन्दिरोंकेपूजारीऔरसम्प्रदाय वाले,वैरागी,शैव,वाममार्गी,आदिकपण्डितमहात्मा औरसिद्ध बनेहोऊपरसेबनरहेहैं परन्तुउनकोसबजगत्केठगनेवालेजानना चाहिये औरयेसबप्रसिद्धचोरहैं इनकोदण्डसेराजाउपदेशकरदे ऐसा दण्डदे किकोईइसप्रकारकामनुष्य प्रजामेंनरहनेपावै तभीराजा औरप्रजाकीउन्नतिहोगी अन्यथानहीं पुराणशब्द विशेषणवाची शब्दहै जैसेकिपुरातनप्राचीनसनातनशब्दहैं इनकेविरोधीनवीन अद्यतनअर्वाचीनइदानीन्तनशब्दविशेषणवाचीहैं कियहयोजन- योहै अर्थात्पुरानीनहीं ऐसेपरस्परविशेषणविरोधसेनिवर्तकहो- तेहैं तथा देवालय,देवमन्दिर,देवागार,देवायतन इत्यादिकनाम यज्ञशालाकेहैं क्योंकिजिसस्थानमेंदेवोंकोपूजाहोय उसीकेएनाम हैं देवहैंवेदकेसबमन्त्र औरपरमेश्वर क्योंकिपरमेश्वरसबकाप्र- काशकहै औरवेदकेमन्त्रभीसबपदार्थविद्याओंकेप्रकाशनेवालेहैं इ- ससेइनकानामदेवहैसोईशास्त्रमेंलिखाहै॥ यत्रदेवतोच्यतेतत्तल्लि- ङ्गोमन्त्रः। यहनिरुक्तकावचनहै इसकायहअभिप्रायहैकिजहां२ देवताशब्दआवैवहां२मन्त्रहीकोलेना परन्तु कर्मकांडमेंउपासना और ज्ञानकांडमें परमेश्वरहीदेवहै जैसेकिअग्निमीलेपुरोहित मित्यादिकऋग्वेदकेमन्त्रहैं तथाअग्निर्देवताइत्यादिकयजुर्वेदकेम- न्त्रहैं इसमेंअग्निदेवताहै इससे अग्निशब्ददेवताविशेषणपूर्वकजिस मन्त्रमेंहोगा उससे जो अग्निशब्दवालामन्त्रहोवै उसको लेना जैसाकि अग्निमीलेपुरोहितमित्यादिक यहोबातव्यासजीकेशिष्य जैमिनीने कर्मकांडके ऊपर पूर्वमीमांसा एकदर्शन शास्त्रबनाया है उसमेंविस्तारसेलिखीहैकिमन्त्रहीदेवहैं औरकोईनहीं उसमें इसप्रकारकेदोषलिखेहैं जैसे॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिध- र्माणिप्रथमान्यासन्। इत्यादिकमन्त्रोंसेभिन्नजोब्रह्मादिकदेव उ- नकेभीपूजनकाअत्यन्तनिषेधकियाहै सोठीकहीकियाहै क्योंकिब्र- ह्मादिकतोयेनित्यपञ्चमहायज्ञ औरअग्निष्टोमादिकयज्ञोंकोकरते

हैं तबवेयज्ञमानहोतेहैं फिरउनसेअन्यदेवकौनहैं किब्रह्मादिकोंके बखमेंजिनकीपूजाकोजाय बाभागलेवैंउनकेसिवायअन्यकोईदेवदे हधारीनहींहै औरकोईकहेकिउन्होंसेअन्यदेवहैं तौउनसेपूछाजा- ताहै किवेजबयज्ञकरेंगेतबउनसेआगेभीतीसरेदेवमानेंजांयगेतीसरेजबयज्ञकरैंगेतबचौथेइनसेआगेदेवमानेंजायगे ऐसेहीअनव- स्थाउनकेमतमेंआवेगी इससेपरमेश्वरऔरमनुष्योंहीकोदेवमानना चाहिए औरअन्यकोनहीं जबब्रह्मादिकविद्या,सिद्धज्ञान,योगऔर सत्यवचन,गुणग्राहोंकानिषेध जैमिनोजीनेकिया तोपाषाणादिक मूर्त्तियोंकीपूजाकानिषेधअत्यन्तहोगया क्योंकिपाषाणादिकमूर्त्ति योंमेंजोदेवभावकरनाहै सोतोअत्यन्तपामरपनाहै इसबातमेंकुछ सन्देहनहीं औरजोकहेकिवेहैंतोपाषाणादिक परन्तु मेरेभावसे देवहोजातेहैंऔरफलभीदेतेहैं तोउनसेपूछनाचाहिए किआपका भावसत्यहैवामिथ्याजोवेकहैं किसत्यहैतोदुःखकाभावऔरसुखका- अभाव कोईनहींचाहता फिरउनकोदुःखकाभाव औरसुखकाअ- भावक्योंहोताहै जोअन्यपदार्थमेंअन्यकाभावकरनाहै सोमिथ्याही है जैसेकिअग्निमेंजलकाभावकरकेहाथडालै तोहाथजलहीजाय- गा इससे ऐसाभावमिथ्याहीहै औरजोपाषाणादिकोंको पाषाणा- दिकमानना औरदेवोंको देवमानना यहभावतोसत्यहै जैसाकि अग्निकोअग्निमानना औरजलकोजल इससे क्याआयाकि जोजै- सापदार्थहै उसकोवैसाहीमाननाअन्यथानहीं फिरउनसेपूछना चाहिएकिआपलोगभावसे पाषाणादिकोंकोदेवबनालेतेहो और उनसेअपनीइच्छाकेयोग्यफललेलेतेहो तोउसभावसेआपहीदेव क्योंनहींबनजाते औरचक्रवर्त्यादिक राज्यरूपफलको क्यों नहीं पातेतथासबदुःखोंकानाशरूपफलक्योंनहींहोता फिरवेऐसाकहैं कि सुखवादुःखऔरचक्रवर्त्यादिक राज्योंकापाना कर्मोंका फल है यहबाततोआपलोगोंकोसत्यहै किजैसाकर्मकरैवैसाहीफलहो- ताहै फिरआपलोगोंनेकहाथाकिपाषाणादिकमूर्त्तियोंसेफलमि-

लता है यह बात आप लोगों की झूठी होगई पूर्वपक्ष जबतक वेदमन्त्रों से प्राणप्रतिष्ठा नहीं करते तबतक तो वे पाषाणादिक ही हैं और प्राण प्रतिष्ठा के करने से देव हो जाते हैं उत्तर यह बात भी आप लोगों की मिथ्या है क्योंकि वेद वा ऋषिमुनियों के किये शास्त्रों में प्राणप्रतिष्ठा का पाषाणादिक मूर्त्तियों में एक अक्षर भी नहीं तो मन्त्र कैसे होंगे जिस २ मन्त्र से प्राणप्रतिष्ठा कर्त्ते कराते हो उस २ मन्त्र का आप लोग अर्थ भी नहीं जानते जैसा कि प्राणदा, अपानदा, उद्बुध्यास्वाग्ने, इस से ले के ओम् प्रतिष्ठ यहां तक एक मन्त्र है सहस्रशीर्षापुरुषः शन्नोदेवी-रभिष्टय प्राणंददातीतिप्राणदःपरमेश्वरः। इत्यादिक अर्थ मन्त्रों का है इन पाषाणादिक मूर्त्तियों में प्राण प्रतिष्ठा करना इस का लेश मात्र भी सम्बन्ध नहीं और प्राणाइहागच्छन्तुसुखंचिरंतिष्ठन्तुस्वा-हा। यह तो मिथ्या संस्कृत किसी ने रच लिया है और वेदों के मन्त्र में भी आप लोगों के कहने की रीति से दोष आते हैं कि वेद के मन्त्रों से तो प्राण प्रतिष्ठा की जाय फिर प्राणों का मूर्त्ति में लेश भी नहीं देख पड़ता है इस से यह बात भी न करनी चाहिए क्योंकि जो प्राण मूर्त्ति में आते तो मूर्त्ति चेतन ही बन जाती सो तो जैसी पूर्व जड़ थी वैसी ही जड़ सदा रहती है पा-षाणादिक मूर्त्तियों में प्राण के जाने और आने का छिद्र भी नहीं परंतु मनु-ष्य जो मर जाता है उस के शरीर में सब छिद्र मार्ग प्राण के जाने और आने के यथावत् हैं उस में प्राणप्रतिष्ठा करके क्यों नहीं जिला लेते हैं कि कोई मनुष्य कभी मरने ही न पावै ऐसा किसी का भी सामर्थ्य नहीं इस से यह बात अत्यन्त मिथ्या है पूजा नाम सत्कार है देवपूजा होम ही से होती है अन्य प्रकार से नहीं क्योंकि मनु आदिक ऋषि लोगों के ग्रन्थों में और वेद में यही बात लिखी है॥ स्वाध्यायेनार्चयेतर्षीन्होमैर्देवान्यथाविधि इस पूर्वोक्त श्लोक से होम ही से देवपूजा यथावत् करनी चाहिए ऐसा सि-द्ध भया कि होम जो है सोई देवपूजा है और जिन स्थानों में होम होवै उ-न्हीं का देवालयादिक नाम जानना॥ यदिक्तांयच्छोलानांदेवस्वंत-द्विदुर्बुधाः। अयज्वनान्तुयद्वित्तमासुरस्वंप्रचक्षते॥ म० जो यज्ञ शी

कोनित्यकरताहै उसकाजोधन सोदेवशब्दवाच्यहै जोकोई यज्ञके वास्ते अन्यपुरुषोंसेधनलेके भोजनछादनादिकउससे करै औरयज्ञ कोनकरै उसकानामदेवलहै ॥ कुत्सितोदेवलोदेवलकः कुत्सितइ-त्यनेनकन्प्रत्ययः। जोयज्ञकेधनकीचोरीकरके भोजन,छादनादिक करै उससे परस्त्रीगमनवावेश्यागमनभीकरै उसकोदेवलककहतेहैं यहदेवलसेभीदुष्टहै इनदोनोंकाश्रेष्ठकर्मोंमें देवपितृकर्मादिक यज्ञोंमेंनिषेधहै किइनकोनिमन्त्रणवाअधिकारकभीनदेना ऐसे-हीनामस्मरणएकादशीइत्यादिककाल काश्यादिकदेश, इनकाजो माहात्म्यजिसकिसीनेलिखाहै वहसबमिथ्याहीहै क्योंकिवेदादिक सत्यशास्त्रोंमेंइनकाकुछभीलेखनहीं देखनेमेंआता औरयुक्तिसेभी यहप्रतिमापूजनादिकमिथ्याहीहै ऐसेव्यवहारोंमेंराजाऔरप्रजा कोअवश्यहीसमझनाहै इसनिमित्त लिखागयाकि राजाऔरप्रजाइन कर्मोंमेंप्रवर्त्तनहोवें नकिसीकोहोनेदें जितनीयुद्धकीविद्या उसको यथावत्जानें औरप्रजाकोजनावें नानाप्रकारकोपदार्थविद्या तथा शिल्पविद्याकाभीराजा औरप्रजासदाअत्यन्तप्रकाशरक्खें युद्धवि-द्याकेदोभेदहैं एकशस्त्रविद्या,दूसरीअस्त्रविद्या शस्त्रविद्यायहकहा-तीहै कितलवारबंदूकतोपलकड़ीपाषाण औरमल्लविद्याकिकोंका यथावत्जानना औरचलानादूसरेकेशस्त्रोंकानिवारणकरना औ-रअपनीरक्षाकरनी तथाशत्रुकोमारना औरअस्त्रविद्यायहकहा-तीहै किजोपदार्थोंकेपरस्परमेलन औरगुणोंसेहोतीहै जैसाकि अग्नेयास्त्र ऐसेपदार्थोंकारचनकरैं किवायुकेस्पर्शसे उससे अग्नि उत्पन्नहोवे फिरउसकोफेंकनेसजोपदार्थउसकेसमीपहोय उसको वहभस्महीकरदेताहै जैसेदीपसलाकाकोघसनेसे अग्निउत्पन्नहो-ताहै वैसेहीसबअस्त्रविद्याजाननी इसप्रकारकोआर्यावर्तमें पूर्वब-हुतपदार्थरचनेकीउन्नतिथी जैसेकिविशल्याएकऔषधिराजालो-गरचलेतेथे कैसाहीघाववशस्त्रसेहोजाय परन्तुउसकोघसकेलगा-या उसीवक्तवहघावपूरजाय औरउसमेंपीड़ाभीकुछनहीहोतीथी

तथाविमानअर्थात्आकाशयान बहुतप्रकारोंके औरजहाजसमुद्र पारजानेकेनिमित्त तथाद्वीप,द्वीपान्तरमेंजाते औरआतेथे यहम- हाभारततथावाल्मीकीरामायणमेंलिखीहै आर्यावर्त्त केराजाओं कीआज्ञा औरराज्यसबद्वीपद्वीपान्तरमेंथा क्योंकियुधिष्ठिरादिकों केराजसूयतथाअश्वमेधमें सबद्वीपद्वीपान्तरकेराजाआयेथे यहस- भाओरआश्वमेधिकपर्वमेंमहाभारतमेंलिखीहै जैनओरमुसल्मा- नोंनेबहुतसे इतिहासनष्टकरदिए इसमेंबहुतबातयथावत् मिलती भीनहीं बड़ेबलवान्तथाविद्यावान् इसदेशमेंहोतेथे इसीदेशमें भूगोलमेंविद्याबाआचारसबमनुष्यसीखतेथे सबखियांभीआर्याव- र्त्त मेंविद्यावानहोतीथीं सोआजकालआर्यावर्त्तदेशवालोंकी जै- सीमूर्खताओरदशाहै ऐसीकोईदेशकोनहोगी फिरभीवेदादिक सत्यविद्याओंकोयथावत्पढ़ैं औरपढ़ावैं धर्माचरण औरश्रेष्ठआ- चारराजाऔरप्रजाकीपरस्परप्रीति तथापरस्परगुणग्रहणकरैं त- भीमनुष्योंकोआनन्दहोगाअन्यथानहीं ब्रह्मचर्याश्रम४८,४४.४०, ३६,३०,२५, वर्षतकहोगा सबविद्याओंकाग्रहणकरना वीर्यका निग्रहजितेन्द्रियताऔरयथावत्न्यायकाकरना पक्षपातछोड़केय- हीसबसुखोंकेमूलहैं मनुस्मृतिकेसप्तमअष्टमओरनवम अध्यायोंमें राजाऔरप्रजाकेधर्मविस्तारसेलिखाहैमहाभारतऔरवेदादिकों मेंभीबहुतप्रकारसेलिखाहै राजाऔरप्रजाओंकाधर्मजोदेखाचाहै सोदेखले इसमेंतोहमने संक्षेपसेलिखाहै इसकेआगेईश्वरऔर वेदविषयमेंलिखाजायगा ॥

इति श्रीमद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते षष्ठः समुल्लासः संपूर्णः ॥ ६ ॥

अथेश्वरवेदविषयंव्याख्यास्यामः ॥ हिरण्यगर्भःसमवर्त्ततागे्र भूतस्यजातःपतिरेकआसीत् सदाधारपृथिवींद्यामुतेमांकस्मै-देवायहविषाविधेम ॥ १ ॥ अग्रे नामजबकुछजगत् उत्पन्नहोनहीं भयाथा तबएकअद्वितीयसच्चिदानन्दस्वरूपनित्यशुद्धबुद्धमुक्तस्वभा-वहिरण्यगर्भ अर्थातपरमेश्वरहीथा सोसबभूतोंकाजनकऔरपति है दूसराकोईनहीं सोईपरमेश्वरपृथिवीसेलेकेस्वर्गपर्यन्त जगत् कोरचके धारणकरताभया तस्मैएकस्मै परमेश्वरायदेवायहवि-नामप्राण चित्तमनादिकोंसेस्तुतिप्रार्थना औरउपासनाहमलोग नित्यकरैं ॥ १ ॥(पूर्वपक्ष)ईश्वरकीसिद्धि किसीप्रकारसेनहीहोसक्ती औरईश्वरकेमाननेका प्रयोजनभीकुछनहीं क्योंकिहर्दीचूनाऔर जलकेमिलानेसेएकरोरीपदार्थहोजाताहै ऐसेहीपृथिव्यादिकस्थू-लभूत तथाइनकेपरमाणुऔरजीवपरस्परमिलनेसेसबपदार्थोंकी उत्पत्तिहोतीहै जैसेकिमिट्टीजलचाकऔरदण्डादिकसामग्रीसे कु-लालघटादिकपदार्थोंकोरचलेताहै इनसेभिन्नपदार्थकी अपेक्षा नहीं वैसेहीजीव औरपृथिव्यादिक भूतोंसेभिन्न कोईश्वर उसके माननेकाकुछ आवश्यकनहीं स्वभावहीसेसबजगत्होताहै और जगत्नित्यभीहै कभीइसकानाशनहीहोता फिरजगत्रूपकार्यको देखकेकारणजोईश्वरउसकाअनुमानकरतेहैं सोव्यर्थहोगया औ-रप्रत्यक्षईश्वरकाकोईगुणनहीहै इससेप्रत्यक्षभीईश्वरकेविषयमेंन-हींबनता जबईश्वरप्रत्यक्षनहीतोउपमानकैसेबनसकेगा किइस-केतुल्यईश्वरहै जबतीनप्रमाणनहींबनते तबशब्दप्रमाण कैसाब-नेगा शब्दप्रमाणमनुष्यलोगऐसेही परंपरासेकहतेऔरसुनतेच-लेआतेहैं किसीनेकिसीसेकहाकि मैनेंवन्ध्याकापुत्र सींगवालादे-खा ऐसाअन्योंसेकहाअन्योंनेंअन्यपुरुषोंसेकहा ऐसेहीअन्धपरंप-रावत्कहतेऔरसुनतेचलेआतेहैं इससे ईश्वरकीसिद्धिकिसीप्रका-रसेनहींहोसक्ती(उत्तरपक्ष)ईश्वरकीसिद्धियथावत्होतीहै क्योंकि जोस्वभावसेजगत्कीउत्पत्तिमानेगा उसकेमतमें यहदोषआवेगा

जगत्‌मेंजितनेपदार्थहैं उनकेविलक्षण २ संयोगआकृति तथागुण औरस्वभावदेखपड़तेहैं जैसेकिमनुष्यऔरवानर आमकाऔरबबूरकावृक्ष इत्यादिकोंमेंविलक्षण२गुण औरआकृति देखपड़तीहैं इननियमोंकाकर्ताकोईनहोगा तोयेनियम कभीनबनेंगे क्योंकि जड़पदार्थोंमेंतोमिलनेवाजुदाहोनेकोयथावत्‌समर्थतानहीं किंतु-नमेंज्ञानगुणहीनहीं जोज्ञानगुणवालाहोताहै वहीयथावत्‌नियमकरसक्ताहै अन्यनहीं जोजीवहैसोज्ञानवालातोहै परन्तुजीव-काउतनासामर्थ्यहीनहीं इसकोईपृथिव्यादिकभूतऔरजीवसेभि-न्नपदार्थअवश्यहै जोसबजगत्‌काकरता औरनियमोंका नियन्ता ईश्वरअवश्यहो किन्तुस्वभावसेजगत्‌कीउत्पत्तिजोमानताहै उस-केमतमेंएदोषआवेगें यहपृथिवीस्वभावसेजोहोतीतोइसकाकरता और नियन्तानहोता इसपृथिवीसे भिन्नदशवेंकोश अन्तरिक्ष में दूसरीआपसेआपपृथ्वीबनजाती सोआजतकनहींबनी इससे जाना जाताहै किजीवऔर सबभूतोंसे सर्वशक्तिमान्‌ सबजगत्‌काकर्ता औरनियन्तापरमेश्वर उसीकोईश्वरकहतेहैं/दूसराभी किजि-तनेपरमाणुपृथिव्यादिकभूतोंकेहैं वेसबमिलगए अथवाइनसेबि-नामिलेभीहैंजोकहैकिसबमिलगए तोत्रसरेएवादिकहमकोप्रत्य-क्षदेखपड़तेहै इससे वहबातमिथ्याहोगई औरजोकहेकिकुछमिले कुछनहीमिलेभीहैं तोउनसेपूछनाचाहिए किसबक्योंनहींमिले अथवापृथक्‌ २ क्यों न रहे तथाएकप्रकारके रूपवाले सबपदार्थ क्योंनहींहुए भिन्न २संयोग औररूपके होनेसे सबजगत्‌ काकर्ता औरनियन्ताअवश्यसिद्धहोताहै तीसरादोषउसकेमतमेंयहहै कि कोईकर्मकर्ताकेबिनाहोताहै वानहीं जोवहकहेकि बनादिकोंमें घासादिकपदार्थ आपहीसेहोतेहैं उसकाकर्ता औरनिमित्तकोई नहींदेखपड़ता उससेपूछनाचाहिएकिपृथिव्यादिकसबभूतनिमित्त हैं औरसबबीजबिनाकर्ता औरनियन्ताकेकभी नहींबनसके क्यों किआमकेबीजमें जैसापरमाणुओंकामेलनकर्तानेकियाहै वैसेही

अङ्कुर पत्र पुष्प फल काष्ठ और स्वाद देखने में आते हैं उससे भिन्न भी करलो उसके अवयव वा स्वाद आम से कोई नहीं मिलते क्योंकि सब पदार्थों में परमाणु तो बेही हैं फिर रचनेवाले के बिना भिन्न२ पदार्थ कैसे होंगे इससे जाना जाता है कि सब जगत का रचनेवाला कोई पदार्थ है जो चूना, हल्दी और जल के मिलाने से रोरी होती है उसका मेलन करनेवाला जब मिलाता है तब वे मिलके रोरी होती हैं वे आपसे आप तो नहीं मिलते इससे वह दृष्टान्त मिथ्या होगया कुम्हार का जो दृष्टान्त दिया सो क्यों हार खाना तो आपने जीव को रक्खा क्योंकि ईश्वर को तो आप मानते ही नहीं सो जीव सर्वशक्तिमान् नहीं क्योंकि परमाणु आदिकों का संयोग वा वियोग जीव कभी नहीं कर सक्ता जो जीव कर सक्ता तो चाहता तो सूर्य, चन्द्रादिक लोकों को रच लेता सो रच सक्ता नहीं इससे जाना जाता है कि सब जगत् का कर्त्ता और नियन्ता कोई अवश्य है जब जगत् रचा गया है तो नित्य कभी नहीं हो सक्ता क्योंकि जब तक नहीं रचा था तब तक नहीं था और जो रचने से भया है सो कभी मिट भी जायगा बिना कर्त्ता वा कारक के कर्म वा कार्य नहीं होता तो यह नाना प्रकार की रचना और इतना बड़ा कार्य जगत् कभी नहीं हो सक्ता इससे तीन प्रकार जो अनुमान है सो ईश्वर में यथावत् घटता है कि कारण के बिना कार्य कभी नहीं हो सक्ता कार्य से कारण अवश्य जाना जाता है और कर्त्ता के बिना कर्म नहीं होता इससे पूर्ववत् शेषवत् और सामान्यतो दृष्ट तीन प्रकार का अनुमान ईश्वर को यथावत् सिद्ध करता है ईश्वर के सर्वशक्तिमत्व दयालुता और न्यायकारित्वादिक गुण जगत् में प्रत्यक्ष देख पड़ते हैं स्वाभाविक गुण और गुणी का नित्य संबंध होता है जैसा कि रूप और अग्नि का सो जैसे अग्नि का रूप देख पड़ता है और अग्नि नेत्र से नहीं देख पड़ता परन्तु हम लोग ज्ञान से अग्नि को प्रत्यक्ष देखते हैं क्योंकि अग्नि को बुद्धि से प्रत्यक्ष हम लोग न देखते तो अग्नि को लेआने और अग्नि से जितने व्यवहार होते हैं उनमें प्रवृत्त कभी न होते इससे जैसा अग्नि हमको प्रत्यक्ष है गुण और गुणी के

ध्यानसे वैसेध्यानसेपरमेश्वरभीप्रत्यक्षहै जोधर्मात्माऔरयोगीपु-
रुषहोतेहैं उनकोपरमाणु जीव औरपरमेश्वरभी यथावत्प्रत्यक्ष
होतेहैं जोकोईइसमेंसंदेहकरै सोकरकेदेखले उपमानप्रमाणतो
परमेश्वरमेंनहींहोसक्ता क्योंकिपरमेश्वरकेसदृशकोईपदार्थनहीं
जिसकीउपमापरमेश्वरमेंहोसकैपरन्तुपरमेश्वरकोउपमापरमेश्व
रहीमेंहोसक्तीहै ऐसाजगत्में व्यवहार देखनेमेंआताहै किआप
केतुल्यआपहीहोवै वैसेहमलोगभीकहसक्ते हैं किपरमेश्वरकेतुल्य
परमेश्वरहीहै औरकोईनहीं जबतीनप्रमाणोंसेईश्वरकीसिद्धिहो
गई तोशब्द .माणभीअवश्यहोगा सोशब्दप्रमाणइसप्रकारकाले-
ना ॥ दिव्योह्यमूर्त्तःपुरुषःसबाह्याभ्यन्तरोह्यजः । अप्रमाणोह्य-
मनाःशुभ्रोऽक्षरात्परतःपरः ॥ २ ॥ दिव्यनामसबजगत्काप्रकाश-
क अमूर्त्त निराकारऔरसदाअशरीर पुरुषनामसबजगहमें पूर्ण
सोईबाहरऔरभीतरएकरस अजकभीजिसकाजन्मनहीहोता अ-
प्राणनामकिसीप्रकारकीचेष्टावालीलानहींकरता अमनानाम रा-
गद्वेषसंकल्पविकल्पादिकदोषरहित अक्षरजोजीवउससे परेजोप्र-
कृति उससे भीपरमेश्वरश्रेष्ठऔरपरहै ॥ २ ॥ नतत्रसूर्योभातिनच-
न्द्रतारकंनेमाविद्युतोभान्तिकुतोऽयमग्निः तमेवभान्तमनुभाति-
सर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभाति ॥ ३ ॥ मन्त्र० उसपरमेश्वरमेंसूर्य
चन्द्र,तारे,बिजली,औरअग्निएककुछभीप्रकाशनहींकरसक्ते कि-
न्तुसूर्यादिकोंकोपरमेश्वरहीप्रकाशतेहैं सबजितनाजगत्हैउसके
प्रकाशसे प्रकाशितहोताहै परमेश्वरकाप्रकाशककोईनहीं ॥ ३ ॥
अपाणिपादोजवनोग्रहीता पश्यत्यचक्षुःसशृणोत्यकर्णः । सवेत्तिवि-
श्वंनचतस्यास्तिवेत्तातमाहुरग्र्यंपुरुषंपुराणम् ॥ ४ ॥ मन्त्र० ।
परमेश्वरनिराकारहै परन्तु उसमें शक्तियांसबहैं हाथ परमेश्वर
कोनहींहै परन्तु हाथकी शक्तिऐसीहै किसबचराचरकोपकड़के
थांभरक्खाहै तथापादनहींहै परन्तु सबसेवेगवालाहै नेत्रनहींहै
परन्तु चराचरकोयथावत्सबकालमेंदेखरहाहै काननहींहै पर-

न्तु चराचरकोवातसुनताहै मन,बुद्धि,चित्तऔरअहङ्कारतोनहीं है परन्तुमननिश्चयऔरस्मरण अपनेस्वरूपकाआपहीजाननेवालाहै औरवहसबकोजानताहै परन्तुउसकोकोई नहींजानसक्ता किइतनाबड़ावाइसप्रकारका वाइतनासामर्थ्यउसमेंहै ऐसाकोई नहीजानसक्ताउसपरमेश्वरकोज्ञानीऔरशास्त्रसर्वोत्कृष्टपूर्णऔर सनातनकहतेहैं ॥ ४ ॥ अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययंतथारसन्नित्यमगन्धवच्चयत् । अनाद्यनन्तंमहत:परंध्रुवंनिचाय्यतंमृत्युमुखात्प्रमुच्यते ॥ ५ ॥ मन्त्र० वहपरमेश्वर अशब्दअर्थातकहने औरसुनने मात्रसेनहीं जानाजाता बिनाउसके आज्ञापालन विज्ञान प्रीति औरयोगाभ्यासकेस्पर्श रूपरसऔरगन्धपरमेश्वरमेंनहीं इससे परमेश्वरकाज्ञानसहस्रों पुरुषोंमेंकिसीकोहोताहै सबकोनहींवह कैसाहै अनादिऔरअन्तजिसकाआदिकारण अथवाअन्तकोको ईनहीदेखसक्ता क्योंकिउसकामरण वाअन्तनहींहैं तोकैसेकोई देखसकै परमेश्वरबुद्धिमेंभीसूक्ष्मऔरपरेहै जोकोईपरमेश्वरको जानताहै सोजन्ममरणादिक सबदु:खोंसेछूटके परमेश्वरकोप्राप्त होताहै फिरकभीउसकोदु:खलेशमात्रभीनहीहोता ॥ ५ ॥ समाधिर्धूतमलस्यचेतसोनिवेशितस्यात्मनियत्सुखंभवेत् । नशक्यतेवर्णयितुंगिरातदास्वयंतदन्त:करणेनगृह्यते ॥ ६ ॥ म० जिसपुरुष काधर्माचरणविद्या औरसमाधियोगसेचित्तशुद्धहोजाताहै उसकाचित्तपरमेश्वरकेज्ञानमें औरप्राप्तिकेयोग्यहोताहै जबसमाधि योगमेंचित्त औरपरमेश्वरका योगहोताहै उसवक्तऐसा आनन्द उसजीवकोहोताहै किकहनेमेंभीनहींआता क्योंकिवहजीवअपने अन्त:करण अर्थातबुद्धिहीसेग्रहणकरताहै वहांतोसराकोईनहीं है किजिससे कहैं किफिरजाग्रतावस्थाकहनेमेंभीनहींआता क्योंकि वहपरमेश्वरउसकाआनन्द औरउसकोजाननेवालाजीवतीनोंचेतनपदार्थहैं इससे वहसबआनन्दकहनेमेंनहींआता ॥ ६ ॥ आश्चर्योऽस्यवक्ताकुशलोऽस्यलब्धा । आश्चर्योऽस्यज्ञाताकुशलानुशिष्ट:

॥ ७ ॥ मन्त्र० परमेश्वरकावक्ताऔरप्राप्तिहोनेवालादोनोंआश्चर्य पुरुषहैं क्योंकिआश्चर्यजोपरमेश्वर उसकोजाननेवालाभी आश्चर्य हीहोताहै जिसकोब्रह्मवित्पुरुषोंकाउपदेशकुशलहोय औरअपने भीसबप्रकारसेविद्यावान्शुद्धऔरयोगीतबपरमेश्वरकोजानसक्ता है सोभीआश्चर्यहैअन्यथानहीं ॥ ७ ॥ सर्वेवेदायत्पदमामनन्ति तपांसिसर्वाणिचयद्वदन्ति यदिच्छन्तोब्रह्मचर्यंचरन्तितत्ते पदंसंग्रहे-णब्रवीम्योमेतत् ॥ ८ ॥ जिसपदअर्थात्परमेश्वर सबवेदअभ्यास पुनःपुनः उसीहीकाकथनकरतेहैं अर्थात्वेपरमेश्वरहीकोकहते हैं औरउसकेवास्तेहीहै जिसकोप्राप्तिकोइच्छासेमनुष्यलोगब्रह्म-चर्यसेयथावत्विद्यापढ़तेहैं किहमलोगपरमेश्वरकोजानें उसको प्राप्तिकेविना अनन्तसुखऔरसबदुःखकी निवृत्तिनहींहोती यही बातयमराजनचकेतासेकहतेहैं किहेनचकेताजो ओङ्कारकाअर्थ हैसोईपरब्रह्महै ॥ ८ ॥ एकोदेवःसर्वभूतेषुगूढ़ःसर्वव्यापीसर्वभूता-न्तरात्मा । सर्वाध्यक्षःसर्वभूताधिवासःसाक्षीचेताकेवलोनिर्गुण-श्च ॥ ९ ॥ मन्त्र एकजोअद्वितीयपरमेश्वरब्रह्महै सोईसबभूतोंमेंगूढ़ है अर्थात्गुप्तकिसबजगतमेंप्राप्तहै फिरमूढ़लोगउसको नहींजा-नते सबभूतोंकाअन्तरात्मा किनिकटसेभीनिकटसबसंसारकावही है अध्यक्षनामस्वामीऔरसबभूतोंकानिवासस्थानसबसेश्रेष्ठ स-बकेऊपरविराजमानसबकासाक्षी किकोईकर्मजीवकाउनसेविना जानानहींरहताकिन्तुसबजानतेहैं चेतनस्वरूपऔरकेवलअर्थात् उसमेंकुछभीनहींमिलताहै एकरसचेतनस्वरूपहीहै जैसादूधमें जलमिलारहताहै वैसानहीं जितनेअविद्या जन्म,मरण, हर्ष, शोक,क्षुधा,तृषा, तमोरजः औरसत्वगुणादिकजगत्केहैं उनसे सदाभिन्नहोनेसेपरमेश्वरनिर्गुणहै औरसच्चिदानन्दसर्वशक्तिम-त्वदयालुन्यायकारित्व औरसर्वज्ञादिकगुणोंसेसदासगुणहै ९ ॥ नतस्यकार्यंकरणंचविद्यतेनतत्समश्चाभ्यधिकश्चादृश्यते । परास्यश-क्तिर्विविधैवश्रूयतेस्वाभाविकीज्ञानबलक्रियाच १० ॥ मन्त्र परमेश्व-

रसदाकृतकृत्यहै उसकोकर्तव्यकुछनहीं किइसकोकरनेकेविनाइ-
मकोसुखनहीहोगा ऐसानहींकरनाजैसाकिचक्षुकेविनारूपनहीं
देखसक्ता ऐसाभीपरमेश्वरमेंनहीं किन्तुविविधशक्तिस्वाभाविक
अनन्तसामर्थ्यपरमेश्वरकासुनाजाताहै किअनन्तज्ञान,अनन्तब-
लऔरअनन्तक्रियापरमेश्वरमेंस्वाभाविकहीहै इसमेंकुछसन्देह
नहीं क्योंकिपरमेश्वरकेतुल्यवाअधिककोईनहीं ॥ १० ॥ एषसर्वे-
षुभूतेषुगूढात्मानप्रकाशते । दृश्यतेत्वग्र्ययाबुध्यासूक्ष्मयासूक्ष्मदर्शि-
भिः ॥ ११ ॥ मन्त्र यहजोपरमेश्वरसबभूतोंसेसूक्ष्मव्यापकऔरगुप्त
है इससे मूढजोविज्ञानऔरयोगाभ्यासहो उनकोबुद्धिमेंनहींप्रका-
शितहै जितनेसूक्ष्मदर्शीयथावत् विद्यावानउनकीशुद्धि औरसूक्ष्म
जोबुद्धि,विद्या,विज्ञान,योगाभ्यास सेहोताहै उससे परमेश्वरको
वेयथावत्जानतेहैं अन्यथानहीं ॥ ११ ॥ तदेजतितन्नैजतितद्दूरे-
तद्वन्तिके । तदन्तरस्यसर्वस्यतदुसर्वस्यास्यबाह्यतः ॥ १२ ॥ मन्त्र
सोईपरमेश्वर प्राणादिकोंको चेष्टाकरताहै औरआपअचलहीहै
वहअधर्मात्माऔरमूढ पुरुषोंसेअत्यन्तदूरहै औरधर्मात्माविज्ञान
वालेपुरुषोंसेअत्यन्तनिकट अर्थातउनकाअन्तर्यामीहीहै सोईब्रह्म
सबजगत्के बाहरभीतर औरमध्यमेंपूर्णहै ॥ १२ ॥ अनेजदेकंम-
नसोजवीयोनैनद्देवाआप्नुवन्पूर्वमर्षत् । तद्धावतोन्यानत्येतितिष्ठ-
त्तस्मिन्नपोमातरिश्वादधाति ॥१३॥ मन्त्र यहब्रह्मनिष्कंपनिश्चलहै
परन्तुमनसेभीवेगवालाहै इसब्रह्मकोदेव अर्थात् चक्षुरादिक इ-
न्द्रियांप्राप्तनहींहोतो क्योंकिइन्द्रियऔर मनकावहीआत्माहै सो
आत्माकाबाह्यजोशरीर सोउसकोकभीनहींदेखसक्ता वहआत्मा
तोसबकोदेखसक्ताहीहै औरमनवेगसेजहां२जाताहै वहां२व्या-
पकहोनेसे परमेश्वरआगेदेखपड़ताहै सोपरमेश्वरजितनेवेगवा-
लेहैं उनकोउल्लङ्घनकरलेताहै अर्थात्परमेश्वरकेकोईगुणकेतुल्य
वाअधिककिसीकागुणसामर्थ्यनहीं सोपरमेश्वरस्थिरव्यापकऔर
चेतनउसकेसत्तासे उसमेंठहराभया मातरिश्वा अर्थात्मातागो

आकाशवत्सबमेंचलनेऔररहनेवाला जोपरमात्मासोचेष्टादिकसबक- र्मोंकाकर्ताहैअन्यथानहीं १३॥ यस्मिन्सर्वाणिभूतान्यात्मैवाभूद्वि- जानतः। तत्रकोमोहःकःशोकएकत्वमनुपश्यतः १४॥ मन्त्र जिसप- रमेश्वरकेजाननेसेसबभूतप्राणिमात्रआत्माकेतुल्यहोजातेहैं किकि- सीभूतसेनरागऔरनद्वेषउसकोकभीरागऔरनहींहोतेक्योंकिवह एकजोअद्वितीयउसपरमेश्वरमेंस्थिरज्ञानवालाजोपुरुषउनकोकि- सीमेंमोहवाकिसीसेक्याशोकअर्थात्उसकोकभीमोहवाशोकहोता हीनहीं १४ ॥ वेदाहमेतंपुरुषंमहान्तमादित्यवर्णंतमसःपरस्ता- त्। तमेवविदित्वातिमृत्युमेतिनान्यःपन्थाविद्यतेऽयनाय १५॥ मन्त्र जोब्रह्मवित्पुरुषउसकायहअनुभवहै किपूर्णसबसेबड़ाप्रकाशस्व- रूप औरसबकाप्रकाश जन्ममरणसुखदुःख औरअविद्या जोतम उससेभिन्नउसपरमेश्वर कोजानताहूं सबदुःखसेछूटकेपरमानन्द उसकोजाननेसे यथावत् प्राप्तभयाहूं उसीको जानके अतिमृत्यु जोपरमेश्वर किजिसमेंजन्ममरणादिकदुःखोंकालेशमात्रभीनहीं अर्थात्मोक्षपदकोप्राप्तहोताहै औरकोईइससे भिन्नमोक्षकामार्ग नहीं॥१५॥ सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरंशुद्धमपापवि- द्धम्। कविर्मनीषीपरिभूःस्वयंभूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वती- भ्यःसमाभ्यः॥१६॥ मन्त्र सोपरमेश्वरसबपदार्थोंमें एकरसअ- द्वितीयपूर्णहै सबजगत्कर्तास्थूलसूक्ष्म औरअकायअर्थात् जागृत और सुषुप्ति इनतीन शरीर रहित शुद्ध निर्मल सर्वदोष रहित जिसकोपापकालेश मात्रभीसम्बन्धनहीं सर्वज्ञसर्वविद्वान् अनन्त जिसकाविचारऔरज्ञान सबकेऊपरविराजमान स्वयंभूनामजि- सकोकभीउत्पत्तिनहोय आपसेआपहीसदासनातनहोवे जिन्नवे- दरूपसर्वस्व विद्याकाहिरण्यगर्भादिक शाश्वतनामनिरन्तरप्रजा ओंकोअर्थोंकाअर्थात्वेदोंका यथावत्उपदेशकियाहै उसपरमे- कोस्तुतिप्रार्थनाऔरउपासनाकरनीचाहिए इतनासंक्षेपसेसंहि- ताऔरब्राह्मणोंकेमन्त्रोंसे मन्त्रप्रमाणलिखदियासोजानलेना पु-

वपक्ष। परमेश्वर रागी है वा विरक्त वा उदासीन जो रागी होगा तो दुःखी
वा असमर्थ होगा यदा जो विरक्त होगा तो कुछ भी न करेगा और सं-
सार का धारण भी न होगा और जो उदासीन होगा तो अपने स्वरूप-
स्थ मात्र ही वर्त्तेगा अर्थात् बद्ध जो ईश्वर होगा तो कभी रचसकेगा
नहीं मुक्त होगा तो जगत् को ही रचेगा नहीं इससे ईश्वर की सिद्धि न-
हीं होती। उत्तर। परमेश्वर रागी नहीं क्योंकि अपने से उत्तम कोई प-
दार्थ नहीं है कि जिसमें राग करै अपने स्वरूप में अपना राग कभी नहीं
ममता। सर्वव्यापी के होने से अप्राप्त पदार्थ ईश्वर को कोई नहीं तथा स-
र्वशक्तिमान् के होने से भी राग ईश्वर में नहीं बन सक्ता विरक्त भी ईश्वर
नहीं क्योंकि पहिले जो बद्ध होता है सो ई बन्धन के छूटने से विरक्त कहा-
ता है सो ईश्वर को बन्धन तो नौं काल में भी नहीं भया फिर उसको विर-
क्त कैसे कह सकैं उदासीन भी वह होता है कि पहिले बन्धन में होय
पीछे ज्ञान के होने से उदासीन हो जाय ऐसा ईश्वर नहीं ईश्वर को अ-
चिन्त्य शक्ति है कि सब में रहै और किसी का भी लेशमात्र संगदोष न
लगे इससे ऐसी शंका जीव के बीच में घट सक्ती है ईश्वर में नहीं। पूर्वपक्ष
जितने पदार्थ हैं वे सब सन्देहयुक्त होते हैं निश्चय यथावत् एक का भी नहीं
होता उत्तर आपने यह बात कही सो निश्चित है वा नहीं जो कहो
कि निश्चित है तो सब पदार्थ सन्देहयुक्त नहीं भये आपको बात निश्चित
होने से और जो आप कहैं कि यह मेरी बात भी निश्चित नहीं तो आप
की बात का प्रमाण ही नहीं हुआ क्योंकि लक्षणप्रमाणाभ्यां पदार्थ-
सिद्धिः। लक्षण और प्रमाणों के बिना किसी पदार्थ की निश्चित सिद्धि
नहीं होती आपने सब पदार्थों में सन्देह सिद्ध कहा सो किस प्रमाण से उ-
सकी सिद्धि होती है कि सो प्रमाण सन्देह है को आप सिद्ध किया चाहो-
गे तो उस प्रमाण में भी आपका निश्चय नहीं होगा क्योंकि आप सब
पदार्थों को सन्देहयुक्त कहचुके हैं इससे आपका सन्देह ही सन्देह नष्ट
होगया फिर आप किसी व्यवहार में प्रवर्त्त नहीं होसकोगे जैसे कि गमन
भोजन, छादन, देखना सुनना इत्यादि कभी सन्देहयुक्त होने से भ्रष्ट-

क्तिभी इनमें न होनी चाहिए प्रवृत्ति तो आपकी ही है इससे आपमें जो कहा कि सब व्यवहार और सब पदार्थ सन्देहयुक्त ही हैं यह बात आपकी मिथ्या हो गई इससे क्या आया कि लक्षण और प्रमाणों से जो निश्चित पदार्थ होता है उसको निश्चित ही मानना चाहिए इसमें सन्देह करना व्यर्थ ही है सो प्रत्यक्षादिक प्रमाणों से ईश्वर की यथावत् सिद्धि होती ही है उसको मानना ही चाहिए (प्रश्न) पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, इन चारों के मिलने से चेतन भी उसमें होता है जब वे पृथक् २ हो जाते हैं तब सब कला बिगड़ जाती हैं फिर उसमें कुछ नहीं रहता इससे जगत् का रचनेवाला कोई नहीं आप से आप ही जगत् और जीव होता है (उत्तर) आप भी इन चारों को मिला के जीव और जीव के जितने गुण उनको देखला देवें सो कभी नहीं देख पड़ेंगे क्योंकि पहिले ही से सब स्थूल भूतों में सब सूक्ष्म भूत मिले रहे हैं फिर उनमें ज्ञानादिक गुण क्यों नहीं देख पड़ते इससे जीव पदार्थ इन भूतों से भिन्न ही है—जिसके ये गुण हैं इच्छाद्वेषप्रयत्नसुखदुःखज्ञानान्यात्मनो लिङ्गम् । यह गौतम मुनि का सूत्र है इसका यह अभिप्राय है कि इच्छा कि सो प्रकार का चाहना जिसके गुणों को जानता है उसकी प्राप्ति की चाहना करता है जिसमें दोषों को जानता है उसमें द्वेष अर्थात् चाहना नहीं करता प्रयत्न नाना प्रकार की शिल्पविद्या से पदार्थों का रचना शरीर तथा भार का उठाना इसका नाम प्रयत्न है सुख नाम अनुकूल का चाहना और जानना दुःख प्रतिकूल का जानना और छोड़ने की इच्छा करना ज्ञान जैसा जो पदार्थ है उसका तत्त्वपर्यन्त यथावत् विवेक करना इसका नाम जीव है ये गुण पृथिव्यादिक जड़ों के नहीं किन्तु जीव ही के हैं लिंग शरीर बुद्धि जिससे जीव निश्चय करता है (बुद्धिरुपलब्धिर्ज्ञानमित्यनर्थान्तरम्) यह गौतम जी का सूत्र है बुद्धि उपलब्धि और ज्ञान ये तीनों नाम एक ही पदार्थ के हैं मन जिससे एक पदार्थ को विचार के दूसरे का विचार करता है ॥ युगपज्ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिंगम् । यह गौत० जिससे एक पदार्थ ही को एक काल में ग्रहण करता है एक को ग्रहण करके

दूसरेकादूसरेकालमेंग्रहणकरताहै एककालमेंदोनोंकानहीं इसकानाममनचित्त जिससे किजीवपूर्वापरकास्मरणकरताहै जोकि पहिलेदेखाऔरसुनाथा इसकानामचित्तहै अहङ्कारजिससे अभिमानजीवकरताहै येचारमिलकेअन्तःकरणकहाताहै इससे जीवभीतरमनोराज्यकरताहै येचारोंएकहीहैं।परन्तु व्यापारभेदसे चारभिन्न२नामहैं बाह्यकरणजिससे कि बाहरजीवव्यापारकरता श्रोत्रजिससे शब्दसुनाताहै त्वचाजिससे स्पर्शजानताहै नेत्रजिससेरूप कोजानताहै जिह्वाजिससे रसकोजानताहै नासिकाजिससेगन्धको जानताहै येपांचज्ञानइन्द्रियांहैं इनसेजीवबाह्यपदार्थोंकोजानताहै वाक्जिससे शब्दबोलताहै पादजिससे गमनकरताहै हस्तजिससे ग्रहणकरताहै वायुजिससे मलकात्यागकरताहै लिंगजिससे मूत्र औरविषयभोगकरताहै येपांचकर्मेन्द्रियहैं इनसेजीवबाह्यकर्मकरताहै।प्राणजिससे ऊर्द्ध चेष्टाकरताहै अपानजिससे अधोचेष्टाकरताहै व्यानजिससे सबसन्धियोंमेंचेष्टाकरताहै। उदानजिससेजलऔरअन्नकोकण्ठसेभीतरआकर्षणकरलेताहै। समानजिससे नाभिद्वारसबरसोंको सबशरीरमेंप्राप्तकरदेताहै। येपांचमुख्यप्राणकहाते हैं नागजिससे डकारलेताहै कूर्मजिससे नेत्रकोखोलताऔरमून्दता है कृकलजिससे छींकताहै देवदत्तजिससे जम्भाईलेताहै धनञ्जय जिससे शरीरकोपुष्टिकरताहै औरमरेपीछे शरीरकोनहींछोड़ता जोकिमुरदेकोफुलाताहै येपांचउपप्राणहैं।येदशएकहीहैं परन्तु क्रियाभेदसेदशनामभयेहैं ये२४तत्त्वमिलकेलिंगशरीरकहाताहै कोईउपप्राणकोनहींमानता उसकेमतमें १९ होतेहैं औरकोई पांचसूक्ष्मभूतजोकिपरमाणुरूपहैं औरपूर्वोक्तचारभेदअन्तःकरणकेइननवतत्त्वोंको लिंगशरीरकहाताहै।इसलिंगशरीरमेंजोअधिष्ठाताकर्ता औरभोक्ताउसकोजीवकहतेहैं जोकिएककालमेंसब बुध्यादिकोंकेकियेकर्मोंकाअनुभवकरताहै चेतनस्वरूपहैउसका नामजीवहै।उसकीअधिकव्याख्यामुक्तिके प्रकर्णमेंकिईजायगी सो

जीवभिन्नपदार्थहीहै चारोंकेमिलानेसे जीवकेगुण और जीवकभी
नहींउत्पन्नहोता इससे यहबातकहीथी किचारोंकेमिलनेसे जीव
भीहोताहै यहबातखण्डतहोगई(प्रश्न)ईश्वर,सर्वज्ञऔरत्रिकाल
दर्शीहै जैसाईश्वरनेअपनेज्ञानसेनिश्चितकियाहै वैसाहीजीवपाप
वापुण्यकरेगा फिरजीवको दण्डक्योंहोताहै क्योंकिउससे अन्यथा
जीवकुछनहींकरसक्ता जोअन्यथाजीवकरेगातो ईश्वरकासर्वज्ञा-
ननष्टहोजायगा इससे जैसाईश्वरनेपहिलेहीनिश्चयकररक्खाहै वै-
साजीवकरताहै ईश्वरजानताभीहै फिरआपसेउसकोनिष्टक्यों
नहींकरदेता जोनिष्टनहींकरदेता तोदण्ड क्योंदेताहै(उत्तर)
ईश्वरहै अत्यन्तदयालु(जबजीवोंकोईश्वरनेरचा तबविचारकरके
सबकोस्वतन्त्रऔररक्खेहैं क्योंकिपरतन्त्रकरखनेसेकिसीकोकभीसु-
खनहींहोता जैसेकिकोईअपनीइच्छासे मरणतकएकस्थानमेंर-
हताहै तोभीइसमेंउसकोकुछदु:खनहींमालूमहोता उसकोजो
कोईएकघड़ीभरभीपराधीनबैठायरक्खै तोबड़ाउसकोदु:खहोता
है इससेपरमेश्वरनेसबजीवस्वतन्त्ररक्खे हैंजोचाहतातोपरतन्त्रभी
रखसक्ता परन्तुपरमेश्वरबड़ादयालु औरकृपासागरहै इससे सब
स्वतन्त्ररक्खे हैं परन्तुआज्ञा ईश्वरकीहै किजोजैसाकर्म करेगा
वहवैसाफलभोगेगा सोआज्ञाउसकोसत्यहीहै इससे क्याआयाकि
कर्मोंकेकरने औरपुण्योंके फलभोगनेमेंजीवस्वतन्त्रहै) औरपापों
केफलभोगनेमेंपराधीनहैं जीवकर्मोंकेकरनेवाले औरभोगनेवाले
हैं जैसाजीवकर्मकरेगा वैसाहीईश्वरने ज्ञानमेनिश्चय पहिलेही
कियाहै औरभोक्तावहीहै त्रिकालज्ञानमेंईश्वरस्वतन्त्रऔरअपने
कर्मोंकेकरनेमेंतथाभोगनेमें जीवस्वतन्त्रहैं(प्रश्न) जीवकानिजस्वरू-
पक्या॥(उत्तर) विशिष्टस्य जीवत्वमन्वयव्यतिरेकाभ्याम्। यहकपिल
मुनिजीकासूत्रहै इसकायहअभिप्रायहै किजैसाअयनामिट्टीसेव-
नताहै परन्तु शुद्धकेहोनेसे जोउसकेसाम्हनेपदार्थहोगा सोउसमें
यथावत्देखपड़ेगा अथवालोहेकोअग्निमेंरखनेसेअग्निकेगुणवा-

ला होता है उनदोनोंमें प्रतिबिम्ब वा अग्निभिन्न है क्योंकि उनसे
पृथक् भी वे देख पड़ते हैं और हो भी जाते हैं इस्से दर्पण और
लोहे से व्यतिरिक्त हैं अर्थात् जुदे हैं और जो केवल जुदे होते तो उनके
गुण दर्पण और लोहे में न होते इस्से उनमें अन्वय भी उनका देख
पड़ता है वैसे ही लिंगशरीर जो है उसका अधिष्ठाता है सोई जीव है
दर्पणके तुल्य अन्तःकरण शुद्ध है स्थूल देह बाहर का है और जिसमें
मन्द बिम्ब होता है सत्व रजो और तमो गुण मिलके प्रकृति कहाती है
जिसका नाम अव्यक्त परम सूक्ष्मभूत और प्रधान भी है वह कारण श-
रीर कहलाता है सो सब प्राणियों का व्यापक के होने से एक ही है दोनों
के बीच में मध्यस्थ लिंगशरीर है चेतन एक जीव और दूसरा परमेश्वर
ही है तीसरा कोई नहीं सो परमेश्वर है विभु व्यापक सर्वत्र एक रस ज-
हां२ लिंगशरीर विशिष्ट जीव रहता है वहां२ परमेश्वर ही पूर्ण है
सो लिंगशरीर में उसका सामान्य प्रकाश है और विशेष प्रकाश चेतन
ही का जीव है जैसे दर्पण में सूर्य का विशेष प्रकाश होता है सो परमेश्वर
का सदा संयोग रहता है वियोग कभी नहीं इस्से परमेश्वर के अन्वय
होने से वह चेतन नहीं है वह जीव कहलाता है और लिंगदेह से परमे-
श्वर भिन्न के होने से पृथक् भी है क्योंकि लिंगशरीर से युक्त जीव स्वर्ग न-
र्क जन्म और मरण इत्यादिकों में भ्रमण करता है परन्तु परमेश्वर नि-
श्चल है उसके साथ भ्रमण नहीं करते हैं और उसके गुण दोषों के भोग
वा संग कभी नहीं होते हैं कारण शरीर के ज्ञान लोभ और क्रोधादि-
क गुण जीव में आते हैं और स्थूल शरीर के शीतोष्ण क्षुधा तृषादिक
गुण भी जीव में आते हैं क्योंकि दोनों शरीर के मध्यस्थवर्ती जीव है इस्से
दोनों शरीरों के गुण का भी संग जीव कर्ता है इसका स्पष्ट ग्रन्थ व्याख्या-
न मुक्ति और बन्ध के विषय में किया जायगा प्रश्न ईश्वर व्यापक नहीं हो
सक्ता क्योंकि जितने परमाणु आदिक पदार्थ हैं वे जहां रहते हैं उतने
अवकाश को ग्रहण अवश्य करते हैं फिर उसी अवकाश में दूसरे पर-
माणु वा ईश्वर की स्थिति कभी नहीं हो सक्ती और उसके बीच में अन्य

पदार्थ भी रहैं तो वह परमाणु हो नहीं क्योंकि वह कृत पदार्थों के संयोग से बिना संधि वा पोल उसमें नहीं हो सक्ता सब वियोग की अन्तावस्था जो है उसको परमाणु कहते हैं कि फिर जिसका विभाग हो सके (उत्तर) ईश्वर व्यापक है क्योंकि परमाणु से भी सूक्ष्म है जैसे त्रिसरणु के आगे संयोग वा वियोग बुद्धि से हम लोग जानते और करते हैं वैसे ही परमाणु का वियोग भी बुद्धि से कर सक्ते हैं और ईश्वर की विभुता भी ज्ञान से जान सक्ते हैं क्योंकि परमेश्वर विभु न होते तो परमाणु का रचन संयोग वियोग और धारण भी न कर सक्ते फिर परमाणु का धारण भी कैसे होता जैसे पुष्प में गन्ध दूध में घृत घृत में स्वाद और गन्ध और उन सब पदार्थों में आकाश नाम पोल ये सब व्यापक हैं उन २ पदार्थों में वैसे परमेश्वर भी परमाणु और प्रकृत्यादिक तत्त्वों में व्यापक हो है (प्रश्न) अच्छा ईश्वर सिद्ध और व्यापक भी है। परन्तु उसकी उपासना प्रार्थना और स्तुति करनी आवश्यक नहीं क्योंकि कोई व्यवहार ईश्वर के सम्बन्ध का प्रत्यक्ष नहीं देखपड़ता इससे ईश्वर अपनी ईश्वरता में रहे और हम जीव लोग अपनी जीवता में रहैं (उत्तर) ईश्वर की उपासना प्रार्थना और स्तुति अवश्य सब जीवों को करनी चाहिए जैसे कि कोई किसी का उपकार करै उसका प्रत्युपकार उसको अवश्य करना चाहिए जो प्रत्युपकार नहीं करता सो अवश्य कृतघ्न होता है क्योंकि उसने उसके साथ भलाई किया और उसने उसके साथ बुराई की जैसा उसने सुख दिया था फिर उसने उसको सुख कुछ नहीं दिया वा उसने विरोध ही कर लिया इससे वह पुरुष कृतघ्न होता है जैसे माता पिता और कोई स्वामी जिसका पालन करते हैं वे केवल अपने उपकार के हेतु करते हैं कि यह भी मेरा पालन समर्थ होके करैगा जब वह पुत्र वा भृत्य यथावत् पालन नहीं करता संसार में सज्जन लोग उसको कृतघ्न कहते हैं जो माता और पिता अथवा स्वामी उनका पालन करते हैं जिन पदार्थों से वे घृत जल पृथिवी और अन्नादिक सब परमेश्वर के रचे हैं जो जिसको रचता है वही उसका माता पिता और मुख्य स्वामी होता है

उनपदार्थों से अपना वा पुत्रादिकों का पालन वे करते हैं जैसे किसी ने अपने भृत्य से कहा कि तू इसको सेवा कर वा मेरे इस पदार्थ को ले के उसको दे आज वह सेवा वा पदार्थ को प्राप्त होवे तब पदार्थ दाता स्वामी के ऊपर वह प्रीति करै वा भृत्य के किन्तु पदार्थ दाता स्वामी ही से प्रीति करेगा भृत्य से नहीं किन्तु जिसका पदार्थ है वैसी उसी से प्रीति करना चाहिए जैसे युद्ध में अथवा परा जय राज्य को प्राप्ति अथवा हानि राजा को होती है भृत्यों को नहीं वैसे ही परमेश्वर का जगत है जगत में जितने पदार्थ हैं उनका स्वामी परमेश्वर ही है इस से परमेश्वर की अत्यन्त प्रीति से स्तुति प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी ही चाहिए अन्य किसी की नहीं सेवा तो माता पिता और विद्या का देने वाला श्रेष्ठ और सुपात्र की भी करनी चाहिए और जो ईश्वर की उपासना न करेगा वह कृतघ्न हो जायगा क्योंकि ईश्वर ने हम लोगों पर अनेक उपकार किए हैं जितने जगत् में पदार्थ रचे हैं वे सब जीवों के सुख के हेतु रचे हैं और जीवों को स्वतन्त्र कर्म करने में रख दिये हैं इस में यह यजुर्वेद का प्रमाण है॥ कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतꣳसमाः। एवंत्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरे॥ इस का यह अभिप्राय है कि जीव स्वतन्त्र आप ही आप कर्म करता है सो इस संसार में आप ही आप कर्म कर्त्ता हुआ॥

१०० सौ वर्ष तक जीने की इच्छा करै परन्तु अधर्म कभी न करै सदा धर्म ही करै जो जीव कहेगा कि मरना मुझ को अवश्य है इस से पाप को न करना चाहिए ऐसे जो जीव विचार से कर्म करेगा सो पापों में लिप्त कभी न होगा॥ यन्मनसा ध्यायति तद्वाचा वदति यद्वाचा वदति तत्कर्मणा करोति। यत्कर्मणा करोति तदभिसंपद्यते॥ इस श्रुति का अर्थ पहिले कर दिया है परन्तु इसका यही अभिप्राय है कि जो जैसा कर्म करै वह वैसा ही फल पावै ऐसी ईश्वर की आज्ञा है॥ यथर्तु लिङ्गान्यृतवः स्वयमेवर्तु पर्यये। स्वानि स्वान्यभिपद्यन्ते तथा कर्माणि देहिनः॥ यह मनु का श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि जैसे वसन्तादिक ऋतुओं के लिंग अर्थात् शीतोष्णादिक ऋतुओं में प्राप्त होते हैं वैसे

सबजीवअपनेर् कियेकर्मोंको प्राप्तहोतेहैं १ ॥ जोपुरुषईश्वरकी उपासनानकरेगा वहमहाअज्ञानीहोगा इसमेंकुछसन्देहनहीं। प्रश्न जीवजब विद्यादिकशुद्धगुणऔरयोगाभ्याससे अनिमादिकसिद्धि-वालाहोताहै उसीकोईश्वर माननाचाहिए उससे भिन्नस्वतन्त्र ईश्वरमाननेकाकुछप्रयोजननहीं वहीसिद्धजगतकीउत्पत्तिस्थिति धारणऔरप्रलयकरेगा इससे सनातनईश्वरकोईनहीं किन्तु सा-धनोंसे ईश्वरबहुत होजातेहैं उत्तर इनसेपूछनाचाहिए किजब जीवजीवकाशरीरइन्द्रियां औरपृथिव्यादिक तत्त्वोंकोकोईरचेगा तबतोविद्यादिकगुण औरयोगाभ्याससे कोईजीवसिद्धहोगा जोव ऐसाकहैंकि जन्महीसेकोई सिद्धहोजायगा तोउनकेकहे साधनों सेसिद्धहोतीहै यहबातमिथ्याहोजायगी औरबिनासाधनोंकेसिद्ध होवे तोसबजीवसिद्धक्योंनहींहोते इससे यहबातउनकीमिथ्याहो गी सदासनातनसिद्धसबऐश्वर्यवाला साधनोंसेविनास्वतः प्रका-शस्वरूपईश्वरहै इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न जीवकर्मकरतेहैंऔर ईश्वरकराताहै क्योंकिईश्वरकीसत्ताकेविनाएकपत्ताभीनहींचल सक्ता इससे ईश्वरकेसहायसेजीवकर्मोंकोकरताहै आपसेआपकुछ करनेकोसमर्थनहीं उत्तर जीवआपहीआप स्वतन्त्रकर्मोंको क-रताहै ईश्वरकुछनहींकराता क्योंकिजोईश्वरकराते तोजीवक-भी पापनहींकरता सोजीवपुण्य औरपापकरताहीहै इससे ईश्वर नहींकरता औरजोईश्वरकरता तोजीवसे ईश्वरको अधिकपाप होता जैसेएकमनुष्य चोरीकरताहै औरदूसराकराताहै इसमें करनेवालेसेकरानेवालेको पापअधिकहोताहै क्योंकियहप्रेरणा-उसकोनहींकरता तोवहचोरीकभीनकरता सोएकप्रेरणाकरने-वालाअनेकमनुष्योंकोचोरबनादेताहै इस्सेउसकोअधिकपापहो-ताहै इसवास्ते ईश्वर कभीनहींकरता औरजोईश्वर करातातो जीवकाठकीपुतलीकीनांईहोता जैसेउसकोनचावैवैसानाचे फिर जीवहीपरतन्त्रतामें जोदोषगकासोईआजाता इससे ईश्वरसब-

मत्का करनेवाला है।ताहै परन्तु जीवोंकेकर्मों कोकरनेवाकराने-
वालानहीं प्रश्न जोईश्वरजीवोंको न रचतातोजीव क्योंपापकरते
औरदुःखभीक्योंभोगते जैसेकिसीनेकूं आखोदा उसमेंकोईमनुष्य
भी गिरपड़ताहै जोवह कूंआ नखोदता तोकोईन गिरता वैसे
ईश्वरजीवोंकोनरचतातोजीवक्योंपापकरते(उत्तर) ऐसानकहना-
चाहिए क्योंकिजोकोईराजाभृत्योंकोरखताहै औरपुत्रोंकोमनुष्य
उत्पादनकरताहै वागुरुशिष्योंकोशिक्षाकरताहै सोसबइसीवास्ते
करतेहैं किसबधर्मकीरक्षाऔरधर्माचरणकरें पापकरनेकाअभि-
प्रायइनकानहीं औरजैसेबालकवाभृत्यकेहाथमें लकड़ीशिक्षावा
शस्त्रदेतेहैं सोअपनेशरीरकोऔरस्वामीकोआज्ञा तथाधर्मकीर-
क्षाकेवास्ते देतेहैं ऐसाअभिप्राय उनकानहीं है किउनसेआपअ-
पनेहीको मारकेमरजाय वैसेहीपरमेश्वरनेजीवरचेहैं सोकेवल
धर्माचरणऔरमुक्त्यादिकसुखकेवास्ते रचेहैं औरजोजीवपाप क-
रताहैसोअपनीमूर्खताहीसेकरताहैवैसाहीदुःखभोगताहै हस्ता-
दिकजीवोंकेवास्ते इन्द्रियरचीहैं सोकेवलजीवोंकेव्यवहारसिद्धहो
वें औरउनसे सबसुखकार्योंकोकरें इनमेंसेकोईअपनेहाथसे अ-
पनीआंख निकाललेताहै वाअपनागलाकाटदेताहै सोकेवलअ-
पनीमूढ़तासेकरताहै मातापितादिकोंकावैसाअभिप्रायनहीं इ-
सेवहप्रश्नअच्छानहीं प्रश्न ईश्वरसर्वशक्तिमान्हैवानहीं उत्तर सर्व
शक्तिमान्है प्रश्न जोसर्वशक्तिमान्होयतोअपनानाशभीईश्वरकर
सक्ताहैवानहीं उत्तर ईश्वरअविनाशीपदार्थहै अत्यन्तसूक्ष्म जि-
सकाकिसीप्रकारवाशस्त्रसेनाशनहींहोसक्ता क्योंकिजिसपदार्थका
रूपऔरस्पर्शहोवै उसीकाअग्नि,जल,वायु, अथवाशस्त्रोंसे नाश
होसक्ताहै अन्यथानहीं नाशशब्दकायहअर्थहै किअदर्शनअथवा
कारणमेंमिलजाना सोपरमेश्वरकोइन्द्रियसेदृश्यनहीं किफिर
अदर्शनउसकोहोय औरइसकाकोईकारणभीनहीं जिसमेंईश्वर
मिलजाय इससे ईश्वरकेनाशकीशंकाकरनी भी अनुचितहै औरई-

श्वर सर्वशक्तिमान् है परन्तु उसको शक्ति न्याययुक्त ही है अन्याययुक्त नहीं इससे ईश्वर सदा न्याय ही करता है कि अविनाशी पदार्थ को अविनाशी जानता है और उसके नाश की इच्छा नहीं करता और जो विनाशवाला पदार्थ है उसका नाश न होवै ऐसे भी इच्छा नहीं करता क्योंकि ईश्वर का ज्ञान निर्भ्रम है जो जैसा पदार्थ है उसको वैसा जानता और वैसा ही करता है प्रश्न जो ईश्वर दयालु है तो न्यायकारी नहीं और जो न्यायकारी है तो दयालु नहीं क्योंकि न्याय उसका नाम है कि धर्म करना और पक्षपात का छोड़ना इससे क्या आया कि दण्ड देने के योग्य को दण्ड देना और अदण्ड को कभी दण्ड न देना सो जो दयालु होगा सो तो कभी दण्ड न दे सकेगा क्योंकि दया नाम है करुणा और कृपा का सो सदा अन्य के सुख और उपकार में रहेगा इससे ईश्वर को दयालु मानों तो न्यायकारी मत मानों उत्तर न्यायकारी का तो बहुत स्थानों में अर्थ कर दिया है और दयालु का भी परन्तु न्याय और दयालु इन दोनों का थोड़ा सा भेद है दण्ड का जो देना और जीवों को स्वतन्त्रता का रखना और सब पदार्थ बुद्धि आदिकों का देना सर्वज्ञ सर्व पदार्थों की जिसमें यथार्थ पदार्थ विद्या है उस वेदशास्त्र का प्रकाश करना यह बड़ी ईश्वर की दया है कि जो जैसा कर्म करै वह वैसा ही फल पावै अर्थात् यथावत् जो दण्ड का देना है सो उरु के और उससे भिन्न सब जीवों के ऊपर ईश्वर दया करता है कि कोई न पाप करै और न दुःख पावै जैसे राजदण्ड है सो केवल सब मनुष्यों के ऊपर दया का प्रकाश ही है क्योंकि राजा का यह अभिप्राय होता है कि कोई अनर्थ में प्रवृत्त न होवै जो हम दण्ड न देंगे तो सब मनुष्य अधर्म में प्रवृत्त हो जांयगे इससे अपराधी पुरुष के ऊपर अत्यन्त कठिन दण्ड देता है कि सब मनुष्य भयमान होने से अधर्म में प्रवृत्त न होवैं वैसा ही ईश्वर को सब जीवों के ऊपर दया है कि एक को दुःखी देख के अन्य पुरुष पाप में प्रवृत्त न होवै और फिर जीव को यहां तक अधिकार दिया है कि अणिमादिक सिद्धि चिकालदर्शन और आप जीव ईश्वर संयोग से अनन्त सुख को प्राप्त होते हैं

किकर्मोंजिसकोफिरदुःखनहोवै इससेईश्वरन्यायकारीऔरदयालु है इसमेंकुछविरोधनहीं प्रश्न ईश्वरसर्वशक्तिमानऔरन्यायकारी किसप्रकारसेहै उत्तर देखनाचाहिएकिजितनेजीवहैं उनकोतुल्यपदार्थदियेहैं पक्षपातकिसीकाभीनहींकिया औरजैसीव्यवस्था न्यायसे यथायोग्यकरनीचाहिए वैसीहीकियाहै इससे ईश्वरन्याय कारीहै जगत्मेंसूर्य्य,चन्द्र,पृथिव्यादिकभूत.वृक्षादिक,स्थावरऔर मनुष्यादिक चरइनकारचन हमलोगदेखके तथाधारणऔरप्रलयकोदेखकेआश्चर्यअनन्तईश्वरकीशक्तिकोनिश्चितजानतेहैं क्योंकि सर्वशक्तिमान् जोनहोता तोसब प्रकारका विचित्र जगत् न रचसक्ता इससे हमलोग जानतेहैं किईश्वर सर्वशक्तिमान्है इस मेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न ईश्वर विद्यावानहैवानहीं उत्तर ईश्वरमें अनन्तविद्याहै क्योंकिजोविद्यानहोतो तोयथायोग्यजगत्कीरचनाकोनजानता जगत्कोरचनायथायोग्यकरनेसे पूर्णविद्याईश्वर मेंहै प्रश्न ईश्वरकाजन्म होताहैवानहीं उत्तर उसकाजन्म कभी नहींहोता क्योंकि जन्मलेनेका प्रयोजन कुछनहीं जोसमर्थनही होता सोईदूसरेकासहायलेताहै जोसर्वशक्तिमान्है उसको किसीकेसहायसे कुछप्रयोजननहीं आपही सबकार्यको करसक्ताहै प्रश्न राम,कृष्णादिकअवतारईश्वरकेभएहैं यसूमसीहईश्वरकापुत्र औरमहम्मद आदिपुरुषोंको उपदेशकरनेकेवास्ते भेजा यहबात संसारमेंप्रसिद्धहै अपनेभक्तोंकेवास्ते शरीरधारणकरकेदर्शनदिया औरनानाविधिलीलाकिई किजिसकोगाकेभक्तलोगतरजाते हैं फिरआपकैसेकहतेहोकि जन्मईश्वरकानहींहोता उत्तर यह बातयुक्तिसेविरुद्धहै औरशास्त्रप्रमाणसेभी क्योंकिईश्वर अनन्तहै जिसकादेशकाल औरवस्तु,सेभेदनहींहै एकरसहै जिसकाखण्ड कभीनहींहोता औरआकाशादिकबड़े स्थूलपदार्थभी परमेश्वर केसामने एकपरमाणुकेयोग्यभीनहीं औरशरीरजोहोताहै सो शरीरसेस्थूलहोताहै जैसेघरमेंरहनेवालोंसे घरबड़ाहोताहै सो

ईश्वरकाशरीर किसपदार्थसे बनसक्ताहै किजिसमेंईश्वरनिवास करै औरजोकिसीमें निवासकरेगा तोअनन्त नरहैगा क्योंकि शरीरसेशरीरछोटाहीहोताहै जबशरीरकेसहायसे रावणवाकंसादिकोंकोमारै तथाउपदेश भीकरै विनाशरीरसे नकरसकेतो ईश्वरसर्व शक्तिमान्होनहीं औरजोरावणादिकोंको माराचाहै और उपदेश कराचाहै तोसर्वव्यापी औरअन्तर्यामी होनेसेएक क्षणमें सबजगत्कामारडाले औरउपदेशभीकरदेवै तथाअपने भक्तोंको प्रसन्नभी करदेवै इससे ईश्वरको ईश्वरतायहीहै किविना सहायसेसबकुछकरसक्ताहै औरजोसहायकेविनानकरसकेतोउसकासर्वशक्तित्वही नष्टहोजाय इससे ईश्वरकाकभी जन्मऔर किसीकासहायलेताहै ऐसीशंकाकरनीव्यर्थहै प्रश्न जैसेसबजगत्की उत्पत्तिहोतीहै ईश्वरसेवैसेईश्वरकोभीउत्पत्तिकिसीसेहोतीहोगी उत्तर ईश्वरसेकौनबड़ापदार्थहै किजिससे ईश्वरउत्पन्नहोवै पहिलेहीप्रश्नकेउत्तरसेइसकाउत्तरहोगया औरजोउत्पन्नहोताहै उसकोईश्वरहमलोगनहींमानते किन्तु जिसकीउत्पत्तिकभीनहोवै औरसबसंसारको जिससे उत्पत्तिहोवै उसीकोवेदादिक सत्यशास्त्र औरसज्जनलोगईश्वरमानतेहैं औरकोनहीं जोकोईईश्वरकोभी उत्पत्तिमानताहै उसकेमतमेंअनवस्थादोषआवैगा किजैसेउसने ईश्वरकी उत्पत्तिमानी फिरईश्वरकेपिताकी भीउत्पत्ति मानना चाहिए औरईश्वरकेपिताके पिताकोभीउत्पत्ति माननीचाहिए ऐसेहीआगे२माननेसे अनवस्थाआजायगी अथवाजिसकीवहउत्पत्तिनमानेगा उसीकोहमलोगईश्वरकहतेहैं अन्यकोनहीं प्रश्न ईश्वर साकारहै वानिराकार उत्तर ईश्वर निराकारहै क्योंकि जोनिराकारनहोता तोसर्वशक्तिमान्सर्वव्यापकसबकाधारनेवालाऔरसर्वान्तर्यामी औरनित्यकभीनहोता इससे ईश्वरनिराकार हीहै प्रश्न ईश्वरचेतनहैअथवाजड़ उत्तर जोजड़होतातोसबजगत् की रचना और ज्ञानादिक अनन्त गुण वाला कभी न होता

इससे ईश्वरचेतनहै यहथोड़ासाईश्वरकेविषयमेंलिखदिया (इसके आगेकेविषयमेंलिखाजायगा) उसीईश्वरने सर्वज्ञसर्वविद्यायुक्त औरसत्य२ विचारसहित कृपाकरकेवेदशास्त्रसबजीवोंके ज्ञाना-दिकउपकारके वास्ते रचाहै (प्रश्न) ईश्वर निराकारहै उसकोमुख नही फिरवेदकाउच्चारण औररचनाकैसेकिया (उत्तर) यहशंका असमर्थोंमें होतीहै किविनामुख मुखकाकामनकरसकै ईश्वर विनामुखसे मुखकाकाम करसक्ता है क्योंकिवह सर्वशक्तिमान्है औरजोऐसानमानेगा उसकेमतमेंयहदोषआवैगा किहाथ,पांव आंख,शरीर औरकान विनाजगत्कैसेरचा जैसेविनाहाथ आ-दिकके सबजगत् कोरचा तो वेदके रचनेमें कुछशंका नही (प्रश्न) ओष्ठादिकस्थानोंकाजिह्वासे वायुकोप्रेरणाहोनेसे अक्षरउच्चार-णहोसक्तेहैं अन्यथानहीं उत्तर फिरभीवहीदोषआवेगा किईश्व-रसर्वशक्तिमान नहोगा क्योंकि ओष्ठादिककेस्पर्श औरप्राणवि-नाईश्वरउच्चारण नहीकरसक्ता तोईश्वर पराधीनहोगया और हाथादिकों केबिना ईश्वरनेजगत्भी नरचाहोगा जैसाकि ओ-ष्ठादिकस्थान औरप्राणविना उच्चारणनही करसक्ता ऐसीशंका जीवमेंघटसक्तीहै ईश्वरमेंनही प्रश्न लेखनीमसीइनसे ककारादि-कअक्षरवनतेहैं विनाइनकेनही फिरईश्वरनेकहांसेकागदलेख-नीमसीछुरिकावाक्औरपटिया यहसामग्रीपाई जिससे सबअक्षर रचे उत्तर यहबड़ीशंकाआपनेकिया किईश्वरकोअनीश्वरहीबना दिया अच्छामैंआपसेपूछताहूं किनासिका,आंख,ओष्ठ,कान,म-ख, लोम, नाड़ी, और उनका सन्धान तथा आकारविना सा-मग्री और साधन शरीर तथा अक्षर भी रच लिए (प्रश्न) फिर यहलिखी लिखाईपुस्तक संसारमेंकैसेआई औरकिसनेपाया आ-काशसेगिरीवापातालसेआगई (उत्तर) आपकाशरीर वृक्ष, पर्वत औरइतनीबड़ी पृथिवी अन्तरिक्षमें कैसेआगए जैसेयेआगए वैसे पुस्तकभीआगई इसमेंक्या आश्चर्य कुछभीनही अग्नि,वायु और

आदित्यसृष्टिकेआदिमें भयेथे उन्होंवेदपाये उनसेब्रह्मानेपढ़े ब्रह्मा सेविराटने विराटसेमनुने मनुसेदशप्रजापतियोंनेपढ़े औरउनसे प्रजामेंफैलगए(प्रश्न) अग्न्यादिकोंने ईश्वरसेवेदोंकोकैसेपढ़े (उत्तर इसमें दोबातहैं ईश्वरनेउनको आकाशवाणीकीनांई सबशब्दसब मन्त्र उनकेस्वरअर्थऔरसम्बन्धभीसुनादिए इससे वेदोंकानामश्रुतिरक्खाहै अथवाउनकेहृदयमें ईश्वरअन्तर्यामीहै उसनेउसीहृदयमें वेदोंकाप्रकाशकरदिया फिरउनोंनेअन्योंसे परप्रकाशकर दिए॥(योब्रह्माणंविदधातिपूर्वं योवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मै तंहदेवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वैशरणमहंप्रपद्ये) यहवेदकाप्रमाणहै इसकायहअभिप्रायहै किजोईश्वरब्रह्मादिकदेव औरसबजगत्का रचनकर्ताभया इससे पहिलेही वेदोंकोरचके ब्रह्माकोअग्न्यादिदेव नाम हिरण्यगर्भादिद्वाराजनादिये क्योंकिविद्याकेविना सबजीव अन्धेहोतेहैं कुछनही जानसक्ते जैसेपशु इससे परमेश्वरने वेदका प्रकाशकरदिया सबमनुष्योंकोसबपदार्थविद्याजाननेकेहेतु प्रश्न ईश्वरनेउनदेवअर्थातविद्वानोंकेहृदयमें प्रकाशवेदोंकाकिया सोलोगोंनेबातबनालियाहै किपरमेश्वरनेवेदबनाएहैं ऐसाहमलोगकहैंगे तोवेदोंमेंसबलोगश्रद्धाकरेंगे औरउनकाप्रमाणभीकरेंगे परन्तुअनुमानसे यहनिश्चतजानाजाताहै किउनअग्न्यादिकदेव विद्वानोंनेहीं वेदबनालिएहैं उत्तर परमेश्वरने आकाशसे लेके क्षुद्र,घास,पर्यन्त जगत्कोरचकेप्रकाशकरदिया औरसर्वोत्कृष्टसबपदार्थोंका जिससे निश्चयहोताहै उसविद्याको प्रकाशन करै तो यह परमेश्वरमें दोषआताहै किपरमेश्वर दयालु नही और छली भी है क्योंकि ऐसा अनुमान से जाना जायगा अपनीविद्याका प्रकाश इसवास्ते नहीकिया किसबजीव विद्यापढ़नेंसेज्ञानी औरसुखीहोजांयगे फिरमुझको जानकेअनन्त आनन्दयुक्तभी होजांयगे यहदोष परमेश्वरमेंआवेगा जैसेकोई आजीविका विद्यासेकरताहोय सोपण्डितनही वहऐसीइच्छाकरताहै

जोकोईपण्डितहोगातोमेरीप्रतिष्ठा औरआजीविकान्यूनहोजाय-
गी ऐसाक्षुद्रबुद्धिसेवहमनुष्यचाहताहै औरजोसज्जनलोगहैं वेतो
सदाविद्यादिकगुणोंकाप्रकाशकियाकरतेहैं सोपरमेश्वरअपनीअ-
नन्तविद्याका प्रकाशक्यानकरेगा किन्तुअवश्यहीकरेगा क्योंकि
एकओरसबजगत्औरएकओरविद्या इनदोनोंमेंसेभीविद्याअत्य-
न्तउत्तमहै सोईश्वरक्याआजीविकाधीन औरप्रतिष्ठाकेलोभसेवि-
द्याका प्रकाशनकरेगा किन्तु अवश्यहीकरेगा इसमें कुछसन्देह
नहीं औरजोकोईऐसाकहैकि पण्डितोंनेवेदविद्यारचलियाहै उ-
नसेपूछाजाताहै किवेबिनाशास्त्रके पढ़नेसे पण्डित कैसेभए और
जो वे कहें कि अपनी बुद्धि और विचार से हो गये तो आज
कालभी बुद्धि और विचारसे होजांय सो बिना विद्याके पढ़नेंसे
कोईपण्डितनहींहोता क्योंकिजबसृष्टिरचीगई उससमयकोईम-
नुष्यनहींथा बिनापरमेश्वरके फिरवह अनुमानसे जानाजाताहै
वहअनुमानभीयथार्थ कभीनहोसकेगा आजतकबहुतबुद्धिमानप-
दार्थोंका विचारकरतेहैं सोकिसीपदार्थमें गुणवादोषजानतेहैं प-
रन्तुइतनेइसमेंगुणहैं वाइतनेदोषहैं ऐसानिश्चयउनकोनहीं
होता जितनीअपनीबुद्धि उतनाहीजानतेहैं अधिकनहीं औरप-
रमेश्वरसबपदार्थोंको यथावत्जानताहै सोअपनाज्ञानऔरवि-
द्या क्यापरमेश्वर गुप्तरक्खैगा ऐसा ईर्षावान परमेश्वर होग-
या किसर्वज्ञअपनी विद्याकाप्रकाशनकरै किन्तु दयालुके होनेसे
औरईर्षा,कपट,छलादिदोष रहितहोनेसे अवश्यविद्याकाप्रकाश
करैगा इसमेंकुछसन्देहनहीं प्रश्न वेदकोआपपरमेश्वरसे उत्पत्ति
मानतेहो जैसे जगत्को सोजैसाजगत्अनित्यहै वैसावेदभीअनि-
त्यहोगा उत्तर वेदकेपुस्तक औरपठनपाठन जबतकजगतरहैगा
तबतकवेदकीपुस्तक औरपठनपाठनभीरहैंगे जबजगत् नष्टहोगा
उसकेसाथयेतोनभीनष्टहोंगे परन्तु वेदनष्टनहोंगे क्योंकिवहवि-
द्यापरमेश्वरकीहै जैसेपरमेश्वरनित्यहै वैसेविद्यादिकगुणभी पर-

मेश्वरकेनित्यहैं(प्रश्न)वेदकीरचनाकोईबुद्धिमान होसोरचसक्ताहै
क्योंकि ॥ इतश्चहंमनातनंविज्ञानीहि इतश्चवादेवानां देवऋषी-
णाम्पृषिसु मौनाम्मुनिः। ऐसेऔरहवाशब्दकेरचनेसे वेदकोजैसी
संस्कृतवैसीमनुष्य पण्डितभीरचसक्ताहै जैसाकियहसंस्कृत ह-
मनेरचलियाहै फिरआपकैसे वेदकेरचनेका असम्भव मानतेहैं
किपरमेश्वरबिनावेदकोकोईनहींरचसक्ता।उत्तर हमलोगसंस्कृ-
तमात्रसे वेदकानिश्चयनहींकरते किपरमेश्वरने रचाहै क्योंकिसं-
स्कृततोजैसोतैसो पण्डितरचसक्ताहै परन्तुपरमेश्वरकेगुणउनसं-
स्कृतमें नहीं देखपड़ते जोमनुष्यहोगा सोअवश्यपक्षपातकिसी
स्थानमेंकरैगा औरपरमेश्वरपक्षपात किसीप्रकारसे कभीनकरै-
गा क्योंकिपरमेश्वरपूर्णानन्दऔरपूर्णकामहै सोवेदमेंकिसीप्रका-
रसे एकअक्षरमेंभी पक्षपात देखनेमें नहींआता।फिरदेहधारी
सबविद्याओंमेंयथावत्पूर्णकभीनहींहोता सोजबकोईपुस्तकरचे-
गा तबजिसविद्यामेंनिपुणहोगा उसविद्याकीबातअच्छीप्रकारसे
लिखेगा परन्तु जिसविद्याको नहींजानता उसकाविषय जबकुछ
आवैगा तबकुछन लिखसकेगा जोलिखेगातो अन्यथा लिखेगा
औरपरमेश्वर सबविद्याओंकेविषयोंको यथावत्लिखेगा सोवेदों
मेंसबविद्यायथावत्लिखीहैं मनुष्यजबग्रन्थरचेगाउसमेंकोईबुद्धि-
मानहोगा तोभीसूक्ष्मदोषआवेंगे किधर्मकाकिसीप्रकारसेखण्ड-
नऔरअधर्मकामण्डन थोड़ाभीअवश्यआजायगा परमेश्वरकेलि-
खनेमें धर्मकाखण्डन वाअधर्मकामण्डन किसीप्रकारसेलेशमा-
त्रभीनआवेगा सोवेदमें ऐसाहीहै मनुष्य शब्द अर्थ औरसम्बन्ध
इनकोजितनीबुद्धिउतनाहीजानेगा अधिकनहीं सोवैसेहीशब्दअ-
पनेग्रन्थमेंलिखेगा जिस्से एक,दो,तीन,चारवापांचप्रयोजन जैसे
तैसेनिकलसकैं औरपरमेश्वरसर्वज्ञकेहोनेसे शब्दअर्थऔरसम्ब-
न्धऐसेरक्खेहैं जिनसेअसंख्यातप्रयोजन औरसबविद्यायथाव-
त्प्रकाशित जोपरमेश्वरकाऐसासामर्थ्यहै अन्यकानहीं सोवैसेवे-

दहीहैं किजिनसेअसंख्यात प्रयोजन औरसबविद्या निकलतीहैं
क्योंकिपरमेश्वरने सबविद्यायुक्तवेदोंकोरचेहैं इस्से सबकार्यवेदोंसे
सिद्धहोतेहैं(औरवेदोंकेनामलिखके गोपालतापिनी,रामतापि-
नी, कृष्णतापिनी औरअल्लोपनिषदादिक मनुष्योंनेबहुतग्रन्थर-
चलिएहैं परन्तु विद्वान्यथावत्विचारकरकेदेखै तोउनग्रन्थोंमें
जैसीमनुष्योंकी क्षुद्रबुद्धिवैसीहीक्षुद्रता देखपडतीहै सोपरमेश्वर
औरउनकेवचनोंमें दिनऔररातकाजैसाभेदहै वैसाभेद देखप-
डताहै(प्रश्न)वेदपौरुषेयहै अथवाअपौरुषेय अर्थातईश्वरकारचाहै
वाकिसीदेहधारीका(उत्तर)वेददेहधारीकारचाकभीनहीहै किन्तु
परमेश्वरहीनेरचाहै परन्तु वेदअपौरुषेय औरपौरुषेयभीहै क्यों-
किपुरुषदेहधारीजीवकानामहै औरपूर्णकेहोनेसेपरमेश्वरकाभी
अपौरुषेयतोइस्से है किकोईदेहधारीजीवकारचानही औरपौरु-
षेयइसवास्ते है किपूर्णपुरुषजोपरमेश्वरउसनेरचाहै इस्से पौरुषे-
यभीहै औरपरमेश्वरकीविद्यासनातनहैसोईवेदहै इस्से भीवेदअ-
पौरुषेयहै क्योंकिपरमेश्वरकी विद्याजोवेद उसकीउत्पत्तिवानाश
कभीनहीहोती परन्तु पुस्तकपठनऔरपाठन इनतीनोंकाजगत्के
प्रलयमेंप्रलयहोजाताहै वेदईश्वरमेंनित्यरहतेहैं इस्से वेदकानाश
कभीनहीहोता(प्रश्न)जैसेवेदईश्वरसेउत्पन्नहोताहै वैसाजगत्भीई-
श्वरसेउत्पन्नहोताहै जैसाजगत् विनश्वरहै वैसावेदभी विनश्वरहै
औरजोवेदनित्यहोगा तोजगत्भीनित्यहोगा(उत्तर) जगत्जोहैसो
प्रकृतिपरमाणु औरउनकेपरस्परमिलानेसे परमेश्वरसेउत्पन्नभ-
याहै सोकभीकारणजोपरमेश्वर उसमेंकार्यरूपजगत्नष्टहोजाय-
गा परन्तु वेदजगत्जैसाकार्यहैवैसानहीं क्योंकिवेदतो परमेश्वर
कीविद्याहै सोजोनाशहोजायतोपरमेश्वरविद्याहीनहोनेसे अवि-
द्वान्हो होजाय सोपरमेश्वर अविद्वान् कभीनहीहोता सदापूर्ण-
ज्ञानऔरपूर्णविद्यावान रहताहै सोजैसाज्ञान परमेश्वरकी वि-
द्यामेंहै वैसाहीशब्दअर्थसम्बन्ध औरसंहिताअर्थात्पूर्वा-

परमन्त्रोंका सम्बन्धभीमन्त्र जिसमें पूर्वभापीछेलिखनाचाहिए सो सबपरमेश्वरहोनेंसक्ता हैं इसमें कुछसन्देहनहीं जैसाजगत्कासंयोगवावियोगहोताहै वैसावेदविद्याकासंयोगवावियोगकभीनहीं होता क्योंकिपरमेश्वर औरपरमेश्वरके विद्यादिकसबगुणभीनित्यहैं इससे वेदविद्यानित्यहीहै जोऐसानमानेगाउसकेमतमें अनवस्थादोषआवेगा क्योंकि कोईविद्यापुस्तकस्वयंभू औरईश्वरकारचा न मानेगा तोसबपुस्तकोंके सत्य वा असत्य का निश्चय कैसे करैगा क्योंकिएकपुस्तकस्वतःप्रमाणरहैगा औरउसकेप्रमाणसे वाअप्रमाणसेसत्यवामिथ्यापुस्तककानिश्चयहोसक्ताहै औरजोकोईपुस्तकस्वतः प्रमाणहीनहोगा तोकोईपुस्तकका निश्चयनहीहोसकेगा क्योंकिएकमनुष्यनेअपनीबुद्धिकीकल्पनासे पुस्तकरचा दूसरेनेउसकाअपनीबुद्धिसे खण्डनकरदिया दूसरेकातीसरेने तीसरेका चौथेने ऐसेहीकिसीपुस्तकका प्रमाणनहोगा फिरअनवस्थाभ्रमकेहोनेसेसदारहैगो इससेवेदपुस्तकस्वतः प्रमाणहोनेसे परमेश्वरहीकारचाहै अन्यथानहीं क्योंकिऐसीसुगमसंस्कृतललितपद सत्यार्थयुक्त अनेकप्रयोजनऔरअनेकविद्यासहित स्वल्पअक्षरसुगमवेदहीकीपुस्तकहै अन्यनहीऔरजगत्केकिसीपदार्थका कुछभिन्नमनुष्यअपनीबुद्धिसेकरसक्ताहै परन्तुईश्वरस्वरूप औरउसके न्यायकारित्वादिक अनन्तगुणवेदपुस्तकमें जैसेलिखेहैं वैसालेख कोईसंस्कृतवाभाषापुस्तकमेंनहीहै क्योंकिकिसीकोवैसी बुद्धिनही होसक्ती किपरमेश्वरकास्वरूपऔरयथावत्गुणलिखसकै सोऐसा ही जानना चाहिए किहमलोगोंपर अत्यन्त कृपासे परमेश्वरने अपनास्वरूप औरअपनेसत्यगुणवेदपुस्तकमेंप्रकाशकरदिएहैं जिससे किहमलोगभीपरमेश्वरकास्वरूप औरगुणवेदपुस्तकसेजानके अत्यन्तआनन्दयुक्तहोतेहैं सोपक्षपातकोछोड़के यथावत्विद्यायुक्त पुरुष अत्यन्तवेदार्थका विचारकरैगा सोईअनन्तसुखको पावेगा अन्यथानहीं प्रश्न ऐसेही सबमनुष्यएक २ पुस्तकको परमेश्वरकी

मानते हैं वैसेकि बाबिल, इञ्जील और कुरान् वैसे आपलोगोंको भीवेदमें आग्रह है जिससे कि अत्यन्त स्तुतिकरते हैं जोवेदपरमेश्वरका रचाहोगा तोवेपुस्तक परमेश्वरकेरचे क्योंनहीं इसमें क्या प्रमाण है कि वेदही ईश्वरकारचा है और अन्यपुस्तकनहीं उत्तर सबमनुष्योंकाप्रमाणनहीं होसक्ता क्योंकि सबमनुष्यपूर्णविद्यावाले आप्त और पक्षपातरहितनहीं होते जिससे कि सबमनुष्योंके कहनेकाप्रमाणहोजाय जोआप्त और पक्षपात रहितहोवें उन्हींका प्रमाण करनायोग्यहै अन्यकानहीं क्योंकि जोमूर्खों का हमलोग प्रमाण करैं तोबड़ाभारीदोषआजायगा वेअन्यथाभाषणकरतेहैं और अन्यथाकर्मभीकरतेहैं इससे आप्तलोगोंकाप्रमाणकरनाचाहिए और वेद के सामने इञ्जील और कुरानादिकी कुछ गणनाभी नहीं होसक्ती किन्तु उनमेंविद्याकीबाततोकुछनहीं है। जैसेकिकहाने होयवैसेवेपुस्तकहैं प्रश्न आप्तकानिश्चयकैसेहोसक्ता है वेदवाले कहतेहैं किहमारीबातस[illegible]हतेहैं किहमलोगोंकी बातसत्यहै इसमेंक्याप्रमाणहै कियहीबातसत्यहै अन्यनहीं उत्तर इसकासमाधान तृतियसमुल्लासमेंकरदियाहै किऐसालक्षणवालाआप्तहोताहै और प्रत्यक्षादिकप्रमाणोंसे सत्यऔरअसत्यकायथावत्निश्चयभीहोताहै उनसेनिश्चयकरके सत्यकोमाननाचाहिए असत्यकोनहीं प्रश्न वेदकिसी देशविशेष और भिन्न देशमें रहनेवाले मनुष्योंकेहितुहैं वासबमनुष्योंकेहितुहैं उत्तर वेदसबमनुष्योंकेवास्तेहैं क्योंकि जोविद्या और सत्यबातहोतीहै सोसबकेहितु होतीहै और वेदमें कहीं नहींलिखा किइसदेशवालेमनुष्योंकेहितुवेदबनायागया और अधिकारभीइनकाहै औरइनकानहीं जैसेकि बाबिल, मूसा और इसराईल कुलादिकोंकेवास्तेपुस्तकआई और मुहम्मदादिकोंकेहितुकुरान् यहबातमनुष्योंकोहोतीहै अपनेदेशवालेके ऊपरप्रीति और अन्यकेऊपरनहीं जोईश्वरकाबचन सोतो सर्वज्ञ और सबजगत्कास्वामीहै इससे तुल्यकृपा और तुल्यदृष्टिहीर-

रहैगा अन्यथा नहीं ऐसोपुस्तक वेदही कोहै अन्यनहीं क्योंकि अन्यपुस्तकोंमें ऐसीविद्यानहीं औरकहानीकोनांईउनमेंकथाहै औरपक्षपात बहुतसेहैं इस्से वेदपुस्तकही ईश्वरकृतहै अन्यनहीं इसमेंकिसीकोजो सन्देहहोय तोपक्षपातकोछोड़के तीनोंपुस्तकों काविद्याप्रीति औरसज्जनतासे विचारकरैं तबयहीनिश्चयहोगा किवेदपुस्तकही ईश्वरकृतहै अन्यनहीं प्रश्न वेदोंकासबमनुष्योंको पढ़नेऔरपढ़ानेका अधिकारहैवानहीं उत्तर इसकाविचार तृत यसमुल्लासमें वर्णव्यवस्थाके कथनमें कियागयाहै वहोजानले-ना इसप्रकारसेवहांलिखाहै किजोमूर्खहैवहशूद्रहै उसकापढ़ना वाउसको पढ़ाना व्यर्थहै क्योंकिउसको बुद्धि न होनेसे कुछ विद्यानआवेगी अन्यव्यवस्थाचतुर्थ समुल्लासमें देखलेनो प्रश्न शूद्रादिकोंकावेदसुन्नेकाअधिकारहैवानहीं उत्तर जिसकोकानइन्द्रियहै औरउसकेसमोपजोशब्दहोगा उसकोअवश्यसुनेगा सोवेदकाशब्दअथवाअन्यशब्दहोवैवहसबकोसुनेगापरन्तुशूद्रमूर्खहोनेसे सुनकेभीकुछनकरसकेगा इसहेतुजहांतहांनिषेधलिखाहै किशूद्रकोवेदनपढ़नाचाहिए किउसकोकुछआतानहीं प्रश्न वेदव्यासजीनेवेदरचेहैं इस्से उनकानाम वेदव्यासपड़ाहै यहबातभागवतमें लिखीहै फिरआपकैसा बातकहतेहैं किवेदईश्वरनेरचेहैं उत्तर यहबातअत्यन्तमिथ्याहै क्योंकिव्यासजीनेभी वेदपढ़ेथे औरअपने पुत्रशुकदेवादिकोंको पढ़ायेथे औरउनकापितापराशर उसका पितामहशक्ति और प्रपितामह वशिष्ठब्रह्मा औरबृहस्पत्यादिकों नेभीपढ़ेथे जोव्यासकेबनाये वेदहोते तोवकैसेपढ़ते क्योंकि व्यास जीतो बहुतपोछेभयेहैं औरजो उनकानाम वेदव्यास पड़ाहै सो इसरीतिसेपड़ाहै कि । वेदेषुव्यासोविस्तारोनामविस्तृतावुद्धिर्यस्यासवेदव्यासः ॥ व्यासजीनेवेदोंकोपढ़के औरपढ़ायेहैं जिस्से सब जगत्में वेदकापठनऔरपाठनफैलगया औरउनकीबुद्धि वेदोंमें विद्यायुक्ताथी किवथावत्शब्दअर्थऔरसम्बन्धसे वेदोंकोजानतेथे इ-

से इनकानामवेदव्यासरक्खागया पहिले इनकानाम कृष्णद्वैपायनथा वेदव्यासनाम विद्याकेगुणसेभयाहै इससे भागवतमें जोबातलिखीहै सोवेदोंकीनिन्दाकेहेतुलिखीहै उसकायह अभिप्रायथा वेदोंकीनिन्दामें किजिसनेवेदरचेहैं उसीनेभागवतभीरचाऔरवेदोंकेपढ़नेसे व्यासजीकोशान्तिभीनभई किन्तुभागवतकेरचनेसेउनकोशान्तिभई औरभागवत वेदोंकाफलहैं अर्थातवेदोंसेभीउत्तमहै सोयहबातदुर्बुद्धिजीवोपदासउसकीकहीहै क्योंकि व्यासजीकेनामसे उसनेसब भागवतरचाहै इसहेतुकि व्यासजीकेनामलिखनेसे सबलोगप्रमाणकरें औरवेदोंकीनिन्दासे मेरेग्रन्थको प्रवृत्तिकेहोनेसे सम्प्रदायकीवृद्धि औरधनका लाभहोय इससे सज्जनलोग इसबातकोमिथ्याहीमानें प्रश्न वेदईश्वरनेसंस्कृतभाषामेंक्योंरचे क्याईश्वरकी भाषासंस्कृतहीहै जोदेशभाषामेंरचते तोसबमनुष्यपरिश्रमकेविना वेदोंकोसमझलेते औरसंस्कृतजाननेकेहेतु व्याकरणादिक सामग्रीपढ़नी चाहिए इसकेबिना वेदोंकाअर्थ कभीमालूमनहोगा उत्तर संस्कृतमें इसहेतुवेदरचेगयेहैं किछोटेपुस्तकमें सबविद्याआजांय औरजोभाषामेंरचते तोबड़े२ ग्रन्थहोजाते औरएकदेशहीका उपकारहोता सबदेशोंकानहीं औरजितनीदेशभाषाहैं उनमेंरचतेतबतोपुस्तकोंकापारावारहीनहीहोता इससे ईश्वरनेसर्वभाषाओंमेंवेदरचेहैं कि किसीदेशकी भाषानरहै औरसबभाषा जिससेनिकलें क्योंकिसंस्कृत किसीदेशकीभाषानहीं जैसेईश्वरकिसीदेशकानहीं किन्तुसबदेशोंकास्वामीहै वैसेहीसंस्कृतभाषाहैकिकिसीएकदेशकीनहीं प्रश्न देवलोग औरआर्यावर्त्त देशकी प्रथमभाषासंस्कृतथी इसीकोमुसल्मानलोग जिन्नभाषाकहतेहैं क्योंकिजैसीप्रवृत्ति संस्कृतकीपहिलेआर्यावर्त्त मेंथी वैसीकिसीदेशमेंनथी जिसदेशमें कुछप्रवृत्तिभईहोगी सोआर्यावर्त्तहीसे भईहोगी अबभीआर्यावर्त्तमें अन्यदेशोंसेसंस्कृतकीअधिकप्रवृत्तिहै इससे यहनिश्चयहोताहै किसंस्कृ

तभाषाआर्यावर्त्तकीमुख्यभाषाथी उत्तर यहदेवलोगकीभाषानही क्योंकि बृहस्पतिःप्रवक्ताइन्द्रआध्येता। यहमहाभाष्यकावचनहै इन्द्रनेबृहस्पतिमेंसंस्कृतपढ़ी औरबृहस्पतिनेअङ्गिराप्रजापतिसे, उन्नेमनुसे, मनुनेविराटसे, विराट्नेब्रह्मासे ब्रह्मानेहिरण्यगर्भादिकदेवोंसे, उन्नेईश्वरसे, जोदेवलोगकीभाषाहोती तोवेक्योंपढ़तेऔरपढ़ाते क्योंकिदेशभाषातोव्यवहारसेपरस्परआजातीहै इस्से देवलोगकीसंस्कृतभाषानहीं औरजबब्रह्मादिकोंकी भाषानहीं तोआर्य्यावर्त देशवालोंकी कैसे होगी कभीनहीं परन्तु ऐसा जानाजाताहै किआर्य्यावर्तदेशमेंपहिलेप्रवृत्तिअधिकथी सबऋषि मुनिऔरराजालोग आर्य्यावर्तदेशवासीलोगोंने परम्परासेसंस्कृतपढ़ा औरपढ़ायाहै इस्सेआर्यावर्त्त देशकीभी संस्कृतभाषानहीं औरजोमुसल्मानलोगइसकोजिन्नभाषाकहतेहैं सोतोकेवलईर्ष्यासेकहतेहैं जैसेकिआर्यावर्तदेशवासियोंकानामहिन्दूरखदिया सो यहसंस्कृतजिन्नभाषाभीनहीं क्योंकिजिन्नतोभूतप्रेत पिशाचोंहीका नाम है भूतप्रेतऔरपिशाचहोतेहीनहीं औरजोहोतेहोंगे तोलोकलोकान्तरमें होतेहोंगे यहांनही फिरउनकीभाषा यहां कैसेआसकेगी इस्से यहबातअत्यन्तमिथ्याहै क्योंकिउनकोऐसीपदार्थविद्या औरधर्माधर्मविवेककोबुद्धिहीनहीं फिरयेसंस्कृतविद्यासर्वोत्तमकोकैसेकहसकें वारचसकें हैं औररचतेहोतेतोअन्यदेशोंमेंभीरचलेतेतथाकिसीपुरुषसेअबभीकहते इस्से ऐसीबात सज्जनलोगोंको नमाननाचाहिए प्रश्न देशभाषाभिन्न२ सबकैसे बनगई औरकिस्सेबनी उत्तर सबदेशभाषाओंका मूलसंस्कृतहै क्योंकिसंस्कृत जबबिगड़तीहै तबअपभ्रंशकहाताहै फिरअपभ्रंशसेदेशभाषासेहोतीहै जैसेकिघटशब्दसेघड़ा घृतशब्दसेघीदुग्धशब्दसेदूधनवीतशब्दसेनैनू अक्षिशब्दसेआंखकर्णशब्दसेकान नासिकाशब्दसेनाकजिह्वाशब्दसेजीभ मातरशब्दसेमादरयूयंशब्दसेयू वयंशब्दसेवी गूढशब्दकागोड़ इत्यादिकजानलेना औरएकपदार्थकेब-

ऋतनामहैंजैसेकिगौःनामगाय.ग्मा,ज्मा,क्ष्मा,क्षा,क्षमा,क्षोणी,
क्षिति,अवनी,उर्वी,पृथ्वी,मही,रिपः,अदितिः,इडानिर्ऋतिः,भूः,
भूमिः,पूषाः,गातुः,गोत्रा,ए२१नामपृथिवीकेनामहैं सोभिन्न२दे-
शोंमेंभिन्न२, २१नामोंमेंसेभिन्न२काअपभ्रंशहोनेसे भिन्न२भाषा
बनजातीहै औरएकनामबहुतअर्थोंकाहोताहै जैसेकिसिंह,वा-
नर,घोड़ा,सूर्य्य, मनुष्य,देव औरचोर इत्यादिकानाम हरिहै
इस्से भीभिन्न२देशमें भिन्न२भाषाहोतीहै क्योंकिकिसीदेशमेंसिंह
नामसें उसपशुकाव्यवहारकिया किसीदेशमेंहरिशब्दसेवानरका
ग्रहणकिया किसीदेशमेंहरिशब्दसेघोड़ेकोलिया किसीदेशमेंह-
रिशब्दसेसूर्य्यकोलिया किसीदेशमेंहरिशब्दसेचोरकोलिया इस
हेतुदेशभाषाभिन्न२होगई औरमनुष्योंकाउच्चारण भेदसेभिन्न२
भाषाहोजातीहै जैसेकि ज्ञ यहदोनोंअक्षरमें मिलनेसे अक्षर
यहज्ञहोताहै सोआजकालइसकालेखऐसाहोगयाहै ज्ञ इसएक
अक्षरकेअन्यथाउच्चारणसे तीनभेदहोगयेहैं गुजरातीलोगगका-
र औरनकारकाउच्चारणकर्तेहैं महाराष्ट्रादिक दाक्षिणात्यलोग
दऔरनकारकाउच्चारणकर्तेहैं औरअन्यलोगगकार औरयकार
काउच्चारणकर्तेहैं तथातालव्यश मूर्द्धन्यष औरदन्त्यस इनतीनों
केस्थानमें बंगालीलोगतालव्यशकारकाउच्चारणकर्तेहैं मध्यऔर
पश्चिमदेशवालेतीनोंकेस्थानमें दन्त्यसकारकाउच्चारणकर्तेहैं त-
थाकिसीकोजोभकठिनहोताहै वहप्रायःशब्दोंकोअन्यथाउच्चारण
कर्ताहै औरजिसदेशमेंविद्याकालेशभीनहोय उसदेशमेंसङ्केतव्य-
वहारकरनेकेहेतु शब्दोंकाकरलेतेहैं किइसशब्दसेइसकोजानना
औरइसशब्दसेइसकोजानना जैसेदाक्षिणात्यलोगोंने घीकानाम
तूपररखलिया औरउत्तरदेशपर्वतवासियोंने घीकानामघोखार
रखलिया औरगुजरातियोंने चावलकानामघोखाररखलिया इसें
भीदेशदेशान्तरको भाषाभिन्न२होगईहै इसीप्रकारके अन्यकार
णोंकोभीविचारलेना अब वेदमें अश्वमेधादिक यज्ञोंकोक्रिया जं

लिखीहै सोजैसीबालकोंकीबातहोय कुछबुद्धिनापनेकोनहोदी-खती क्योंकिघोड़ेको सबजगह फिरातेहैं उसघोड़ेकोई जोबांधले उस्से फिरयुद्धकर्तेहैं सोव्यर्थयुद्धबनालेतेहैं मित्रमेंभीऐसीबातसेवैर होजाताहै इत्यादिकऐसीरबुरीबात जिसमेंलिखीहैं सहवेदईश्व-रकाबनायाकभी नहोगा उत्तर येसबबातमिथ्याहैं बेदमेंएकभीन-हींलिखीहैं किन्तुलोगोंनेकहानी बनालियाहै प्रश्न ईश्वरनेऐसा क्योंनहीकिया किबिनापढ़ने औरसुननेसे सबमनुष्योंकोयथावत् आजाते तबतोईश्वरकी दयालुताजानपड़ती अन्यथाक्यादयालु-ता किबड़ेपरिश्रमसे बेदकेअर्थोंको मनुष्यलोगजानतेहैं उत्तर फिरभीस्वतन्त्रताहानि दोषआजाता क्योंकिपरमेश्वरकेप्रेरणा सेबेदउनकोआजांय अपनेपरिश्रमऔरस्वतन्त्रतासेनहो औरजो परीश्रमबिनापदार्थमिलताहै उसमेंप्रसन्नताभीनहींहोती बिना परीश्रमकुछभी कामनहींहोता जैसेकीखानापीना उठनाबैठना कहनासुननाआनाऔरजाना इत्यादिकपरीश्रमहीसेहोतेहैं अ-न्यथानहीं परीश्रमकेबिनाकुछनहीहोता औरइतनीबड़ीजोपदा-र्थविद्यासोकैसेहोगी जीबकोकानआदिकइन्द्रिय बुद्धिऔरप्राणक-हने औरसुननेकासामर्थ्यभीदियाहै औरविद्याकाप्रकाशभी कर दियाहै इस्से ईश्वरदयारहितकभीनहीहोते औरजीवकोजोस्व-तन्त्ररखदियाहै यहीबड़ीदयाईश्वरकीहै औरकोईभीनहीं शंका करैउसकासमाधान बुद्धिमान्लोगविचारकरकेदेखैं ईश्वरऔ-रबेदकेविषयमेंसंक्षेपसेकुछथोड़ासालिखदिया औरजोविस्तारसे देखाचाहै सोबेदादिकसत्यशास्त्रोमेंदेखलेवै इसकेआगेजगत्कीउ-त्पत्तिस्थिति औरप्रलयकेविषयमेंलिखाजायगा ॥

इति श्री मद्दयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा विरचिते सप्तमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ७ ॥

अथ जगदुत्पत्ति प्रलयविषयान्व्याख्यास्यामः ब्रह्मविदाप्नोति परं तदेषाभ्युक्ता सत्यंज्ञानमनंतं ब्रह्मयोवेद निहितंगुहायांपरमेव्योमन् प्रतिष्ठिता सोऽश्नुते सर्वान्कामान्ब्रह्मणासह विपश्चितेति तस्माद्वाएतस्मादात्मनआकाशःसंभूतः आकाशाद्वायुः वायोरग्निः अग्नेरापः अद्भ्यः पृथिवी पृथिव्याओषधयः ओषधिभ्योन्नंअन्नाद्रेतः रेतसःपुरुषः स-वाएषपुरुषोन्नरसमयः ४ तैत्तिरीयशाखाकीश्रुतीहै सदेवसौम्येदमग्रआसीदेकमेवाद्वितीयंतदैक्षत बहुःस्यांप्रजायेयेति यहछांदोग्यउपनिषदकीश्रुतीहै नासदासीन्नोसदासीत्तदानीन्नासीद्रजोनव्योमा परोयत् किमावरीवःकुहकस्यशर्मण्यम्भः किमासीद्गहनंगभीरं यह ऋग्वेद की श्रुति है आत्मावाइदमग्रआसीन्नान्यत् किंचन्मिषत् सईक्षतलोकान्नुसृजाइति यहऐतरेयब्राह्मण कीश्रुतिहै इत्यादिक वेदादि कीश्रुतियों से यहनिश्चित जानाजाताहै किएकअद्वितीय सच्चिदानन्दरूप परमेश्वरही सनातनथा औरजगत्लेशमात्रभी-नहीथा उसनेसबजगत्कोरचा सोइन मंत्रोंमेंजितनेनामहैं वेसब परमेश्वरकेहीहैं इनकाअर्थ प्रथम समुल्लास मेंकरदियाहै वहांदेखलेना उसपरब्रह्मकोजो मनुष्यजानताहै उसअनन्तपंडित परमेश्वरकेसाथ मिलके उसके सबकामपूर्णहोजातेहैं वह परमेश्वर एक अद्वितीयथा दूसराकोईनहीथा उन्ने जगदुत्पत्तिकीइच्छाकिईकिबहुतप्रकारकी प्रजाओंमेंउत्पन्नकरूं उसीक्षणमें नानाप्रकारकोप्रजाउत्पन्नहोगई सोइसक्रमसे पहले आकाशको उत्पन्नकिया किजोसबजगतका निवासकरनेकास्थान सोआकाश अत्यन्तसूक्ष्म पदार्थहैजोकिअनुमानसेभीकठिनतासेसमझनेमेंआताहै उससे स्थूल द्विगुणवायुउत्पन्नभया उससे अग्नित्रिगुणभया त्रिगुणअग्निसे चतुर्गुणजलभया और जलसेपंचगुणभूमिभई भूमिसेऔषधि औषधियोंसेवीर्यवीर्यसेशरीर इसप्रकारआकाशसलेकेतृणपर्यन्तपरमेश्वर नेसृष्टिरचलिई सोशब्दऔर संख्यादिकगुणवालाआकाशरचाफिर वायुआदिक चारोंके परमाणुरचे परमाणुसाठ मिलाकेएकअ

णुरचा दोअणुसे एकद्व्यणुक और तीनद्व्यणुकसे एक त्रसरेणु और अनेकत्रसरेणुकोमिलाके यहजोदेखपडताहै सबजगत इसकोरच दिया (प्रश्न) परमेश्वरको क्याप्रयोजनथा किजगत्‌कोरचा (उत्तर) इससे पूछनाचाहिये कि प्रयोजनक्याकहाताहै यमर्थमधिकृत्यप्रवर्त्तते तत्प्रयोजनम् यह गोतममुनिजीकासूत्रहै इसकायहअभिप्राय है किजिसपदार्थकी अधिकमानके जीवप्रवृत्तहोवै उसको कहनाप्रयोजन सो परमेश्वरपूर्णकामहै उसको कोईप्रयोजन अधिक नहीहै क्योंकि उससे कोईपदार्थ उत्तम वाअप्राप्तनही फिर प्रयोजनका जोप्रश्नकरनासोअयुक्त है (प्रश्न) जगत्‌केरचनेकोइच्छाकिईसो बिनाप्रयोजनसे इच्छानहीहोसक्ती (उत्तर) इच्छाकेजगत्‌मेंतीन कारणदेखपडतेहैं पदार्थकीअप्राप्ति और बहुउत्तमहोवै तथा अपनेसेभिन्नहोवै परमेश्वरमें तीनोंमेसेएकभीनहीं क्योंकिसर्वशक्तिमान्‌केहोनेसे कोईपदार्थकी अप्राप्तिकभीनहीहोगी तब परमेश्वरसे कोईपदार्थ उत्तमभीनही और सर्वव्यापककेहोनेसे अत्यन्त भिन्न कोईपदार्थनही इससे इच्छाकीघटना ईश्वरमेंनहीहोसक्ती (प्रश्न) जगत्‌रचनेकी प्रवृत्तिबिनाप्रयोजन वाइच्छाके कभीनहीहोसक्ती (उत्तर) अच्छा इच्छा तोनहीबनसक्ती तथा प्रयोजन भीनहीबनसक्ता परन्तु इच्छा और प्रयोजन मानोतो जगत्‌काहोना वहीइच्छा और प्रयोजनमोनलेओ इससे भिन्नइच्छा वा प्रयोजन कोईनही क्योंकि जोऐसामानेंकि अपनेआनन्दकेवास्ते जगत्‌को रचा उससे हमलोगपूछतेहैं किजबतक जगतनहीरचाथा तबपरमेश्वर क्यादुःखीथा जोकिआनन्दकेवास्ते जगतकोरचासो दुःखका परमेश्वरमें लेशमात्रभीसंबन्धनही जो आपऐसेपूछनेमेंआग्रहकरैं किजगतकेरचनेमें औरभीकुछप्रयोजनहोगा तोआपसेमैं पूछताहूं किजगतके नहीरचनेमें क्याप्रयोजनहै जोआपकहैंकिजगतकेरचनेमेंजगतकीलीलादेखनेसेआनन्दहोताहोगा और जगतकेजीवभक्तिकरैं तोजबतकजगतकी लीलानहीदेखीथी औरजग

त् कोजीव भक्तिभी नहीं करते थे तब परमेश्वर अवश्य दुःखी होगा इस्से ऐसा प्रश्न व्यर्थ होता है इसमें आग्रह नहीं करना चाहिये रचनासे ईश्वर के सामर्थ्य का सफल होना ही रचना का प्रयोजन है प्रश्न ईश्वर ने जगत रचा सो जगत रचने की सामग्री थी अथवा अपने में से ही जगत रचा वा अपने ही सब जगत रूप बन गया उत्तर इसका विचार अवश्य करना चाहिये कि बिना सामग्री के कोई पदार्थ नहीं बन सक्ता क्योंकि कारण के बिना किसी कार्य की उत्पत्ति हम लोग नहीं देखते सो कारण तीन प्रकार का होता है एक उपादान दूसरा निमित्त और तीसरा साधारण सो उपादान यह कहाता है कि किसी से कुछ ले के कोई पदार्थ बनाना सो कार्य और कारण का इसमें कुछ भेद नहीं होता दोनों एक ही रूप होते हैं जैसे मट्टी को ले के घड़े को बनाते हैं कपास को ले के वस्त्र सोने को ले के गहना लोहे को ले के शस्त्र और काष्ठ को ले के किवाड़ आदिक सो घड़ादिक जितने हैं वे मृत्तिकादिकों से भिन्न वस्तु नहीं हैं किन्तु वही वस्तु है इस प्रकार का उपादान कारण जानना दूसरा निमित्त कारण जो कि उन कुलालादिक शिल्पी लोग नाना प्रकार के पदार्थों को रचने वाले निमित्त कारण में जानना क्योंकि मृत्तिकादिकों का ग्रहण करके अनेक पदार्थों को रचते हैं किन्तु अपने शरीर से पदार्थ लेके नहीं रचते इस्से ऐसा निमित्त कारण होता है कि जो पदार्थ बनावे उस्से भिन्न सदा रहै और उस पदार्थ को रचले तीसरा साधारण कारण होता है जैसा कि प्राण काल देश चक्र और सूत्रादिक क्योंकि ये सब कर्त्ता के आधीन और हेतु रहते हैं इस्से अवश्य विचार करना चाहिये परमेश्वर इस जगत् का तीनों कारणों में से कौन कारण है अर्थात् तीनों कारन है जो उपादान कारण होवे तो क्षुधा तृषा शीतोष्ण भ्रम जन्म और मरणादिक दोष ईश्वर में आ जायंगे क्योंकि उपादान से उपादेय भिन्न नहीं होता अर्थात् ईश्वर से जगत भिन्न नहीं होगा इस्से उक्त दोष अवश्य ही आवेंगे इसमें जो कोई ऐसा कहै कि जैसे स्वप्नावस्था में मिथ्या पदार्थ अनेक देख पड़ते हैं और रज्जु में सर्प बुद्धि

तोहै इत्यादिक सब कल्पित भ्रान्तपदार्थहैं उनसे वस्तु में कुछदोषनहीआसक्ता स्वप्नसेजीवकी कुछहानि नहीहोती और सर्पसरज्जुको उनसे पूछना चाहिये सर्प कोभ्रान्ति रज्जुमें और स्वप्नमें हर्षशोकादिक दुःख किसकोभये जोवह कहैकि ब्रह्मकोहीभयेफिर वह ब्रह्म शुद्धनही रहा तथा ज्ञानस्वरूप नहीरहा क्योंकि भ्रम जो होताहै सो अज्ञानसेही होताहै बिना अज्ञानसेनही फिर वेदोंमें सर्वज्ञ सदाभ्रान्ति रहित ब्रह्मको लिखाहै उसको क्या गतिहोगी तथा बन्धमोक्षादिक दोषभी ब्रह्ममेंआजांयगे जोवहकहैकि भ्रमसेबन्ध और मोक्षहै वस्तुमेनही फिर भी नित्यशुद्ध बुद्ध मुक्तस्वभाव परमेश्वरको वेदमेंलिखाहै सोबात झूठीहोजायगी यहबडा दोषहोगा और(जो बद्धहोगा सो जगतको कैसेरचसकेगा और जोमुक्तहोगा सोजगतरचनेकीइच्छाहीनकरेगा)फिरपरमेश्वरसे जगतकैसेबनेगा औरजोकोईकेवलनिमित्तकारणमानै तो जगतकासाक्षातकर्तानहीहोगा किन्तुशिल्पीवत्होगा अथवाउसको महाशिल्पीकहो और उसकेपास सामग्रीभी अवश्यमाननी चाहिये फिरजो सामग्री मानेंगे तोजगतभी नित्य होगा क्योंकि जिस्से जगतबनाहै वहसामग्रीईश्वरके पासरहतीहीहै फिर एकअद्वितीय जगतकी उत्पत्तिके पहिले परमेश्वर था जगतलेशमात्रभीनहीथा यहवेदादिक शास्त्रोंकाप्रमाणोंसे कहनावहव्यर्थ होगा)इस्से उननिमित्त कारण माननेसेभीवह दोषआवेगा और जोसाधारणकारणमानें तोभीजडपराश्रितरचनेमें असमर्थईश्वर होगा जैसेकुलालादिकके बिना घटादिकार्य्य पराधीनहोतेहैं क्योंकिजैसेचक्रादिकके बिना कुलालादिक घटादिकनहीरचसक्तेहैंफिरवहईश्वरपराधीनहोनेसे सर्वशक्तिमान नहीरहेगा क्योंकि(कोई कासहायकिसीकाममेंनले औरअपनीशक्तिसे सबकुछकरै उसको कहतेहैंसर्वशक्तिमान्)सोसाधारणकारणजबमानाजायगा तोसर्वशक्तिमान्ईश्वरकभीनरहेगा इस्से तीनोंप्रकारसे दोषआतेहैं ॥

इसवास्ते अत्यन्तविचारकरनाचाहिए जिसमेंकिकोईदोषनआवे इसमेंयह विचारहै किईश्वर सर्वशक्तिमान्है जो सर्वशक्तिमान् होताहै ~~उसमेंअनन्तसामर्थ्य सामग्री होतीहै~~ सोवहसामग्रीस्वाभाविकहै जैसाकिस्वाभाविकगुणगुणीकासम्बन्धहोताहै वहदूसरापदार्थनहींहै औरएकभीनहीं उससामग्रीसेसबजगत्कोपरमेश्वरनेबनाया(प्रश्न)जोगुणकीनांईस्वाभाविकसामग्रीहै सोगुणीसे भिन्नकभीनहीहोती क्योंकिस्वाभाविकजोगुणहै सोगुणीसे भिन्न कभीनहींहोता इस्से क्याआयाकिसामग्रीसहितपरमेश्वर जगत् रूपबनगया उत्तर ऐसानकहनाचाहिए क्योंकिजोजिसकापदार्थहोताहै वहउसीकाकहाताहै/ सोपरमेश्वरका अनन्तसामर्थ्य स्वाभाविकहीहै अन्यसेनहीलिया वहसामर्थ्य अत्यन्तसूक्ष्महै औरस्वाभाविककेहोनेसे परमेश्वरका विरोधभीनहीं किन्तुउसीमें वहसामर्थ्य रहताहै उस्से सबजगत्कोईश्वरनेरचाहै इस्सेक्याआया किभिन्न पदार्थनलेके जगत् के रचनेमे उपादान कारणजगत् का परमेश्वरही हुआ क्योंकि अपने से भिन्न दूसरा कोई पदार्थ नही है कि जिसे लेके जगत् को रचे सो अपने स्वाभाविक सामर्थ्य गुणरूपसे जगत् कोरचा इस्से सब जगत्का उपादानकारणपरमेश्वरहीहै(परन्तुआप जगतरूपनहीबना तथा अपनीशक्तिसे नानाप्रकारके जगत् रचने से दूसरेके सहायबिना इस्से जगत्कानिमित्त कारणईश्वरहीहै अन्यकोईनहीं तथासाधारणकारणभीजगत्काईश्वरहै क्योंकिकिसीअन्यपदार्थके सहायसेजगत्कोईश्वरनेनहीरचा किन्तुअपनीसामर्थ्य सेजगत्कोरचाहै इस्से साधारण कारणभी जगत्काईश्वरहै अन्यकोई नहीं औरजोअन्यकोईहोता तोविरुद्धकार्यजगत्मेंदेखपडते विरुद्धकार्योंकोहमलोगजगत्मेनहीदेखतेहैं इस्से जगत्केतीनों कारणपरमेश्वरहीहैं अन्यकोईनहीं(प्रश्न)परमेश्वरनिराकारऔरव्यापक है अथवानही(उत्तर)परमेश्वरनिराकारऔरव्यापकहीहै क्यों-

कि निराकार न होता तो एकदेश में रहता और कहीं देख भी पड़ता सो एकदेश में नहीं है और कहीं देख भी नहीं पड़ता इस से निराकार ही ईश्वर को जानना चाहिए और जो निराकार न होता तो सर्वव्यापक न होता तो सर्वात्मा और सब जगत् का अन्तर्यामी न होता सो सब जगत् का आत्मा सर्वान्तर्यामी के होने से व्यापक जो ईश्वर है अन्यथा नहीं (प्रश्न) सब जगत् का रचन और धारण ईश्वर किस प्रकार से करता है (उत्तर) जैसा जगत् में हम लोग देखते हैं वैसा ही ईश्वर ने जगत् रचा है परन्तु इसमें यह प्रकार है कि आकाश तो परमाणु से भी सूक्ष्म है और वायु के परमाणु का यह स्वभाव देखने में आता है कि नीचे ऊंचे और समदेश में गमन करने वाले परमाणु हैं क्योंकि जो त्वचा इन्द्रिय से प्रत्यक्ष वायु को हम लोग वैसा ही स्वभाववाला देखते हैं कभी ऊर्द्ध कभी नीचे और कभी तिरछा चलता है इस से हम लोग परमाणु का अनुमान करते हैं इसमें अन्य भी बहुत कारण हैं क्योंकि वायु में अनेक तत्व मिले हैं परन्तु हम लोग मुख्य को गणना से इस बात को लिखते हैं तथा अग्नि का ऊर्द्ध जल के तथा नीचे और पृथिवी का समता अनेक विधि गति को देख के परमसूक्ष्म परमाणु रूप जो तत्व उनका भी अनुमान करते हैं कि वे भी इसी प्रकार के हैं सो परमेश्वर ने पृथिवी में अनेक तत्वों का मेलन किया है क्योंकि जो मेलन न होता तो तत्वों के स्वाभाविक गुण पृथिवी में न देख पड़ते जैसे कि वायु न होता तो पृथिवी में स्पर्श भी न होता तथा अग्नि, जल और आकाश न होते तो रूप रस और पोल भी न देख पड़ते इस से क्या जाना जाता है कि सब में सब तत्व मिले हैं सो पृथिवी और जल के परमाणु अधोगामी स्वभाव से हैं अग्नि ऊर्द्ध गमन और वायु तिरछे गमन करने वाला है उन सब के परमाणु भी वा अधिक न्यून मिलने से स्थिरता वा गमन पदार्थों के होते हैं जैसे कि पृथिवी और जल नीचे जाते हैं और अग्नि तथा वायु ऊपर और अनेक विधि चलते हैं फिर मिला भया पदार्थ कहीं न हीं आसक्त वा अधिक न्यूनता तत्वों के मिलाने से जितनी जिसकी गति परमेश्वर ने रची है

उतनीहीहै।तौहै अन्यथानहीं औरसबसे बलवान्वायुहै वायुके आधारसेसबलोगोंकोहमलोगदेखतेहैं जैसेकिइसपृथिवीकेचारो ओरवायुअधिकहैतथावायुमेंअन्यतत्वभीमिलेहुएदेखपड़तेहैंऔ- रवहवायु४९वा५०कोसतकअधिकहैउसकेऊपरथोड़ाहै सोज्यो- तिषविद्याकी गणनासेप्रत्यक्षहै उसवायुका आधारआकाशऔर आकाशादिकसबपदार्थोंका आधारपरमेश्वरहै सोजोसर्वव्याप- कनहोता तोआकाशादिकोंकासबजगत्मेंधारणकैसेकरता इससेप- रमेश्वरव्यापकहै व्यापककेहोनेसेसबकाधारणबनताहै अन्यथान- हीं औरजोसाकारएकदेशस्थपरमेश्वरकोमानेगा उसकेमतमेंधा- रण सबजगत्कानहोवैगा इत्यादिकबहुतदोषआवेंगे फिरदोप्र- कारकाव्यवहारहमलोगदेखतेहैं किएकतोलघुवेग औरगुरुत्वा- दिकगुणऔरआकर्षणभीपदार्थोंमेंहै क्योंकिजोहलकापदार्थ हो ताहै सोऊपरहीचलताहै औरगुरुनीचेकोचलताहै जैसेकिजल केपात्रमें तेलकोधाराजबदेतेहैं सोलघुकेहोनेसे तैलजलके ऊपर होआजाताहै कभीनीचेनहीरहता इसकायहकारणहै किजिस- मेंछिद्रअधिकहोगा उसमेंपोलऔरवायुअधिकहोगा वहलघुहो- गाऔरजिसमेंपोलऔरवायुथोड़ाहोगा वहगुरुहोगा जोकिसमी परअत्यन्तजुटजायगा वहीगुरुहोगा औरजोमिलेगापरन्तु उसके भीतरकुछअत्यन्तसूक्ष्मछिद्ररहैंगे जैसेकिलोहाऔरकाठ दोनों काभारतोतुल्यहोताहै परन्तु जलमेंदोनोंकोडारनेसे काठतोऊ- पररहेगा औरलोहानीचेचलाजायगा तथावस्त्रभीगनेसेनीचेच- लाजाताहै उसकायहकारणहै किउसकेछिद्रोंमे जलऊपरचला जाताहै सोऊपरसेजलकाभार औरसूतकाअधिकबटना औरपृ- थिवीके आकर्षणसे नीचेचलाजाताहै तथाकोईकाष्ठभी अत्यन्त भीगने औरचसरेवादिकके अत्यन्तमिलनेसे वहनीचे चलाजा- ताहै औरवेगभीपदार्थोंमेंदेखपड़ताहै जैसेमनुष्य,घोड़ा,हरिण वायुअग्न्यादिकमेंहैं तथाअग्निऔरसूर्य्य,पदार्थोंके अवयवोंको

भिन्न२ करदेतेहैं और जलतथापृथिवीयेपदार्थों से मिलनेऔर मि-
लानेवाले हैं सोजहांजिसका अधिकबलहोगा वहांउसकाकार्य्य
होगा जैसेकिवायुसूक्ष्मऔर लघुहोकेऊपर जाताहै तवचारोंओ-
रकोपृथिवीजल,त्रसरेणुयुक्त जिसस्थानसेवायुऊपरचढ़ा उसस्था-
नमेंचारोंओरसेगुरुवायुगिरताहै वहीअधिकचलनेऔरआंधीका
कारणहै औरवहीवृष्टिकाजलकेऊपरआकर्षणकेहोनेसे कारणहै
क्योंकिसूर्य्य औरअग्नि सबरसोंकाभेदकर्तेहैं फिरएजलादिकरस
सबऊपरचढ़तेहैं परन्तु उनमेंअग्नि वायुऔर पृथिवीकेभीपरमाणु
मिले हैं औरजलकेपरमाणुअधिकहैं फिरजबअधिकऊपरजला-
दिकोंकेपरमाणुचढ़तेहैं तबगुरुहोतेहैं अर्थातअधिकभारहोताहै
फिरवायुधारणउनकोनहीकरसक्ता वहांकावायुजलके संयोगसे
शीतलचलताहै उससे जलादिकोंकेपरमाणुमिलकै बादलहोजाते
हैं जबवेवायुसेबीचमेंपरस्परचलतेहैं वायुबन्दहोनेसेउष्णताहोती
है फिरवेपरस्परभिड़तेहैं औरघिसतेहैं इससे गर्जन औरबीजली
उत्पन्नहोतीहै फिरउष्णता औरबिजली केहोनेसे जलपृथिवीके
ऊपरगिरताहै तथावायुकेवेग औरठोकरसे बिजलीनीचेगिरती
है औरअग्निकाऊपरवेग तथाजलकानीचेहोताहै सो जलकोपा-
त्रमेंरखके ऊपररखने औरअग्निकोनीचेरखनेसे जबउसजलमें
अग्निप्रविष्टहोताहै तबउसमेंवेग औरबलहोताहै यहीरेलआ-
दिकपदार्थोंकाकारणहै तथाविजलीअङ्कविद्याऔरनानाप्रका-
रके यन्त्रोंसेतारविद्याभीहोतीहै ऐसेहीविद्यासे अनेकप्रकारको
पदार्थविद्याबनसक्तीहै ग्रन्थअधिकहोजाय इसहेतुहमअधिकन-
हींलिखतेहैं क्योंकि शास्त्रोंमेंलिखाहै सोबुद्धिमान्लोग विचार
लेंगे जोथोड़ी२ विद्यासेमनुष्यलोगअनेकप्रकारकेपदार्थरचलेते
हैं फिरसर्वशक्तिमानअनन्तविद्यावाला जोईश्वरअनेकप्रकारके
पदार्थोंकोरचेइसमें क्याआश्चर्यहै इसप्रकारसेजगत्कोरचताहै
ईश्वरकीअपनीनित्यशक्ति औरगुणउनसेआकाशअव्यक्तअव्याक्त-

तप्रकृति और प्रधान एसब एकहीकेनाम हैं इनको रचता है आकाश सेवायुआदिकेपरमाणुबनाता है उनसाठपरमाणुसे एकअणुबनता है दोअणुसेएकद्व्यणुकबनता है सोवायुद्व्यणुक है इससे प्रत्यक्षरूप नहीं देखपड़ता वायुमेंत्रिगुणस्थूल अग्निरचा है इससे अग्निमें रूपदेखपड़ता है उससे चतुर्गुणजल और जलमें पंचगुणपृथिवीरची है तथा उसपरमाणुकेमेलनसे वृक्ष,घास और वनस्पत्यादिकोंकेबीजरचे हैं उनमें परमाणुकेसंयोग इसप्रकारकेरक्खे हैं किजिनसे विलक्षण२ स्वाद पुष्प,पत्र,फल और काष्ठादिकहोते हैं सोप्रसिद्ध जगत्केपदार्थोंकोदेखनेसे हमलोगपरमेश्वरकोरचनाका अनुमानकरते हैं और साधारणसबजगत्में व्यापकहोनेसे सबजगत्का धारणकरते हैं तथाएकके आधारदूसरा और परस्पर आकर्षणसेभी जगत्काधारणहोता है परन्तु सबआकर्षणोंकाआकर्षण और धारणकरनेवालोंका धारणकरनेवाला परमेश्वरही है अन्यकोई नहीं प्रश्न इसीलोकमें इसप्रकारकीसृष्टि है वासबलोकोंमेंऐसीसृष्टि है उत्तर सबलोकोंमेंसृष्टिअनेकप्रकारकीहै जैसीकिइसलोक में क्योंकिइसलोकमें हमलोग पृथिव्यादिकपदार्थप्रयोजनकेहेतु रचेहुए देखते हैं इनमेंएकपदार्थभीव्यर्थनहीं देखते इससे हमलोग अनुमानकरते हैं किकोईलोकपरमेश्वरनेव्यर्थनहीं रचा है किन्तु सबलोकोंमें अनेकविधिमनुष्यादिकसृष्टिरचीहै क्योंकिपरमेश्वर का व्यर्थकार्यकभीनहींहोता प्रश्न कितनेलोक परमेश्वरनेरचे हैं उत्तर सूर्य,चन्द्र और जितनेतारेदेखपड़तेहैं तथाबहुतभीनहीं देखपड़ते एसबलोकहीं हैं सोअसंख्यात हैं प्रश्न येसबलोकस्थिरहैं वाचलते हैं उत्तर सबलोकअपनी२परिधि और अपने२ वेगसे चलते हैं सोअनेकविधिगति है स्थिरतोएकपरमेश्वरही है और कोई नहीं प्रश्न जबपरमेश्वरनेपहिलेसृष्टिरची तबएक२दो२ मनुष्यादिकजातिमें रचे अथवाअनेकरचेथे उत्तर एक२जातिमेंपरमेश्वरनेअनेक२रचे हैं एक२वादो२नहीं क्योंकितिब्बटीआदिकजा-

ति एक द्वीप में एक२ दो२ रचते तो द्वीपान्तरमें वे कैसे जास-कीं इत्यादिक और भी विचार आपलोग करलेना प्रश्न परमेश्वरने सब पदार्थ शुद्ध२ रचे हैं याकोई पदार्थ अशुद्धभी रचा है उत्तर परमेश्वर सब पदार्थ अपने२ स्थान में शुद्धही रचे हैं अशुद्ध कोई नहीं परन्तु विरुद्ध गुणवाले परस्पर मिलने वा मिलानेवाले अशुद्ध कहते हैं अपने२प्रतिकूल के होनेसे जैसेकिदूधऔरनोंनजबमिलतेहैं तबवेदोनोंनष्टगुणहोजातेहैं क्योंकिदोनोंका स्वादविगड़जाताहै परन्तु उनोंदोनोंको पदार्थविद्याकी युक्तिसे तृतीयपदार्थकोईरचले फिरभोवहउत्तमहोसकाहै जैसे सर्पमक्खीवेभी अपनेस्थानमेंशुद्धहैं क्योंकिवैद्यक शास्त्रकीयुक्तिसे इनकीभीबहुत औषधियांबनतीहैं अनुकूलपदार्थोंमें मिलानेसे परन्तुवेमनुष्यआकिसीकोकाटैं अथवाभोजनमेंखालेनेसेदोषकरनेवालेहोजातेहैं ऐसेहीअन्यपदार्थोंकाविचारकरलेना प्रश्न जब इसजगत्का प्रलयहोताहै तोकिसप्रकारसे होताहै उत्तर जिस प्रकारसेसूक्ष्मपदार्थोंसे रचनास्थूलकीहोतीहै उसीप्रकारसेप्रलयभीजगत्काहोताहै जिस्से जोउत्पन्नहोताहै वहसूक्ष्महोकेअपनेकारणमेंमिलताहै जैसेकिपृथिवीकेपरमाणुऔरजलादिकोंके परमाणुसे यहस्थूलपृथिवीबनीहै इनपरमाणुकाजबवियोगहोता है तबस्थूलपृथिवीनष्टहोजातीहै वैसेहीसबपदार्थोंका प्रलयजानना आकाशसेपृथिवीपर्य्यन्तगुणीहै जबएकगुणीघटेगी तबजलरूपहोजायगी जलऔरपृथिवीजबएक२गुणघटैंगे तबअग्निरूपहोजांयगे जबवेतीनोंएक २ गुणघटैंगे तबवायुरूपहोजांयगे जबवे भिन्न२होजांयगे तबसबपरमाणुरूपहोजांयगे परमाणुकीजबसूक्ष्मअवस्थाहोगी तबसबआकाश रूपहोजांयगे औरजबआकाश कीभी सूक्ष्मअवस्थाहोगी तबप्रकृतिरूपहोजायगा जबप्रकृतिलय होतीहै तबएकपरमेश्वरऔरसबजगत्काकारणजोसबमेंजनका सामर्थ्य औरगुणपरमेश्वरकेअनन्त सत्यसामर्थ्य वालाएकअद्वि-

तीयपरमेश्वरहोरहेगा औरकोईनहीं सोयहसब आकाशादिक जगत्परमेश्वरकेसामनेकैसाहै किजैसाआकाशकेसामनेएकअणु भीनहीं इससेकिसीप्रकारकादोष उत्पत्तिस्थितिऔरप्रलयमें परमेश्वरमेंनहींआता इससे सबसज्जनलोगोंको ऐसाहीमानना उचितहै (प्रश्न) जन्मऔरमरणादिककिसप्रकारसेहोतेहैं उत्तर(लिंगशरीरऔरस्थूलशरीरका संयोगसेप्रकटकाजोहोना उसकानामजन्महै)औरलिंगशरीर तथास्थूलशरीरकेवियोगहोनेसे अप्रकटकाजोहोना उसकानाममरणहै)सोइसप्रकारसे होताहै कि जीवअपनेकर्मोंके संस्कारोंमेंघूमताहुआ जलवाकोईऔषधिमें अथवावायुमेंमिलताहै फिरजैसाजिसके कर्मोंकासंस्कार अर्थात्सुखवादुःख जितनाजिसकोहोनाअवश्यहै परमेश्वरकी आज्ञा केअनुकूल वैसेस्थानऔरवैसेहीशरीरमें मिलकेगर्भमें प्रविष्टहोताहै फिरजिसमें वहमिला उसकेअवयवोंको आकर्षणसे शरीर बनताहै जैसीकीपरमेश्वरने युक्तिरचीहै जिसकेशरीरका वीर्य्य होगा उसवीर्य्यमेंउसकेसबअङ्गोंसेसूक्ष्मअवयवआतेहैं क्योंकिसबशरीरकेअवयवोंसे वीर्य्यकीउत्पत्तिहोतीहै फिरउसवीर्य्यकेअवयवोंमेंउसशरीरके अवयवमिलतेजातेहैंउनसेशिर,नेत्र,नासिका,हस्त,पादादिक,अवयव बढ़तेचलेजातेहैं जबवहशरीर,नख औरशिखापर्यन्तपूर्णबनजाताहैं तबवहजीवशरीरमें सबअवयवों सेचेष्टाकरताभया शरीरसहितप्रकटहोताहै फिरभोअन्नपानादिक बाहर के पदार्थों के भोजन करने से शरीर के अवयवों कीवृद्धिहोतीहै सोछःविकारवालाशरीरहै अस्तिनामशरीरहै १ जायतेनामजन्मकाहोना २ वर्द्ध तेनामबढ़ना ३ विपरिणमतेनामस्थूलकाहोना ४ अपक्षीयतेनामक्षीणहोना ५ विनश्यतेनाम नष्टकाहोना नाममृत्युकाहोना ६ एछःविकारशरीरकेहैं फिर जबमरणहोताहै तबस्थूलऔरलिंगशरीरकावियोगहोताहै सो स्थूलशरीरसेलिंगशरीरनिकलके बाहरकाजोवायुउसमें मिल-

ता है फिर वायु के साथ जहां तहां घूमता है कभी सूर्य्य के किरणों के साथ ऊंचे और चन्द्र की किरणों के साथ नीचे आजाता है अथवा वायु के साथ नीचे ऊपर और मध्य में रहता है फिर उक्त प्रकार से शरीर धारण कर लेता है (प्रश्न) स्वर्ग और नरक लोक हैं वा नहीं- उत्तर सब कुछ है क्योंकि परमेश्वर के रचे असंख्यात लोक हैं उन में से जिन लोकों में सुख अधिक है और दुःख थोड़ा उन को स्वर्ग कहते हैं तथा जिन लोकों में दुःख अधिक और सुख थोड़ा है उन को नरक कहते हैं और जिन लोकों में सुख और दुःख तुल्य है उन को मर्त्य लोक कहते हैं इस प्रकार के स्वर्ग, मर्त्य और नर्क लोक बहुत हैं उन में भी अनेक प्रकार के स्थान और पदार्थ हैं कि जिन में सुख वा दुःख अधिक वा न्यून है सो इस हेतु परमेश्वर ने सब प्रकार के स्थान और पदार्थ रचे हैं कि पापी पुण्यात्मा और मध्यस्थ जीवों को यथावत् फल मिले अन्यथा न होय जैसे कि राजा के उत्तम मध्यम और नीच स्थान होते हैं जिन से उत्तम मध्यम और नीचों को यथावत् व्यवहार की व्यवस्था होती है परमेश्वर का यथावत् अखण्डित संपूर्ण जगत् में राज्य है और यथावत् न्याय से जिस की व्यवस्था है फिर परमेश्वर के राज्य में स्वर्ग नर्क और मर्त्य लोकादि लोकों की व्यवस्था कैसे न होगी किन्तु अवश्य ही होगी प्रश्न मरण समय में यमराज के दूत आते हैं उस जीव को जाल में बांध लेते हैं बांध के मारते २ यमराज के पास ले जाते हैं और यमराज यथावत् न्याय से दण्ड देते हैं यह बात सत्य है वा मिथ्या है उत्तर यह बात मिथ्या है क्योंकि जीव अत्यन्त सूक्ष्म है जाल से बांधने में कभी नहीं आता और गरुड़ पुराणादिकों में लिखा है कि पिण्ड देने से जीव का शरीर बन जाता है और वैतरणी नदी के तरने के हेतु गोदानादिक करना चाहिए और यम के दूतों का काजल के पर्वत की नांई शरीर लिखा है वे नगर के मार्ग और घर के दरवाजे भीतर जीव के पास कैसे आसकेंगे चिवँटी आदिक सूक्ष्म छिद्र में एक काल में अनेक जीव मरते हैं वहां कैसे जांयगे तथा वन वा नगरादिकों में अग्नि के लगने और युद्ध में एक पल में बहु-

तजीवोंकामरणहोताहै एक२जीवकोपकड़नेकेहेतु बहुतदूतजाते हैं उननेदूतकहांरहतेहैं तथाउनकाहीनाकैसेबनसकै सोयहबात अत्यन्तमिथ्याहै औरजोवेदादिक सत्यशास्त्रोंमें यमराज,तथा धर्मराज नामलिखेहैं वेपरमेश्वरकेहैं औरवायुतथासूर्य्यकेभीहैं इसमें क्याआयाकि जैसीव्यवस्थाजीनेऔरमरनेमें परमेश्वरनेरची है वैसीहीहोतीहै सोवायुऔरसूर्य्यकेआधारसे सबजीवोंकाजाना औरआनाहोताहै तथा यहीपरमेश्वरकीआज्ञाहै किजैसाजो कर्मकरै वहवैसाफलपावै येजोबात लिखीहैं उनमेंये प्रमाण हैं उत्पत्तिकेविषयमेंतो कुछश्रुतिलिखदियाहै परन्तुफिरभीलिखते हैं। यतोवाइमानिभूतानिजायन्ते येनजातानिजीवन्तियत्प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति तद्विजिज्ञासस्वतद्ब्रह्म ॥ १ ॥ यह यजुर्वेदकी तैत्तिरीयशाखाकीश्रुतिहै। अथातोब्रह्मजिज्ञासा ॥ २ ॥ जन्माद्यस्ययतः ॥ ३ ॥ एदोव्यासजीकेसूत्रहैं इनकायहअभिप्रायहै कि जिसपरमेश्वरसेसबभूत अर्थातसबजगत्उत्पन्नहोताहै उत्पन्नहोके उस परमेश्वरके धारणऔरसत्तासेसबजगत्जीताहै औरप्रलयमेंउसीपरमेश्वरमेंलीनहोजाताहैवहीब्रह्महै उसब्रह्मकोजानने कीइच्छाहै भृगोतूंकरयहीदोनोंसूत्रकाभीअर्थहै। सविताप्रसवनि, इत्यादिकमन्त्रयजुर्वेदकी संहितामेंलिखेहैं इनकायहअभिप्रायहै किजीवजब शरीरछोड़ताहै तबसूर्य्य वावायुमेंमिलता है फिरजैसापूर्वलिखा वैसेहोजाताऔरआताहै सोसबबातयहां लिखीहै देखाचाहै सो देखले। अन्नेनसोम्यशुङ्गेनापोमूलमन्विच्छअद्भिःसोम्यशुङ्गेनतेजोमूलमन्विच्छतेजसासोम्यशुङ्गेनसन्मूलमन्विच्छसन्मूलाःसोम्येमाःप्रजा। इत्यादिकसामवेदकीछान्दोग्यकीश्रुतीहैं इनकायहअभिप्रायहै किजैसीआकाशादिक क्रमसे उत्पत्तिजगत्कीहोतीहै वैसेहीक्रमसेप्रलयभी होताहै शुङ्गनामकार्य्यकापृथिवीरूपजोकार्य उसकामूलजलहै सोजबपृथिवीका प्रलय होताहै तबपृथिवीजलरूप कारणमें लयहोतीहै तथाजल,अग्नि

में अग्नि वायु में वायु आकाश में और आकाश परमेश्वर में सो जिस प्रकार से प्रलय को लिखा उसी प्रकार से होता है और हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे इति यह मन्त्र पहिले लिखा है और इसका अर्थ भी लिख दिया है सो परमेश्वर ही सब जगत् का धारण कर्ता है अन्य कोई नहीं इस से ऐसा सिद्ध भया उत्पत्ति धारण और प्रलय परमेश्वर ही के आधीन हैं यह संक्षेप से जगत् की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय के विषय में लिखा और जो विस्तार से देखा चाहै सो वेदादिक सत्यशास्त्रों में देख लेवै इसके आगे विद्या, अविद्या बन्ध और मोक्ष के विषय में लिखा जायगा ॥

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते अष्टमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ८ ॥

अथ विद्याऽविद्याबन्धमोक्षान्व्याख्यास्यामः । वेत्ति यथायथार्थान्पदार्थान्सा विद्या विद्या इसका नाम है कि जो जैसा पदार्थ है उसको वैसा ही जानना न वेत्ति यथायथार्थान्पदार्थान्सा अविद्या जैसा पदार्थ है उसको वैसा न जानना उसका नाम अविद्या है ज्ञान विवेक और विज्ञान इत्यादिक विद्या के नाम हैं अज्ञान भ्रम और अविवेक इत्यादिक सब अविद्या के नाम हैं । अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या ॥ १ ॥ यह पतञ्जलि मुनि का योगशास्त्र में सूत्र है इसका यह अभिप्राय है कि अनित्य अशुचि दुःख और अनात्मा ये जैसे हैं वैसे न जानना किन्तु इनमें नित्य शुचि सुख और आत्मा को बुद्धि होती है जैसे कि, अमरा निर्जरा देवा इत्यादिक वचनों से नित्य निश्चय का जो करना कि स्वर्गादि लोक और ब्रह्मादिक देव नित्य हैं ऐसा अज्ञान बहुत मनुष्यों को है परन्तु वे विचार करके देखें कि जिनकी उत्पत्ति होती है वे नित्य कैसे होंगे कभी

नहीं क्योंकि बहुतपदार्थों के संयोगसे जोपदार्थ होताहै सो उनपदार्थों के वियोगसे वहजोसंयोगसे बनाथा सोअवश्यनष्ट होजायगा ब्रह्मादिकोंकेशरीरऔरसूर्यादिक सबलोकसंयोगसेबनेहैं उनका वियोगसेअवश्यनाशहोताहीहै फिरजोइनअनित्यपदार्थोंमें नित्यनिश्चयहोना औरनित्यजोपरमेश्वर तथापरमेश्वरके नित्यगुण धर्मऔरविद्याउनको नित्यनजानना कभीउनकेजाननेमें इच्छाभी नहो। नो यहअविद्याकाप्रथमभागहै औरअनित्यपदार्थोंको अनित्य जानना तथानित्यपदार्थोंको नित्यजानना यहविद्याकाप्रथमभागहै अशुचिअपवित्रनाम अशुद्धपदार्थोंमें शुद्धकानिश्चय होना औरशुचिजोपवित्रअर्थात्शुद्धपदार्थमें अशुद्धकानिश्चयहोना जैसेकियहशरीरइससबमार्गोंसे मलहीनिकलतेहैं कान, आंख, नाक, मुखतथानीचेकेछिद्र औरलोमोंकेछिद्रोंसेभीदुर्गन्धही निकलताहै परन्तु जिनकोविषयासक्तिहोतीहै वहशुद्धबुद्धिहोउसमेंकरताहै तथास्त्रीभीपुरुषके शरीरमेंशुद्धबुद्धि करतीहै ऊपर केचामको देखके मोहितहोजातेहैं फिरअपनाबल, बुद्धि, पराक्रम तेज, विद्या, औरधनउसकेहेतुनाशकरदेतेहैं जोउनकोउसमें प्रवृत्तबुद्धिनहोती तोऐसेकाममें प्रवृत्तनहोते सोबड़े २ राजाऔरबड़े २ धनाढ्यऔरमहात्मालोगतथामिथ्याविरक्तलोगजोहैंवेइसकाममें नष्टहोजातेहैंकभीउनकेहृदयमेंइसबातकाविचारभीनहींहोता जैसे अग्निमेंपतङ्गगिरके नष्टहोजातेहैं वैसेवेभीऐश्वर्य सहितनष्टहोजातेहैं औरपवित्रजोपरमेश्वर विद्या औरधर्म इनमें उनकीबुद्धिकभी नहीं आती यहअविद्याकादूसराभागहै औरजोशुद्धकोशुद्धजानना औरअशुद्धकोयथावत्अशुद्धजानना यहविद्याकादूसराभागहै दुःखमेंसुखबुद्धिकाकरना औरसुखमेंदुःखबुद्धिकाहोना जैसेकिकाम, क्रोध, लोभ, मोह, भय, शोक औरविषयोंकीसेवा इनमेंजीवकोशान्तिकभी नहींआती जैसेकिअग्निमें घीडालनेसे अग्निबढ़ताजाताहै वैसेउनकीभीतृष्णा बढ़तीजातीहै परन्तु उसदुःखमें

बहुतजीवोंकोसुखबुद्धिदेखनेमेंआतीहै क्योंकिउक्तदुःखमें,सुखबुद्धिनहोतो तोवेइसमें फसते नहीं यहअविद्याका तीसरा भाग है और जोपुरुषार्थ सत्यधर्मकाअनुष्ठानसत्यविद्याकाग्रहण जितेन्द्रियताकाकरना तथासत्संगसद्विद्या औरपरमेश्वरकीप्राप्तिका उपायअर्थातमोक्षकाचाहना इनमेंइनकोबुद्धि लेशमात्रभीनहीं आती इनकेविनाजीवकोकभीसुखनहींहोता परन्तु विपरीतबुद्धि केहोनेसेदुःखहीमेंफसेरहतेहैं सुखमेंकभीनहींआते यहअविद्या कातीसराभागहै औरसुखमें सुखबुद्धिकाहोना औरदुःखमें दुःखबुद्धिकाहोना सोविद्याकातीसराभागहै तथाअनात्मामेंआत्म बुद्धि औरआत्मामें अनात्मबुद्धिकाहोना जैसेकिशरीरादिक सब अनात्मपदार्थहैं इनमेंआत्माकीनांईबहुतमनुष्योंकीबुद्धिहै जबदेहादिकोंमें दुःखहोताहै तबइनकीबुद्धिमेंयहीहोताहै किमैंमरा औरमैंबड़ादुःखीहूं मैंदुर्बलाहोगया मैंपुष्टहूं मैंरूपवानहूं मैंकुरूपहूं इत्यादिकनिश्चयलोकमेंदेखपड़ताहै औरजोआत्मा औरपरमाण्वादिक जिनसेकिशरीरबनाहै औरपरमेश्वरइननित्यपदार्थोंमेंइनकोबुद्धिकभीनहीआती नित्यसुखजोमोक्ष इसको इच्छाभीकभीनहींहोती इसी जन्म,मरण,क्षुधा,तृषा,शीत,उष्ण हर्षऔरशोक, इसदुःखसागरसे कभीनहींनिकलते यहअविद्या का चौथाभागहै औरआत्माको आत्मा जानना अनात्मा को अनात्माजानना यहविद्याकाचौथाभागहै इसी क्याआयाकि अनित्याशुचिदुःखानात्मसुनित्याशुचिदुःखानात्मबुद्धिः तथानित्यशुचिसुखात्मसुनित्यशुचिसुखात्मबुद्धिर्विद्या। अथान्यथाचाविद्येति विज्ञातव्याअन्यथा नाममिथ्या जोज्ञान किजैसेको तैसा नजानना इसकानाम अविद्याहै औरनिर्भ्रम यथार्थज्ञान काहोना सोविद्याकहातीहै विद्याअविद्याकोउत्पत्ति विषयासक्त्यादिदोषोंसेहोतीहै जबयहजीव विद्याहीनहोके बाहरकेपदार्थोंको सुखकेहेतु जानताहै तबमनकोबाहरकीओरप्रेरताहै फिरवहमनइन्द्रियों

को बाहर के पदार्थों में लगाके प्रवृत्त कर देता है सो जैसे कोई पुरुष निशाने में तीर वा गोली लगाया चाहता है तब वह भीतर से बाहर की ओर ध्यान करता है सो नेत्र को वन्दूक के मुख से लगाके निशाने में लगा देता है वैसे ही जो २ व्यवहार जीव किया चाहता है तब उसी प्रकार का व्यवहार जीव में भी होता है फिर बाहर और भीतर के पदार्थों को यथावत् न जानने से जीव भ्रमयुक्त होके अन्यथा जान लेता है उसमें फिर दृढ़ संस्कार अन्यथा होने से अविद्या कहाती है सो न अपने स्वरूप का कभी ध्यान करता है न परमेश्वर का तथा न विद्या का किन्तु जैसे वे मिथ्या संस्कार उसके हैं उसी में गिरा रहता है क्योंकि जैसा जिसका अभ्यास करेगा वैसा ही उस जीव को भासता रहेगा फिर जबतक यह अविद्या जीव में रहैगी तबतक उसको विद्या कभी नहीं होती परन्तु जब कभी अच्छा संग और सद्विद्या का अभ्यास तथा विचार और धर्म का अनुष्ठान तथा अधर्म का त्याग कभी नहीं वह जीव करसक्ता और यथार्थ तत्त्वज्ञान पदार्थों का उसको कभी नहीं होता जबतक यह अविद्या जीव को रहती है तबतक विद्या का साधन और विद्याप्राप्त नहीं होती क्योंकि जब जीव सुविचार करता है तब उसको कुछ २ विवेक उत्पन्न होता है कि सत्य को सत्य और असत्य को असत्य जानना फिर अविद्या के गुण और उनके कार्य उनमें वैराग्य होता है अर्थात् उनको छोड़ता है और विद्यादिक जो सत्यार्थ उनमें प्रीति करता है इनमें यह कारण है कि जबतक पदार्थों का दोष नहीं जानता तबतक उनके त्याग करने को बुद्धि जीव को कभी नहीं होती क्योंकि त्याग का हेतु दोषों का यथावत् देखना ही है तथा पदार्थों के गुणका जो ज्ञान होना सोई प्रीति का हेतु है फिर वह जीव धर्माधर्म का यथावत् निश्चय करके अधर्म का त्याग और धर्म का ग्रहण करेगा फिर उसका मन शान्त होगा कि विद्या, धर्म, सत्सङ्ग, सत्पुरुषों का संग, योगाभ्यास, जितेन्द्रियता, सत्पुरुषों का आचार, मोक्ष और परमेश्वर इन्हों में मन प्रीतियुक्त होके स्थिर हो जायगा इनमें विरुद्ध अविद्या अधर्म कुसंग कि कुपु-

रुषोंका संग विषयोंका अत्यन्त अभ्यास अजितेन्द्रियता दुष्टपुरुषों का आचार जिसमें न होय और परमेश्वरकोछोड़के उपासनाप्रार्थना और स्तुतिका करना इनसे उसका मन हटजायगा इसकानाम शम है फिर सब इन्द्रियां स्थिर होजांयगी इसकानाम दम है फिर अविद्यादिक जितने दुष्टव्यवहार उनमें उनकानाम पृथक होजायगा अर्थात उनमें कभीन फसेगा उसकानाम उपरति है फिर शीत, उष्ण, सुख, दुःख, हर्ष, शोक, और क्षुधा, तृषादिकइनकासहन अर्थात इनमें हर्ष वा शोक नकरेगा इसकानाम तितिक्षा है फिर विद्यादिकउत्तमगुणोंमें अत्यन्तश्रद्धा अर्थात् प्रीति जीवकी होती है अविद्यादिकदोषोंमें सदा अप्रीति इसकानाम है श्रद्धा फिर मन बुद्धि चित्त, अहङ्कार, इन्द्रिय और प्राण एसब उसकवशीभूत होजांयगे उनको जहां स्थिर करेगा वहीं सब स्थिर रहेंगे और अविद्यादिक अनर्थ में कभीन जांयगे इसकानाम समाधान है एछः गुण जीवमें उत्पन्न होंगे फिर जैसे क्षुधातुर पुरुषको इच्छा अन्न होमें रहती है वैसे उसका मन मुक्ति होमें रहेगा कि मेरी मुक्ति कब होगी इससे भिन्न व्यवहारोंमें उसका मन लगे होगा नहीं इसकानाम मुमुक्षुत्व है येनव विवेकादिकगुण जब जीवमें होते हैं तब वह ब्रह्मविद्याका अधिकारी होता है फिर वह सब सत्यशास्त्रोंका जो सत्य२पदार्थ विद्यारूप विषय उसको यथावत जानेगा फिर शास्त्र जिन पदार्थों के प्रतिपादन करते हैं उनपदार्थों के साथ शास्त्रोंका प्रतिपाद्य प्रतिपादकसम्बन्धको वह जीव यथावत् जानलेगा इसकानाम सम्बन्ध है फिर वह यथावत् विद्याओं का श्रवण करेगा श्रवण करके ज्ञानने चसे उनका यथावत विचार करेगा इसकानाम मनन है और फिर उनपदार्थों को यथावत् प्रत्यक्ष जानने के हेतु योगाभ्यास अर्थात पातञ्जलदर्शन की रीति से करेगा इसकानाम निदिध्यासन है फिर पृथिवी से लेके परमेश्वर पर्यन्त सब पदार्थों का ज्ञानने चसे प्रत्यक्ष ज्ञान करेगा उसी समय इसका जो प्रयोजन कि सब दुःखों की निवृत्ति और परमानन्द परमेश्वर

कीओप्राप्ति इनकानाम,योजनहै सोजबयहविद्याहोगी तबअवि-
द्यादिकसबदोषनष्टहोजांयगे जैसेसूर्य्यकेप्रकाशसे अन्धकारनष्ट
होजाताहै विद्याऔरअविद्या यहदोनोंअन्धकारऔर प्रकाशकी
नांई परस्परविरोधीपदार्थहैं इनकाफलितार्थयहहै किजोविद्या-
वान्होगा सोअधर्मादिक दोषोंको कभीनकरेगा औरजो अवि-
द्यावान्गा उसकोनिश्चितबुद्धि धर्मादिकके अनुष्ठानमें कभीनल-
गेगी प्रश्न विद्याकीपुस्तककोईसनातनहै वासबपीछेरचीगईहैं उ
त्तर चारवेदोंकोछोड़करचीगईहैं प्रश्न जैसेअन्यसबशास्त्ररचेगए
हैं वैसेवेदभीरचागयाहोगा उत्तर ऐसामतकहोजोऐसाकहोगे
तोआपकेमतमेंयहअनवस्थादोषआजायगा क्योंकिकोईपुस्तक स-
नातननठहरनेसे किसीपदार्थ अथवापुस्तककासत्य वा असत्यनि-
श्चयकभीनहोसकेगा जोकोईपुस्तकरचेगा उसकाप्रमाणकैसेहोगा
क्योंकिजोसनातनपुस्तकहोतो तोउसपुस्तकसेऔरोंका सत्यासत्य
जीवलोगजानसकैं फिरउसकाखण्डनकरके दूसराकोईग्रन्थरच-
लेगा ऐसेदूसरेका करकेतीसरा ऐसेहीअनवस्थाआजायगी प्रश्न
जैसेअन्यपुस्तककाप्रमाणवेदसेहोताहै वैसे वेदकाप्रमाण किसपु-
स्तकसेहोगा उत्तर ऐसाकहनेसे भीअनवस्थादोषआजायगा क्यों-
किवेदकेप्रमाणकेहेतु कोईअन्यपुस्तकरक्खोजाय तोफिरउसपुस्त-
ककेप्रमाणकेहेतु कोईतीसरीभी मानीजायगी ऐसेहीर आगेर
अनवस्थाआजायगी इससेअवश्यएकपुस्तकसनातनमाननाचाहि-
ए जिससे किअन्यपुस्तकोंकोव्यवस्थासत्यरहै सोवेदकेसनातनहो-
नेमेंपहिलेलिखदियाहै वहीबिचारलेना प्रश्न छःदर्शनोंमें बड़ेर
विरोधहैं किपूर्वमीमांसावाला धर्माधर्मऔरकर्महीपदार्थहैं इ-
नसेजगत्कीउत्पत्तिमानताहै तथावैशेषिकदर्शनऔरन्यायदर्शन
में परमाणुसेजगत्कीउत्पत्तिमानीहै औरपातंजलदर्शनतथासां-
ख्यदर्शनमें प्रकृतिसेजगत्कीउत्पत्तिमानीहै औरवेदान्तदर्शनमें
परमेश्वरसे सबजगत्कीउत्पत्तिमानीहै यहबड़ापरस्परविरोधहै

सबशास्त्रोंमें इसकाव्याख्यानहै उत्तर वेदान्तमें प्रथमसृष्टिका व्याख्यानहै कि उससे पहिलेजगत्थाहीनहीं औरजबअत्यन्तसबका प्रलयहोगा तबपरमेश्वरहीमें लयहोगा अन्यमें नहीं सोयहआदिसृष्टिहै क्योंकिपहिलेनहींथी औरफिरउत्पन्नभई इससे इसस्रुष्टिकेआदिहोनेसे सादिकहातीहै औरमीमांसादिकशास्त्रोंमें अनादिसृष्टिकाव्याख्यानहै क्योंकिप्रकृतिपरमाणुऔरधर्म धर्मी इनकानाशप्रलयमें भीनहींहोता इसकानाममहाप्रलयहै इसमें प्रकृतिपरमाण्वादिकोंकेमिलनेसे जितनास्थूलजगत्होताहै वह सबपरमाण्वादिकोंके वियोगसेसबनष्टहोजाताहै परन्तुप्रकृतिऔरपरमाण्वादिकबनेरहतेहैं फिरभीजबईश्वरउनकोमिलाकेजगत्कोरचताहै तबयहस्थूलसबहोजाताहै फिरउनसेस्थूलजगत्उत्पन्नहोताहै फिरजबनष्टहोताहै तबप्रकृतिऔरपरमाणुरूपहोताहै फिरउनसेस्थूल जगत्उत्पन्नहोताहै ऐसेहीअनेकबारउत्पत्ति औरअनेकबार जगत्काप्रलयहोताहै परन्तु प्रकृतिऔरपरमाणु इसस्थूलकाजोकारणसोनष्टनहीं इससे महाप्रलयमें आदि इसजगत्की नहींदेखपड़ती क्योंकिइसकाकारण प्रकृतिऔरपरमाणुसदाबनेरहतेहैं इससे जगत्अनादिकहाताहै कभीकारणरूप होजाताहै कभीकारणसे स्थूलजगत्उत्पन्नहोताहै ऐसेहीप्रवाहरूपउत्पत्ति औरप्रलयकेहोनेसे अनादिजगत्कहाताहै सोयहजगत्कबउत्पन्नभया ऐसाकोईनहींकहसक्ता इससे यहआयाकिपांचशास्त्रोंमें महाप्रलयकी व्याख्याहै इसमें भीअनेकभेदहैं किचमरेणुतकजबप्रलयहोताहै तबधर्मऔरधर्मी कुछ२प्रसिद्ध रहताहै इसप्रलयकीव्याख्यामीमांसामेंहै औरजबअणुपर्यन्तकानाशहोता है तबपरमाणुमात्रजगत्रहताहै सोभीमहाप्रलयभेदहै यहव्याख्यावैशेषिकदर्शनऔरन्यायदर्शनमें है औरजबपरमाणुकोभीसूक्ष्मावस्था होतीहै तबअत्यन्तसूक्ष्मजोप्रकृतिसोरहजातीहै औरपरमाणुकाभीलयहोजाताहै क्योंकिशब्दादिकतन्मात्राओंकोभी सां-

स्वशास्त्र में उत्पत्ति लिखी है और प्रकृति की नहीं इस से यह अनुमान से जाना जाता है कि प्रकृति परमाणु से भी सूक्ष्म है सो यह व्याख्यान पातंजलदर्शन और सांख्यदर्शन में किया है और वेदान्त में प्रकृत्यादि कों की उत्पत्ति लिखी है और प्रकृति का लय भी परमेश्वर में होता है इस से उत्पत्ति के विषय में भिन्न२ पदार्थों के व्याख्यान होने से कुछ विरोध परस्पर इन में नहीं है (प्रश्न) पूर्वमीमांसा और सांख्य में ईश्वर को नहीं माना है और अन्य शास्त्रों में माना है इस से विरोध आता है (उत्तर) इस में भी कुछ विरोध नहीं क्योंकि मीमांसा में धर्म और धर्मी दो पदार्थ माने हैं इस से ही ईश्वर धर्मी और ईश्वर के सर्वज्ञादिक धर्म अवश्य मान लिया है इस में कुछ सन्देह नहीं और वेद को जैमिनी जी नित्य मानते हैं सो वेद शब्द ज्ञानरूप के होने से गुण है सो गुणों के विना गुण किस में रहेगा इस से ईश्वर को उस ने अवश्य माना है और सांख्य में ईश्वरासिद्धेः ॥ १ ॥ प्रमाणाभावन्नतत्सिद्धिः ॥ २ ॥ सम्बन्धाभावान्नानुमानम् ॥ ३ ॥ उभयथाप्यसत्करत्वम् ॥ ४ ॥ मुक्तात्मनःप्रशंसोपासासिद्धस्यवा ॥ ५ ॥ ए पांच सांख्यशास्त्र में कपिल जी के किए सूत्र हैं यही अनीश्वरवाद का कारण है इन को यथावत् न जान के चार्वाक और बौद्धादिक बहुत अनीश्वरवादी होगए हैं इन के अभिप्राय नहीं जानने से इन का यह अभिप्राय है कि ईश्वर की सिद्धि नहीं होती किन्तु एक पुरुष और प्रकृति दोनों नित्य हैं अन्य नहीं ॥ १ ॥ क्योंकि प्रत्यक्षप्रमाण नहीं होने से ईश्वर सिद्ध नहीं होता प्रत्यक्षप्रमाण से जो सिद्ध होता तो ईश्वर माना जाता अन्यथा नहीं २ ॥ लिंग और लिंगी अर्थात चिन्ह और चिन्हवाले का नित्य सम्बन्ध होता है सो लिंग के देखने से लिंगी का अनुमान होता है फिर ईश्वर का लिंग नाम चिन्ह कोई जगत् में देखने ही पड़ता इस से ईश्वर में अनुमान भी नहीं बनता ३ ॥ ईश्वर जो मोहित होगा तो असमर्थ के होने से जगत् को कभी नहीं रच सकेगा और जो मुक्त होगा तो उदासीन के होने से जगत् के रचने में ईश्वर को इच्छा भी नहीं होगी इस से ईश्वर में

शब्दप्रमाणभीनहींबनता॥ ४॥ फिरवेदमें सईश्वर इत्यादिकश्रु-
तिईश्वरकेव्याख्यानमें लिखीहैं उनकीश्रागतिहोगी वहवश्रुति
विद्याऔरयोगाभ्यासऔरधर्ममेंसिद्धजोजीवहोताहै किश्रणिमा-
दिकऐश्वर्यवाला उसकीप्रशंसाश्रौरउपासनाकीवाचकहै इससेई-
श्वरकीसिद्धि किसीप्रकारमेंनहींहोतो ऐसेअर्थकोविपरीतजानके
मनुष्योंकीबुद्धिभ्रमयुक्तहोगईहै परन्तुकपिलजीकायहअभिप्रायहै
किपुरुषहीईश्वरहै औरवहीचेतनहै सर्वज्ञादिकगुणभी पुरुषमेंहैं
उसपुरुषचेतनमेंभिन्नकोईईश्वरनहीहै पुरुषकानामही ईश्वरहै
इससेयहश्रायाकि पुरुषहीको ईश्वरमानना चाहिए दूसराकोई
नहीं इससे जोकोईकहताहैकिजैमिनीऔरकपिलजीनिरीश्वरवा-
दीथे यहउसकाकहना मिथ्याजानना वेदादिकजितने पुस्तकहैं
उनकापठनपाठनविद्याकासाधनहै औरविद्यातथाश्रविद्याकीप-
रीक्षा उनकेपढ़नेश्रौरपढ़ानेके बिनाकभीनहींहोती विद्यापढ़ने
वाले तथानहींपढ़नेवाले इनमेंसेपढ़ने वालोंकाजोभाषण और
ज्ञानादिकव्यवहारश्रच्छाहीदेखनेमें श्राता इससे ग्रन्थोंकाजोपढ़-
ना सोविद्याकोप्राप्ति करनेवालाहोताहै अन्यथानहीं परन्तुवि-
द्वानवहीहै जोकिसर्वथाअधर्मकात्यागकरै औरधर्मका ग्रहणक-
रै अन्यथापढ़नाश्रौरपढ़ानाव्यर्थहीहै। अन्धन्तम:प्रविशन्तियेवि-
द्यामुपासते ततोभूयइवतेतमायउविद्यायारताः॥ १॥ विद्या-
चाविद्यांचयस्तद्वेदोभयसहअविद्यया मृत्युंतीर्त्वाविद्ययाऽमृतम-
श्नुते॥ २॥ अन्यदेवाहुर्विद्ययाअन्यदाहुरविद्यया: इतिशुश्रुम-
धीराणांयेनस्तद्विचचक्षिरे॥ ३॥ यजुर्वेदकीसंहिताकेमन्त्रहैं इ-
नकायहअभिप्रायहै किजोपुरुषअविद्यामेंफसेहैं वेअत्यन्तअन्धका-
रअर्थातजन्म,मरण,हर्ष, औरशोकादिकदु:खसागरमेंप्रविष्टर-
हतेहैं इससे पृथक नहींहोसके औरविद्याअर्थात् नानाप्रकारके
कर्मोंसे विषयभोगोंकोचाहनाकरना तथायोगाभ्यास,तप और
संयमसेश्रणिमादिकसिद्धियोंमें फसकेप्रतिष्ठासंसारमें औरअभि-

मानादिकदोषोंसेयुक्त होनाइसमें जोरतरहतेहैं वेउनकर्मोंलोगों
सेभ अत्यन्तअन्धकारमेंफसजातेहैं फिरउनकानिकलनाउसमेंबहु-
तकठिनहोताहै ॥ १ ॥ परन्तु विद्याऔरअविद्याकोएकसाथमिन
लेना क्योंकिबन्धकोकरनेवालीदोनोंहैं इससे दोनोंकानाम अवि-
द्याहै जोकर्मधर्मयुक्तऔरयोगाभ्यासजोउपासना इनकेअनुष्ठान
सेमृत्यु जोमोह औरभ्रमादिकदोषउनसेपृथक्‌मन औरजीवहोके
शुद्धहोजातेहैं फिरयथार्थपदार्थोंकाज्ञानऔरपरमेश्वरकीजोप्रा-
प्ति इसविद्यासेअमृतजोमोक्षउसकोप्राप्तहोताहै फिरदुःखसागर
में कभीनहीं गिरता॥२॥ इससेविद्याजोनिर्भ्रमज्ञान इसकाफलभि-
न्नहैअर्थातमोक्षहै औरजोपूर्वोक्तअविद्याजोकिभ्रमात्मकज्ञानउ-
सकाभीफलअन्यहै नामबन्धहै सोविद्याऔरअविद्याका फलभि-
न्न२है एकनहीं ऐसाहमनेज्ञानियोंकेमुखसेसुनाहै जोकियथार्थ
वक्ता उननेहमारेसाम्हने यथावतव्याख्याकरदीहै इससेहमको इ-
नमेंभ्रमनहींहै ॥ ३ ॥ सोसबमनुष्योंकोयहउचितहै किसबपुरुषा
र्थसेविद्याकोइच्छाकरैं औरअत्यन्तप्रयत्नसेअविद्याकोछोड़ें क्यों-
किइससंसारमेंविद्याकेतुल्यकोईपदार्थनहीं तथाविद्याकेबिनाइस
लोकवापरलोकमें कुछसुखनहीं होता औरअनेकजन्मधारणकर्ता
। उनमेंअत्यन्तपीड़ाहोतीहै कभीपरमेश्वरकी प्राप्तिनहींहोती
सकीप्राप्तिकेउपायब्रह्मचर्यादिकपूर्वसबलिखदियेहैं उनकोनाम
ाचयहांगणनाथोड़ीसीकरतेहैं प्रथमसबउपायोंकामूल ब्रह्मचर्या-
।मजबतकपूर्णविद्यानहोय तबतकजितेन्द्रियहोके यथावत्‌विद्या
।हणकरैं औरसबव्यवहारोंकोयथावत्‌जानें फिरबिवाहकरैं प-
न्तुविद्याभ्यासकोनछोड़ें औरनित्यगुणग्रहणकीइच्छारक्खें अ-
।न्तपुरुषार्थ औरनम्रतापूर्वक सबसज्जनोंसेमिलें मिलकेउनको
ापूर्वकगुणग्रहणकरैं आपभीजितनीबुद्धि उतनानित्य२विचार
रैं उसमेंपक्षपात रहितहोके सत्यकोग्रहणकरैं औरअसत्यको
ोड़ें एकान्तसेवनसेअपनी इन्द्रियां,मनऔरशरीर सदाधर्मा-

नुष्ठानमें निश्चित रक्खें अधर्म में कभी न हों। यथाखनन् खनित्रेण नरोवार्य्यधिगच्छति तथागुरुगतांविद्यांशुश्रुषुरधिगच्छति॥ यह मनुका श्लोक है इसका यह अभिप्राय है कि जो पुरुष अभिमानादिक दोषरहित और नम्रतादिक गुणयुक्त होके सेवा से दूसरे का चित्त प्रसन्न कर देता है सोई अच्छे गुणों को प्राप्त होता है अन्य नहीं इसमें यह दृष्टान्त है कि जैसे भूमि को खोदता २ कुदाली से नीचे चला जाय फिर वह जलको प्राप्त होता है वैसे ही शुश्रूषु अर्थात् कपटादिक दोषरहित और दूसरे पुरुषको परिक्षा जानता होय कि इसमें गुण हैं वा नहीं फिर यथावत् गुणों का बुद्धि में निश्चय कर ले कि इसमें ए सत्य गुण हैं पीछे जिस प्रकार सेवे गुण मिलें उन सेवादिक प्रकारों से गुणों को अवश्य ग्रहण करैं ग्रहण करके गुणों को प्रकाश करदे और जो कोई उन गुणों को ग्रहण किया चाहे उसको प्रीति से निष्कपट होके यथावत् गुणों को देदे क्योंकि गुणों को गुप्त करना कोई मनुष्य को उचित नहीं और जो गुणों को गुप्त रखता है वह बड़ा मूर्ख पुरुष है और धर्म तथा परमेश्वर का अत्यन्त विरोधी है वह कभी सुख न पावैगा इत्यादिक विद्या की प्राप्ति के हेतु हैं और यही अविद्या नाश के हेतु हैं अन्य भी अनेक प्रकार के हेतु हैं उनको विचार लेना और (इसके आगे बन्ध और मुक्ति का व्याख्यान किया जाता है)। पराञ्चिखानिव्यतृणत्स्वयंभूस्तस्मात्पराङ् पश्यतिनान्तरात्मन् कश्चिद्धीरःप्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्। यह कठवल्ली की श्रुति है इसका यह अभिप्राय है कि पराञ्चिखानि अर्थात् बहिर्मुख इन्द्रिय जिसकी होती हैं वह जीव बाहर के पदार्थों ही को देखता रहता है और भीतर के पदार्थों को वा अपने स्वरूप को कभी नहीं विचारता अथवा परमसूक्ष्म जो परमेश्वर उसके विचार में कभी जीवका चित्त नहीं जाता इससे जीवको पदार्थों का यथार्थ ज्ञान तो नहीं होता किन्तु अत्यन्त दृढ़ भ्रम होता है उससे आपसे आप ही बद्ध होता है फिर ऐसा मोह उसको होता है कि जिसका छूटना बहुत कठिन है उससे फिर मिथ्याज्ञान होता है कि स्त्री पुत्र

धन,राज्यादिकोंहीमेंसुखमानलेताहै फिरउनकेसुधरनेमेंअत्यन्तहर्षितहोताहै औरबिगड़नेसे शोकयुक्तहोताहै इसजालमेंगिरके अनेकजन्ममरणजीवकेहोतेहैं औरअत्यन्त दुःखपाताहै प्रश्न जन्मएक होताहै अथवाअनेक उत्तर अनेक जन्महोतेहैं प्रश्न जो अनेकजन्महोतेहैं तोपूर्वजन्मोंकाहमकोस्मरणक्योंनहींहोता उत्तर पूर्वजन्मोंकास्मरणनहीहोसक्ता क्योंकिपूर्वजन्मज्ञानकेजोनिमित्तहैं वेसबनष्टहोजातेहैं इससे पूर्वजन्मका स्मरणनही होसक्ता प्रश्न कौनवेनिमित्तहैं औरनिमित्तकिसकोकहतेहैं उत्तर निमित्तइसकानामहै किजोदूसरेकेसंयोगसे उत्पन्नहोताहै जैसेकिजल शीतलहै औरअग्निउष्णहै जबअग्निकासंयोगजलमेंहोताहै तब जलउष्णहोजाताहै परन्तुजबअग्निसे जलपृथककियाजाताहै तब फिरभीवहशीतल होजाताहै इसकानाम नैमित्तिकगुणहै जोकि जबतकउसकानिमित्तरहताहै तबतकवहरहताहै औरजबनिमित्तनहीरहता तबउसकानिमित्तसे उत्पन्नभयाजोकिगुणसोभीनष्ट होजाताहै जैसेसूर्य्य औरनेत्रसे रूपकाग्रहणहोताहै जबसूर्यऔर नेत्रनहीरहतेतबरूपकाभीग्रहणनहींहोता क्योंकिनिमित्तकेबिना नैमित्तिकगुणनहीहोताइससेक्याआयाकिपूर्वजन्मजिसदेशजिसकालमें औरजोशरीर तथाउसशरीरकेसम्बन्धीसबपदार्थनष्टअर्थात उनकावियोगहोनेसे वहांकाजोउनकोज्ञानथासोभीनष्टहोजाता हैंऔरइसीजन्ममेंजो२वाल्यावस्थामें व्यवहारकियाथाउससे सुखवा दुःखपायाथा उसकाभीयथावतस्मरण वृद्धावस्थामेंनहींरहताऔर जिससमयकिसीसेकिसीकीबातहोतीहै तबउसबातमेंअनेकअक्षर, पद,वाक्य,स्कन्धकहेंऔरसुनेजातेहैं परन्तु उसके उत्तर कालमें स्मरणकहनावासुनना यथावत्नहींबनता औरकोईबात कण्ठस्थ करलेताहै फिरकालान्तरमेंउसकोभीभूलजाताहै एकबातमेंजब जीवकाचित्तहोता तबदूसरेमेंनहींजाता दूसरेमेंजबजाताहै तब पहिलेकोभूलजाताहै जबऐसीबातहैतोजन्मान्तरकेस्मरणमेंशंका

जोकतेहैं उनकीशंकाव्यर्थहीहै प्रश्न जीवऔरबुद्धिआदिकपदार्थतो वेहीहैं फिरपूर्वजन्मका ज्ञानक्योंनहींहोता क्योंकिजोकुछदेखता वासुनताहै सोबुद्धिहीसे ग्रहणकरताहै फिरउनकाज्ञान अवश्य होनाचाहिएसोनहींहोता इससे पूर्वजन्मनहींहैं उत्तर इसकाउत्तरतोपूर्वप्रश्नकेउत्तरहीसेहोगया क्योंकिइसबाल्यावस्थासलेकेवृद्धावस्थातक वहीजीवऔरबुद्ध्यादिकहैं फिरकहेवासुने व्यवहारोंमें अक्षर,पद,औरउनकेअर्थादिकोंका यथावत्स्मरणक्योंनहींहोता इसव्यवहारकोहमलोगप्रत्यक्षदेखतेहैं किजबहमलोगपरस्पर वातकहते औरसुनतेहैं तबकुछकालकेपीछेबहुत२ वातोंके सुनने वाकहनेमेंआनुपूर्वीसेयथावतस्मरणनहींरहता फिरजन्मान्तरके स्मरणमेंशंकाकरनीव्यर्थहीहै औरदेखनाचाहिए कि जागृतावस्थामें वेहीजीवऔरबुद्ध्यादिकव्यवहारकरतेहैं यहमेराघर,द्वार,पिता,पुत्र,स्त्री,बन्धु,शत्रु,औरमित्रादिकहैं ऐसाउसजीवको यथावत स्मरणहै औरफिरजबस्वप्नावस्थाहोतीहै तबइनकाउसीसमयविस्मरणहोजाताहै फिरजबसुषुप्तिहोतीहै तबदोनोंकाव्यवहारविस्मृतहोजाताहै वेहीजीव और बुद्ध्यादिकहैं परन्तु किञ्चित २ देश औरकालकेभेदहोनेसे पूर्वकाव्यवहारविस्मृतहोजाताहै फिरपूर्वजन्मदेशकाल और शरीरादिकपदार्थ सबछूटजातेहैं फिरउनके स्मरणकीशंकाजोकरतेहैं सोविचारवाननहींहैं प्रश्न यहजन्मजोहोताहै सोएकबारहीहोताहै दूसरीबारनहीं क्योंकियहदूसराजीवहै सोनया२ उत्पन्नहोजाताहै औरशरीरधारणकरताहैजोकिपहिले शरीरधारणकियाथा सोजीवफिरनहींआता उत्तर यहबातमिथ्याहै क्योंकिजोदूसराजीवहोता तोउसकोपूर्वके संस्कारनहींदेखपड़ते जैसेकिजिसपदार्थकासाक्षात अनुभवबुद्धिमें अवश्यआता है फिरसंस्कारसेस्मृतिउत्पन्नहोतीहै औरस्मृतिसेप्रवृत्तिवानिवृत्तिहोतीहै जैसेकिकोईसंस्कृतकोपढ़े औरकोईअंगरेजीकोजोजिसकोपढ़ताहै उसकोउसकाअक्षरादिक्रमसेबुद्धिमेंसबसंस्कारहो-

तहैं साक्षात्‌देखने औरसुननेमें अन्यकानहीं फिरकालान्तरमें
कोईव्यवहारअथवापुस्तककोदेखताहै सोपूर्वदृष्टवाश्रुतकेसंस्कार
सेस्मृतिहोतीहै है कियहप्रकार वाथकारहै औरइसका यहअर्थ
है क्योंकिमैंनेपूर्वइसकाअर्थ ऐसापढ़ावासुनाथा विनासंस्कारके
स्मृतिकभीनहींहोती औरविनास्मृतिसेयहऐसाहीहैवानहीं ऐ-
सीप्रवृत्तिवानिवृत्ति कभीनहींहोती सोएकहाजन्महोता तोजन्म
समयसेलेके वालकोंकोअनेकप्रकारकेव्यवहारदेखनेमेंआतेहैं जैसे
क्षुधाकाज्ञानऔरदुग्धादिकोंसेक्षुधाकीनिवृत्तिकेहेतु इच्छाफिर
दुग्धपीनेकीयुक्ति औरतृप्तिहोनेसेदूधपीनेकीनिवृत्तितथामलमूत्रा
दिकोंकेत्यागकीयुक्ति औरकोईउसकोकुछमारै अथवाडरावै फि-
रउससे रोदनादिककोप्रवृत्तिऔरप्रीतिवाला उनकेहासऔरप्रस-
न्नताकीप्रवृत्तिइत्यादिकप्रवृत्तिऔरनिवृत्ति रूपव्यवहारविनापूर्व-
जन्मकेसंस्कारसेकभीनहीहोसक्ताइससे पूर्वजन्मअवश्यमाननाचा-
हिए प्रश्न एसवव्यवहारस्वभावसेहोतेहैं जैसेकिअग्निऊपरचलता
है औरजलनीचेकोवैसेहीजीवकोज्ञानस्वरूपकेहोनेसे हो-
तेहैं उत्तर जोस्वभावसे मानोगेतोपूर्वकहे अनुभवसंस्कारऔर
स्मृतितथाप्रवृत्तिवानिवृत्तिइनकोछोड़दो औरजोछोड़ोगेतोको-
ईव्यवहारआपलोगोंकासिद्धनहोगा फिरपढ़नापढ़ानाबुरीवातों
कछोड़नेकाउपदेश तथाअच्छीवातोंकाउपदेशक्योंकरते औरक-
रातेहोऔरजोस्वभावसेमानोगेतोउसकोनिवृत्तिकभीनहीहोगी
जैसेकिअग्निऔरजलकेस्वभावकीनिवृत्तिनहींहोती वैसेप्रवृत्तिको
स्वभावसेमानोगेतो निवृत्तिकभीनहीहोगी जोनिवृत्तिकोस्वभाव
सेमानोगेतोप्रवृत्ति कभींनहीहोगी औरजोदोनोंका मानोगेतो
क्षणभंगऔरअनवस्थाहोगी फिरआपलोगोंमें उन्मत्तादोष आ-
जायगा क्योंकिअग्निकोनीचे चलनेमेंप्रवृत्तिकभीनहींहोती तथा
जलकोस्थूलकेहोनेसेऊपरकोप्रवृत्तिकभीनहीहोती वैसेहीस्वभा-
वसवजानों प्रश्न ईश्वरनेजैसाजिसकास्वभावरचाहै वैसाहीहोता

है उत्तर यहबातभीठीकनहीं जोईश्वरकारणहोताहै इनव्यवहा-
रोंमेंतोईश्वरकेदयालुहोनेसे सबओषधियोंकाज्ञानऔरपरमेश्व-
रपर्यन्तपदार्थोंकाबोध तथाधर्ममेंप्रवृत्तिऔरअधर्मसेनिवृत्ति ई-
श्वरनेसबजीवोंमेंस्वभावसेक्योंनहीरक्खी औरईश्वरअन्यायकारी
भीहोजायगा क्योंकिकिसीकोराजाऔरधनाढ्यकेघरमें जन्मऔर
किसीकोअसमर्थ औरदरिद्रके घरमें जन्म तथाएककोबुद्धि बहुत
अच्छीऔरदूसरेकोजड़बुद्धिदेताहै तथाएकरूपवान्औरएककुरूप
तथाएकबलवान् औरदूसरानिर्बलएकपण्डितऔरदूसरामूर्खहो-
ताहै सोबिनाअच्छेकर्मोंसेउत्तमपदार्थोंकादेना औरबिनाअप-
राधसेभ्रष्टपदार्थोंकादेना इससे ईश्वरमेंपक्षपातआवेगा पक्षपात
केआनेसेईश्वरअन्यायकारी होजायगाऔर कृतहानिरकृताभ्या-
गमश्च। एदोदोष आजांयगे क्योंकि अबजो कुछ किया जाता है
उसको हानि होजायगी फिर जन्मके नहो होने से जो शरीर,
इन्द्रियां, प्राण, और मनके नहो होने से पाप पुण्यों का फल
कभींनहीभोगसक्ता औरजोपूर्वजन्मनमानेंगेतो विनाकिए सुख
औरदुःखकोप्राप्तिकैसेहोगी वैषम्यऔरनैर्घृण्य,एदोदोषईश्वरमें
आजांयगे किबिनाकारणसे किसीकोसुखदेदे औरकिसीकोदुःख
यहविषमता ईश्वरमेंआवेगी औरजीवोंकोदुःखीदेखकेजिसकोघृ-
णानामदयानहींआतोइससेईश्वरकादयाजोगुणसोनष्टहोजायगा
औरजोपूर्वतथा उत्तरजन्महोगातोईश्वरमेंकोईदोषनहीआवेगा
क्योंकिजैसाजिसकापुण्यवापापवैसाउसकोसुखवादुःखहोगा इससे
ईश्वरन्यायकारीऔरदयालुभीयथावत्रहेगाइससेपूर्वऔरपरजन्म
अवश्यमाननाचाहिए सोपूर्वजन्मोंको संख्यानहींहैं क्योंकिजबसे
सृष्टिउत्पन्नभईहै तबसेअनेकजन्मधारणकरतेरचलेंआतेहैं और
जबतकमुक्तिनहोहोगी तबतकस्थूलशरीरअवश्यधारणकरेंगे प्रश्न
सुखवादुःखराजाऔरदरिद्रकोतुल्यहीदेखपड़ताहै क्योंकिजोरा-
जाको सुखव दुःखहैं वेदरिद्रोंकोभीहैं विचारकरकेदेखैं तोसुख

वा दुःखसबको तुल्यही दिखपड़ता है उत्तर ऐसा कहना योग्य नहीं क्योंकि इच्छाके अनुकूल पदार्थोंको प्राप्तिका होना सुखकहाता है और इच्छाके प्रतिकूलपदार्थोंकी प्राप्तिका होना दुःखकहाता है सो हर्षऔर प्रसन्नतासुखके पर्य्यायहैं और शोकतथा अप्रसन्नतादुःखके पर्य्यायहैं जबराजादिकधनाढ्योंकेगर्भवासमें जीवआताहै उसीदिनसे अनुकूलपदार्थोंकासेवनहोताहै फिरजन्मजबहोताहै तबअनेकओषधादिकव्यवहारोंकी प्रतिहोतीहै औरबिनाइच्छाकेभी अनेकपदार्थ अनुकूल प्राप्तहोतेहैं वहजब दूधपीनेकी इच्छाकरताहै तबबिनाइच्छासेभी मिश्री औरसुगन्धादिकमेंयुक्त दूधयथेष्ट मिलताहै औरजबवहकुछअप्रसन्नहोनेलगताहै तबअनेक सेवकपरिचारकलोग मधुरबचन औरखिलौनेसे शीघ्रहीप्रसन्नकरदेतेहैं औरफिरजबवहबड़ाहोताहै तबजिसकेऊपर दृष्टिकरताहै वहहाथजोड़केअनुकूलवचन तथाअनुकूलव्यवहारकरताहै सदा प्रसन्नउसको सबलोगरखतेहैं औरवहरहताहै फिरजबकभीदुःखीभीहोताहै तबअनुकूलवचन औरओषधादिकोंसे उसकोप्रसन्नकरदेतेहैं औरजोविद्यावानोंकेगर्भवासमेंआताहै उसकोभीअधिकसुखहोताहै परन्तु कोईकर्मा उनमेंसेनष्टबुद्धिकेहोनेसेदुःखी होजाताहै सोपूर्वजन्मकेपापोंसे औरइसजन्मके दुष्टव्यवहारोंसे पीड़ितहोताहै औरजोमूर्ख वा दरिद्रके गर्भवासमें जीवआताहै उसीसमयसे उसकोदुःखहोनेलगतेहैं जबवहस्त्रीघासवालकड़ीको काटनेलगतीहै तबगर्भमेंप्रहारकेहोनेसेजीवपीड़ितहोताहै और कभीक्षुधातुररहतीहै कभीवहतकुत्सित अन्नकोखालेतीहै उससे भीउसजीवको अत्यन्तपीड़ाहोतीहै फिरजबजन्महोताहै तबकोई प्रकारकाओषधवासुनियम तथाकोईपरिचारक उससमय नहीं रहता किन्तुमार्गवनवाखेतमें प्रायःपाषाणकीनाईं गर्भमेंबालक गिरपड़ताहै फिरवहस्त्रीउसकोपींछपांछके वस्त्रमें बांधके पीठमें बांधलेतीहै फिरकभी उसस्त्रीको घासवालकड़ीबचनेकी शीघ्रता

होती है उस समय बालक दूध पीने के हेतु रोता है सो दूध तो उसको नहीं मिलता परन्तु वह स्त्री उस बालक को थपेड़ा मारती है फिर अधिक २ जब रोता है तब अधिक २ मारती है फिर रोता रहता है परन्तु दूध नहीं पिलाती फिर वह जब कुछ बड़ा होता है तब उसको यथावत् खाने को भी समय के ऊपर नहीं रहता फिर वह मजूरी करता है तो भी उसको यथावत् इच्छा के अनुकूल नहीं मिलता और सदा उसको सुख की तथा उत्तम पदार्थों की प्राप्ति की इच्छा होती है परन्तु प्राप्ति न होने से सदा दुःखी रहता है जो ऐसा कहता है कि सुख वा दुःख सबको तुल्य है सो पुरुष विचारवान नहीं है क्योंकि सुख वा दुःख प्रत्यक्ष ही अधिक वा न्यून देख पड़ते हैं (प्रश्न) जब पहिले २ ही सृष्टि भई थी तब उससे पूर्व जन्म तो किसी का न था फिर उस समय अधिक वा न्यून राजा अथवा दरिद्रादिक क्यों भए थे इससे जाना जाता है कि जैसे पहिले जन्म में भये थे इससे आज काल पहिला ही जन्म है सो अधिक न्यून बन जाओ परन्तु एक २ जन्म का विचार मैं आता है वस्तुत जन्म नहीं (उत्तर) आदि सृष्टि में सब मनुष्य उत्पन्न भए थे न कोई राजा न कोई प्रजा न मूर्ख न पण्डित इत्यादिक भेद नहीं थे इससे आदि सृष्टि में दोष नहीं आया (प्रश्न) जैसे आदि सृष्टि में दुग्धपानादिक व्यवहार सुख और दुःख आदिक प्रवृत्ति वा निवृत्ति भई थी वैसे आज काल भी होता है फिर वह जो आप कहते कि अनुभवादिकों के बिना प्रवृत्ति वा निवृत्ति नहीं होती सो बात विरुद्ध हो गई (उत्तर) विरुद्ध नहीं होती क्योंकि आदि सृष्टि में गर्भवास से उत्पत्ति नहीं भई थी और किसी को बाल्यावस्था भी न थी किन्तु सब स्त्री और पुरुषों की युवावस्था ही ईश्वर ने रची थी फिर वे उस समय अच्छा वा बुरा कुछ नहीं जानते थे जहां जिसका नेत्र था अथवा बुद्ध्यादिक जिस बाह्य पदार्थ में युक्त भए उसको टक २ देखते थे परन्तु यह अच्छा वा बुरी ऐसा नहीं जानते थे परन्तु प्राण, शरीर अथवा इन्द्रियों में चेष्टा गुण था ऐसा नहीं जानते थे कि ऐसे चेष्टा करनी वा न करनी फिर चेष्टा होने लगी बाह्य पदार्थों के साथ स-

आदिकव्यवहारहोनेलगे उनमेंसेकिसीनेकुछपत्तावाफूलवाघास
स्पर्शकिया वाजीभकेऊपररक्खा तथादांतोंसेचवानेलगे उसमें
सेकुछभीतरचलागया कुछबाहरगिरपड़ा उसकोदेखकेदूसराभी
ऐसाकरनेलगा फिरकरते२व्यवहारबढ़ताचला तथासंस्कारभीहो
तेचले होते२मैथुनादिकव्यवहारभीहोनेलगे सोपांचवर्षतकउस
समयकिसीकोपापवापुण्यनहींलगताथा वैसेहीआजकालभीपांच
वर्षतकबालकोंकोपापपुण्यनहींलगता फिरव्यवहारकरते२अच्छा
बुराभीकुछ२जाननेलगे फिरपरस्परउपदेशभीकरनेलगे कियह
अच्छाहैयहबुराहै औरपरमेश्वरनेभीउत्तमपुरुषोंकेद्वारावेदविद्या
काप्रकाशकिया वेदद्वारामनुष्योंको उपदेशभीकरनेलगे उनके
उपदेशको किसीनेसुना औरकिसीनेनसुना सुनकेभीकिसीनेवि-
चाराऔरकिसीनेनविचारा परन्तु बहुतमनुष्य कुछ२अच्छाबुरा
जाननेलगे फिरआगे२मैथुनिसृष्टिहोनेलगी फिरउनबालकोंको
भीउपदेशऔरसंस्कारहोनेलगे सोआजतकअनेकप्रकारकेपापपु-
ण्योंसेव्यवहारभिन्न२होतेआएहैं सोहमलोगप्रत्यक्ष देखतेहैं इ-
ससे आगेकेसंस्कारोंकाअनुमानकरलेतेहैं औरपीछेजोसंस्कारों
सेव्यवहारहोंगे उनकाभी अनुमान हमलोगकरतेहैं इसमध्यस्थ
व्यवहारकोप्रत्यक्षदेखनेसे प्रश्न परमेश्वरमेंविषमतादोषतोआता
है क्योंकिआदिसृष्टिमें बहुतजीवोंकोमनुष्यशरीरदिए बहुतोंको
पश्वादिकशरीरदिए सोमनुष्योंकाशरीरतोउत्तमहै औरपश्वा-
दिकोंकानीच औरआदिसृष्टिमें मनुष्योंनेएककर्म क्योंनहींकिया
भिन्न२कर्मकरनेसेभी यहजानाजाताहै किजैसेप्रथम शरीरोंकेदे-
ने औरकर्मोंकेकरनेमें विषमताभईथी वैसेआजकालभीहोतीहैं
इससे ईश्वरपक्षपातीनहींहोता औरईश्वरकेऊपरकोईनहींहै इ-
ससे जैसीउसकीइच्छावैसाकरताहै औरजोवहकरताहै सोअच्छा
हीकरताहै परन्तु हमारीबुद्धिछोटीहै इससे समझनेमेंनहींआता
उत्तर अपने२स्थानमें सबशरीरअच्छेहैंकोईपदार्थपरमेश्वरनेबु-

रा नहीं रचा परन्तु उनके परस्पर मिलने से कहीं गुण होजाता है कहीं दोष होता है सो जिस समय आदि सृष्टि भई थी उस समय मनुष्यों और पश्वादिकों में कुछ विशेष नहीं था विशेष तो पीछे से भया है सो जितने शरीर रचे हैं वे सब जीवों के कर्म भोग करने के हेतु रचे हैं सो ईश्वर न रचता तो वे शरीर कैसे होते इससे प्रथम ही ईश्वर ने सब व्यवस्था कर रक्खी है कि जैसा जो कर्म करै सो वैसा ही जन्म सुख वा दुःख को प्राप्त हो वे और एक २ बार बिना संस्कारों से भी मनुष्य का शरीर मिलेगा क्योंकि सब शरीरों से मनुष्य का शरीर उत्तम है और मनुष्य ही के शरीर में पाप और पुण्य लगता है अन्य शरीर में नहीं और जो यह मनुष्य का शरीर है सब जीवों के लिए है क्योंकि सब को प्राप्त होता है वैसे ही सब कीट पतंगादिकों के शरीर भी हैं जब मनुष्य शरीर में जीव अधिक पाप करता है और पुण्य थोड़ा तब नरकादिक लोक और पश्वादिकों के शरीरों को प्राप्त होता है जब उसका पाप और पुण्य तुल्य होते हैं तब मनुष्य का शरीर प्राप्त होता है और जब पुण्य अधिक करता है और पाप थोड़ा तब देवलोक और देवादिकों का शरीर उस जीव को मिलता है उसमें जितना अधिक पुण्य उसका फल जो सुख उसको भोग के जब पाप पुण्य तुल्य रह जाते हैं तब फिर मनुष्य का शरीर धारण करता है इन कर्मों में तीन भेद हैं एक मन से दूसरा वाणी से और तीसरा शरीर से कर्म करता है इन तीनों में से एक २ के तीन भेद हैं सत्व रज और तमोगुण के भेद से सो जब मन से सत्त्वगुण कि शान्त्यादिक गुणों से युक्त होके उत्तम कर्म करता है तब देव मनुष्य और पश्वादिकों में बहु जीव रहता है परन्तु मन में प्रसन्नता ही उसको रहती है और रजोगुण से युक्त होके मन से जब पुण्य वा पाप करता है तब देव मनुष्य पश्वादिकों में मध्यम ही वह होता है उत्तम नहीं किन्तु उत्तम तो सत्वगुण वाला होता है क्योंकि रजोगुण के कार्य लोभ इत्यादिक होते हैं तमोगुण प्रधान जिस पुरुष को होता है उसको मोह, आलस्य, प्रमाद, क्रोध और विषादादिक दोष होते हैं वह प्रायः पाप वा पुण्य अधम ही करेगा इससे देवम-

नुष्य और पश्वादिकों में नीचशरीर में प्राप्त होगा और जो वचन से पाप करेगा तो मृगादिक योनि को प्राप्त हो जायगा फिर सदा वह शब्दों से चलायमान होता रहेगा क्योंकि जो जिस से पाप करता है वह उसी से भोग करता है जब शरीर से जीव पाप करते हैं वे वृक्षादिक स्थावर शरीर को प्राप्त होते हैं इसमें मनु भगवान के श्लोक लिखते हैं सो जान लेना ॥

मानसं मनसैवायमुपभुंक्ते शुभाशुभम् । वाचा वाचाकृतं कर्म कायेनैव च कायिकम् ॥ १ ॥ भा० यह जीव मन वाणी और शरीर से शुभ नाम पुण्य अशुभ नाम पाप करता है सो जिस से करता है उसी से भोग भी करता है ॥ १ ॥ शरीरजैः कर्मदोषैर्याति स्थावरतां नरः । वाचिकैः पक्षिमृगतां मानसैरन्त्यजातिताम् ॥ २ ॥ भा० जब शरीर से पाप करता है तब वृक्षादिक स्थावर शरीर को प्राप्त होता है वचन से किए पापों से पक्षि और मृगादिक योनि को प्राप्त होता है और मन से किए पापों से नीच चाण्डालादिक योनि को प्राप्त होता है ॥ २ ॥ यो यदैषां गुणो देहे साकल्येनातिरिच्यते । स तदा तद्गुणप्रायं तं करोति शरीरिणम् ॥ ३ ॥ भा० जो गुण जिस के शरीर में प्रधान होता है उस से युक्त हो के जीव उस गुण के योग्य कर्म को करता है और गुण भी उसको कराता है ॥ ३ ॥ सत्त्वं ज्ञानं तमोऽज्ञानं रागद्वेषौ रजः स्मृतम् । एतद्व्याप्तिमदेतेषां सर्वभूताश्रितं वपुः ॥ ४ ॥ भा० सत्वगुण का कार्य ज्ञान है तमोगुण का कार्य अज्ञान और रजोगुण का कार्य राग और द्वेष है ए तीन गुण और इन के तीन कार्य सब भूतों में व्याप्त हैं क्योंकि इसी का नाम प्रकृति और कारण शरीर है ॥ ४ ॥ तत्र यत्प्रीतिसंयुक्तं किंचिदात्मनि लक्षयेत् । प्रशान्तमिव शुद्धाभं सत्त्वं तदुपधारयेत् ॥ ५ ॥ भा० जिस पुरुष का चित्त जब प्रसन्नता युक्त रहै तथा प्रशान्त की नाईं और शुद्ध की नाईं तब उस को सत्वगुण और सत्वप्रधान पुरुष को जानना ॥ ५ ॥ यत्तु दुःखसमायुक्तमप्रीतिकरमात्मनः । तद्रजोऽप्रतिघं विद्यात्सततं हारि देहिनाम् ॥ ६ ॥ भा० जिस का चित्त दुःख युक्त रहै हृदय में प्रसन्नता भी न होवै सदा चित्त चंचल होय विषयों के ओर

दौड़नेलगे औरवशीभूतन होवह रजोगुणप्रधानपुरुषहै। ताकि ६ ॥

यत्तुस्यान्मोहसंयुक्त मव्यक्तं विषयात्मकम्। अप्रतर्क्य मविज्ञेयं त-मस्तदुपधारयेत ॥ ७ ॥ म० जोचित्तमोहसंयुक्त रहै हृदयमेंकुछ विचारभीसत्यासत्यकानहोय विषयकोंमेंवामें फसारहै ऊहापोह जिसमेंनहोय औरजैसाअन्धकारमेंपदार्थ वैसाकुछज्ञाननेमेंभी नआवै उसजीवकोतमोगुण प्रधानऔरतमोगुण जानना ॥ ७ ॥

त्रयाणामपिचैतेषां गुणानांयःफलोदयः। अग्र्योमध्योजघन्यश्च तं-प्रवक्ष्याम्यशेषतः ॥ ८ ॥ म० इनतीनगुणोंका उत्तममध्यम और नीचजोफलोदयउसकेआगेकहतेहैं यथावत् ॥ ८ ॥ वेदाभ्यासस्त-पोज्ञानं शौचमिन्द्रियनिग्रहः धर्मक्रियात्मचिन्ताच सात्विकंगु-णलक्षणम् ॥ ९ ॥ म० वेदाभ्यास,तपनाम योगाभ्यास,ज्ञान,स-त्यासत्यविचार,जितेन्द्रियता, धर्मकाअनुष्ठान,आत्माका विचार तथापरमेश्वरकाभ जिसमेंगुणहोवें उत्तमसात्विकपुरुषऔरसत्व गुणकालक्षणहै ॥ ९ ॥ आरम्भरुचिताधैर्य्य मसत्कार्यपरिग्रहः। विषयोपसेवाचाजस्रं राजसंगुणलक्षणम् ॥१०॥ म० कार्योंकेआ-रम्भमेंअत्यन्तरुचिअधैर्यअसत्कार्योंकास्वीकार औरनिरन्तरवि-षयसेवामेंफसारहै यहरजोगुणअधिकपुरुषवालेकालक्षणहै १० ॥ लोभःस्वप्नोधृतिःक्रौर्य्यन्नास्तिक्यंभिन्नवृत्तिता। याचिष्णुताप्रमा-दश्च तामसंगुणलक्षणम् ॥ ११ ॥ म० अत्यन्तलोभअत्यन्तनिद्राधैर्य कालेशनहीं क्रूरतानामदयारहित नास्तिक्यनामविद्याधर्मऔर ईश्वरकोनहींमाननाभिन्नवृत्तितानामछिन्नभिन्नजिसकीबुद्धिनि-त्यदानदक्षिणाऔरभिक्षाग्रहणमेंप्रीति औरप्रमादनामनानाप्र-कारकाउपद्रवकरना यहतमोगुण औरतमोगुणपुरुषवालेकाल-क्षणहै औरस्वल्पसेआगेतीनोंगुणोंके लक्षणकहेजातेहैं ॥ ११ ॥

यत्कर्मकृत्वाकुर्वंश्च करिष्यँश्चैवलज्जति। तज्ज्ञेयंविदुषासर्वं ता-मसंगुणलक्षणम् ॥ १२ ॥ म० जिसकर्मकोकरकेकरताभया और करनेकीइच्छामें लज्जाऔरभयहोताहै वहपुरुषऔरकर्मतमोगु-

णीहैं क्योंकिपापहीमेंरहेगा ॥ १२ ॥ येनास्मिन्कर्मणालोके ख्या-
तिमिच्छसिपुष्कलाम्। नचशोचत्यसंपत्तौ तद्विज्ञेयन्तुराजसम् ॥
१३ ॥ भ० लोकमेंकीर्तिकेहेतुइच्छासेभाटआदिकपुरुषोंकोपदार्थ
देना औरऐसाकामकरेंकिजिससे किमेरीइसलोकमेंप्रशंसाहोय
सोमिथ्याप्रशंसाकाचाहना अन्यायमेंऔरकुकर्ममेंधनतथापदार्थके
नाशहोनेमेंकुछसोचविचारनकरनायहरजोगुणीपुरुषहै यहघोर
दुःखमेंसदापड़ारहताहै॥१३॥ यत्सर्वेणेच्छतिज्ञातुं यन्नलज्जति-
चाचरन्। येनतुष्यतिचात्मास्य तत्सत्वगुणलक्षणम् ॥१४॥ भ० जो
पुरुषसबप्रकारोंसेऔरउत्तमपुरुषोंसेजाननेकोचाहताहै तथाधर्म
केआचरणमेंकोईहानिवानिन्दाहोय तोभीजिसकोंलज्जावाभयन
होय औरजिसकर्मसेंअपनाआत्माप्रसन्नहोय अर्थातधर्माचरणसे
उनकोकभीनछोड़े यहसात्विकपुरुषकालक्षणहै ॥ १४ ॥ तमसो-
लक्षणंकामो रजसस्त्वर्थउच्यते। सत्वस्यलक्षणंधर्मः श्रैष्ठ्यमेषां-
यथोत्तरम्॥१५॥ भ० जोकाममेंफसारहताहै वहतमोगुणीपुरु-
षहै तथाधनादिकअर्थहीकोपरमपदार्थजानताहै वहरजोगुणीहै
औरजोधार्मिकअर्थात्धर्महीमें जिसकीनिष्ठाहै वहसत्वगुणीपु-
रुषहै तमोगुणीसेरजोगुणीरजोगुणीसेसत्वगुणवालापुरुषश्रेष्ठहै॥
१५ ॥ इनमेंसेसत्वगुणवालाधार्मिकहोकेपुण्यहीकरेगा रजोगुण-
वालापापपुण्यदोनोंकरेगा तथातमोगुणवाला पापहीकरेगा इ-
नको जैसे२ जन्म और सुख वा दुःख होते हैं सो लिखा जाता
है ॥ देवत्वंसात्विकायान्ति मनुष्यत्वंचराजसाः। तिर्यक्त्वंताम-
सानित्य मित्येषात्रिविधागतिः ॥ १६ ॥ भ० जोसात्विकपुरुषहो
तेहैं वेदेवभावकोप्राप्तहोतेहैं अर्थातविद्वानधार्मिकऔरबुद्धिमा-
नहोतेहैं तथाउत्तमपदार्थ और उत्तम लोकोंकोभी प्राप्तहोतेहैं
तथाजोरजोगुणीहोतेहैं वेमध्यमलोकमनुष्य व तथाबुद्ध्यादिकप-
दार्थोंको प्राप्तहोकेमध्यमरहतेहैं उत्तमनहीं औरजोतमोगुणी
होतेहैं वेनीचतापश्वादिकगति तथाबुद्ध्यादिकमेंभीनीचभाव र-

रहता है इन तीनों के तीन गुणों में उत्तम मध्यम और नीचता से एक२ गुण का तीन२ भेद होते हैं और वैसे ही उनको फल मिलते हैं सो आगे२ लिखा जाता है ॥ १६ ॥ स्थावराः कृमिकीटाश्च मत्स्याः सर्पाश्च कच्छपाः । पशवश्च मृगाश्चैव जघन्या तामसी गतिः ॥१७॥ भ० स्थावर, वृक्षादिक, कृमि, कीट, मत्स्य, तथा कच्छपादिक, जलजन्तु, गाय आदिक पशु तथा मृगादिक वन के पशु जिसको अत्यन्त तमोगुण होता है वह ऐसे शरीरों को प्राप्त होता है ॥ १७ ॥ हस्तिनश्च तुरंगाश्च शूद्राम्लेच्छाश्च गर्हिताः । सिंहा व्याघ्रा वराहाश्च मध्यमा तामसी गतिः ॥ १८ ॥ भ० हाथी घोड़े शूद्र जो मूर्ख म्लेच्छ नाम कसाई आदिक गर्हित नाम जो निन्दित कर्म करने वाले सिंह उन सम कुछ जो नीच होते हैं वे व्याघ्र वराह नाम सूअर जो पुरुष मध्य तमोगुण वाला होता है वह ऐसे जन्मों को पाता है ॥ १८ ॥ चारणाश्च सुपर्णाश्च पुरुषाश्चैव दांभिकाः । रक्षांसि च पिशाचाश्च तामसीषूत्तमा गतिः ॥ १९ ॥ भ० चारण नाम दूत दूती और गाने वाले जो कि वेश्याओं के पास गण रहते हैं सुपर्ण जो हंसादिक अच्छे उत्तम पक्षी दांभिक पुरुष अर्थात् मत्सर, यवाले मिथ्या उपदेश करने वाले तथा अहंकार अभिमानादिक गुण युक्त राक्षस नाम छल, कपट करने वाले पिशाच नाम सदा मलिन रहें ऐसे जन्मों को प्राप्त होते हैं जिन में कि थोड़ा तमोगुण रहता है ॥ १९ ॥ झल्ला मल्ला नटाश्चैव पुरुषाः शस्त्रवृत्तयः । द्यूतपानप्रसक्ताश्च जघन्या राजसी गतिः ॥ २० ॥ भ० झल्ला नाम तड़ाग कूप आदिक खोदने वाले मल्ला नाम मल्लाह और कुश्त करने वाले शस्त्र वृत्ति पुरुष जो कि शस्त्रों को बनाने और सुधारने वाले जुआरी लोग और भांग, गांजा, अफीम तथा मद्य पीने में जो कि मस्त रहते हैं जिन को अत्यन्त रजोगुण है वे इस प्रकार के होते हैं ॥ २० ॥ राजानः क्षत्रियाश्चैव राज्ञांचैव पुरोहिताः । वादयुद्धप्रधानाश्च मध्यमा राजसी गतिः ॥ २१ ॥ भ० जिन पुरुषों में मध्य रजोगुण होता है वे राजा होते हैं तथा क्षत्रिय होते हैं अर्थात् शूद्रवीरादिक गुण वाले होते हैं राजाओं के पु-

रोहितवादमें प्रधानजोकिनानाप्रकारवादविवादकरतेहैं वकील आदिकयुद्धमेंप्रधानजोकिसिपाहीहोतेहैंयहरजोगुणियोंकीमध्यमगतिहै २१। गन्धर्वागुह्यकायक्षाविबुधानुचराश्चये। तथैवाप्सरसः सर्वाराजसीषूत्तमागतिः। २२॥ भ० गन्धर्वजोकिगानविद्यामेंकुशल गुह्यकजोकिसिल्प औरवादित्रोंकोबजानेमेंचतुर यक्षनामबड़े धनाढ्यतथाविबुधनामउक्तदेवोंकेगण अर्थातसेवकऔरअप्सराअर्थातरूपादिकगुण औरचतुरस्त्रीजिनमेंबहुतथोड़ा रजोगुणहोता है उनकोऐसेजन्ममिलतेहैं ॥ २२ ॥ तापसायतयोविप्रा येचवैमानिकागणाः। नक्षत्राणिचदैत्याश्च प्रथमासात्विकीगतिः २३ ॥ भ० तापसनामकपटछलादिकदोषोंकेविना कृच्छ्रचांद्रायणादिक व्रतऔरयोगाभ्यासकरनेवाले यतिनाम यत्नऔरविचारकरनेमें प्रवीण विप्रनामवेदकापाठअर्थऔरतदुक्तकर्मोंकेजानने औरकरनेवाले वैमानिकगणजोकिआकाशमेंयानोंकोचलानेवालेऔर रचनेवाले नक्षत्रजोकि गणितविद्या जाननेवाले औरनक्षत्रलोकतथानक्षत्रलोकमेंरहनेवाले औरदैत्यजोकिविद्याशान्ति और शूरवीरादिकगुणयुक्तजोथोड़े सात्विकगुणयुक्तहोवैं उनमेंऐसेगुण होतेहैं ॥२३॥ यज्वानऋषयोदेवा वेदाज्योतींषिवित्सराः। पितरश्चैवसाध्याश्च द्वितीयासात्विकीगतिः ॥ २४ भ० यज्ञकरनेमेंजिनकोअत्यन्तप्रीति ऋषिनाम यथार्थमन्त्रोंके अभिप्रायजाननेवाले देवनाममहादेव औरइन्द्रादिकदिव्यगुणवाले चारोंवेदज्योतिष शास्त्रऔरचन्द्रादिकज्योति लोकवत्सरकालऔरसूर्य्य लोक पितर जोपिताकीनांई सबमनुष्योंकेहितकरनेवाले औरपितृलोकमेंरहनेवाले साध्यजोअभिमानहठादिकदोषरहितहोके धर्मऔरविद्यादिकगुणोंकोसिद्धकरनेवाले तथानारायणऔरविष्णु आदिक देवजोवैकुण्ठादिकमेंरहतेथे जोमध्य सत्वगुणसे ऐसे कर्मकरतेहैं उनकोऐसीगतिहोतीहै ॥ २४ ॥ ब्रह्माविश्वसृजोधर्मो महानव्यक्तमेवच। उत्तमांसात्विकीमेतां गतिमाहुर्मनीषिणः ॥ २५ ॥

भ० ब्रह्माब्रह्मज्ञानपर्यन्तविद्याकाज्ञानदेनेवाला अथवाब्रह्मलोकका अधिष्ठाताऔरउसलोककोप्राप्तहोनेवाले प्रजापतिऔरविश्वसृज जोकिधर्मऔरविद्यासमस्तकपालनकरनेवाले वासिद्धजोकिपरमाणुकेसंयोगवावियोगकरनेवाले औरउसविद्यावाले अथवाप्रजापतिलोकके अधिष्ठाता वाउनकोप्राप्तहोनेवाले धर्ममहानबुद्धि अव्यक्तनामप्रकृति यहसत्वगुणकोउत्तमगतिहै यहांसेआगेकर्मऔरउपासनाकाकोईफलभोगनहीहैसिवायपरमेश्वरके॥२५॥ इन्द्रियाणांप्रसंगेन धर्मस्यासेवनेनच। पापान्संयान्तिसंसारानविद्वांसो नराधमाः॥२६॥भ०इन्द्रियोंकाप्रसंगअर्थातअत्यन्तविषयसेवामेंफसनेऔरधर्मकेत्यागसे जोजीवअधमऔरविद्याहीनहैंअत्यन्तदुःखोंकोपातेहैं दुष्ट२शरीरोंकोप्राप्तहोतेभये इनप्रकारोंसेदुष्टवाश्रेष्ठ कर्मोंकेकरनेसेसुखवादुःखजीवोंकोहोतेहैं यहीईश्वरकीआज्ञाहै किजोजैसाकर्मकरैवहवैसाभोगैइससे ईश्वरमें कुछपक्षपातदोषनहींआता क्योंकिजैसाजोकर्मकरताहैउसकोवैसाहीफलमिलताहै औरईश्वरन्यायकारीहैसोसदान्यायहीकरताहै अन्यायकभीनहीं इससे जैसाचाहै ऐसाकरनानहींआता ईश्वरमें क्योंकिवहसत्यसंकल्पहै औरनिर्भ्रमउसकाज्ञानहै इससे जैसोव्यवस्थान्यायमेंकरनी उचितथी वैसेहीकियाहै अन्यथानहीं एकदोषसवजीवोंमेंहैं किपहिलेकुछऔरव्यवस्थाकरैं पीछेऔरक्योंकिजीवोंमें भ्रमादिकदोषहोतेहैं औरकोईव्यवहारमें निर्भ्रमभीहोतेहैं सर्वत्रनहीं और सर्वत्रनिर्भ्रमतवजीवहोताहै किजवपरब्रह्मकासाक्षातविज्ञानहोताहै औरउसीकानित्ययोग अन्यथानहीं सर्वत्रनिर्भ्रमतो सनातनएकईश्वरहीहै इससे क्याआयाकि एकजीव अनेकजन्म धारण करताहै यहसिद्धभया प्रश्न ईश्वरएकजीवकोअनेकजन्मकीव्यवस्था क्योंकरताहै क्योंकिईश्वर सर्वशक्तिमानहै नित्यनए२ जीवोंको उत्पन्नक्यानहीकरसक्ता उत्तर ईश्वरअवश्यसर्वशक्तिमानहै परंतु अन्यायकभी नहींकरता जोजीवदूसराशरीर धारणनहीकरेगा

तोएकजन्ममें किएपापवापुण्यइनकाभोगनहीं होसकेगा फिरउस-
कान्यायभीनहीं होगा किपापकरनेवालेकोदुःखऔरपुण्यकरनेवा-
लेकोसुखहोनाचाहिए सोबिनाशरीरमेंभोगहोनहींहोसक्ता दूसरे
अनेकजन्मअवश्यमाननाचाहिएप्रश्नपापवापुण्यकाभोगबिनाशरी-
रसेभीहोसक्ताहैपश्चात्तापकरनेमेंसोजीवमनमेंजितनेपापकिएहोंगे
उनकाभोगमनसेशोककरकेभोगकरलेगा(उत्तर)ऐसानकहनाचा-
हिएक्योंकिपश्चात्तापजोहोताहै सोभविष्यत्पापोंकानिवर्तकहोता
हैकिएभएपापोंकानहीं जैसेकोईपुरुष नित्यकूपकोदौड़२के डांक
जाय फिरकभीकूपकेपारकेकिनारेपरनहींपहुंचे किन्तुकूपमेंगिर
जायउसमेंउसकाहाथवागोडटूटजाय फिरउसकोकोईबाहरनि-
काललेफिरवहबहुतशोचकरै किमैंऐसाकामनकरतातामेरीयह
बुरीदशाक्योंहोती सोमैंबड़ामूर्खहूं दूसरे क्याआताहैकिआगेको
वहऐसाकर्मनकरेगा परन्तु जोकरचुकाउसकीनिवृत्तिकभीनहीं
होगी सोपश्चात्तापजोहोताहै सोकृतपापकानिवर्त्तकनहींहोता
औरजैसेकोईमनुष्य आंखसेअन्धाऔरकानसेबहिराहोय उसके
पाससर्पवाव्याघ्रआजाय अथवाकोईगालीदे वाउसकीनिन्दाकरै
तोभीउसकोकुछदुःखनहींहोता ऐसेहीबिनाशरीरधारणमेंजीव
सुखवादुःखनहींभोगसक्ता क्योंकिजबमूर्त्तिमानपदार्थहोताहै तब
वहशीतउष्णादिक व्यवहारोंकाभोगकरसक्ताहै अन्यथानहीं दू-
सराआयाकिपश्चात्तापमें कृतपापोंकीनिवृत्तिनहींहोसक्ती प्रश्न
जीवजिनकर्मोंमेंसुखहोवै वैसाकर्मक्योंनहींकरता उत्तर बिना-
विद्यादिकगुणोंकेकुछनहींयथावत्जानसक्ता विद्यादिकगुणबिना
परीक्षासेनहींहोते एकव्यवहारऐसाहै किजिसमेंप्रथमसुखहो-
य औरपीछेदुःखसोविषयोंमेंफसकेजीवदुःखितहोताहैक्योंकिअ-
त्यन्तविषयसेवामेंबलबुद्धि औरधनादिकनष्टहोतेहैं औरज्वरादि-
कअनेकरोगोंसेयुक्तहोकेफिरदुःखहीपाताहै दूसराऐसाव्यवहार
है किप्रथमतोदुःखहोय औरपीछेसुखसोव्यवहारयहहै किजिते-

न्द्रियता, ब्रह्मचर्याश्रम, विद्याकीप्राप्ति, सत्पुरुषोंकासंग, औरधर्म काअनुष्ठान, इत्यादिकज्ञानलेना इनकीप्राप्तिकेसाधनोंमें प्रथम दुःखहोताहै औरजबएप्राप्तहोजातेहैं तबअत्यन्तउमकोसुखहोता है तीसराव्यवहार ऐसाहोताहै किजिसमें सदादुःखहीरहै सो मोहहै जोधन पुत्रऔरस्त्रीआदिकअनित्यपदार्थोंमेंफसके विद्यादिकश्रेष्ठगुणोंका त्यागकरताहै वहसदादुःखी रहताहै चौथायह व्यवहारहै किजिसमेंसदासुखहीरहताहै दुःखकभीनहीं सोमुक्ति है विद्यादिकगुणोंकेनहोहोनेसे सुखकेकर्मोंको जानताहीनहीं फिरकैसेकरसकेगा कभीनकरसकेगा औरईश्वरका करनासब अच्छाहीहै क्योंकिईश्वरन्यायकारीत्वादिगुणयुक्तरहताहै यहहमकोदृढनिश्चयहै किईश्वरअन्यायकभीनहीकरता इतनाहमलोगबुद्धिमेयथावतजानतेहैं ईश्वरजैसाचाहै वैसानहींकरता जोकरताहैसोन्याययुक्तहीकरताहै अन्यथानहीं सोइससे यहसिद्धभया किअनेकजन्महोतेहैं सोजीवअविद्यादिकदोषोंमे युक्तहोकेविषयमें फसारहताहै इससे जीवको विवेकादिकगुणनहीहोनेसे बन्धनभी इसकानष्टनहोहोता जबयथावतपरमेश्वरपर्यन्त पदार्थविद्याहोतीहै तबयहसबदुःखोंसेछूटकेमुक्तिकोप्राप्तहोताहै प्रश्न प्रथमआप कहचुकेहैं किबिनाशरीरमेसुखवादुःखभोगनहीहोसक्ता सोमुक्तिमेंभीजीवकाशरीररहताहोगा औरजोकहैंकिनहीरहतातोमुक्तिकाभोगकैसेकरसकेगा औरजोकरसक्ताहै तोहमनेकहाथाकिमनमें पश्चात्तापसेपापकाफलभोगलेताहै यहबातमेरो सत्यहोयगी उत्तर जीवहीमुक्तिमेंरहताहै औरशरीरनहीं क्योंकिपहिलेजो लिंगशरीरकहाथा वहीजीवकेसाथ रहताहै सोअत्यन्त सूक्ष्महै औरसबपदार्थोंमेउत्तमऔरनिर्मलहै जैसेअग्निमेलोहालालहोताहै उसमेंअग्निसेभीअधिकदाहहोताहै वैसेहीएकअद्वितीय चेतनपरमेश्वरसर्वव्यापकहै उसकीसत्तासेयुक्तजीवचेतनसदारहताहै क्योंकिव्यापकसेव्याप्यकावियोगकभीनहींहोता जैसेआकाश

में सबस्थूलपदार्थोंकावियोगकभीनहीं मनुष्यऔरवायुआदिक
जहां२चलतेफिरतेहैं वहां२आकाशकासंयोगपूर्णहीहै वैसेआ-
काशादिकपदार्थभी परमेश्वरमेंव्याप्यहैं औरपरमेश्वरसबमेंव्या-
पकहै परमाणुऔरप्रकृति जोकिसूक्ष्मपदार्थोंकीअवधिहै इनसे
सूक्ष्मआगेसंसारकेपदार्थकोईनहींहैं परन्तुपरमेश्वरउनसेभीअ-
त्यन्तसूक्ष्म औरअनन्तहै जैसेआकाशकिसीपदार्थके साथचलता
फिरता नहीं वैसे परमेश्वरभी पूर्णकेहोनेसेजीवोंकेसाथचलता
फिरतानहीं किन्तुजीवसबअपने२कर्मानुसारचलतेफिरतेहैं प-
रमेश्वरकी सत्तासेधारितचेतनहै ॥ दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्या-
ज्ञानानामुत्तरोत्तरापायेतदनन्तरापायादपवर्गः । यहगौतममु-
निकासूत्रहै मिथ्याज्ञानजोकिमोहसे अनेकप्रकारकाहोताहै य-
थावत्विद्याकेहोनेसेजबनष्टहोजाताहै तब । अविद्यास्मितारागद्वे-
षाभिनिवेशाःपञ्चक्लेशाः ॥ यहपतञ्जलिमुनिकासूत्रहै इसका
यहअभिप्रायहै किअविद्यातोपहिलेप्रतिपादनकरदियाहै सोई
सबदोषोंकामूलहै द्रष्टाजोजीवदर्शनजोबुद्धिइनदोनोंकी एकस्वरू-
पताहोनीकिमैंबुद्धिहूं ऐसाअभिमान काहोना सोअस्मितादोष
कहाताहै ।(सुखानुशयीरागः॥ ३ ॥ प० जिससुखकापहिलेअनु-
भवसाक्षात्कियाहोय उससेंअत्यन्ततृष्णानामलोभ कियहसु-
भकोअवश्यमिलनाचाहिए यहदूसरादोषहै क्योंकिअनित्यपदा-
र्थोंमेंअत्यन्तप्रीतिकेहोनेसे नित्यपदार्थमेंजीवकोइच्छाकभ नहीं
होती (दुःखानुशयीद्वेषः)॥ ४ ॥ प० जिसदुःखकापहिले अनुभव
कियाहोय उसकोस्मृतिकेहोनेसे उसकेहननकोइच्छा औरउससे
जोक्रोधवहद्वेषकहाताहै यहतीसरादोषहै । स्वरसवाहीविदुषो-
ऽपितथारूढोऽभिनिवेशः ॥ ५ ॥ प० सबप्राणियोंकायहआशानित्य
बनीरहतीहै किमैंसदारहूं औरमेरेयेपदार्थसदाबनेरहैं नाश
कभीनहोवै सोकृमिसेलेकेसबप्राणियोंको औरविद्वानोंकोभी यह
आशानित्यबनीरहतीहै यहचौथाअभिनिवेशदोषकहताहै और

अविद्यातोप्रथमदोषहै एपांचदोषऔरइनसेउत्पन्नभए असंख्यात दोषजीवोंमेंरहतेहैं इससेजीवोंकीमुक्तिभीनहीहोसक्ती परन्तु बिवेकादिगुणोंसेजबमिथ्याज्ञाननष्टहोजाताहै तबअविद्यादिकदोष भीनष्टहोजातेहैं । प्रवृत्तिर्वाग्बुद्धिशरीरारम्भइति ९॥ गोत्तमऋ० बचनबुद्धिऔरशरीरइन्होंमेजोवआरम्भकरताहैसोप्रवृत्तिकहातीहै परन्तु जिसकेअविद्यादिकदोषनष्टहोजातेहैं वहउनमेंप्रवृत्तनहीं होता किन्तुविद्यादिकगुणोंमेंप्रवृत्त होताहै इससेउसकोमिथ्याप्रवृत्तिकिपरमेश्वरसेभिन्नपदार्थकोजाइच्छासोनष्टहोजातीहै फिर वहयोगाभ्यासविचार औरपुरुषार्थसेयुक्तअत्यन्तहोताहै उससे अनेकपरमाणुपर्यन्तसूक्ष्मपदार्थोंकाज्ञान नवसयथावत्साक्षात्कारहोताहै फिरअत्यन्तजबविचारऔरयोगाभ्यासकरताहै तबपरमानन्दसर्वव्यापकसर्वाधार जोपरमेश्वरउसकोअपनेहोमें व्याप्त देखताहै फिरउसकोस्थूलशरीर धारणकरनेका आवश्यकनहीं किन्तुएकपरमाणुकोभी शरीरबनाकेरहसक्ताहै तबइसका जन्म मरणादिककारण जोअविद्यादिकदोषउनसेकिएगएथ जोकर्मके भोगसबनष्टहोजातेहैं औरआगेजाकर्मकिएजातेहैं एसबज्ञानहोकेवास्ते करता है सोअधर्म कभीनहीं करता किन्तुधर्महीकरताहै उससे ज्ञानफलहीवहचाहताहै अन्यनहीं फिरउनके जन्म मरणकाजोमूल अविद्यासोज्ञान सेनष्टहोजातीहै फिरवह जन्म धारणनहींकरता औरउसकोबुद्धि, मन, चित्त, अहङ्कार, प्राण, औरइन्द्रियएसबदिव्यशुद्धपदार्थजीवकसामर्थ्यरूपरहजातेहैं औरदिव्यज्ञानादिकगुण नित्यउसमेंरहतेहैं औरआपदिव्यशुद्धनिर्विकाररहजाताहै । बाधनालक्षणंदुःखम् ॥ ७ ॥ गोत्तम० जितनीबाधना अर्थातइच्छाभिघात वहसबदुःख कहाताहै ॥ ७ ॥ तदत्यन्तविमोक्षोपवर्गः ॥ ८ ॥ गोत्तम० दुःखोंकीअत्यन्तजो निवृत्तिउसकोमोक्षकहतेहैं किसबदुःखोंसछूटजाना औरसदाआनन्दपरमेश्वरको प्राप्तहोकेरहना फिरलेशमात्रभी दुःखकासम्बन्ध

कभीनहींहोता सोकेवलएकपरमेश्वरकेआधारमें वहजीवरहता
है औरकिसीकासम्बन्धउसकोनहीं सोपरमेश्वरकेयोगमेंउसजीव
मेंसर्वज्ञत्रिकालज्ञान सबपदार्थोंकागुण औरदोषइनका सत्य२
बोधभीसदारहताहै) इससेजिसदुःखसागरसंसारमें बड़े भाग्यसेकू-
टकेपरमानन्दपरमेश्वरकोप्राप्तभयाहै सोयथावतजानताहै किप-
रमेश्वरकेयोगसेअन्यत्रदुःखहीहै सुखकभीनहीं फिरवहइसदुःख
मेंकभीनहींगिरता।जैसेचंद्रटो अत्यन्तचञ्चल होतीहै फिरवह
नानाप्रकारकेकणोंकोलेरके अपनेबिलमें संचयकरती जातीहै
उसकोस्थिरतावासन्तोषकभीनहींहोता वहकभीभाग्य औरपुरु-
षार्थसेमिष्टोत्तमभोजनकोप्राप्तहोय उसकास्वादलेके आनन्दितहोजा
तीहै फिरवहअपने घरऔरसंचयकोछोड़के उसीमेंनिवासकर-
तीहै उसकोखींचनेकासामर्थ्य नहीं सदाउसकोछोड़भीनहींस-
क्ती उत्तमपदार्थकेहोनेसेवैसेजीवभी परमेश्वरसेभिन्न पदार्थोंमें
सदाभ्रमणकरताहै तृष्णाकेबसहोके परन्तु जबपरमेश्वरका उ-
सकोयोगहोताहै तबसबतृष्णादिक दोषउसके नष्टहोजातेहैंफि-
रपूर्णकामऔरस्थिरहोकेपरमेश्वरहीमेंरहताहै सोमुक्तिमेंपर-
मेश्वरकाआधारउसकोहोनेसे सदापरमानन्दमुक्तिके सुखकोभो-
गताहै औरनिराधारमेंविषयसुखवादुःखऔरमुक्तिकाआनन्दभी
नहींभोगसक्ता इससे क्याआयाकिबिनास्थूलशरीरधारणसे पापवा
पुण्यसंसारमें फलकभीनहींभोगसक्ताऔरपरमेश्वरकेआधारके
बिनामुक्तिसुखभीनहींभोगसक्ता सोजोकहताहै किमनहींसेपाप
वापुण्यभोगताहै वाएकहीजन्महोताहै यहबातउसकीमिथ्याजा-
नो।प्रश्न वहमुक्तिप्राप्तजीवसदाबनारहताहै वाकभीवहभीनष्टहो
जाताहै उत्तर इसकायहविचारहै किपरमेश्वरनेजबसृष्टिरचीहै
किजबसंसारकाअत्यन्तप्रलयनहोगा तबभीवेमुक्तजीवआनन्दमेंर-
हेंगे औरजबअत्यन्त प्रलयहोगा तबकोईनरहेगा ब्रह्मका साम-
र्थ्यरूपऔरएकपरमेश्वरकेबिना सोअत्यन्तप्रलयतबहोगा किजब

सबजीवमुक्त होजायेंगे बीचमें नहीं सोअत्यन्तप्रलयकहतहैं संभवमात्रहोताहै किअत्यन्तप्रलयभीहोगा बीचमें अनेकवार महाप्रलयहोगा औरउत्पत्तिभीहोगी इससे सबसज्जनोंकोअत्यन्तमुक्तिकोइच्छाकरनीचाहिए क्योंकिअन्यथाकुछसुखनहींहोगा जबतकमुक्तिजीवकोनहींहोती तबतकजन्ममरणादिकदुःखसागरमेंडूबाहीरहेगा औरजोजल्दीमुक्तिकरलेगा सोअतुलआनन्दकोपावेगा प्रश्न मुक्तिएक जन्ममें होतीहै वाअनेकजन्ममें उत्तर इसकानियमनहीं क्योंकि जबमुक्तिहोनेकाकर्मकरताहै तभीउसकीमुक्तिहोतीहै अन्यथानहीं प्रथमसृष्टिमेंभी कोईजीव पहिलेहीजन्ममें मुक्तहोगयाहोय इसमेंकुछआश्चर्यनहीं उसकेपीछे भीकोईमुक्तभयाहोगा वाहोताहै औरहोवैगा सोबहुत जन्महोमें होगा मुक्तमोक्षअत्यन्त पुरुषार्थमेंहोताहै अन्यथानहीं। भिद्यतेहृदयग्रन्थिश्छिद्यन्तेसर्वसंशयाः। क्षीयन्तेचास्यकर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे॥ यहमुण्डककीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहैकिहृदयग्रन्थिनामअविद्यादिकदोषजबजिसजीवकेनष्टहोजातेहैं तबविज्ञानकेहोनेसेसबसंशयनष्टहोजातेहैंऔरजबसंशयनष्टहोजातेहैंतबकर्मभीजीवकेनष्टहोजातेहैं किजीवकोफिरकर्तव्य कुछनहींरहता।मुक्तिहोनेकेपीछेसोकर्मतीनप्रकारकाहोताहै एकक्रियमाणजोकिनित्यकियाजाताहै दूसरासञ्चितजोकिबुद्धिमें संस्काररूपसूक्ष्मरहताहै तीसराप्रारब्धजोनित्य भोगकियाजाताहै इसकेतीनभेदहैं। सतिमूलेतद्विपाकोजात्यायुर्भोगाः॥ ८॥ पा० इसकायहअभिप्रायहै किकर्मोंकेफलतीनहोतेहैं जन्मआयु औरभोग परन्तु जबतक कर्मोंकामूलअविद्यादिकरहतेहैं तबतककर्मफल भोगभी रहताहै सोभीजैसाकर्म वैसाजन्मआयु औरभोगउसके अनुसारहोतेहैं जबजीवपुरुषार्थसे विद्या,धर्मऔरपातञ्जलशास्त्रकीरीतिसे योगाभ्यासकरताहै तबउसकोयथोक्तविज्ञानहोताहै तबमूलसहितकर्मछूटजाताहै क्योंकिउसनेमुक्तिकेवास्ते सबकर्मकिएथे जबमुक्तिहोतीहै

तब उसको फिर कर्तव्य कुछ नहीं रहता (प्रश्न) मुक्ति समय में जीव पर-
मेश्वर में मिल जाता है जैसे जल में जल वा नहीं (उत्तर) जो जीव मिल-
जाता तो उसको मुक्ति का सुख कुछ नहीं होता और मुक्ति के वास्ते जि-
तने साधन किए जाते हैं वे सब निष्फल हो जायगे और मुक्ति क्या भई
किन्तु उसका नाश ही होगया इससे यह बात मिथ्या है कि जीव ब्रह्म में
मिल जाता है वह ब्रह्म अर्थात् सबसे जो परे है और जो कि अपने स्वरूप
में व्याप्त है जितना उसको यथावत् साक्षात् जाननेसे सब दुःखों से छूट
जाता है जो भाग्य प्रारब्ध और दैव के भरोसे रहता है और आलस्य से
कुछ कर्म अच्छा नहीं करता वही जीव नष्ट है और जो अत्यन्त पुरुषार्थ
के ऊपर निश्चय करके उद्यम करता है सोई जीव भाग्यशाली है क्योंकि
पुरुषार्थ ही से मुक्ति होती है और यथावत विवेक के होने से हानि वा
लाभ में शोक वा हर्ष रहित होता है वह पुरुषार्थी सर्वत्र सुखी रहता
है क्योंकि वह विद्या से सब पदार्थों को यथावत् जानता है सो सब सज्ज-
नों को यही उचित है कि सदा पुरुषार्थ ही करना आलस्य कभी नहीं
पुरुषार्थ इसका नाम है कि जितेन्द्रियता, धर्मयुक्त व्यवहार, विद्या,
और मुक्ति जिससे होय और अन्य पुरुषार्थ नहीं क्योंकि पुरुष के अर्थ जो
करता है सोई पुरुषार्थ कहाता है और जो अन्याययुक्त व्यवहार करते
हैं उसका नाम पुरुषार्थ नहीं और परमेश्वर अत्यन्त दयालु है जो जी-
व उसकी प्राप्ति के हेतु तन, मन और धन से श्रद्धापूर्वक पुरुषार्थ करता
है उसको शीघ्र ही प्राप्त होता है कृपा से विद्यादिक पदार्थों का उसके
पुरुषार्थ के अनुसार प्रकाश होता है फिर सदा आनन्दित मुक्ति में रह-
ते हैं सो सब पुरुषार्थों का फल मुक्ति है इससे मुक्ति की चाहना उक्त प्र-
कार से अवश्य सब को करनी चाहिए यह विद्या अविद्या बन्ध
और मुक्ति के विषय में संक्षेप से लिखा और जो विस्तार से दे-
खा चाहै सो वेदादिक सत्य शास्त्रों में देख लेवै इसके आगे
आचार अनाचार भक्ष्य और अभक्ष्य के विषय में लिखा जा-
यगा ॥

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिकृते सत्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते नवमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ ९ ॥

अथ आचारानाचारभक्ष्याभक्ष्यविषयं व्याख्यास्यामः ॥ श्रुतिस्मृत्युदितं सम्यक् निबद्धं स्वेषु कर्मसु । धर्ममूलं निषेवेत सदाचारमतन्द्रितः ॥ १ ॥ म० श्रुति जो वेद स्मृति जो ऋषि आदिक सत्यशास्त्र और मनुस्मृति उन में जो सदाचार उसको सदा सेवन करैं और जितना अपना आचार सो सब युक्तिपूर्वक करैं सत्पुरुषों के आचरण में विरुद्ध नहीं सो सत्यभाषणादिक आचार धर्म का मूल है इसको सदाचार प्रमाणों में निश्चय करके सदा सेवन करैं सब पदार्थ शुद्ध रक्खैं अशुद्ध एक भी न रक्खैं जितने श्रेष्ठगुण उनके ग्रहण का सदा आचार रक्खैं सत्पुरुषों के संग में सदा प्रीति उनसे विनयादिक व्यवहारों को ग्रहण करै जितेन्द्रियता सदा रक्खैं इन से विपरीत जो अनाचार उसको छोड़दे जिससे ज्ञान वा धर्म तथा विद्याप्राप्ति होय उसको सदा मानैं उक्त प्रकार से उसको प्रसन्न रक्खैं और अधर्मी पाखण्डी उनको कभी न मानैं और जितनी सत्क्रिया उनको यथावत् करैं सब प्रयत्नों से ब्रह्मचर्याश्रम से विद्याग्रहण करैं बाल्यावस्था में विवाह कभी न करैं और नाना प्रकार के अन्न और पदार्थ गुणों से रसायन विद्या द्वीपद्वीपान्तर में भ्रमण उन मनुष्यों के अच्छे वा बुरे आचरणों की परीक्षा और अच्छे आचरणों का ग्रहण करैं और बुरे का नहीं प्रश्न आर्यावर्त्तवासी लोग इस देश को छोड़ के अन्य देश में जाने में पाप गिनते हैं और कहते हैं कि पतित हो जाते हैं उत्तर यह बात मिथ्या है क्योंकि मनुस्मृति में जहां जिसके ऊपर राजा का कर लिखा है सो जो समुद्रपार द्वीपद्वीपान्तर में न जाते होते तो क्यों लिखते। समुद्रे नास्ति लक्षणम्। इत्यादिक वचन मनुस्मृति में लिखे हैं सो महासमुद्र में जब जहाज जाय तब कुछ

करका नियम नहीं किन्तु द्वीपद्वीपान्तर में जाके व्यापार करके पदार्थों को बेचके और वहां से पदार्थों को लेके इस देश में आके बेंचे फिर उनको जितना लाभ हो वे उसमें से पूर्वांश हिस्सा राजा ले और राजा भी तीन प्रकार के मार्गकी शुद्धि करै एक स्थल, जल, और वन उसमें जल के मार्ग के व्याख्यान में जहाजों के ऊपर चढ़के द्वीपद्वीपान्तर में जावें और समुद्र ही में जहाजों पर बैठके युद्ध करें यह क्यों लिखा और महाभारत में लिखी है कि श्रीकृष्ण और अर्जुन जहाज में बैठके समुद्र में चले गये वहां उद्दालक ऋषि मिले ऋषि को यज्ञ में ले आए और राजसूय तथा अश्वमेध में सब द्वीपद्वीपान्तर के राजाओं को यज्ञ में ले आए थे सो बिना जहाज से द्वीपद्वीपान्तर में कैसे जा सक्ते और समर राजा सब पृथिवी का भ्रमण करता था बिना जहाजों से समुद्र पार कैसे जा सक्ता तथा अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव, और कर्ण सब द्वीपद्वीपान्तर में भ्रमण करते थे बिना जहाजों से कैसे कर सक्ते तथा इक्ष्वाकु से लेके दशरथ पर्यन्त द्वीप द्वीपान्तर में भ्रमण करते थे सो जहाजों ही में करते थे और राम भी समुद्र के पार लंका में गए थे सो भी तो एक द्वीप है इत्यादिक मनुस्मृति और महाभारतादिक इतिहासों में लिखा है और युक्ति से विचार करके देखें तो यह हो आता है कि देशदेशान्तर और द्वीपद्वीपान्तर में जाना अच्छा है क्योंकि अनेक प्रकार के पदार्थ प्राप्त होंगे अनेक प्रकार के मनुष्यों से समागम होगा उनका व्यवहार भाषा गुण और दोष विदित होते हैं और उत्तम २ पदार्थों को इस देश में ले जाने और ले आने से बहुत लाभ होता है तथा निर्भय और शूर, वीर पुरुष होने लगते हैं यह तो बड़ा एक अच्छा आचार है और जो अपने ही देश में रहते हैं और देश में जाने से उनका स्पर्श करने में छूत मानते हैं वे विचार रहित पुरुष हैं देखना चाहिए कि मुसल्मान वा अंगरेज से छूने में दोष मानते हैं और मुसल्मानों वा अंगरेजों के देश को स्त्रो से संग करते हैं और अपने पास घर में रख लेते हैं उस से कुछ भेद नहीं रहता यह बड़े अन्धकार की बात है कि मुसल्मान और अंगरेज जो भले आदमी उनसे तो छूत गिनना

औरवेश्यादिकोंमेंनहींछूतमानना यहकेवलयुक्तिशून्यबातहैऔर जोउनसेछूतहोमानतेहैं किइनसेशरीरनलगे नवस्पर्शहोय इसीबातसेतोआर्यावर्त्तदेशकानाशभयाहै क्योंकिएतोआर्यावर्तवासी उनकेछूतकेडरसे दूर२भागतेरहतेहैं औरवेसुखसे राज्यसब लेलेतेहैं औरहृदयसेसदाद्वेषहोनेसे अन्यथाबुद्धिरखतेहैं इसमेंपरस्परसबदुःखपातेहैं यहसबअनाचारहै आचारइसकानामहै कि राग,द्वेषादिकदोषोंकोहृदयसेछोड़देना औरसज्जनताशैल्यादिकोंकोधारणकरलेना यहीआचारपहिलेमनुष्योंकाथा किअमरिकाकोकन्याअर्जुनसेविवाहीगईथी जोकिनागकन्याकरकेलिखी है फिरऐसीबातजोकहतेहैं किद्वीपद्वीपान्तरमेंजानेसे जातिपतित औरनष्टधर्महोजाय यहबातमिथ्याहै क्योंकिछूतऔरदेशदेशान्तरमेंनजाना यहबातआर्यावर्तमें जैनोंकेराज्यसेचलीहै पहिलेनथी क्योंकिजैनबड़ेभीरुहोतेहैं औरछोटे२जीवोंकेऊपर दयारखतेहैं इसीसे मुखकेऊपर कपड़ाबांधलेतेहैं सोचलनेफिरनेमें भी दोषगिनतेहैं फिरजहाजोंमेंबैठकेद्वीपद्वीपान्तरमेंजानाइसमेंहिंसाक्योंनहीगिनेंगेऔरब्राह्मणतथासम्प्रदायीलोगइन्होंनेअपनेमतलबकेहेतुसबजालफैलारक्खेहैंक्योंकिअपनाचेलावायजमानद्वीपद्वीपान्तरमेंजायगा तोजीविकाकीहानि होजायगी देशदेशान्तर औरद्वीपद्वीपान्तरमेंजानेसेकोईबुद्धिमानकाअवश्यसमागमहोगा उससे सत्यअसत्यकाउसकोबोधभीहोगा फिरउसकेसामनेहमारा जालनहींचलेगा औरनित्यशनैश्चरादिग्रहकेनामसे तथाभूतप्रेतादिकनामसे तथामन्दिरादिकोंमेंआनेजानेसे शिवनारायण दुर्गादिकेनामसुनानेसे उनकोडराकेलाखहांरूपएछल,कपटसेनित्यलियाकरतेहैं सोवहद्वीपद्वीपान्तरमेंचलाजायगा बहुतकालमें आनाहोगा तबतकउनको आजीविकाबन्दहोजातीहै क्योंकिवह उनकेसामनेहीनहीरहेगाफिरउसकोकोईआलेगाफिरभीएकप्रायश्चितकाडरलगादियाहैजोकोईजाकेआवैउसकेऊपरबड़ेबखेड़े

लगादेतेहैं क्योंकिउसकोदुर्दशादेखके कोईआनेकोइच्छा करता
होय वहभीडरकेनआय इसहेतुकिहमारीआजीविकासदाबनीर-
हे यहकेवलउनकीमूर्खताहै क्योंकिवहधनाढ्यवाराजाभी दरिद्र
बनजायगा ऐसेथोरे २ सबदरिद्र औरमूर्खबनजांयगे फिरउनसे
आजीविकाभीकिसीकीनहोगीपरन्तुवेऐसाबिचारनहीकरतेक्यों-
किअपनेमतलबमेंफसेहैं औरबिद्याभीनहीं इस्से कुछनहीं जानस-
क्ते परन्तु सज्जनलोग इसबातको मिथ्याहोजानैं औरकभी देश
देशान्तरवाद्वीपद्वीपान्तरकेजानेमें भ्रमनकरैं क्योंकिजबमनुष्यमि-
थ्याभाषणादिकअनाचारकरेगा तबसर्वत्रअनाचारीहोगा और
जोसत्यभाषणादिकआचारकरेगा वहकभीकिसीदेशमेंअनाचारी
नहीहोताऔरजोऐसाजानतेहैं किबहुतनहानाऔरहाथोंकोम-
लना आचारजानतेहैं यहभीबातअयुक्तहै क्योंकिउतनाही शौच
करनाउचितहै किजितनेसेहस्त,पाद,शरीरऔरवस्त्रदुर्गन्धयुक्तन
रहे इस्से अधिककरनासोअनाचारहै किन्तु जिस्से सबपदार्थगृह
पात्रऔरअन्नादिकशुद्धरहैं उतनाशौचकरना सबकोउचितहै अ-
धिकनहीं अधिकआचारसद्गुणग्रहणमें सदारक्खैं औरबिद्याकेप्र-
चारकाआचारसदारक्खैं इसकानामआचारहै सोईमनुस्मृत्या-
दिकोंमेंलिखाहै औरभक्ष्याभक्ष्य दोप्रकारकेहोतेहैं एकतोवैद्यक
शास्त्रकीरीतिसे औरदूसराधर्मशास्त्रकीरीतिसे सोवैद्यक शास्त्रकी
रीतिसे देश,काल,वस्तु औरअपनेशरीरकीप्रकृति उनसेअनुकूल
बिचारकरके भक्षणकरनाचाहिए अन्यथानहीं जिस्से बल,बुद्धि,
पराक्रमऔरशरीरमें नैरोग्यबढ़ैवैसापदार्थभक्ष्यहै सोईउक्तवैद्य-
कसुश्रुतशास्त्रमेंलिखाहै। ~~औरअभक्ष्योग्राम्यशूकरोऽभक्ष्योग्रा-~~
म्यकुक्कुटः। इत्यादिकधर्मशास्त्रसे अभक्ष्यका निर्णयकरना क्योंकि
सूवरगांवकाऔरमुर्गाप्रायः मलहीखाताहै उसीकापरिणाममां-
सहोगा उसकेखानेसेदुर्गन्धशरीरमेंहोगा उस्से रोगोत्पत्तिकासं-
भवहै औरचित्तभी अप्रसन्नहोजायगा वैसाहीधर्मशास्त्रकीरीति

सेमद्यअभक्ष्य तथाजिननेमनुष्योंकेउपकारक पशुउनकामांसअ-
भक्ष्यतथा विनाहोमसे अन्नऔरमांसभीअभक्ष्यहै प्रश्न एकजीवको
मारके अग्निमेंजलाना औरफिरखाना यहकुछअच्छीबातनहीं
औरजीवकोपीडादेना किसीकोअच्छानहीं उत्तर इसमें क्याकुछ
पापहोताहै प्रश्न पापहीहोताहै क्योंकिजीवोंकोपीड़ादेके अपना
पेटभरना यहधर्मात्माओंकीरीतिनहीं उत्तर अच्छाएकजीवको
मारनेमेंपीड़ाहोतीहै सोमवव्यवहारोंकोछोड़देनाचाहिए क्यों-
किनवकीचेष्टासेभी सूक्ष्मदेहवाले जीवोंकोपीड़ा अवश्य होतीहै
औरतुम्हारेघरमेंकोईमनुष्यचोरीकरै तोतुमलोगभीअवश्यउस-
कोपीड़ादे ओगेऔरमक्खीआदिक भोजनकेऊपरसे उड़ादेतेहो
इसमेंभीउसकोपीड़ाहोतीहै औरजोकुछतुमखातेपीतेचलतेफि-
रतेऔरवैठतेहो इसव्यवहारसेभीवहुतजीवोंकोपीड़ाहोतीहै इ-
ससे तुम्हाराकहनाव्यर्थहै किकिसीजीवकोपीड़ानदेना प्रश्न जिसमें
प्रत्यक्ष पीड़ाहोतीहै हमलोगउसमेंपापगिनतेहैं अप्रत्यक्षमेंकभी
नहीं क्योंकिअप्रत्यक्षमेंपापगिनें तोहमाराव्यवहारनवनें उत्तर
ऐसेहीआपलोगजानें किजहांअपनामतलवहोय वहांतोपापन-
हींगिनतेहो यहवातयुक्तिसेविरुद्धहै/औरकोईभीमांसनखाय जो
जानवर, पक्षी, मत्स्यऔरजलजन्तुहैं उनसेशतसहस्रगुनेहो
जांय फिरमनुष्योंकोमारनेलगें औरखेतोंमें धान्यहीनहोनेपावै
फिरसवमनुष्योंको आजीविकानष्टहोनेसे सवमनुष्य नष्टहोजाय
औरव्याघ्रादिकमांसाहारीजीवभी उनमृगादिकोंकाभक्षणकरतेहैं
औरगायआदिकोंकोभीपरन्तु मनुष्यलोगोंकोयहचाहिए किगाय
वैल,भैंसी,छेड़ी,भेंड औरऊंटआदिकपशुओंकोकभीनमारैं क्यों-
किइन्होंसे सवमनुष्योंकी आजीविका चलतीहै जितनेदुग्धादिक
पदार्थहोतेहैं वेसवउत्तमहोहोतेहैं औरएकपशुसेवहुतआजीवि-
कामनुष्योंकोहोतीहै मारनेसेजहांसौमनुष्यतृप्तहोतेहैं उसगाय
आदिकपशुओंकेवोचमेंसेएकगायकीरक्षासेदसहजारमनुष्योंको

रक्षा हो सकती है इससे इन पशुओं को कभी न मारना चाहिए प्रश्न इन
पशुओं के नहीं मारने से इनके बहुत होने से सब पृथिवी भर जायगी
फिर भी तो मनुष्यों को हानि होने लगैगी उत्तर ऐसा न कहना चा-
हिए क्योंकि व्याघ्रादिक जीव उनको मारैंगे और कितने रोगों से भी
मरेंगे इससे अत्यन्त नहीं होने पावेंगे और मनुष्यों के मारने से घृतादि-
क पदार्थ और पशुओं की उत्पत्ति भी नष्ट हो जाती है इससे जहां २ गोमे-
धादिक लिखे हैं वहां २ पशुओं में नरों को मारना लिखा है इस इस-
अभिप्राय से नरमेध लिखा है मनुष्य नर को मारना कहीं नहीं क्यों-
कि जैसी पुष्टि बैलादिक नरों में है वैसी स्त्रियों में नहीं है (और एक बैल
से हजारहां गैया गर्भवती होती हैं इससे हानि भी नहीं होती) सोई
लिखा है ॥ गौरनुबन्ध्योऽजोऽग्नीषोमीयः । यह ब्राह्मण की श्रुति है इस-
में पुल्लिङ्ग निर्देश से यह जाना जाता है कि बैल आदिक को मारना
गैया को नहीं सो भी गोमेधादिक यज्ञों में अन्यत्र नहीं क्योंकि
बैल आदि से भी मनुष्यों का बहुत उपकार होता है इससे इनकी
भी रक्षा करनी चाहिए (और जो बन्ध्या गाय होती है उसको भी गोमे-
ध में मारना लिखा है ॥ स्थूलपृषतीमाग्निवारुणीमनड्वाहीमाल-
भेत । यह ब्राह्मण की श्रुति है इस में स्त्रीलिंग और स्थूलपृषती विशे-
षण से बन्ध्या गाय ली जाती है (क्योंकि बन्ध्या से दुग्ध और वत्सादिकों की
उत्पत्ति होती नहीं) और जो मांस न खाय सो घृत दुग्धादिकों से निर्वा-
ह करे क्योंकि घृत दुग्धादिकों से भी बहुत पुष्टि होती है सो जो मांस
खाय अथवा घृतादिकों से निर्वाह करै वे भी सब अग्नि में होम के बिना
न खांय क्योंकि जीव को मारने के समय पीड़ा होती है उससे कुछ पाप
भी होता है फिर जब अग्नि में होम करेंगे तब परमाणु से उक्त प्रकार
सब जीवों को सुख पहुंचेगा एक जीव को पीड़ा से पाप भया था सो भी
थोड़ा सा गिना जायगा अन्यथा नहीं ॥ प्रश्न सखरी निखरी अ-
र्थात् कच्चा पक्का अन्न और इसके हाथ का भोजन करना इस-
के हाथ का खाना और इसके हाथ का न खाना यह बात कै-

भीहै उत्तर इसका यह विचार है भ्रष्टाचार से बनावे अन्ना-
दिकोंका यथावत् संस्कार नजानै तथाविधि नजाने उसका भक्षण
नकरनाचाहिए क्योंकि उससे रोगहोतेहैं औरबुद्धिभी मलिनहो
जातीहै सखरा औरनिखरा यहमनुष्योंकी मिथ्याकल्पनाहै क्योंकि
जोअग्निमेंपकाया जाताहै वहसबपक्काहोगिना जाताहै औरशूद्र-
हीपाककरनेवाला होनाचाहिए परन्तु वहशूद्र अपने जिसद्विजके
घरमें रहै उसीकेघरकेअन्न औरउसीकेघरकेपात्रोंसे पवित्रहोके
बनावे उसके हाथसे बनेंहुएको सबखांय तोभीकुछ दोषनहीं ॥
नित्यंशुद्धःकारुहस्तःसमेवार्थमुत्पन्नः। एतेषामेववर्णानां शुश्रूषा-*
मनसूयया इत्यादिकमनुस्मृतिमें लिखाहै सेवामें बड़ीसेवारसो-
ईकाबनानाहै क्योंकिरसोईके बनानेमेंबड़ा परिश्रमहोताहै और
कालभीबहुतजाताहै इससे रसोईआदिकसेवाका शूद्रहीकोअधि-
कारहै जोब्राह्मण, क्षत्रियऔरवैश्यहैं वेतोविद्यादिकप्रचार प्रजा
काधर्मसेरक्षणव्यापार औरनानाप्रकारकेशिल्प इनकीउन्नतिही
मेंपुरुषार्थकरैं क्योंकिजोबुद्धि औरविद्यायुक्तहैं उनकोसेवाकरना
उचितनहीं रसोईआदिक जोसेवासो मूर्खपुरुष जोशूद्र उसीका
अधिकारहै क्योंकिअग्निकेसामनेबैठना तपना मांजना अन्नकोशु-
द्धिकरना नानाप्रकारकेपदार्थबनाना इसमेंबड़ापरिश्रम औरका-
लजाताहै इसकामकेकरनेसेविद्वानकीविद्याभ्रष्टहोजाय इससे यह
कामशूद्रहीकाहै सोमहाभारतमेंलिखाहै किजबराजसूयऔरअ-
श्वमेध युधिष्ठिरादिकराजालोगोंकेयज्ञभएथे उनमेंसबद्वीपद्वीपा-
न्तरऔरदेशदेशान्तरोंके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथाशूद्रराजाऔ-
रप्रजाआएथेउनकोएकहीपंक्तिहोतीथी औरशूद्रनामशूद्रहीपाक
करनेवाले औरपरोसनेवालेथे एकपंक्तिमेंसबकेसाथ सबभोजन
करतेथे तथाकुरुक्षेत्रकेयुद्धमें जूते, वस्त्र, शस्त्र, औररथकेऊपर बैठे
भएभोजनकरतेथे औरयुद्धभीकरतेजातेथे कुछशंका। उनकोनथी तभी
उनकाविजयहोताथा औरआनन्दसेराज्यकरतेथे औरजोभोजन

मेंबड़े बखेड़े कर्तेहैं वेभूखकेमारेमरजांयगे युद्धक्याकरसकेंगे अब
भोजपुरादिकोंकेक्षत्रियलोग नापितादिकोंकेहाथकाभोजनक-
रतेहैं सोबातसनातनहै औरबहुतअच्छीहै तथासारस्वत और
खत्रीलोगोंकाएकहीभोजनहै सोअच्छीबातहै औरगौड़तथाअग-
रवालेबनियोंकाभीएकभोजनप्रायःहै सोभीअच्छीबातहै औरगु-
जराती,महाराष्ट्र,तैलंग,द्राविड़तथाकरनाटक इनमेंभोजनकेब-
ड़े बखेड़ेहैं इनपांचोंमेंसेगुजरातीलोगोंकेभोजनका बड़ापाखण्ड
है क्योंकिमहाराष्ट्रादिकचारोंद्रविड़ोंकातोएकभोजनहै औरगुज-
रातीलोगोंकाआपसमेंबड़ाभेदहै सबसेभोजनमेंपाखण्डकान्या
कुब्जकाअधिकहै क्योंकिवेजलभीपीतेहैं तोजूतेउतारकेहाथ,पैर
धोकेपीतेहैं तबचौकादेके चनाचबातेहैं सोबड़े दुःखपातेहैं और
चौकाबरतनहीहाथमेंरहगए औरकुछनहीं औरसरजूपारीमेंभी
बहुतभोजनमेंपाखण्डहै यहकेवलमिथ्यापाखण्डमात्रकरचलाते
हैं औरसबसेपाखण्डभोजन चक्रांकितादिकवैरागिओंकाअत्यन्त
है ऐसाकोईकानहीं क्योंकिजबजगन्नाथकेदर्शनकोजातेहैं तबचा-
ण्डालादिकोंकाजूठखालेतेहैंफिरअपनीपंक्तिमेंमिलजातेहैं उनका
मिथ्यापाखण्डभीनहींरहा औरहलवाईकेदुकानकादूधदहीऔर
मिष्ठान्नादिकखातेहैं वहसबकाउच्छिष्टजानोंऔरमलिनक्रियामें
भीहोतेहैं तथावेभीलोग मुसल्मान और अभीरादिकहोतेहैं वे
अपनेघड़ेकाजूठा जलमिलातेहैं फिरउसकोसबखातेपीतेहैं और
जानतेभीहैं सोसत्यबातहोकानिर्वाहहोताहै झूठकाकभीनहींरा-
जादिकधनाढ्य वेश्यादिकोंकोघरमेंरखलेतेहैं उनसेकुछभेदनहीं
रहता उनकोकोईनहींकहता क्योंकिकहेंतबजबकिवेनिर्दोषहोय
सोपरस्परदोषोंको छिपातेजातेहैं औरगुणोंकोछोड़तेजातेहैं यह
सबअनाचारहै औरसत्यभाषणादिकोंका आचरणकरना उसी
कानामआचार युधिष्ठिरकेसाथ बहुतऋषि,मुनि,ब्राह्मण लोगथे
वेसबसूदनाम शूद्रपाककर्तेथे और द्रौपद्यादिक परोसतेथे वेसब

खातेथे सोखानेपीनेसे किसीकाधर्मभ्रष्टनहींहोताहै औरनकोई पतितहोताहै क्योंकिखानापीनाऔरधर्मकाकुछसम्बन्धनहीं धर्म जोअहिंसादिकलक्षणसोबुद्धिस्थहै खानापीनाव्यवहारसेबाह्यहै परन्तु शुद्धपदार्थकाखाना पीनाचाहिए किजिस्से शरीरमें रोगादिकनहोंय औरजगतकाअनुपकार भीनहोय मद्य,भांग,गांजा, अफीम,औरजितनेनशेहैं वेसबअभक्ष्यहैं क्योंकिजितनेनशेहैं वेसबबुद्ध्यादिकोंकेनाशकरनेवालेहैं इस्सेइनकाग्रहणकभीनकरनाचाहिए क्योंकिजितनेनशेहोतेहैं वेबिनागरमीसे नहीहोते फिरगर्मीसेसबधातुऔरप्राणतप्तहोजातेहैं औरविषमउनकेसंगसे बुद्धि तप्तऔरविषमहोजातीहै इस्से नशाकाकरनासबकोवर्जितहै परन्तुऔषधकेहेतु किरोगनिवृत्तिहोताहोय तोचौगुणाजलऔरएक गुणमद्यग्रहणलिखाहै सुश्रुतादिकवैद्यकशास्त्रमें क्योंकिरोगनिवृत्तिकेहेतुअभक्ष्यभीभक्ष्यहोजाताहै औरजिनपशुओंके बछड़े को दूधनहींदेते औरसबअपनेहीदुहलेतेहैं यहभीअनाचारहै क्योंकि पशुपुष्ट कभीनहींहोते फिरपुष्टिकेबिना दुग्धादिकथोड़े होतेहैं औरपशुभीबलहीनहोतेहैं सोएकमासभरजितनाबछपीए उतना देनाचाहिए फिरएकस्तनकादूधदुहले औरसबबछड़ापीए फिर दोमासकेपीछे जबबछबछिया घास,पात,खानेलगे तबआधादूध सबदिनछोड़दे औरआधादुहले तोपशुभीपुष्टहोवें औरदुग्धादिकभीबहुतहोवें फिरउनदुग्धादिकोंसे मनुष्यादिकोंकीपुष्टिभीहुआकरै इस्से खानेऔरपीनेमें धर्ममानतेहैं वाधर्मकानाशवेबुद्धिहीनमनुष्यहैं ऐसानोहैकिसत्यधर्म व्यवहारसेपदार्थोंकोप्राप्तहोय उनसेखानापीनाकरैतोपुण्यहै औरचोरीतथाछल,कपट,व्यवहारसेखानापीनाकरै तोअवश्यपापहोताहै सोखानपीनेमें जितने भेदहैं वेविरोधदुःखऔरमूर्खताकेकारणहैं इनबखेड़ोंसेआर्यावर्त्तमेंपुरुषऔरस्त्रीलोग विद्या,बल,बुद्धि,पराक्रम,हीनहोगएहैं प्रथम देशदेशान्तरोंमेंसबवर्णोंमें बिवाहशादीहोतीथीपूर्वोक्तवर्णानुक्र-

ममें फिर भोजन में कैसे भेद होगा यह भेद थोड़े दिन से चला है कि जबसे नानाप्रकार के मतमतान्तर चले और मनुष्यों की बुद्धि में परस्पर विरोध होने से प्रीति नष्ट होगई वैर होगया इस से कोई किसी के उपकार में चित्त नहीं देता और अपने देश के मनुष्यों के उपकार के हेतु कोई प्रवृत्त नहीं होता किन्तु अपने २ मत लब में रहते हैं सो सब का नाश होता जाता है यह बड़ा अनाचार है और तथा विचार से शुद्ध पदार्थ के खाने से किसी का परलोक वा धर्म बिगड़ता नहीं परन्तु विद्या और विचार के न होने से इन सब खेड़ में मनुष्य लोग पड़ के सदा दुःखी रहते हैं और जो परस्पर गुणग्रहण करें तो सुखी होजांय और देखना चाहिए कि सब मत के ऊपर भोजन नहीं प्राप्त होता है भोजन के पात्रों को उठाके लादे फिरते हैं वे लोकों नाई दरिद्र लोग और धनाढ्य लोग बहुत रसोई दार आदि के साथ में रहते हैं उस से मिथ्या धन बहुत खर्च होजाता है इत्यादिक सब व्यवहार बुद्धिमान लोग विचार लें युक्त २ व्यवहार करें अयुक्त को भी नहीं एदश समुल्लास में शिक्षा के विषय में लिखे इसके आगे आर्यावर्त वासी मनुष्य जैन मुसल्मान और अंगरेजों के आचार अनाचार सत्यासत्य मतमतान्तर के खण्डन और मण्डन के विषय में लिखेंगे इन में से प्रथम समुल्लास में आर्यावर्त वासी मनुष्यों के मतमतान्तर के खण्डन और मण्डन के विषय में लिखा जायगा (दूसरे समुल्लास में जैन मत के खण्डन और मण्डन के विषय में लिखा जायगा तीसरे में मुसल्मानों के मत के विषय में खण्डन और मण्डन लिखेंगे और चौथे में अंगरेजों के मत में खण्डन और मण्डन के विषय में लिखा जायगा सो जो देखा चाहे खण्डन और मण्डन को युक्ति उन चारों समुल्लासों में देख ले) दस समुल्लास तक खण्डन वा मण्डन नहीं लिखा क्योंकि जब तक बुद्धि मनुष्यों की सत्यासत्य विवेक युक्त नहीं होती तब तक सत्य के ग्रहण और असत्य के त्याग करने में समर्थ नहीं होते इस हेतु ग्रन्थ के पूर्वभाग में सत्य २ मनुष्यों के हित के हेतु शिक्षा लिखी और इस ग्रन्थ के उत्तर भाग में सत्य मत का मण्डन और असत्यम-

तकाखण्डनलिखेंगें संस्कृतमें रचनाकरतेतो सबमनुष्योंकेसम-
झमें नहीं आता इसहेतुभाषामें कियागया इसग्रन्थको दुराग्रह
हठऔरईर्ष्याकोछोड़के यथावत्‌बिचारेगा उसकोसत्य२पदार्थों
केप्रकाशसेअत्यन्तआनन्दहोगा और अन्यथाइसग्रन्थका अभिप्राय
भीमालूमनहींहोगा इसहेतुसज्जनलोगोंकोयहउचितहै किइस-
कायथावतअभिप्रायबिचारकेभूषणवादूषणकरें अन्यथानहींऔर
मूर्खतथादुराग्रहीपुरुषके कहेदूषणमाननेकेयोग्यनहीं ॥

इति श्री सहृयानन्द सरस्वती स्वामिकृते सत्यार्थ प्रकाशे सुभाषा बिरचिते दसमः समुल्लासः सम्पूर्णः ॥ १० ॥

सत्यार्थ प्रकाशस्य प्रथमभागः समाप्तः ॥

———ooo———

अथार्यावर्त्तवासिमतखण्डनमण्डनेविध्यस्यामः ॥ सरस्वतीदृ-
षद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तरम्। तंदेवनिर्मितंदेश मार्यावर्त्तं प्रचक्षते ॥
१ ॥ म० सरस्वतीजोकिगुजरातऔरपंजाबके पश्चिमभागमेंनदी
है उससेलेकेनैपालके पूर्वभागकोनदीसेलेके समुद्रतकइनदोनोंके
बीचमेंजोदेशहै सोआर्यावर्तदेशहै औरवेदेवनदी कहातीहैं अ-
र्थात दिव्यदेशके प्रांतभागमेंहोनेसेदे वनदीइनका नामहै सोदेश
देवनिर्मितहै अर्थातदिव्यगुणोंसेरचितहै क्योंकिभूगोलके बीचमें
ऐसाश्रेष्ठदेशकोईनहींहै जिसदेशमेंसबश्रेष्ठ उपरायहोतेहैं और
छः ऋतुयथावत् बर्त्तमानहोतेहैं औरकेवलसुवर्णरत्नपैदाहोतेहैं
इस देशमें जिसकाराज्यहोताहै वहदरिद्रहोयतोभीधनसेपूर्णहो
जाताहै इसीहेतुइसकानामआर्यावर्त्त है आर्य्य नामश्रेष्ठमनुष्य
औरश्रेष्ठपदार्थइनसेयुक्त अर्थातआवर्त्तहै इसहेतुइसदेशकानाम

आर्यावर्त कहते हैं ॥ १ ॥ (एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः । स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ॥ २ ॥ म०) इस देश में अग्रजन्मा नाम सब से श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न जो पुरुष उत्पन्न होवै उससे सब भूगोल की पृथिवी के मनुष्य शिक्षा अर्थात विद्या तथा संसार के सब व्यवहारों का यथावत विज्ञान करैं इससे क्या जाना जाता है कि प्रथम इस में मनुष्यों की सृष्टि भई थी पीछे सब द्वीप द्वीपान्तर में सब मनुष्य फैल गए क्योंकि पृथिवी में जितने मनुष्य हैं वे इस देशवालों से विद्यादिक शिक्षा ग्रहण करें और सब देशभाषाओं का मूल जो संस्कृत सो आर्यावर्त ही में सदा से चला आता है आजकाल भी कुछ २ देखने में आता है परन्तु फिर भी सब देशों से संस्कृत का प्रचार अधिक है जर्मनी और बिलायत आदिक देशों में संस्कृत के पुस्तक इतने नहीं मिलते जितने कि आर्यावर्त देश में मिलते हैं और जो किसी देश में संस्कृत के बहुत पुस्तक होंगे सो आर्यावर्त्त ही से लिए होंगे इसमें कुछ सन्देह नहीं सो इस देश से मिश्र देशवालों ने पहिले विद्या ग्रहण की थी उससे यूनान देश, उससे क्रम फिर क्रम से फिरंगस्थान आदि में विद्या फैली है परन्तु संस्कृत के बिगड़ने से गिरीशलाटीन अंगरेज और अरब देशवालों की भाषा बन गई हैं सो इन में अधिक लिखना कुछ आवश्यक नहीं क्योंकि इतिहासों के पढ़नेवाले सब जानते हैं और पता भी ऐसा ही मिलता है एक गोल्डस्टकर साहेब ने पहिले ऐसा ही निश्चय किया है कि जितनी विद्या वा मत फैले हैं भूगोल में वे सब आर्यावर्त्त ही से लिए हैं और काशी में बालेंटेन साहेब ने यही निश्चय किया है कि संस्कृत सब भाषाओं की माता है तथा दाराशिकोह बादशाह ने भी यह निश्चय किया है कि जो विद्या है सो संस्कृत ही है क्योंकि मैंने सब देशों की भाषाओं की पुस्तक देखा तो भी मुझको बहुत सन्देह रह गए परन्तु जब मैंने संस्कृत देखा तब मेरे सब सन्देह निवृत्त हो गए और अत्यन्त प्रसन्नता मुझको भई और काशी में मानमन्दिर जो रचा है उसमें महाराज सवाई मानसिंह जी ने खगोल के कला और यन्त्र ऐसे रचे थे कि जिसमें खगोल

कासबहालदेखपड़ताथा परन्तु आजकालउसकी मरम्मतनहोने
से बहुतकलायन्त्रबिगड़गए हैं तोभीकुछ२देखपड़ताहै फिरआज
कालमहाराज सवाईरामसिंहजीने कुछमरम्मतस्थानकीकराईहै
जोउसयन्त्रकोभीकरावेंगेतोकुछरोजबनारहेगाअन्यथानहींजबसे
महाभारतयुद्धभयाउसदिनसेआर्यावर्त्तकोबुरीदशाआईहै सोनि-
त्य२बुरीहीदशाहोतोजातीहै क्योंकिउसयुद्धमें अच्छे२विद्यावान
राजाऔरब्राह्मणलोगप्रायःमारेगए फिरकोईराजापूर्णविद्यावा-
ला इसदेशमें नहींभया जबराजाविद्वान औरधर्मात्मानहींभया
तबविद्याकाप्रचारभीनष्टहोताचला फिरकुछदिनकेपीछेआपसमें
लड़नेलगे क्योंकिजबविद्यानहींहोतो तबऐसेहीबहुतप्रमादहोते
हैं जोकोईप्रबलभया उसनेनिर्बलकाराजछीनकेउसकोमाराफिर
प्रजामेंभीगदरहोनेलगा किजहांजिसने जितनापाया उसकावह
राजावाजमीदारबनबैठा फिरब्राह्मणलोगोंनेभी विद्याकापरीश्र-
मछोड़दिया पढ़नापढ़ानाभीनष्टहोताचला जबब्राह्मणलोगविद्या
हीनहोतेचले तबक्षत्रिय,वैश्य,शूद्रभीविद्याहीनहोतेचले केवल
दम्भ,कपटऔरछलहीसेव्यवहारकरनेलगे फिरजितनेअच्छे का-
महोतेथेवेसबबन्धहोतेचले बेदादिकविद्याकाप्रचारभीबहुतथो-
ड़ाहोताचला फिरब्राह्मणलोगोंनेबिचारकिया किआजीविकाकी
रीतिनिकालनीचाहिए सोसम्मतिकरकेयहीबिचारकिया किब्रा-
ह्मणवर्णमें जोउत्पन्नहोताहै सोईदेवहै सबकापूज्यहै क्योंकिपूर्ण
विद्यासे ब्राह्मणवर्णहोताहै यहवर्णाश्रमकीसनातनरीतिहै सोई
ऋषिमुनियोंकेपुस्तकोंमेंभीलिखीहै(सोविद्यादिकगुणोंसेतोवर्णव्य-
वस्थानहींरक्खीकिन्तुकुलमेंजन्महोनेसेवर्णव्यवस्थाप्रसिद्धकरदिया
हैफिरजन्महीसेब्राह्मणादिकवर्णोंकाअभिमानकरनेलगे)फिरवि-
द्यादिकगुणोंमेंपुरुषार्थसबकाछूटाउसकेछूटनेसेप्रायःराजाऔरप्र-
जामें मूर्खताअधिक२होनेलगी फिरउन्हसेब्राह्मणलोगअपनेचर
णऔरशरीरकीपूजाकरानेलगेजबपूजाहोनेलगीतबअत्यन्तअभि-

मानउनमें होनेलगा उनविद्याहीनराजाओंको औरप्रजास्थपुरु-षोंकोबशीभूत ब्राह्मणोंनेकरलिए यहांतककि सोना, उठनाऔर कोसदोकोसतकजाना वहभोब्राह्मणों कोआज्ञाकेबिनानहींकरना और जोकोईकरेगा सोपापीहोजायगा फिरशनैश्चरादिकग्रहऔ-रनानाप्रकारके भूतप्रेतादिकोंकाजाल उनकेऊपर फैलानेलगे औरबेमूर्खताकेहोनेसे माननेभीलगें फिरराजा लोगोंको ऐसा निश्चयसबलोगोंनेमिलकेकराया किब्राह्मणलोगकुछभोकरैं परन्तु इनकोदण्डनदेनाचाहिए जबदण्डनहोनेलगा तबब्राह्मणलोग अत्यन्तप्रमादकरनेलगे औरक्षत्रियादिकभी फिरबड़े२ ऋषिमु-निऔरब्रह्मादिककेनामोंसे श्लोकऔरग्रन्थरचनेलगे उनमेंप्रायः यहीबातलिखी किब्राह्मणसबकापूज्यऔरसदाअदण्ड्यहै फिरअ-त्यन्तप्रमादऔरविषयासक्तिसे विद्या, बल, बुद्धि, पराक्रम औरशूर बीरतानष्टहोगई औरपरस्पर ईर्ष्याअत्यन्तहोगई किसोको कोई देखनसकै औरकोई२कसहायकारीनरहे परस्परलड़नेलगें यह बातचीनआदिकदेशोंमें रहनेवाले जैनोंनेसुनीऔरव्यापारादि-ककरनेके हेतुइसदेशमें आतेथें सोप्रत्यक्षभी देखोफिर जैनोंने बिचारकिया किइससमयआर्यावर्त्त देशमें राज्यसुगमतासेहोस-क्ताहै फिरवेआएऔरराज्यभी आर्यावर्त्त में करनेलगे फिरधो-रे२बोधगयामें राज्यजमाके औरदेशदेशान्तरमेंफैलानेलगे सो वेदादिकसंस्कृत पुस्तकोंकीनिन्दा करनेलगे औरअपनेपुस्तकोंके पठनपाठनकाप्रचार तथाअपनेमतकाउपदेशभीकरनेलगे सोइ-सदेशमेंविद्याकेनहोंहोनेसे बहुतमनुष्योंनेउनके मतकास्वीकार करलिया परन्तु कनौजकाशी पर्वतदक्षिणऔरपश्चिमदेशकेपुरुषों नेस्वीकारनहींकियाथा परन्त बेबहुतथोड़े होथेवेहीवेदादिकपु-स्तकोंका पठनऔरपाठनकर्तें औरकरातेथे फिरइनोंनेवर्णाश्रम व्यवस्थाऔरबेदोक्तकर्मोंकोमिथ्या२दोषलगाके अश्रद्धाऔरअ-प्रवृत्तिबहुतकरादिया फिरयज्ञोपवीतादिकक्रमभोप्रायःनष्टहोग-

या और जो२ वेदादिकोंकी पुस्तक पाया और पूर्वके इतिहासोंका उनका प्रायः नाश करदिया जिस्से कि इनको पूर्व अवस्थाका स्मरण भी न रहै फिर जैनोंका राज्य इस देशमें अत्यन्त जम गया तब जैन भी बड़े अभिमानमें होगए (और कुकर्म, अन्याय भी करने लगे) क्योंकि सब राजा और प्रजा उनके मतमें ही होगए फिर उनको डर वा शंका किसीकी न रही अपने मतवालोंको अच्छे २ अधिकार और प्रतिष्ठा करने लगे और वेदादिकोंको पढ़ें तथा उनमें कहे कर्मोंको करें उनको अप्रतिष्ठा करने लगे अन्यायसे भी उनके ऊपर चाल स्थापन करने लगे अपने मतका पण्डित वा साधु उनको बड़ी प्रतिष्ठा करने लगे सो आजतक भी ऐसा ही करते हैं और बहुत स्थान२ में बड़े२ मन्दिर रचलिए और उनमें अपने आचार्योंको मूर्त्ति स्थापन करदिया तथा उनको पूजा भी अत्यन्त करने लगे सो जैनोंके राज्य ही में मूर्त्ति पूजन चली इसके आगे न थी क्योंकि जितने ऋषिमुनियोंके किए प्राचीन ग्रन्थ हैं महाभारत युद्धके पहिले जो किरचेगए हैं उनमें मूर्त्तिपूजनका लेशमात्र भी कथन नहीं है इस्से दृढ़ निश्चय से जाना जाता है कि इस आर्यावर्त्त देशमें मूर्त्ति पूजन नहीं थी किन्तु जैनोंके राज्य ही से चला है (एक द्रविड देशके ब्राह्मणकाशी में आके एक गौड़पाद पण्डित थे उनके पास व्याकरण पूर्वक वेद पर्यन्त विद्या पढ़ी थी जिसका नाम शङ्कराचार्य था वे बड़े पण्डित भए थे उनने विचार किया कि यह बड़ा अनर्थ भया नास्तिकोंका मत आर्यावर्त्त देशमें फैल गया है और वेदादिक संस्कृत विद्या का प्रायः नाश ही होगया है सो नास्तिक मतका खण्डन और वेदादिक सत्य संस्कृत विद्याका विचार वे अपने मनमें ऐसा विचार करके सुधन्वा नाम राजा था उसके पास चलेगए क्योंकि बिना राजाओंके सहाय से यह बात नहीं होसकेगी सो सुधन्वा राजा भी संस्कृतमें पण्डित था और जैनोंके भी संस्कृत सब ग्रन्थ पढ़ा था सुधन्वा जैनके मतमें था परन्तु बुद्धि और विद्याके होने से अत्यन्त विश्वास नहीं था क्योंकि वह संस्कृत भी पढ़ा था और उसके पास जैनमतके पण्डित

भीबहुतथे फिरशंकराचार्यने राजासे कहाकि आप सभाकरावें और उनसे मेराशास्त्रार्थहोय और आपसुनैं फिरजोसत्यहोय उसकोमाननाचाहिए उसनेस्वीकारकिया औरसभाभीकराई उसमेंअपनेपासजैनमतकेपण्डितथे औरभीदूर२सेपण्डितजैनमतकेबोलाए फिरसभाभई उसमेंयहप्रतिज्ञाहोगई किहमवेद और वेदमतकास्थापनकरेंगे औरआपकेमतकाखण्डनतथाउनपण्डितोंनेऐसीप्रतिज्ञाकिया किवेदऔरवेदमतका हमखण्डनकरेंगे औरअपनेमतकामण्डन सोउनकापरस्परशास्त्रार्थहोनेलगा उसशास्त्रार्थमेंशङ्कराचार्यकाविजयभया औरजैनमतवालेपण्डितोंकापराजयहोगया फिरकोईयुक्तिजैनोंकीनहींचली किन्तुशङ्कराचार्यकीबात प्रमाणोंसेसिद्धभई उसीसमयसुधन्वाराजा बुद्धिमानथा उसकोजैनमतमेंअश्रद्धाहोगई औरवेदमतमेंश्रद्धाहोगई फिरसभाउठगई राजाऔरशङ्कराचार्य जीकाएकान्तमेंविचारभया कि आर्यावर्त्त मेंबड़ाअनर्थहोगयाहै इससे वेदादिकोंकाप्रचारऔरइन कर्मोंकाप्रचारहोनाचाहिए तथाजैनोंकाखण्डन सोशङ्कराचार्यनेकहाकिजैनोंका आजकालबड़ाबलहै औरवेदमतकाबलनहींहै इससे शास्त्रार्थतोहमकरनेकोतैयारहैं परन्तु कोईउपाधिकरै अथवाशास्त्रार्थहोनकरै तोहमाराकुछबलनहीं इसमेंआपलोग प्रवृत्तहोंय किकोईअन्यायकरै उसकोआपलोग शिक्षाकरैं सोराजानेउसबातकास्वीकारकिया किवहहमकरेंगे परन्तु हमारेछ:राजासम्बन्धीहैं उनकेपासहमचिट्ठीलिखतेहैं औरआपकोभीभेजेंगे शास्त्रार्थकरनेकेहेतु फिरवेभीजो मिलजांय तोबहुतअच्छीबातहै फिरशंकराचार्य उनराजाओंकेपासगए औरसभाभई फिरजैनमतकेपण्डितोंकापराजयहोगया फिरवेछ:भीसुधन्वासेमिलेऔर सबकीसम्मतिसेसंस्कारभीभया तथावेदोक्तकर्मभीकरनेलगेतबतो आर्यावर्त्त मेंसर्वत्रयहबातप्रसिद्धहोगई किएकशङ्कराचार्य नामक सन्यासीवेदादिकशास्त्रोंकेपढ़नेवालेबड़े पण्डितहैं जिससे बहुतजैन

लोगोंकेपण्डितपरास्तहोगए फिरउनसातराजाओंनेशङ्कराचार्यकी रक्षाकेहेतुबहुतभृत्य तथासेवकऔरसवारीभीरखदिया और सबनेकहाकिआपसर्वत्रआर्यावर्त्त में भ्रमणकरें औरजैनोंकाखण्डनकरें इसमेंकोईजबर्दस्तीकरेगा अन्यायसेउसकोहमलोगसम्भालेंगे फिरशंकराचार्यजीने जहां२जैनोंकेपण्डितऔरअत्यन्तप्रचारथा वहां२भ्रमणकिया औरउनसेसर्वत्रशास्त्रार्थकिया परन्तु जैनलोगोंकासर्वत्रपराजयहीहोतागया(क्योंकिदोतीनदोषउनकेबड़े भारीथे एकतोईश्वरकोनहींमानना दूसरावेदादिकसत्यशास्त्रोंकाखण्डनकरना औरतीसराजगत्स्वभावहीसेहोताहै इसकारचनेवालाकोईनहीं/इत्यादिकअन्यभीबहुतदोषहैं वजैनमतकेखण्डनमण्डनमेंविस्तारसेलिखेंगे फिरजितनीजैनोंके मन्दिरमेंमूर्त्तियां थीं उनकोसुधन्वादिकराजाओंनेतोड़वाडाली औरकूवांवापृथिवीमेंगाड़दिया औरकोईमूर्त्ति जैनोंनेबिनाटूटीभी भयसेलोनमेंगाड़दिया सोआजतकबटूटीऔरबिनाटूटीमूर्त्ति जैनोंकी पृथिवीखोदनेमें निकलतीहैं परन्तु मन्दिरनहींतोड़ेगए क्योंकि शंकराचार्य औरराजालोगोंने बिचारकिया मन्दिरोंकोतोड़ना उचितनहीं इनमेंवेदादिकशास्त्रोंकेपढ़नेकेहेतु पाठशालाकरेंगे क्योंकिलाखहांकरोड़हांरुपेएकोइमारतहै इसकोतोड़नाउचितनहीं औरकुछ२गुप्तजैनलोग जहांतहांरहगएथे सोआजतकदेखनेमेंआर्यावर्त्त देशमेंआतेहैं इसकेपीछेसर्वत्र वेदादिकोंकेपढ़ने औरपढ़ानेकीइच्छा बहुतमनुष्योंकोभई(शंकराचार्यऔरसुधन्वादिकराजा तथाऔरआर्यावर्त्तवासीश्रेष्ठलोगोंने विचारकियाकि विद्याकाप्रचार अवश्यकरनाचाहिए वेबिचारहीकरतेरहे इतनेमें ३२,वा,३३,बरसकीउमरमें शंकराचार्यकाशरीरछूटगया) उनके मरनेसेसबलोगकाउत्साहभङ्गहोगया)यहभीआर्यावर्तदेशवालोंकेबड़े अभाग्यकिशंकराचार्यदशवाबारहबरसभीजीतेतोविद्याका प्रचार यथावत्होजाता फिरआर्यावर्त्तकोऐसीदुर्दशा कभी नहीं

होती क्योंकि जैनोंका खण्डन तो होगया परन्तु विद्याप्रचार यथावत् नहीं भया इससे मनुष्योंको यथावत् कर्तव्य और अकर्तव्यका निश्चय नहीं होनेसे मनमें सन्देह होरहा कुछ तो जैनोंके मतका संस्कार हृदयमें रहा और कुछ वेदादिक शास्त्रोंका भी यह बात एक ईसवा बाईससै बरसकी है इसके पीछे २०० वा ३०० बरसतक साधारण पढ़ना और पढ़ाना रहा / फिर उज्जयनमें विक्रमादित्य राजा कुछ अच्छा भया उसने राजधर्म कुछ २ प्रकाश किया और बहुत कार्य न्यायसे होने लगे थे उसके राज्यमें प्रजाको सुख भी भया था क्योंकि विक्रमादित्य तेजस्वी बुद्धिमान और शूरवीर तथा धर्मात्मा इससे कोई और अन्याय नहीं कर नेपाता था परन्तु वेदादिक विद्याका प्रचार उसके राज्यमें भी यथावत् नहीं भया था उसके पीछे ऐसा राजा नहीं भया किन्तु साधारण होते गए फिर विक्रमादित्यसे ५०० वर्षके पीछे राजा भोज भए उसने संस्कृतका प्रचार किया सो नवीन ग्रन्थोंका रचना और प्रचार किया था वेदादिकोंका नहीं परन्तु कुछ २ संस्कृतका प्रचार भोजराजाने ऐसा कराया कि चाण्डाल और हल जोतने वाला भी कुछ २ लिखना पढ़ना और संस्कृत बोलने भी थे देखना चाहिए कि कालिदास गडरिया था परन्तु श्लोकादिक रचलेता था और राजा भोज भी नए २ श्लोक रचने में कुशल था कोई एक श्लोक भी रचके ले जाता था उनके पास उसका प्रसन्नता से सत्कार करते थे और जो कोई ग्रन्थ बनाता था तो उसका बड़ा भारी सत्कार करते थे फिर लोभसे बहुत संसारमें मनुष्य लोग नए ग्रन्थ रचने लगे उससे वेदादिक सनातन पुस्तकोंकी अप्रवृत्ति प्रायः होगई और संजीवनी नाम राजा भोजने इतिहास ग्रन्थ बनाया है उसमें बहुत पण्डितोंकी सम्मति है और यह बात उसमें लिखी है कि तीन ब्राह्मणोंने ब्रह्मवैवर्त्तादिक तीन पुराण पण्डितोंने रचे थे उनसे राजा भोजने कहा कि और के नामसे तुमको ग्रन्थ रचना उचित नहीं था और महाभारत को बात लिखी है कि दस हजार श्लोक २० बरसके बीचमें व्यासजीका नाम करके लोगोंने मिला

दिए हैं ऐसे ही पुस्तक बढ़ेगा तो एक ऊंटका भार होजायगा और ऐसे ही लोग दूसरे के नामसे ग्रन्थ रचेंगे तो बहुत भ्रम लोगोंको होजायगा सो उसमें संजीवनी ग्रन्थमें राजाभोजने अनेकप्रकारकी बातें पुस्तकोंके विषय और देशके वर्त्तमानके विषयमें इतिहास लिखे हैं सो वह संजीवनी ग्रंथ बटेश्वरके पास होलीपुरा एक गांव है उसमें चौबे लोग रहते हैं वे जानते हैं जिसके पास वह ग्रंथ है परन्तु लिखने वा देखनेको वह पण्डित किसीको नहीं देता क्योंकि उसमें सत्य२ बात लिखी है उसके प्रसिद्ध होनेसे पण्डितोंकी आजीविका नष्ट होजाती है इस भयसे वह उस ग्रंथको प्रसिद्ध नहीं करता ऐसेही आर्यावर्त्त वासी मनुष्योंकी बुद्धि क्षुद्र होगई है कि अच्छा पुस्तक वा कोई इतिहास उसको छिपाते चले जाते हैं यह इनकी बड़ी मूर्खता है क्योंकि अच्छी बात जो लोगोंके उपकारकी उसको कभी न छिपाना चाहिए फिर राजा भोजके पीछे कोई अच्छा राजा नहीं भया उस समयमें जैन लोगोंने जहां तहां मूर्ति मन्दिरोंमें प्रसिद्ध किया और वे कुछ२ प्रसिद्ध भी होने लगे तब ब्राह्मणोंने विचार किया कि इनके मन्दिरोंमें नहीं जाना चाहिए किन्तु ऐसी युक्ति रचैं कि हम लोगोंको आजीविका जिस्से होय फिर उनने ऐसा प्रपञ्च रचा कि हमको स्वप्न आया है उसमें महादेव, नारायण, पार्वती, लक्ष्मी, गणेश, हनुमान्, राम, कृष्ण, नृसिंह, इनोंने स्वप्नमें कहा है कि हमारी मूर्त्ति स्थापन करके पूजा करैं तो पुत्र, धन नैरोग्यादिक पदार्थोंकी प्राप्ति होगी जिस२ पदार्थकी इच्छा करेगा उस२ पदार्थकी प्राप्ति उसको होगी फिर बहुत मूर्खोंने मान लिया और मूर्त्ति स्थापन करनेको ई२ लगा फिर पूजा और आजीविका भी उनको होने लगी एककी आजीविका देखके दूसरा भी ऐसा करने लगा और कोई महाधूर्त्त ने ऐसा किया कि मूर्त्तिको जमीनमें गाड़के प्रातःकाल उठके कहा मुझको स्वप्न भया है फिर उनसे बहुत लोग पूछने लगे कि कैसा स्वप्न भया है तब उनसे उसने कहा कि देव कहता है मैं जमीनमें गड़ा हूं और दुःख पाता हूं मुझको निकालके मन्दिरमें

स्थापनकरै औरतूंहीपुजारीमेराहो तोमैंसबकाम सबमनुष्योंका सिद्धकरूंगा फिरवेविद्याहीनमनुष्य उस्से पूछतेभए किवहमूर्त्ति कहांहै जोतुम्हारासत्यस्वप्नहोगा तोतुमदिखलाओ तबजहां उसनेमूर्तिगाड़ीथी वहांसबकोलेजाकेखोदकेउसकोनिकाली सब देखकेबड़ाआश्चर्यकिया औरसबनेउस्से कहाकि तूंबड़ाभाग्यवान् है औरतेरे परदेवताकी बड़ीकृपाहै से हमलोग धनदेतेहैं इस्से मन्दिरबनाओ इसमूर्त्ति काउसमें स्थापनकरो तुमइसके पुजारी बनो औरहमलोगनित्यदर्शनकरेंगें तबतोवहप्रसन्नहोकेवैसाही किया औरउसकीआजीविकाभीअत्यन्तहोनेलगी उसकीआजीविकाकोदेखके अन्यपुरुषभी ऐसीधूर्त्तताकरनेलगे औरविद्याहीन पुरुषउसकीमाननताकरनेलगे फिरप्रायःमूर्त्ति पूजन आर्यावर्त्तमें फैला एकमहम्मूदगजनवीइसदेशमेंआया और बहुतसीमूर्त्तियां सोनेऔरचांदियोंकीलूटलिया बहुतपुजारीऔरपण्डितोंको पकड़लिए औरगातको पिसानपिसावै औरदिनमें गाजहूरआदिकोसफाकरावै औरजहांकोई पुस्तकपाया उसकोनष्टभ्रष्टकरदिया ऐसेवहआर्यावर्त्त में बारहदफेआया औरबहुतलूटमारअत्यन्तअन्यायउसनेकिया इसदेशकोबड़ी दुर्दशाउसनेकिया यहांतक किशिरच्छेदनबहुतोंकाकरदिया बिनाअपराधोंसेस्त्री,कन्याऔर बालककोभीपकड़केदुःखदिया औरबहुतोंकोमारडाला ऐसाउन्ने बड़ाअन्यायकियासोजिसदेशमें ईश्वरकीउपासनाकोछोड़केकाष्ठ पाषाण वृक्ष,घास,कुत्ते,गधे,औरमिट्टीआदिको पूजासे ऐसाही फलहोगा उत्तमकहांसे होगा फिरचार ब्राह्मणोंने एकलोहेकी पोलीमूर्त्ति रचवाई औरउसकोगुप्त कहींरखदिया फिरचारोंने कहा हमकोमहादेवने स्वप्नदियाहै किहमारा आपलोगमन्दिर रचैं तोकैलाशकोछोड़के आर्यावर्त्त देशमेंमैं वासकरूं औरसब कोदर्शनदेऊं ऐसासबदेशोंमेंप्रसिद्धकरदिया फिरमन्दिरसबलोगोंनेमिलकेरचवाया उसमेंनीचेऊपरऔरचारोंओर भींतमेंचु-

बक्षपत्थर रक्खे जब मन्दिर पूरा भया तब सब देशों में प्रसिद्ध कर दिया कि उस दिन मध्य रात्रि में कैलाश से महादेव मन्दिर में आवेंगे जो दर्शन करेगा उसका बड़ा भाग्य और मरने के पीछे कैलाश को वह चला जायगा फिर उस समय में राजा, बाबू, स्त्री, पुरुष और लड़के वाले उस स्थान में जुटे फिर उन चारों धूर्त्तों ने मूर्त्ति मन्दिर में कहीं गुप्त रख दिई थी और मेला में ऐसा प्रसिद्ध कर दिया कि महादेव देव है सो भूमि को पग से स्पर्श न करेंगे किन्तु आकाश ही में खड़े रहेंगे ऐसा हम को स्वप्न में कहा है सो जब उस दिन पहर रात्रि गई तब सब को मन्दिर के बाहर निकाल दिए और किवाड़ बन्द कर के वे चारों भीतर रहे फिर उस मूर्त्ति को उठा के मन्दिर में ले गए और बीच में चुम्बक पाषाण के आकर्षणों से अधर आकाश में वह मूर्त्ति खड़ी रही और उन्हों ने खूब मन्दिर में दीप जोड़ दिए फिर घण्टा, झल्लरी, शंख, रणसिंघा और नगारा बजाए तब तो बड़ा मेला में उत्साह भया और उन ने द्वार बाजे खोल दिए फिर मनुष्यों के ऊपर मनुष्य गिरे और मूर्त्ति को आकाश में अधर खड़ी देख के बड़े आश्चर्ययुक्त भए और लाखहां रुपैयों की पूजा चढ़ी अनेक पदार्थ पूजा में आए फिर वे चारों धूर्त्त ब्राह्मण बड़े मस्त होगए और महन्त होगए फिर नित्य मेला होने लगा करोड़हां रुपैयों का माल होगया सो वह मन्दिर द्वारका के पास प्रभासक्षेत्रस्थान में था और उस मूर्त्ति का नाम सोमनाथ रक्खा था फिर महमूद गज़नवी ने सुना कि उस मन्दिर में बड़ा माल है ऐसा सुन के अपने देश से सेना ले के चढ़ा सो जब पंजाब में आया तब हल्ला होगया और सोमनाथ की ओर चला तब लोगों ने जाना कि सोमनाथ के मन्दिर को तोड़ेगा और लूटेगा ऐसा सुन के बहुत राजा पण्डित और पुजारी सेना ले २ के सोमनाथ की रक्षा के हेतु इकट्ठे भए सोमनाथ के पास जब वह डेढ़ सै दो सै कोश दूर रहा तब पण्डितों से राजाओं ने पूछा कि मुहूर्त्त देखना चाहिए हम लोग आगे जा के उन से लड़ैं फिर पण्डित लोग इकट्ठे होके मुहूर्त्त देखा परन्तु मुहूर्त्त बना नहीं फिर नित्य मुहूर्त्त देखते रहे परन्तु

कोईदिनचन्द्रकोईदिन और दहनहीबने कोईदिनदिकशूलसम्मु-
खआया कोईदिनयोगिनी औरकोईदिनकालनहींबना सोपण्डि-
तोंकीबुद्धिको कालादिकोंकेभ्रमोंनेखालिया औरराजालोगबिना
पण्डितोंकीआज्ञासे कुछकर्त्तेनहींथे सोप्राय:पण्डित औरराजा
लोगमूर्खहोथे जोमूर्खनहोतेतोपाषाणादिकमूर्त्ति क्योंपूजते औ-
रमुहूर्त्तादिकोंकेभ्रमोंमेंनपड़क्योंहोतेऐसेविचारकर्त्तेहीरहे उस-
कोमन दूसरोमंजनपरपहुंचो तवराजालोगोंने पण्डितोंसेकहा
किअवतोजल्दीमुहूर्त्त देखो तवपण्डितोनेकहाकिआजमुहूर्त्त अ-
च्छानहींहै जोयाचाकरोगे तोतुमारापराजयही होजायगा तब
वराजाओंसेडरकेबैठेरहे तबमहमूदगाजनवीघोडे२पांचछ:कोशा
कऊपरआकेठहरा औरदूतोंसे सरखबरमंगवाई किवक्याकर्त्तेहैं
दूतोंनेकहाकिआपसमेंमुहूर्त्तविचाराकर्तेहैं महमूदगजनवीकेपा-
स३०हजारसेनाथो अधिकनहीं औरउनके पास दो,तीन लाख
फौजथी फिरउसकेदूसरेदिनप्रात:काल राजापण्डितपुजारीमि-
लकेमुहूर्त्त विचारनेलगे सोसबपण्डितों नेकहाकि आजचन्द्रमा
अच्छानहो औरभोग्रहक्रूरहैं पुजारीलोग औरपण्डित मूर्त्ति के
आगेजाकेगिरपड़े औरअत्यन्तरोदनकिया हेमहाराज इसदुष्ट
कोखालेओ औरअपनसेवकोंकासहायकरो परन्तु वहलाहाक्या
करसक्ताहै औरसबसेकहनेलगेकि आपलोगकुछचिन्तामतकरो
महादेवउसदुष्टकोऐसेहीमारडालेंगे वावहमहादेवकेभयसे व-
हांहीसेभागजायगा उसकाक्यासामर्थ्य है किसाक्षात् महादेवके
पासआरुके औरसन्मुख दृष्टिकरसके ऐसेसब परस्पर बकरहेथे
फिरकुछलड़ाईभई औरमुसल्मानभोडरे किविजयहोगावापरा-
जय उससमयमेंऔरपुस्तकफैलारके बहुतसेमन्त्रोंकाजपऔरपा-
ठकर्त्तेथे औरकहतेथे किअबदेवताऔरमन्त्रहमारापाठ सिद्धहो-
ताहै सोवहवहांहीं अन्धाहोजायगा सोवड़ीमण्डलीको मण्डली
जप,पाठऔरपूजाकररहीथो औरमूर्त्तिकेसामनेऔंधेगिरकेपुकार

तेथे एकसभालगरहीथी राजाऔरपण्डितबिचारतेथे मुहूर्त्त को उससमयमेंउसके निकटएकपर्वतथाऔरमहमूदगजनवीनेएकतो पलगाई औरसभाकेबीचमें गोलामाराउससमयकोईदांतधावन करताथा कोईसोताथाऔरकोईस्नानकरताथाइत्यादिकव्यवहा- रोंसेगाफिलथे सोउसगोलेसे सबपण्डितलोग पोथीपत्राछोड़के भागे औरराजालोगभीभागउठे तथासेनाभीअपनेर स्थानोंसेभा- गउठी औरबहमहमूदगजनवी सेनासहितधावाकरके उसस्थान परआपहुंचा उसकोदेखकेसबभागउठे भागेभएपण्डितपुजारी सिपाही तथाराजाओंको उननेपकड़लिया औरबांधलिया और बहुतसोमारपड़ीउनकेऊपर तथामारभीडालाकिसीको औरब- हुतभागगए क्योंकिउनपण्डितोंकेउपदेशसे सोलापहिर कबैठथे औरकथासुनीथीकिमुसल्मानोंकास्पर्शनहोकरनाऔरउनकेदर्श- नसेधर्मजाताहै ऐसीमिथ्याबातसुनकेभागउठे फिरमन्दिरकेचा- रोंओर महमूदगजनवीकीसेनाहोगई औरआपमन्दिरकेपास प- हुंचा तबमन्दिरकेमहंत औरपुजारीहाथजोड़केखड़े भए उनमें पुजारियोंने कहाकिआपजितनाचाहैं उतनाधनलेलिजिए परन्तु मन्दिरऔरमूर्त्ति कोनतोड़िए क्योंकिइससे हमलोगोंकी बड़ीआ- जीविकाहै ऐसासुनके महमूदगजनवीबोलाकि हमबुतबेचनेवाले नहीं किन्तु उनको तोड़नेवालेहैं तबतोवेडरे औरकहाकि एक करोड़रुपैया आपलेलिजिए परन्तु इसको मततोड़िए ऐसेकहते सुनतेतोनकरोड़तककहापरन्तुमहमूदगजनवीनेनहींमाना और उनकोमुसकचढ़ालिया फिरउनकोलेकेमन्दिरमें गयाऔरउनसे पूछाकि खजानाकहांहैसोकुछतोउसनेबतलादियाफिरभीउसको लोभआयाकि औरभीकुछहोगा फिरउनकोमारापीटा तबउनने सबखजानाबतलादिया फिरमन्दिरमेंआकेसबलीलादेखी फिर महन्तऔरपुजारियोंसेकहाकि तुमनेदुनियाकोऐसो भूर्त्ताकर- केठगलिया क्योंकिलोहेकीतोमूर्त्ति बनाईहै इसकेचारोंऔरचुम्ब-

कपाषाणरखनेसे आकाशमें अधरखड़ीहै इसकानामरखदियाहै महादेव यहतुमनेबड़ीधूर्त्तताकियाहै फिरउसमन्दिरकाशिखर उननेतोड़वादिया जबवहचुम्बक पाषाणअलगहोगया तबमूर्त्ति जमीनमें चुम्बकपाषाणमेंलगगई फिरसबभीतें तोड़वाडालो सब चुम्बककेनिकलनेसे मूर्त्ति जमीनमेंगिरपड़ी फिरउसमूर्त्ति कोम-हमूदगजनवीने अपनेहाथमेंलोहेकेघनको पकड़केमूर्त्ति केपेटमें मारा, उससे मूर्त्ति फटगई उससे बहुतजवाहिरातनिकला क्योंकि होराआदिकअच्छे२ रत्नवेपातेथे तबमूर्त्ति होमेंरखदेतेथें फिर उनमहंतऔरपुजारियोंकोखूबतंगकिया औरफुमलायाभी फिर उननेभयसेसबबतलादिया उनसेकहाकिजोतुम सबसच्चर२बतला-देओगे तोतुमकोहमछोड़देंगे तबउननेसोना, चांदीके पात्रोंको भोबतलादिए जोकुछथा औरउसने सबलेलिया सोअठारह क-रोड़कामालउसमन्दिरसेउसनेपाया फिरबहुतसीगाड़ीऊंटऔ रमजूरउसकेपासथें औरभोवहांसेपकड़लिए उनकेऊपरसबमा-लकोलादकेअपनेदेशकोओरचला सोथोड़ेसेथोड़े पण्डितमहंत औरपुजारीतथाक्षत्रिय, वैश्य, ब्राह्मण औरशूद्रतथास्त्रीबालकदश हजारतकपकड़केसंगलेलिएथेंउनकायज्ञोपवीततोड़डालामुखमें थूकदिया औरथोड़े२मूखेचनेनित्यखानेकोदेताथा औरजाजरूर सफाकरवावै पिसवावै घासछिलवावै औरघोड़ोंकोलीदउठवावै औरमुसल्मानोंकेजूठेबरतनमजवावै औरसबप्रकारकीनीचसेवा उनसेलेऐसेकराता२जबमक्काकेपासपहुंचा तबअन्यमुसल्मानोंने कहाकिइनकाफरोंकायहांरखनाउचितनहीं फिरउनकोबुरीद-शासेमारडाला क्योंकिउनकेकुरानमें लिखाहै किकाफरोंकोलूट ले उनकोस्त्रीछीनले भूठफरेबसेउनकासबमाललेर२ औरउनको मारडाले तोभोकुछदोषनहीं (किन्तु उसमुसल्मानको बिहिस्तअ-र्थात्उसकोस्वर्गवासमिलताहै) वहखुदाकेघरमेंबड़ामान्यहोताहै फिरकाफरवहकहाताहै जोकिमुहम्मदके कलमाकोनपढ़े और

कुरानकेऊपरविश्वासनलेश्रावै उसकोविगाड़नेश्रौरमारनेमेंकु-
छदोषनहीं ऐसामुसल्मानोंकेमतमेंलिखाहै इससे उनको अन्याय
करनेमेंकुछभयनहींहोता औरजोकुछपापहोताहै सोतोबाशब्दसे
छूटजाताहै इससे वेपापकरनेमेंभयक्योंकरेंगे ऐसेहोबारहदफेवह
आयाहै औरदोतीनवारमथुराकीभीदुर्दशाऐसीकिईथी औरजहां
२वहगयाथा वहां२ऐसीही उसदेशकीदुर्दशाकिईथी औरडांकू
कीनांईवहआताथा मारकेजोकुछपाताथा सोअपनेदेशमेंलेजाता
था उसदिनसेमुसल्मान्लोगदरिद्रसेधनाढ्यहोगएहैं सोआर्यावर्त
प्रतापसेआजतकभीधनचलाआताहै औरआर्यावर्त देशअपनेहीं
दोषोंसेनष्टहोताजाताहै सोहमकोबड़ाअपशोचहैकिऐसाजोदेश
औरइसप्रकारकाधनजिसदेशमेंहै सोदेशवाल्यावस्थामेंविवाहवि-
द्याकात्याग मूर्त्तिपूजनादिक पाखण्डोंकोप्रवृत्ति नानाप्रकार के
मिथ्यामजहबोंकाप्रचार विषयासक्तिऔरवेदविद्याकालोपजबतक
एदोषरहेंगे तबतकआर्यावर्त देशवालोंकी अधिक२दुर्दशाहीहो-
गी औरजोसत्यविद्याभ्यास तथासुनियम,धर्मऔरएकपरमेश्वर
कीउपासना इत्यादिकगुणोंकोग्रहणकरैं तोसबदुःखनष्ट होजांय
औरअत्यन्तआनन्दमेंरहैं फिरचारब्राह्मणोंनेविचारकियाकिकोई
क्षत्रियराजाइसदेशमें अच्छानहींहै इसकाकुछउपायकरनाचा-
हिए वेब्राह्मणचारोंअच्छे थे क्योंकिसबमनुष्योंकेऊपरकृपाकरके
अच्छीबातविचारी यहअच्छे पुरुषोंकाकाम है सोचकानहीं फिर
उननेक्षत्रियोंकेबालकोंमेंसे चारअच्छे बालकछांटलिए औरउन
क्षत्रियोंसेकहाकि तुमलोग खानेपोनेकाप्रबन्ध बालकोंकारखना
उननेस्वीकारकिया औरसेवकभीसाथरखदिए वेसबआबूराजप-
र्वतकेऊपरजाकेरहेऔरउनबालकोंकोअक्षराभ्यासऔरअच्छेव्य-
वहारोंकीशिक्षाकरनेलगे फिरउनकायथाविधि संस्कारभीउनने
किया सन्ध्योपासन औरअग्निहोत्रादिक वेदोक्तकर्मोंकी शिक्षा
उननेकिया फिरव्याकरणछःदर्शनकाव्यालङ्कारसूत्रऔरसनातन

कोश यथावत्पदार्थविद्या उनको पढ़ाई फिर वैद्यकशास्त्र तथा गान विद्या, शिल्पविद्या, और धनुर्विद्या अर्थात् युद्धविद्या भी उनको अ-च्छीप्रकारसे पढ़ाई फिर राजधर्म जैसा कि प्रजासे वर्त्तमान करना औ-र न्याय करना दुष्टोंको दण्ड देना श्रेष्ठोंका पालन करना यह भी सब पढ़ाया ऐसे पसीचवा २६ बरसकी उमर उनकी भई और उन प-ण्डितोंके स्त्रियोंने ऐसे ही चार कन्या रूपगुणसम्पन्न उनको अपने पास रखके व्याकरण, धर्मशास्त्र, वैद्यक, गानविद्या, तथा नानाप्रकारके शिल्पकर्म उनको पढ़ाए और व्यवहारकी शिक्षा भी किया तथा युद्ध विद्याकी शिक्षा गर्भमें बालकोंका पालन और पतिसेवा का उपदेश भी यथावत् किया फिर उन पुरुषोंको परस्पर चारोंका युद्ध करना औ-र करानेका यथावत् अभ्यास कराया ऐसे चालीस २ वर्षके वे पुरुष भए बीस २ वर्षकी वे कन्या भई तब उनकी प्रसन्नता और गुणपरीक्षा से एक से एकका विवाह कराया जबतक विवाह नहीं भया था तबतक उन पु-रुषोंकी और कन्याओंकी यथावत् रक्षा कि ईगई थी इससे उनको विद्या बल, बुद्धि, तथा पराक्रमादिक गुण भी उनके शरीरमें यथावत् भए थे फिर उनसे ब्राह्मणोंने कहा कि तुम लोग हमारी आज्ञा करो तब उन सबोंने कहा कि जो आपकी आज्ञा होगी सो ई हम करेंगे तब उनने उनसे कहा कि हमने तुम्हारे ऊपर परीश्रम किया है सो केवल जगत् के उपकारके हेतु किया है सो आप लोग देखो कि आर्यावर्त्त में गदर मचरहा है सो मुसल्मान् लोग इस देशमें आके बड़ी दुर्दशा करते हैं और धनादिक लूटके ले जाते हैं सो इस देशकी नित्य दुर्दशा होती जा-ती है सो आप लोग यथावत् राजधर्म से पालन करो और दुष्टोंको य-थावत् दण्ड देओ परन्तु एक उपदेश सदा हृदयमें रखना कि जबतक वीर्यकी रक्षा और जितेन्द्रिय रहोगे तबतक तुमारा सब कार्य सिद्ध होता जायगा और हमने तुम्हारा विवाह अब जो कराया है सो केवल परस्पर रक्षाके हेतु किया है कि तुम और तुमारी स्त्रियां संग २ रहोगे तो बिगड़ोगे नहीं और केवल सन्तानोत्पत्तिमात्र विवाहका प्रयोजन

जानना और मनसे भी परपुरुष वा परस्त्री का चिन्तन भी नहीं करना और विद्या तथा परमेश्वर की उपासना और सत्यधर्म में सदा स्थित रहना जबतक तुमारा राज्य न जमै तबतक स्त्रीपुरुष दोनों ब्रह्मचर्याश्रम में रहो क्योंकि जो क्रीड़ा मत्त होगे तो बलादिक तुम्हारे शरीर से न्यून नहोजांयगे तो युद्धादिकों में उत्साह भी न्यून न होजायगा और हम भी एक२ के साथ एक२ रहेंगे सो हम और आप लोग चलैं और चलके यथावत् राज्य का प्रबन्ध करैं फिर वे वहां से चले वे चार इन नामों से प्रख्यात थे चौहान पवांर सोलंकी इत्यादिक उनने दिल्ली आदिक में राज्य किया था कुछ२ प्रबन्ध भी भया था जब राज्य करने लगे कुछ काल के पीछे सहाबुद्दीन गोरी एक मुसल्मान था सो भी उसी प्रकार इस देश में आया था कनोज आदिक में उस समय कनोज का बड़ा भारी राज था सो इस के भय के मारे अपने हीं जाके उनको मिला और युद्ध कुछ भी नहीं किया फिर अन्य चवह युद्ध जहां तहां किया सो उस का विजय भया और आर्यावर्त वालों का पराजय भया फिर दिल्ली वालों से कोई वक्त उसका युद्ध भया उस युद्ध में पृथिराज मारागया और उसने अपना सेनाध्यक्ष दिल्ली में रक्षा के हेतु रख दिया उसका नाम कुतुबुद्दीन था वह जब वहां रहा तब कुछ दिन के पीछे उन राजाओं को निकाल के आप राजा भया उस दिन से मुसल्मान लोग यहां राज्य करने लगे और सबने कुछ२ जुलुम किया परन्तु उनके बीच में से अकबर बादशाह अच्छा भया और न्याय भी संसार में होने लगा सो अपनी बहादुरी से और बुद्धि से सब गदर मिटा दिया उस समय राजा और प्रजा सब सुखी थे परन्तु आर्यावर्त्त के राजा और धनाढ्य लोग बिक्रमादित्य के पीछे सब विषय सुख में फसरहे थे उससे उनके शरीर में बल, बुद्धि, पराक्रम और शूरवीरता प्रायः नष्ट होगई थीं क्योंकि सदा स्त्रियों का संग गाना बजाना, नृत्य देखना, सोना अच्छे कपड़े और आभूषणों को धारण करना नाना प्रकार के अतर और अञ्जन नेत्र में लगाना इससे उनके शरीर बड़े कोमल होगए थे कि थोड़े से ताप वा शीत अथवा वायु का

सहननहीहोसक्ताथा फिरवेयुद्धक्याकरसकेंगे क्योंकिजोनित्यस्त्रि-
योंका संगकरेंगे औरविषयभोगउनकाभोशरीरप्रायःस्त्रियोंकोनां-
ईहोजाताहै वेकभीयुद्धनहींकरसक्ते क्योंकिजिनकेशरीर दृढ़रोग
रहित बल,बुद्धिऔरपराक्रम तथावीर्यकीरक्षा औरविषयभोगमें
नहीफसना नानाप्रकारकीविद्याकापढ़ना इत्यादिककेहोनेसेसब
कार्यसिद्धहोसक्तेहैं अन्यथानहीं फिरदिल्लीमें औरंगजेबएकबा-
दशाहभयाथा उननेमथुरा,काशी,अयोध्याऔरअन्यस्थानमेंभो
जारके मन्दिरऔरमूर्त्तियोंको तोड़डाला औरजहांर बड़ेर म-
न्दिरथे उसरस्थानपरअपनी मसजिदबनादिया जबवहकाशीमें
मन्दिरतोड़नेकाआया तबविश्वनाथकुंएमेंगिरपड़े औरमाधव
एकब्राह्मणकेघरमेंभागगए ऐसाबहुतमनुष्यकहतेहैं परन्तुहम-
कोयहबातझूठमालूमपड़तीहै क्योंकिवहपाषाणवाधातुजड़पदार्थ
केसभागसक्ताहै कभीनहीं सोऐसाभयाकि जबऔरंगजेबआया
तबपुजारियोंनेभयसेमूर्त्तिउठाकेऔरकुंएमेंडालदिया औरमा-
धवकीमूर्त्तिउठाकेदूसरेकेघरमेंछिपादिया किवहनतोड़सके सो
आजतकउसकुंएकाबड़ादुर्गन्धजलउसकोपीतेहैं औरउसीब्राह्म-
णकेघरमे माधवकीमूर्त्तिकोआजतकपूजाकरतेहैं देखनाचाहिए
किपहिलेतोसोना,चांदीकीमूर्त्तियांबनातेथें तथाहीराऔरमा-
णिक को आंख बनाते थे सो मुसल्मानों के भय से और दरिद्र-
तासे पाषाण,मिट्टी,पीतल,लोहा, और काष्ठादिकोंकी मूर्त्ति-
यांबनातेहैं सोअबतकभीइनसत्यानाशकरनेवाले कर्मकोनहींछो-
ड़देते क्योंकिछोड़ेंतो तबजोइनकीअच्छीदशाआवै इनकीतोइन
कर्मोंसेदुर्दशाहोहोनेवालीहै जबतककीइनकोनहींछोड़ते और
महाभारतयुद्धकेपहिलेआर्यावर्त्त देशमेंअच्छेरराजाहोतेथें उ-
नकीविद्या,बुद्धि,बल,पराक्रम तथाधर्मनिष्ठा औरशूरवीरादिक
गुणअच्छेरथ इससेउनकाराज्य यथावत्होताथा सोइक्ष्वाकु,सग-
र,रघु,दिलीपआदिकचक्रवर्त्तीहुएथे औरकिसीप्रकारकापाखण्ड

उनमें न होथा सदाविद्याकीउन्नति औरअच्छे२कर्मआपकरतेथे तथाप्रजासेकरातेथे औरकभीउनका पराजयनहीं होताथा तथा अधर्मसेकभीनहींयुद्धकरतेथेऔरयुद्धसेनिवृत्तनहीहोतेथे उससमय सेलेकेजैनराज्यकेपहिलेतकइसीदेशके राजाहोतेथे अन्यदेशकेन-हीं सोजैनोंने औरमुसल्मानोंने इसदेशको बहुत बिगाड़ाहै सो आजतकबिगड़ताहीजाताहै सोआजकालअंगरेजकेराज्यहोनेसे उनराजाओंकेराज्यसेसुखभयाहै क्योंकिअंगरेजलोगमतमतान्त-रकीबातमें हाथनहींडालते औरजोपुस्तक अच्छापातेहैं उसको अच्छी प्रकाररक्षाकरतेहैं औरजिसपुस्तकके सौरुपैएलगतेथे उस पुस्तकका छापाहोनेसेपांचरुपैयोंपरमिलताहै परन्तु अङ्गरेजोंमें भीएककामअच्छानहींहुआ जोकिचित्रकूटपर्वतमहाराजअमृ-तरायजीका पुस्तकालयकोजलादियाउसमें करोड़हांरुपैएके ला-खहांअच्छे२पुस्तकनष्टकरदिए जोआर्यावर्त्तवासीलोग इससमय सुधरजांयतोसुधरसक्तेहैं औरजोपाखण्डहीमेंरहेंगें तोअधिक२ हीनाशहोगा इनकाइसमेंकुछसन्देहनहीं क्योंकिबड़े२आर्यावर्त देशकेराजाओरधनाढ्यलोगब्रह्मचर्याश्रमविद्याके प्रचारधर्मसेसब व्यवहारोंकाकरना औरवेश्यातथापरस्त्रीगमनादिकोंकात्यागक-रैं तोदेशकेसुखकीउन्नतिहोसक्तीहै परन्तुजबतकपाषाणादिकमू-र्त्तिपूजन वैरागी,पुरोहित,भट्टाचार्यऔरकथाकहनेवालोंकेजालों सेछूटें तबउनकाअच्छाहोसक्ताहै अन्यथानहीं प्रश्न मूर्त्ति पूजना-दिक सनातनसेचलेआएहैं उनकाखण्डनक्योंकरतेहो उत्तर यह मूर्त्ति पूजनसनातनसेनहीं किन्तु जैनोंकेराज्यहोनेसेआर्यावर्त्तमें चलाहै जैनोंनेपरशुनाथ,महावीर,जैनेन्द्र,ऋषभदेव,गोतम०क-पिलआदिकमूर्त्तियोंकेनामरक्खेथें उनकेबहुत२चेलेभयेथें औ-रउनमें उनकोअत्यन्तप्रीतिभीथी इससे उनचेलोंनेअपनेगुरुओंको मूर्त्ति बनाकेपूजनेलगे मन्दिरबनाके फिरजबउनको शंकराचार्य नेपराजयकरदिया इसकेपीछेउक्तप्रकारसेब्राह्मणोंनेमूर्त्तियांरची

और उनका नाम महादेव आदिक रखदिए उन मूर्त्तियोंसे कुछ विलक्षण बनानेलगे और पुजारीलोग जैन तथा मुसल्मानोंके मन्दिरों की निन्दा करनेलगे । नवदेद्यावनीं भाषां प्राणैः कण्ठगतैरपि । हस्तिना ताड्यमानोपि नगच्छेज्जैनमन्दिरम् ॥१॥ इत्यादिक श्लोक बनाए हैं कि मुसल्मानोंकी भाषा बोलनी और सुननी भी नहीं चाहिए और मत्त हस्ती अर्थात् पागल हाथी के मारनेको दौड़े सो जैनके मन्दिर में जानेसे बच सक्ता भी होय तोभी जैनके मन्दिर में न जाय किन्तु हाथी के सन्मुख मर जाना उस्से अच्छा ऐसे २ निन्दा के श्लोक बनाए हैं सो पुजारी पण्डित और सम्प्रदायी लोगोंने चाहा कि इनके खण्डनके विना हमारी आजीविका न बनेगी यह केवल उनका मिथ्याचार है कि मुसल्मानकी भाषा पढ़नेमें अथवा कोई देशकी भाषा पढ़नेमें कुछ दोष नहीं होता किन्तु कुछ गुण ही होता है । अपशब्दज्ञानपूर्वके शब्दज्ञाने धर्मः । यह व्याकरण महाभाष्यका वचन है इसका यह अभिप्राय है कि अपशब्दज्ञान अवश्य करना चाहिए अर्थात् सब देश देशान्तर की भाषा को पढ़ना चाहिए क्योंकि उनके पढ़नेसे बहुत व्यवहारों का उपकार होता है और संस्कृत शब्दके ज्ञानका भी उनको यथावत् बोध होता है जितने देशोंकी भाषा जानें उतना ही पुरुषको अधिक ज्ञान होता है क्योंकि संस्कृतके शब्द बिगड़के देशभाषा सब होती है इस्से इन के ज्ञानोंसे परस्पर संस्कृत और भाषा के ज्ञानमें उपकार ही होता है इसीहेतु महाभाष्यमें लिखा कि अपशब्दज्ञानपूर्वक शब्दज्ञानमें धर्म होता है अन्यथा नहीं क्योंकि जिस पदार्थ का संस्कृत शब्द जानेगा और उसके भाषा शब्दको न जानेगा तो उसके यथावत् पदार्थका बोध और व्यवहार भी नहीं चलसकेगा तथा महाभारतमें लिखा है कि युधिष्ठिर और विदुरादिक अरबी आदिक देशभाषा को जानते थे सो ई जब युधिष्ठिरादिक लाक्षागृह को और चले तब विदुर जीने युधिष्ठिर जी को अरबी भाषा में समझाया और युधिष्ठिर जी ने अरबी भाषा से प्रत्युत्तर दिया यथावत् उसको समझ लिया तथा राजसू-

य और अश्वमेधयज्ञमें देशदेशान्तर तथाद्वीप द्वीपान्तरके राजा और प्रजास्थ आएथें उनकापरस्पर देशभाषाओंमें व्यवहारहोता था तथाद्वीपद्वीपान्तरमेंयहांके लोगजातेथ औरवेइस देशमें आतेथ फिरजोदेशदेशान्तर कीभाषा नजानते तोउनका व्यवहार सिद्धकैसेहोता इससे क्याआयाकि देशदेशान्तरको भाषाकेपढनें औरजाननेमें कुछदोषनहीं किन्तु बडाउपकारहीहोताहै और जिननेपाषाणमूर्त्ति के मन्दिरहैंवेसबजैनोंहीकेहैं सोकिसीमन्दिर मेंकिसीकोजानाउचितनहीं क्योंकिसबमेंएकहीलीलाहै जैसीजैन मन्दिरोंमें पाषाणादिकमूर्त्ति यांहैं वैसीआर्य्यावर्त्त वासिओंकेमन्दिरोंमें भी जडमूर्त्ति यां हैं कुछनाम विलक्षण२ इन लोगों ने रखलिएहैं औरकुछ विशेषनहीं केवल पक्षपातहीसे ऐसाकहते हैं किजैनमन्दिरोंमें नजाना औरअपनें मन्दिरोंमेंजाना यहसब लोगोंने अपना२मतलब सिधुवनालियाहै आजीविकाकेहेतु (प्रश्न) वेदशास्त्रमेंमूर्त्ति पूजनलिखाहै औरवेदमन्त्रोंसे प्राणप्रतिष्ठाहोती है उसमेंदेवकीशक्तिभीआजाताहै फिरआपखण्डन क्योंकरतेहैं उत्तर वेदशास्त्रमंमूर्त्ति पूजनकहीं नहीलिखा औरनप्राणप्रतिष्ठा औरनकुछ उसमंशक्तिआतीहै प्रश्न सहस्रशीर्षापुरुषः उद्बुध्यस्वाग्ने प्राणदाअपानदा ॥ इत्यादिकमन्त्रोंसे षोडशोपचारपूजाऔर प्राणप्रतिष्ठाभीहोतीहै तथाप्रतिष्ठा मयूखग्रन्थऔर तंत्रग्रन्थोंमें आत्मेहागच्छतुसुखंचिरन्तिष्ठतुस्वाहा, ॥ प्राणाइहागच्छन्तु सुखंचिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ इन्द्रियाणिइहागच्छन्तु सुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा ॥अन्तःकरणमिहागच्छतुसुखंचिरन्तिष्ठन्तुस्वाहा॥ इत्यादिकलिखेहैं फिरकैसे खण्डनहोसक्ताहै उत्तर इनमन्त्रोंकेअर्थनहीजाननेसेआपलोगोंकोभ्रमहोताहै क्योंकिपुरुषनामपूर्णईश्वरकाहै सहस्रशीर्षाइत्यादिक पुरुषकेविशेषणहैं/सोपुरुषकेनिराकारहोनेसे शिरादिकअवयव कभीनहींहोसक्ते औरजो साकार बनता तोव्यापकनहोबनसक्ता। तथाहिपूर्णत्वात्पुरुषः। इत्यादि-

कनिकन्नामेंअर्थकियाहै सोउसकासहस्रशीर्षा इत्यादिकविशेषणहैं
उसकाअर्थइसप्रकारकाहोताहै।सहस्राणिशिरांसिसहस्राण्यक्षी-
णितथा सहस्राणिपादा:असंख्याता:यस्मिन्पूर्णेपुरुषेस: सहस्रशी-
र्षासहस्राक्ष: सहस्रपात्पुरुष: ॥ जितनेशिर,जितनीआंख, और
जितनेपग, असंख्यात वेसबपूर्णजो परमेश्वरउसीमें वासकरते
हैं क्योंकिसबजगत् काअधिकरण परमेश्वरहीहै और बहुव्रीहि
समासहो अन्यपदार्थकेहोनेसेहोताहै तथासहस्रपात्शब्दकेहोने
से बहुव्रीहिनिश्चितहोताहै व्याकरणकीरीतिसे सोईअर्थ मन्त्रके
उत्तरार्द्धमेंस्पष्टहै । सभूमिंसर्वतस्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ।
पुरुषएवेदंसर्वं वेदाहमेतम्पुरुषम् ॥ इत्यादिकउत्तरमन्त्रोंसेय-
हीअर्थनिश्चितहोताहै औरसबजगतकीउत्पत्तिभीपुरुषमेंलिखीहै
विनापरमेश्वरके किसीमेंनहीघटसक्ती इससे जोकोईकहैकिइनम-
न्त्रोंसे षोडशोपचारपूजाहोतीहै उसकीबातमिथ्याजाननी और
प्राणप्रतिष्ठा शब्दकायहअर्थहै किप्राणकीस्थिति औरस्थापन का
होना जोमूर्त्तिमें प्राणआते तोमूर्त्ति चेतनहीहोजाती सोजैसी
पहिलेजड़थी वैसीहीसदारहतीहै क्योंकिचलना,फिरना,खाना,
पीना,बैठना,देखनाऔरसुनना इत्यादिकव्यवहारवहमूर्त्ति नहीं
करती इससे जोकोईकहैकिप्राणप्रतिष्ठाहोतीहै यहबातउसकीमि-
थ्याजाननी।औरमूर्त्ति ठसहोतीहै उसमेंप्राणके जानेआनेकाछि-
द्रअवकाशहीनहीं फिरप्राणउसमेंकैसेघुससकेगा औरजोकहैंकि
हमप्राणप्रतिष्ठाकर्तेहैं उनसेकहनाचाहिए किआपलोगमुरदेके
शरीरमेंक्योंनहीप्राणप्रतिष्ठाकर्तेहैं किसोराजा,बाबू औरसबज-
गतके मनुष्योंकोमुरदेमें प्राणप्रतिष्ठाकरके जिलादियाकरो तो
तुमलोगोंकोबहुतधनमिलेगा औरबड़ीप्रतिष्ठाहोगी फिरक्योंन-
हीं ऐसीबातकर्तेहो।जोवेकहैंकिजैसापरमेश्वरनेनियमकरदिया
हैं वैसाहीमरनेजीनेकाहोताहै उसकोमरेपीछे कोईनहींजिला
सक्ता तोउनसे हमलोगपूछतेहैं किजिनपदार्थोंको परमेश्वरने

प्राणऔरचेतनतारहितजड़बनाएहैं उनकोंतुमचेतन औरप्राण
सहितकैसेबनासकोगे कभीनहीं औरजोकहैंकिदेवऔरसिद्धपुरु-
षऋतककोजिलादेतेहैं उनसेपूछाजाताहै किवेदेवऔरसिद्ध क्यों
मरजातेहैं इससे प्राणप्रतिष्ठाकोसबबातझूठीहै प्राणदाअपानदा
इनकाअर्थपूर्वार्द्ध मेंकरदियाहै वहींदेखलेना औरउद्बुध्यस्वाग्ने।
इसकाभीअभिप्रायवहींदेखलेना। आत्मेहागच्छतुचिरंसुखंतिष्ठ-
तुस्वाहा । इत्यादिसंस्कृतमिथ्याही लोगोंनेरचलिया कोई सत्य
शास्त्रमें नहींहैं देखनाचाहिए कि । शन्नोदेवीरभिष्टयआपोभ-
वन्तुपीतए शंयोरभिस्रवन्तु नः १ ॥ अग्निर्मूर्द्धा० उद्बुध्यस्वाग्ने०
इत्यादिकमन्त्रोंमेंकहींशनैश्चर,मङ्गल औरबुधादिकग्रहोंकानाम
भीनहींहै परन्तु विद्याहीनहोनेसे आजीविकाकेलोभसे ब्राह्मणों
नेजालरचरक्खाहैकिएग्रहकोकांडोहैं सोकिसीनेऐसाविचाराकि
ग्रहोंकामन्त्रपृथक्निकालनाचाहिए सोमन्त्रोंकाअर्थतोनहींजा-
नता किन्तुअटकलसेउसनेयुक्तिरचो किशनैश्चरशब्दके आदिमें
तालव्य शकार है । और शन्नोदेवी इस मन्त्र के आदि में भी
तालव्यशकार है इससे यहीशनैश्चरकामन्त्रहै तथापृथिव्याश्रयम।
इससे परमेश्वरकाग्रहणहोताहै इसशब्दसेमङ्गलकोलिया औरउ-
द्बुध्यस्वक्रियासेबुधकोलिया देखनाचाहिए किशंहै सुखकानाम
उद्बुध्यस्वबुधअवगमनेधातुकीक्रियाहै इससे बुधकोलियाइत्यादिक
भ्रमसेग्रहोंकोग्रहणकियाहै सोयहकथा लालबुझक्कड़कीनाई
है जैसेकिकिसीगांवमें एकमूर्ख पुरुषरहताथा उसकानामलाल
बुझक्कड़था कभीकिसीराजाकाहाथी उसगांवकेपास सेचलागया
था औरकिसीनेदेखानहींथा फिरजबप्रातःकाल लोगउठके बा-
हरचले तबखेतऔरमार्गमें हाथीकेपगकेचिन्हदेखके बड़े आश्च-
र्यभए औरलालबुझक्कड़को बुलाकेपूछा किएहक्याहै तबवहबड़ा
रोनेलगाफिररोकेहसा तबसबनेउससे पूंछाकितुमरोकेक्योंहसेतब
उसनेउनसेंकहा किजबमैंमरजाऊंगा तबऐसी२बातोंकाउत्तर

कौनदेगा इसहेतुमैंरोया औरऐसाइसहेतु किइसकाउत्तरबड़ा सुगमहै तोभीतुमनेनहींजाना इसहेतुमैंऐसा तबउन्ने पूछा कि इसकातोउत्तरदे तबवहबोलाकि लालबुभक्कड़बुझिया औरनबूझाकोइ। पगमेंचक्कीबांधके हिरणाकूदाहोइ॥ हिरनाअपनेपग में चक्कीकेपाट बांधके कूदतार चलागयाहै उसकेपगके एचिन्ह हैं तबतोवेसुनके बड़ेप्रसन्नभए औरसबने कहाकि लालबुभक्कड़ बड़ेपण्डितऔरबुद्धिमान्हैं वैसेहीपाषाणमूर्त्तिकेपूजनविषय और वेदमन्त्रोंकेविषयमें इनपण्डितलोगोंने मिथ्याकोलाहल कररक्खाहै इस्से वेदकोनिन्दा औरअप्रतिष्ठाकररक्खीहै वेदोंमें ऐसोरझूठबातहोती तोवेदहीसच्चे नहोसक्ते इस्से यहीनिश्चयकरना किअपनेरमतलबकेहेतु मिथ्यारकल्पना लोगोंनेकरदियाहै और वेदमें सच्चबातहोहै इनबातोंका लेशभीनहींहै प्रश्न वेदअनन्तहैं क्योंकि यजुर्वेदकीशाखा १०१ सामवेदकी १००० ऋग्वेदकी २१ औरअथर्ववेदकी ९ शाखाहैं सोबहुतशाखा गुप्तहोगईहैं उनमें पाषाणपूजनादिकलिखाहोगा तुमक्याजानतेहो। अनन्ता वै वेदा: यहब्राह्मणकीश्रुतिहै इसकायहअभिप्रायहै किवेदअनन्तहैं अर्थात्अनन्तशाखाहैं(उत्तर)शाखाजोहोतीहै सोस्वजातीय होतीहैं क्योंकिजिसवृक्षकीशाखाहोतीहै उसवृक्षकेतुल्यपत्र,पुष्प,फल,मूलऔरस्वाद तथारूपऐसोही जोरशाखाप्रसिद्ध हैं उनरशाखाओंकीलुप्तशाखाभीअवश्यहोगीं किजैसाइनमेंसत्यरअर्थप्रतिपादितहैं वैसाउनमें भीहोगा इस्से जाना जाताहै किइनप्रसिद्ध शाखाओंमें मूर्त्तिपूजनकालेशनहींहै तोलुप्तशाखाओंमेंभीनहीं होगा ऐसाजोकोईकहे किआपनेक्या वेशाखादेखीहैं फिरआप लोगक्योंकहतेहो किउनलुप्तसाखाओंमें लिखाहोगा औरआप लोगअनुमानभीनहींकरसक्ते क्योंकिइनशाखाओंमेंथोड़ासाभी प्रतिपादनहोता तोउनशाखाओंमेंभी अनुमानहोसक्ता अन्यथा नहीं औरजोहठसेमिथ्याकल्पनाकर्तेहो तोहमभीकरसक्ते हैं कि

उनशाखाओंमेंचोरी, मिथ्याभाषण, विश्वासघातक, कन्या, माता, भगिनी, इनसेसमागमकरना वेश्यागमनपरस्त्रीगमनकरना और वर्णाश्रमव्यवस्थानहोगीइत्यादिकअनुमानमिथ्याकरसक्ते हैं और फिरतुमनेभी वेशाखादेखीनहीं वाकोईनहींदेखसक्ता फिरकैसे निश्चयहोगा कभीनहोगा क्योंकिकभीभ्रमकी निवृत्तिनहोगी न जानेउनशाखाओंमेंब्राह्मणकानामचांडालहोय औरचाण्डालका नामब्राह्मणहोय इससेऐसाआपलोग मिथ्याअनुमाननकरैं और इनशाखाओंकामूलभीतोकोईहोगाऔरजोमूलनहोगा तोशाखा कैसी इससे जोबेद पुस्तकहैं वेईसब शाखाओंकेमूलहैं औरशाखा व्याख्यानोंकीनांई ब्रह्मादिकऋषिमुनिकेकिए हैं । जैसे, मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य: । ऐसापाठशुक्ल यजुर्वेदमें हैं और तैत्तिरीय शाखामें । मनोज्योतिर्जुषतामाज्यस्य । ऐसापाठहै । जूतिजोमनकाविशेषणथासोज्योति: । शब्दमेंस्पष्टार्थहोगया सोसर्वत्रविशेषणकायथायोग्यभेदहै जोविशेष्यका भेदहोगा तोपरस्परबिरोध केहोनेसे मिथ्यात्वआजायगा इससे विशेष्यकाभेद कभीनहींहोता विशेष्यभेदसे पूर्वापरबिरोधहोजायगा फिरकिसकोसत्यमानें किसकोमिथ्या इससे बेदोंमें ऐसादोषकहींनहीं इससे ऐसाभ्रमकभी नहीकरनाचाहिए औरजोबेदअनन्तहोंगे तोकोईपुरुषसबकोपढना वादेखभीनसकैगा औरपूर्णविद्वानभीकोईनहोसकैगा फिर भीभ्रमहीरहेगा भ्रमकेरहनेसे किसीपदार्थका दृढनिश्चयनहोगा औरउत्साह भङ्गभीहोजायगा किबेदकाअन्ततोनहींहै हमलोग कैसेपढसकेंगे इससे सबलोगोंको भ्रमहोबनारहैगा इससे बेदशब्द कायहअर्थहै जिससेजानाजायपदार्थ उसकानामबेदहै और वेत्तिसोयबेद: । जोजाननेवालाहै उसकानामभीबेदहै सोअनन्तनाम असंख्यातजीवहैं वेहीजाननेवालेकेहोनेसे उनकानामवेदहै और विदन्तिपैस्ते वेदा: । जिनसेपदार्थजानाजाय उनकानामबेदहै । सोसर्वशक्तिमत्वऔरसबजगत्का रचनादिकपरमेश्वरके अनन्त

गुणहै वेपरमेश्वरके जनानेवालेहैं इससे उनका नामवेदहै इससे अनन्तावैवेदा: । ऐसाब्राह्मणस्थ तिमेंअभिप्रायज्ञापनकियाहै(प्रश्न) पाषाणादिक मूर्त्तिपूजन वेदादिकोंमेंनहीं हैं फिरकैसेयहपरंपरा चलीआई औरइतनी बडीप्रवृत्तिभई आजतक किसीने नही खण्डनकिया जैसेकिआपखण्डनकरतेहैं(उत्तर)आपलोगसर्वज्ञनहींहै वाचिकालदर्शीजोकि परम्पराकाठोक२निश्चयकरें देखना चाहिए किसत्यनारायण शीघ्रबोध,कौमुद्यादिकनए२ग्रंथ नवीन२तीर्थ तथामन्दिरआदिकहोतेहोजातेहैं औरइनकोपरंपरा मानलेतेहैं औरवेअबकेबनेहैं सबऔरअपनापिता जैसाकर्मकरताहै वैसाहीउसकापुत्र परंपरामानलेताहै फिरकोईचौर्यादिक अन्यायमेंप्रवृत्तहोजाताहै औरकोईकुछअन्यायमेडरताभीहैसोलोकको परंपराआपलोगमानेंगे तोबहुतदोषआजांयगे औरकभोन होसकेगी क्योंकिकिसीकापितादरिद्रहोवे और उसकेकुलमेंपुत्रादिकधनाढ्यहोतेहैं फिरपरंपरासेजोदरिद्रता उसकोक्योंछोडते हैं किसीकापिताअन्धाहोय उसकापुत्रआंखको क्योंनहीनिकाल डालताहै औरजिसकापितामूर्खहोताहै वापण्डितउसकापुत्रमूर्खवापण्डितनियमसेक्योंनहीहोता किसीकापिताचोरीकर्ताहोय औरजङ्गलखानेकोजाय उसकापुत्रचोरीवाजङ्गलखानेको क्योंनहींजाय जिसदिनउसकापितामरे उसीदिनअपनेभोक्योंनहीमर जाय प्रथमअंगरेजीइसदेशमें पढाईनहींजातीथी अबक्यों पढ़ी जातीहै रेलपरपहिलेचढनानहीहोताथा औरतारपर खबरनहीआतीजातीथी फिररेलपरचढते औरतारपरखबर भेजतेभेजातेक्योंहैं इत्यादिकबहुतदोषआतेहैं ऐसामाननेमें औरपरंपराकानिश्चयतो प्रत्यक्षादिकप्रमाण औरवेदसत्यशास्त्रोंहीसे होताहै अन्यथाकभीनहीं यहपाषाणादिकपूजनको मिथ्याप्रवृत्तिबडीभई है सोकेवलविद्या,धर्म,विचार,ब्रह्मचर्याश्रम,सत्सङ्ग औरश्रेष्ठराजाओंकेनहींहोनेसेभईहै क्योंकिसत्यविद्या जबमनुष्योंमेंनहीहो-

तो तबअनेकभ्रमोंमेंबुद्धिनष्टहोतीहै तबवहुतमूर्ख, अधर्मी, पाखण्डी तथामतवालोंके उपदेशलोकमाननेलगतेहैं फिरबड़े भ्रमजालमेंपड़के वे जैसाउपदेशकतेहैं वैसाहीमानलेतेहैं और लोगोंकीबुद्धि विपरीतहोजातीहै फिरबड़ाअन्धकारहोजाताहै। उनकोबुद्धिसेकुछनहीसूझता गतानुगतिकालोका नलोकाःपारमार्थिकाः। बालुकापिण्डदानेन गतंमेताम्रभाजनम्॥ इसमेंयह दृष्टान्तहैकिएककोईपण्डितताम्बेकाअघपात्रलेकेतर्पणऔरस्नानके हेतुगया उसघाटमेंअन्यपुरुषभीबहुतजातेऔरआतेथे उसपण्डितकोशौचकीइच्छाभई तबतांबेकाअर्घाबालूमेंगाड़दिया औरउसकेऊपरगोलबालूकापिण्डधरके निशानकेहेतुशौचकोफिरचलागया अन्यस्नान करनेवालोंने यहचरित्रदेखा देखकेपण्डितसेतोकिसीनेनहींपूछा किन्तुजैसापण्डितने पिण्डबनाकेरक्खाथा वैसापिण्डसैकड़ों आदमीनेबनाके रखदिया उसकेपास२ उनके हृदयमें ऐसाविचारआयाकि पण्डितनेजोयहकामकियाहै सोपुण्यकेवास्तेहीकियाहोगाइसहेतुहमभीऐसाहीकरें तबतकपण्डितभी शौचहोकेआया औरउननेदेखाकि बहुतपिण्ड वैसधरेहैं औरबहुतमनुष्यपिण्डबना२केरखतेभीजातेथे सोपण्डितनेउनसे पूछाकि आपयहकामक्योंकरतेहैं तबउननेपण्डितसेकहा किआपकादेखकेहमलोगभीकरतेहैं तबपण्डितनेपूछाकिइसकेकरनेकाक्या प्रयोजनहै तबउननेकहाकि जोआपकाप्रयोजनहोगा सोहमारा भीहै पण्डितनेविचाराकिमेरातोपात्रहीनष्टहोगया तबपण्डितने कहाकिअपना२पिण्डमतबिगारडारो नहीतोतुमकोबड़ापापहोगा तबउननेपण्डितसेकहा किआपकोभीपिण्ड बनानेसेपापभया होगा तबपण्डितनेकहाकि तुमअपना२पिण्डबिगाड़डारो तबमैंभीअपनाबिगाड़डालूंगा तबतोसबअपने२ पिण्डतोड़डाले तबपण्डितकापिण्डरहगया पण्डितनेजाकेपिण्डतोड़ा औरनीचेसेअर्घानिकाललिया औरउनसेकहा किमैंनेइसहेतु निशानधराथा

तुमनेंपूछाभीनहीं औरपिण्डधरनेलगगए तबउननेकहाकि आप
काकामदेखकें हमभीकरनेलगे वैसेहीपाषाणादिक मूर्त्तिपूजन
एकनेदेखकेदूसरेभीकरनेलगें ऐसेभेड़ोंकेप्रवाहकीनांई लोगग-
तानुगतिकहोतेहैं जैसेएकभेड़आगेंचले उसकेपीछे सबभेड़चलने
लगतीहैं और जैसेएकसियार वाएककुत्ताबोलनेवाभूकनेलगें उ-
सकाशब्दसुनकेअन्यसियार वाकुत्ते बहुतबोलने वाभूकनेलगतेहैं
वैसीहीविद्याहीन मनुष्योंकीअन्धपरम्पराचलतीहै उसमेंबड़े२
आग्रहकरकेनष्टहोतेचलेजातेहैं औरपरमार्थविचारसत्य२कोई
नहीकर्त्ता इससे हमलोगभी मिथ्याव्यवहारकाखण्डनकर्तेहैं पक्ष-
पातछोड़के क्योंकिप्रत्यक्षादिप्रमाणोंसे औरवेदादिक सत्यशास्त्रों
सेदृढ़निश्चयकरकेजानागयाहै किमुक्तिकेहेतु वाव्यवहारसुखके
हेतुपरमेश्वरहीकोदृढ़उपासनाकरनीयोग्यहै पाषाणादिकजड़मू-
र्त्तियोंकीकभीनहीं प्रश्न आजतकबहुतपण्डितपहिलेभए औरब-
हुतपण्डितभीहैं फिरखण्डनकोईनहीकरता औरमूर्त्तियोंकापू
जननहीकर्तेहैं सोआपएकबड़े पण्डितआए जोखण्डनकर्तेहैं सो
आपकाकहनाकौनमानताहै उत्तर प्रथममैंआपसेपूछताहूं कि
पण्डितकौनहोताहै जोआपकहैं किपञ्चाङ्ग,शीघ्रबोध,मुहूर्त्तचि-
न्तामणि, आदिक सारस्वतचन्द्रिका, कौमुद्यादिक, तर्कसंग्रह,
मुक्तावल्यादिक,भागवतादिक पुराणमन्त्र,महोदध्यादिक,तंत्रग्रंथ
औरतुलसीकृत रामायणादिक भाषापढ़नेसे क्यापण्डितहोताहै
किन्तु अविवेकीहोवनजाताहै क्योंकि(सदसद्विवेककर्त्रीबुद्धिःपण्डा
पण्डासंजातास्येतिसपण्डितः)॥ जोबुद्धिसदसद्विवेककरनेवाली
होय उसकानामपण्डाहै औरवहीपण्डानामविवेकयुक्त बुद्धिजि-
सकोहोय वहीपण्डितहोताहै सोआपलोगविचारकेदेखें किय-
थावत्धर्मऔरअधर्म तथासत्यऔरअसत्यकाविवेकइनपण्डितोंको
हैवानहीं जिनकोआपपण्डितकहतेहो औरजोमूर्खहैं वेतोआज
कालकोई२अधर्मसेडरतेभीहैं किन्तुपण्डितलोगप्रायःनहीडरते

किन्तु कोई पण्डित सैकड़ों में एक अच्छा भी है परन्तु उस एक की वे धूर्त्त लोग बात नहीं चलने देते और बहुत सा जानता भी है तौ मन ही में सत्य बात रखता है क्योंकि वह सत्य कहै तौ सब मिलके उसकी दुर्दशा कर देते हैं इस भय का मारा वह भी मौन कर लेता है परन्तु उन सत्य पण्डितों को मौन वा भय करना उचित नहीं क्योंकि मौन और भय करने से देश का अकल्याण धर्म का नाश और अधर्म की वृद्धि, और इन धूर्त्तों का बल पड़ेगा इस से कभी मौन वा भय सत्य करने वा कहने में न होकरना चाहिए क्योंकि जो अच्छे पण्डित और बुद्धिमान् भय वा मौन करेंगे तो उस देश का नाश होही जायगा और वेदविद्यादिक नहीं पढ़ने से बहुतों को सत्य २ निश्चय भी नहीं है इस से वे खण्डन नहीं कर्ते हैं लोक के भय के मारे कि हमारी आजीविका नष्ट होजायगी जो हम खण्डन करेंगे तो हमारी निन्दा होगी और आजीविका भी नष्ट हो जायगी इस से ऐसा कहना वा करना न चाहिए जिस से कि संसार में विरोध होजाय परन्तु मैं कहता हूं कि भय तो श्रेष्ठपुरुषों को एक परमेश्वर और अधर्म के आचरण ही से करना चाहिए और जो मैं खण्डन कर्ता हूं सो प्रत्यक्षादिक प्रमाण और वेदादिक सत्य शास्त्रों ही से कर्ता हूं सो आजतक किसीने वेदोक्त प्रमाण वा ठीक २ युक्ति नहीं दिया क्योंकि प्रमाण और युक्ति तो सत्य बात में होसक्ती है असत्य में कभी नहीं और इस में प्रमाण वा युक्ति कोई दे भी नहीं सकेगा इस में कुछ सन्देह नहीं प्रश्न अनेक संन्यासी, उदासी वैरागी और गोसांई आदिक खण्डन नहीं कर्ते हैं और पूजा कर्ते हैं उत्तर वे भी वैसे ही संसार की निन्दा और आजीविका से डरते हैं इस से वे खण्डन नहीं करते वा पूजा नहीं छोड़ते। प्रश्न उनको क्या आजीविका का भय है और संसार का जिस से कि वे डरते हैं क्योंकि उनको विवाह मरने में द्वादशाह करना हो नहीं जिस में धन को चाहना हो और माता, पिता, स्त्री, पुत्रादिक, कुटुम्ब, और घर को छोड़ के स्वतन्त्र हैं इस से उनको भय नहीं है परन्तु वे भी खण्डन नहीं करते और पूजा कर्ते हैं फिर आप हो बड़े विरक्त आगए

कि इनबातोंका खण्डनकरतेहैं। उत्तर यहबाततोसत्यहै कि उनको मत्यभाषणादिकको छोड़ना और पाषाणादिकमूर्त्ति कापूजनकरना उचितनहीं परन्तु वेभीसैकड़ोंमें कोईएकधर्मात्मा और पण्डित है अन्यजैसे गृहाश्रममेंथे वैसे होबनेरहतेहैं और कितनेकगृहस्थों सेभीनीचकर्मकरतेहैं क्योंकिउननेकेवलखानेपीने और विषयभोग केहेतुविरक्तका वेषधारणकरलियाहै परन्तु विरक्तता उनमेंकुछ नहीमालूमपड़ती क्योंकिधर्मकीरक्षाऔरमुक्तिकरनेकेहेतु विरक्त नहोहोनेहैं किन्तु अपनेशरीर और इन्द्रियभोगकेहेतु विरक्तोंको नांईबनगएहैं कोईधर्मात्माराजाहोय औरइनकोयथावत्परीक्षा करै तोहजारोंमें एकविरक्तताकेयोग्यनिकलगा बहुतमजूरीऔर हलग्रहणकरनेकेयोग्यनिकलेंगे क्योंकि जबपूर्णविद्या, जितेन्द्रियता, छल, कपटादिकदोषरहितहों वें सत्य२ उपदेश तथासबकेऊपर कृपाकरके वैराग्य, ज्ञान, और परमेश्वरकाध्यानकरें तथाकाम, क्रोध, लोभ, मोहादिकदोषोंकोछोड़ें औरसत्यधर्म, सत्यविद्या, सत्यउपदेशकीसदानिष्ठाहोनेसे विरक्तहोताहै अन्यथानहीं देखना चाहिए किगोकुलस्थगोसांईआदिककेसे धूर्त्ततासे धनहरणकरके धनाढ्यबनगएहैं बहुतसेचेले औरचेलियांबनालेतेहैं उनसेसमर्पणकरालेतेहैं कितननामशरीर, धनऔरमनगोसांईजीकेअर्पण करो सोबड़े२ मन्दिरउनोनेबनाएहैं औरनानाप्रकारकीमूर्त्तियां रखलियाहै औरनानाप्रकारके कलावत्तू, सच्चे झूठेआभूषणोंसे एसाजालरचाहै किदेखतेहीमोहितहोके उसमेंफसजातेहैं प्रायःस्त्रीलोगउसमन्दिरमें बहुतजातीहैं जितनी व्यभिचारिणी स्त्री औरव्यभिचारीपुरुष बहुधामन्दिरोंमेंजातेहैं क्योंकिवहांपरस्पर स्त्रीपुरुषोंकादर्शनहोताहै औरजिससे जोचाहै उससे समागमविना परीश्रमसेकरले उसमेंशयनआरती औरमङ्गलातीबहुधाव्यभिचारकेमूलहैं क्योंकिउससमयप्रायःरात्रीहोरहतीहै इससे आनन्दपूर्वकनिर्भयहोकेक्रीडाकरतेहैं परस्परमिलके और उसमें पापभोन-

होंगिनते क्योंकिएकश्लोकबनारक्खाहै ॥ अहंकृष्णास्त्वंराधाच्छा-
बयोरस्तु संगमः ॥ परस्त्रीऔरपरपुरुषजबपरस्परगमनकराचाहें
तोइसकोपढ़लें तोकुछपरस्त्रीगमन वा परपुरुष गमनमें कुछपाप
नहींहोताहै जबवेपरस्परसमागमहोवें तबपुरुषकहैकिमैं कृष्णहूं
तूंराधाहै तबस्त्रीबोलीकिमैंराधाहूं आपकृष्णहैं ऐसाकहकेकु-
कर्मकरनेकोलगजातेहैं उनकेदोमन्त्रहैं श्रीकृष्णःशरणंमम। यह
उन्होंनेमिथ्यासंस्कृतबनालियाहैइसकायहअभिप्रायहै किजोकृष्ण
सोईमेराशरणअर्थात्इष्टहैफिरभागवतकीकथामेंरासमण्डलकी
लीलासुनके ऐसानिश्चयकरतेहैं किहमलोगोंकेइष्टने जैसी लीला
कियाहै वैसीहमभीकरें कुछदोषनहीं औरइसकाऐसाभीअर्थबन
सक्ताहै किजोश्रीकृष्णहैसोमेरीशरणकोप्राप्तहो अर्थात्मेरासेवक
श्रीकृष्णबनजाय ऐसाअनर्थभीभ्रष्टसंस्कृतसेहोसक्ताहै सोयहम-
न्त्रगोसांईलोगदरिद्र,कङ्गाल औरसाधारणपुरुषोंकोदेतेहैं और
जोबडाआदमीहै उसकेहेतु दूसरामन्त्र बनायाहै वहीसमर्पणका
मन्त्रहै ॥ क्लीं कृष्णायगोपीजनवल्लभायस्वाहा ॥ इसमन्त्रकोउस-
कोदेतेहैं किजोशरीर.मन,औरधनगोसांईजीकेअर्पणकरदे और
गोसांईलोगअपनेकोकृष्णमानतेहैं औरअपनीचेलियां वा जगत्
कीसबस्त्रियांराधाहैं सोजिसस्त्रीसेचाहें उससेसमागमकरलें उ-
नकोपापनहींलगता औरउनकेसमर्पणीजोचेलेहोतेहैं वेअपनी
प्रसन्नतासे गोसांईजीकोप्रसादीकरालेतेहैं अर्थात्स्त्रीवापुत्रकीस्त्री
तथाकन्याउनकोगोसांईजीको खाससेवामें एकान्तमेंभेजतेहैं जब
गोसांईजी एकवारअपनीसेवामेंप्रथमरखलेतेहैं तबवहस्त्रीपवित्र
होजातीहै औरवहस्त्रीअपनेकोधन्यमानतीहैं तथाउनकेसेवकभी
अपनेकोधन्यमानतेहैं जिनकागुरुइसप्रकारका व्यभिचारीहोगा
उनकाशिष्यवर्ग व्यभिचारीक्योंनहीहोगा सोबड़े२ अनर्थहोतेहैं
अबकेसम्प्रदायमेंसोकहनेयोग्यनहीं वेपानबीड़ाखाके पात्रमेंपीक
डालदेतेहैं सोउसकोउनकेचेलेबड़ीप्रसन्नतासेखालेतेहैं औरअ-

पनेको बड़ा धन्य मान लेते हैं कि हम को गोसांई जी महाराज की प्रसादी मिल गई अब कोई धनाढ्य उनको अपने घर में ले जाता है उसका नाम पधरावनी कहते हैं जब वे वहां जाते हैं तब बड़ा एक पाचता वा लोहे का रख लेते हैं उसके बीच में स्नान के हेतु एक चौकी रख देते हैं फिर गोसांई जी एक धोती सहित उस पाच के बीच में चौकी पै बैठ जाते हैं फिर अनेक सुगन्धि केसरादिक पदार्थों से उनके शरीर को स्त्री और पुरुष मलते हैं फिर अच्छे २ स्त्री पुरुष जल से उनको स्नान कराते हैं फिर जब स्नान हो जाता है तब सुखा पीताम्बर को धारलेते हैं और गीली धोती उस कड़ाही के जल में छोड़ देते हैं फिर गोसांई जी निकल आते हैं तब उनके सेवक लोग उस जल को पीते हैं और अपने को धन्य मानते हैं फिर गोसांई जी, बहू जी, बेटी जी, लाल जी, ठाकुर जी, पुजारी, गवैया जी, इन सात गादीओं से उस गृहस्थ का बहुत धन हर लेते हैं इससे उनके पास खूब धन हो गया है उससे रात दिन विषयसेवा और प्रमाद में रहते हैं उनके चेले जानते हैं कि हम मुक्ति को प्राप्त होंगे परन्तु इन कर्मों से मुक्ति तो नहीं होनी किन्तु नरक ही होना क्योंकि इन प्रमादों में जिनका धन जाता है उनका भला कभी न होगा और उन गुरुओं का भी और उनने एक कथा रच रक्खी है कि लक्ष्मणभट्ट एक ब्राह्मण तैलंग था उसने काशी में आके संन्यास लेने चाहा तब उससे पूछा कि आपके मातापिता वा विवाहित स्त्री तो घर में नहीं है तब उसने कहा मिथ्या कि मेरे घर में कोई नहीं है मुझको संन्यास दे दीजिए फिर उनने संन्यास दे दिया कुछ दिन के पीछे उसकी स्त्री काशी में खोजती २ आई और वह कहीं मार्ग में मिला सो उसके पीछे २ चली गई वह अपने गुरु के पास जाके बैठे स्त्री भी बैठी और उसके गुरु से स्त्री ने कहा कि महाराज मुझको भी आप संन्यास दे दीजिए क्योंकि मेरे पति को तो आपने संन्यास दे दिया अब मैं क्या करूंगी तब तो उस संन्यासी ने बहुत क्रोध करके उसका दण्ड और काषाय वस्त्र ले लिए और उससे कहा कि तूं झूठ क्यों बोला तैने बड़ा अनर्थ किया अब तुम यज्ञोपवीत पहर लेओ और अपनी

स्त्रीकेसाथरहै। औरउनकेगुरूनेआशिर्वाददिया कितुम्हारापुत्रब-
ड़ाश्रेष्ठहोगा सोउनकेभाषा ग्रन्थमेंऐसीबात लिखीहै सोमुझको
अनुमानसेमालूमपड़ताहै कि जबउसनेकाशीमेंसंन्यासलिया फिर
खूबखानेपीनेलगे तब कामातुरहोके किसीस्त्रीसे फसगए फिर
जबकाशीमेंनिन्दाहोनेलगी तबकाशीछोड़केदक्षिणदेशमेंचलेगए
परन्तुकोईउनकेस्वजाति ब्राह्मणनेपंक्तिमेंनहीलिया सोआजतक
तैलंगब्राह्मणोंकीऔरगोकुलस्थोंकीएकपंक्तिवाएकबिवाहनहीहो-
ताजोकोईतैलंग,ब्राह्मण,गोसांईजीकोकन्यादेताहै वहभीजातिबा
ह्यहोजाताहै फिरवेदोनों जहांतहां घूमनेलगे औरउनकाएक
पुत्रभया उसकानामवल्लभरक्खा इसविषयमें वलोगऐसा कहतेहैं
किजन्मसमयमेंही उसबालककोवनमेंछोड़के चलेगए सोउसबा-
लककी चारों ओर अग्नि जलतारहता था। इससे उस बालक
कोकोईजानवरनहींमारसका जबवेपांचवर्षकेभए तबदिग्विजय
करनेलगे औरसबपृथिवीकेपंडितोंको उननेजीतलिया पांचवर-
षकीउमरमें सोयहबातहमको झूठमालुमदेतीहै क्योंकिवे बनमें
बालककोकभीनहींछोड़ेंगे तथाअग्निरक्षाभीनकरेगा औरपांच
वर्षकीउमरमें विद्याकभीनहीहोसक्ती फिरवेक्या पराजयकरेंगे
यहबातअपनेसंप्रदायकीप्रतिष्ठाकेहेतुमिथ्यारचलिईहैक्योंकिसुबो
धिनीतथाविद्वन्मंडनसंस्कृतमेंग्रन्थउनकेबनायेदेखनेमेंआतेहैंउन
मेंउनकासाधारण पांडित्यहीदेखनेमेंआताहै इससेवेक्यापंडितों
कापराजयकरसकेंगे फिरवेऐसाकहतेहैं किश्रीकृष्णनेवल्लभजीसे
कहाकिहमारे जितनेदैवीजीवहैं उनकातुमउद्धारकरो फिरवल्ल
भजीफिरतेघूमतेमथुरामें आकेरहेऔरवहांसंप्रदायका जालफै-
लायाकितनेकपुरुष उनकेचेलेभए औरउननेबिवाहकिया उससे
सातपुत्रभए सोआजतकगोकुलस्थोंकी सातगद्दीचलतीहैं फिरऐ-
सीरकथाप्रसिद्धकरनेलगे किजोकोईगोसांईजीकाचेलाहोगाव-
हीवैष्णवऔरदैवीजीवहै औरजोकोईउनकाचेला नहीहोतावह-

असुर नाम दैत्य और राक्षस संज्ञक जीव हैं ऐसीप्रसिद्धहोनेसे बहुतलोग चेलेहोगये औरबहुतव्यभिचार तथाविषयभोग केहेतु चेलेहोतेहैं यहांतकउनने मिथ्याकथारचीहै किजब मथुरामें रहतेथेतबवल्लभजीने एकचेलेसेकहाकितूंदहीमेरेलिये बाजारसेले आवहचेलादहीलेनेकेहेतु बजारमेंगया वहांएकदहीलेके बूढीस्त्री बैठीथी उस्सेउसनेकहाको इसदहीकाक्यातूंमूल्यलेगी तबबुढियाने जानाकियह वल्लभजीका चेलाहै उस्सेबोलीकिमैं इसदहीकेबदले मुक्तिलेऊंगी तबउसनेदहीलेलिया औरबुढियासे कहाकितुझको मैंनेमुक्तिदेदी सोउसबुढियाकोमुक्तिहीहोगई औरवल्लभजीकानाम रक्खाहैमहाप्रभुसोऐसी२झूठकथाबनाकेजगत्कोठगलेतेहैं एक घासकीकण्ठीदेतेहैं उसकानामरक्खाहै पविचाऔररोरीकीटो रेखाझूठइकेतुल्य ललाटमेंबनवादेतेहैं फिरकहतेहैंकितुमगोसांईजीकेसमर्पणहोजा औरइस्से तुमारासबपापछुटजायगा तुमलोग दैवीजीवऔरवैष्णवकहाओगे इसलोकमेंआनन्दसेभोगकरोऔर मरनेकेपीछेतुमलोगगोलोकस्वर्गमें जावोगेजहां राधादिकसखी औरश्रीकृष्णनित्य रासमण्डल और आनन्दभोग करतेहैं वैसेतुम भीअनकस्त्रीयोंकेसाथ आनन्दभोगकरोगे ऐसीकथाको सुनकेस्त्री औरपुरुषमोहित होकेचेलेहोजातेहैं फिरएकऐसी मिथ्याकथा रचीहैं किविट्ठलसाक्षात् श्रीकृष्णकाअवतारहुआहै औरहमलोगसाक्षात् कृष्णकेस्वरूपहैं सोबहुत२ धनदेर केधनाढ्यकीस्त्रीयां एकरात्रीं गोसांईजीकेसेआमरहआतीहैं तबउनकेचेले औरचेलियांउससेसेकहतीहैं कितूंबड़ीभाग्यवतीहै किगोसांईजीनेंतुझकोअंगसेलगालिया क्योंकि समर्पणकायहीप्रयोजनहै किगोसांईजीशरीरधन औरउनके मनको चाहेंसोकरें उनचेलें औरचेलियोंकाजबमरणहोताहै तबउनका धनसब गोसांईजी लेलेतेहैं क्योंकोपहिलेही समर्पणकियागयाथाबडेआनन्दकासंप्रदायउनकाहै किचेलेचेलीनौकरचाकरसबविषयभोगआनन्दकेंसमुद्रमेंडूब

केमग्नहोजातेहैं औरगोसाईंलोगखूबश्रृङ्गारसेबनेठनेसदारहते
हैंजिसेदेखकेस्त्रीलोगमोहितहोजांय सोरातदिनस्त्रीलोगघेरकेर-
हतीहैं औरस्त्रीयोंकेअर्थातचेलियोंकेझुण्डकेझुण्ड२ क्रीडाकरते
रहतेहैं क्योंकिगोसांईलोगअपनेकोकृष्णमानतेहैं औरउनकोचे-
लियांअपनेकोराधारूपसखीमानतीहैं खूबस्त्रीलोगधनदेतीहैंऔर
अपनीइच्छापूर्वकक्रीडाकरतीहैं केवलवेबड़ेपामरहोजातेहैं इ-
ससेपशुकीनांई अर्थात्लालमुखकेबांदरजैसेक्रीडाकरतेहैंवैसेवेभी
पशुहैं इसमेंकुछसन्देहनहीं जितनेमन्दिरधारी,वैरागीहैं उन-
काभीप्रायःऐसाहीव्यवहारहै ऐकचक्रांकितलोग जोकिआचारी
कहातेहैं उनकाऐसामतहैकि।तापःपुण्ड्रं तथानाम मालामन्त्र-
स्तथैवच। अमीहिपञ्चसंस्काराः परमैकान्तहेतवः॥ यह उनका
श्लोकहै शंख,चक्र,गदाऔरपद्मजोहैंचांदीवासोनेके चारचिन्हब-
नारखतेहैं जोकोईउनकाचेला वाचेलीहोतीहै जबवेस्नानकरके
आतेहैं तबबरोबर पंक्तिउनकीबैठजातीहै औरउनचिन्होंकोअग्नि
मेंतपाके उनकेहाथकेमूलमेंतप्त२लगादेतेहैं उससमयजिसअग्नि
मेंतपायाजाताहै उसकानामवेदीरक्खाहै जबउनकेहाथमेंतप्त२
वेलगातेहैं तबबड़ादुःखउनकोहोताहै क्योंकिचमड़े,लोम और
मांसकेजलनेसे उनकोबड़ी पीड़ाहोतीहै औरदुर्गन्धभीउठताहै
फिरउनकेहाथमेंलगाके चमड़ा,मांस,उसमें कुछ२लगरहताहै
औरएकपात्रमेंजलवादूधरखदेतेहैं उसमेंउनचिन्होंकोबुझादेते
हैं फिरकोई२ उसजल वा दूधकोपीलेतेहैं देखनाचाहिएयहबात
कौनधर्म औरकिसयुक्तिकीहोगी केवलमिथ्याहीजानना क्योंकि
जोतेशरीरकोजलानेसे एकप्रथमसंस्कारमानतेहैं औरजितनसं-
प्रदायवालेहैं वेउर्द्ध पुंड्रवात्रिपुण्ड्रका संस्कारसबमानतेहैं उनसे
हीशैव,वैष्णवादिक अपनेहृदयमेंअभिमानकरतेहैं उर्द्ध पुण्ड्रवाले
नारायणकेपगकीआकृतितिलककोमानतेहैं तथाशैवशाक्तादिक
महादेवकेललाटमेंजोचन्द्रहै उसकीआकृतिमानतेहैं फिरचक्रां

कितादिक बीचमें रेखाकरतेहैं उसकानामश्रीरखलियाहै इसमें बिचारनाचाहिए किजिनकेललाटमें हरिकेपगकाचिन्ह लक्ष्मी औरचन्द्रमाकाचिन्हहोवै तोवेदरिद्रदुःखीऔरज्वरादिकरोगउनकोक्योंहोवैंफिरवेकहतेहैं किबिनातिलकसेचाण्डालकेतुल्यवह मनुष्यहोताहै उनसेपूंछनाचाहिएकिचाण्डालजोतुम्हारातिलक लगाले तोतुम्हारेतुल्यहोसक्ताहैवानहीं जोवेकहैंकिहोसक्ताहै तो गधावाकुत्तेकेललाटमें तिलकलगानेसे वहमनुष्यभी होजाताहै वानहीं सोतिलककाऐसासामर्थ्य नहींदेखपड़ताहैकिऔरकाऔर होजाय औरलक्ष्मीचन्द्रइनके ललाटमें बिराजमानतोभीउदर कापालनहोना कठिनदेखपड़ताहै इससे ऐसा निश्चयहोताहै कि यहलक्ष्मीऔरचन्द्रमानहींहै किन्तुदरिद्राऔरउष्णताजाननी चाहिए फिरवेतिलककेबिषयमें एकदृष्टान्तकहतेहैं किकोईमनुष्य एकवृक्षकेनीचेसोताथा बड़ारोगीसोमरणसमय उसकाआगया वृक्षकेऊपरएककौआबैठाथाउसनेबिष्ठाकियासोगिरीउसकेललाट केऊपर सोतिलककीनांईचिन्हहोगया फिरयमराजकेदूतउसको लेनेकोआए तबतकनारायणनेअपनेभीदूतभेजदिए यमराजकेदूतोंनेकहाकियहबड़ापापीहै सोअपनेस्वामीकीआज्ञासेहमइसको नरकमेंडालेंगे तबनारायणकेदूतबोलेकि हमारेस्वामीकीआज्ञा है किइसकोवैकुण्ठमेंलेआओ देखोतुमअन्धेहोगए इसकेललाट मेंतिलकहै तुमकैसेलेजासकोगे सोयमराजकेदूतोंकीबातनहींचली औरउसकोवैकुण्ठमेंलेगए नारायणनेबड़ीरीतिसेप्रतिष्ठाकिया औरउससे कहातूंआनन्दकर वैकुण्ठमें ऐसे२प्रमाणोंसेतिलक कोसिद्धकरतेहैं औरलोगमानतेहैं यहबड़ाआश्चर्यहै क्योंकिऐसी मिथ्याकथाकोलोगमानलेतेहैं गोकुलस्थलोगकेवलहरिपदाकृति हीकोतिलकमानतेहैंनिम्बार्कसम्प्रदायकेएककालाबिन्दु तिलकके बीचमेंदेतेहैं उसकोजैसेमन्दिरमेंश्रीकृष्णबैठाहोय ऐसामानतेहैं तथामाधवार्कसंप्रदायवाले एककालीरेखाखड़ीललाटमेंकरते

हैं उसकोभीऐसामानतेहैं तथाचैतन्यसंप्रदायमेंजोहैं वेकटारके ऐसाचिन्हको हरिपदाकृतिमानतेहैं औरराधावल्लभीभीबिन्दु को राधावत्मानतेहैं कबीरकेसम्प्रदायवाले दीपकीशिखावत् तिलकको मानतेहैं और पण्डितलोगपिप्पलकेपत्ते कीनाई कोई२ तिलककरतेहैं सोकेवलमिथ्याकल्पनालोगोंनेबनाईहै जोतिलकके बिना चाण्डालहोताहोतो वेभीचाण्डालहोजांय क्योंकिजबस्नान और मुखप्रक्षालनकरतेहैं तबतोउनकेभीललाटमें तिलकनहीरहनेपाता फिरवेचाण्डाल क्योंनबनजांय औरजोफिरतिलकके करनेसे उत्तमबनजांय तोचाण्डालउत्तमबननेमेंक्या देर परन्तु चक्रांकितोंकेग्रन्थमन्त्रार्थदिव्यसूर्य्य,रत्न,प्रभाऔरनाभानेबनाई भक्तमालादिकोंमेंयहप्रसिद्धलिखाहै किजोचक्रांकितोंकामूलआचार्यषठकोपजोसो कंजरऔरम्हावडाकेकुलमेंउत्पन्नभएथे सोईउनग्रंथोंमेंलिखाहैकि विक्रायशूर्पं विचचारयोगी । यहवचनहैइसकाइस्से यहअभिप्रायहैकिसूपकोबेचकेयोगी जोषठकोपसोबिचरतेभएइस्से क्याआयाकिवहसूपबनानेवालेकेकुलमेउत्पन्नभयाथाउनहीनेचक्रांकितसंप्रदायकाप्रारम्भकियाइस्से उसकाटोपचक्रांकितआजतकपूजतेहैंउनकेपीछेदूसराउनकाआचार्यमुनिवाहनभयाउसकोऐसो कथाउनग्रंथोंमेंहै किदक्षिणमेंएकतोतादरोऔररङ्गजोटोस्थानहैं उनमेंबहुतसेउनकेसंप्रदायकेसाधुआजतकरहतेहैं वहांएकचांडालथाउसकोऐसोइच्छाथीकिमैंभीकुछठाकुरजीकापरिचर्याकरूं परन्तुमन्दिरमेंझाडूबहारूदेनेकेहेतुपुजारीलोगउसकोनहींआनेदेतेथे सोजबप्रातःकालकुछरात्रिरहैतबपुजारीलोगस्नानकोदरवाजाखोलकेचलेंजांय तबवहचांडालछिपके मन्दिरमेंझाडू देके निकलजाय कोई उसकोदेखेनहीं परन्तु पुजारियोंने बिचारकिया किझाडू कौनदेजाताहै रातमेंछिपके दोचारपुजारीबैठेरहे कि उसको पकडनाचाहिए जबप्रातःकाल औरपुजारी स्नान को चलेगयेतबवह चांडालमन्दिरमे घुसकेझाडूदेनेलगा जबउननेदे

खातथपकडके ऐसामारा कि मूर्छितहोगया तबउनवैरागियोंनेप कडकेमंदिरकेबाहरउसको डालदिया जबवेसामनकर के पुजारीलोगआकेठाकुरका किवाडखोलनेलगें सोनखुलाक्योंकि ठाकुरजीनेउसकोमारनेमे बडाक्रोधकिया तबबडेआश्चर्यभये सबकिकिवाडक्योंनहीखुलतेहैं फिरएक वैरागीको ठाकुरजीने स्वप्नदियाकि किवाडोतबखुलेगो आपसबलोग उसचांडालको पालकोमे बैठाके अपनेकंधेपर सबनगरमेंउसको फिराओऔरपालकीसहितमंदिरकोपरिक्रमाकरो फिरउस कोमंदिरमें लेआओ वहीमेरीपूजाकरै औरइस मंदिरका अधिष्ठाताऔर सबकागुरु बनेजबवह किवाडकोआके स्पर्शकरेगा तबकिवाड खुलेगा अन्यथानहीऐसाहीउननेकिया औरसबबातहोगई उसकानाम उसदिनसेमुनिबाहन रक्खागया क्योंकिमुनिजोवैरागी उननेबाहननामपालकोउठाई इससेउसकानाम मुनिबाहनपडा उनका चेलाएकमुसलमानभया उसकानाम यावनाचार्यइसकोअब चक्रांकितोंनेतिकयामुनुचार्य्य नामरक्खाहै उनके चेला रामानुजभये वहब्राह्मणथे रामानुजके विषयमेंयेलोगकहतेहैं किशेषजी काअवतारहैशंकराचार्य शिवका निंबार्कभास्कर रामानन्द औरनित्यानन्दयचारों सनकादिकके अवतारहैं नानकजनकजी काअवतारहैकबीरब्रम्हका यहबातसब उनकोमिथ्याहै क्योंकिअपने२संप्रदायकेहेतुमिथ्याकथा लोगोंनेरचलिईहैं तोसरामं स्कारमालाधारणकरनाउसमें रुद्राक्षतुलसी घासकमलगट्टे इत्यादिकजानलेना इसविषयमेंसंप्रदायो लोगकहते हैंकिबिनामाला काठोऔररुद्राक्षकेधारणमेजल पीयेऔरभोजनकरै सोमद्यपान औरगोमांसकेतुल्यहैइनसे पूछनाचाहिये किनशाक्योंनहीहोताऔरमांसका स्वादक्यों नहीआता इससेयहबात केवलमिथ्या आजीविकाकेहेतुलोगोंनेरचलिईहैं इनमेंश्लोकभी बनारक्खे हैंयस्यांगेनास्तिरुद्राक्षएकोपि बहुपुण्यदः ॥ तस्यजन्मनिरर्थं स्यात्त्रिपुंड्ररहितंयदि

इत्यादिकश्लोकशिवपुराण और देवीभागवतादिक ग्रन्थों में शैव और शाक्तों ने अपने संप्रदायों के बढ़ने के हेतु लिखे हैं और वैष्णवादिकों के खंडन के हेतु व्यासादिकों के नाम से बहुत श्लोक रच रक्खे हैं काष्ठमालाधरश्चैव मद्यश्चांडाल उच्यते ऊर्ध्वपुंड्रधरश्चैव विनाशं व्रजति ध्रुवम् इनके विरुद्ध इत्यादिक वैष्णवों ने बनाया है रुद्राक्षधारणेनैव नरकं प्राप्नुयाद्ध्रुवम् शालग्रामसहस्राणां शिवलिंग शतस्य च द्वादशकोटित्रिप्राणांतत फलं श्वपचवैष्णवे॥ विप्राद्द्विषड्गुणयुतादरविंदनाभपादारविंदविमुखाच्छ्वपच। वरिष्ठम् अभाग्यतस्य देशस्य तुलसी यत्र नास्ति वै। अभाग्यं तच्छरीरस्य तुलसी यत्र नास्ति हि॥ दोनों के विरोधी वाममार्गी आए प्रवृत्ते भैरवीचक्रे सर्वे वर्णा द्विजातयः। निवृत्ते भैरवीचक्रे सर्वे वर्णाः पृथक्पृथक्॥ मद्यं मांसं च मीनं च मुद्रा मैथुनमेव च। एते पंचमकाराश्च मोक्षदा हि युगे युगे। पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत्पतति भूतले। उत्थाय च पुनः पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते। सहस्रभगदर्शनान्मुक्तिर्नीच कार्या विचारणा। मातृयोनिं परित्यज्य विहरेत्सर्वयोनिषु काश्यां हि मरणान्मुक्ति नीच कार्या विचारणा। काश्यां मरणान्मुक्तिः यह श्रुति शैवों ने बना लिई है सहस्रभगदर्शनान्मुक्ति यह शाक्तों ने श्रुति बना लिई है गंगा गंगेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि। मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥ अश्वमेधसहस्राणां वाजपेयशतस्य च। कन्याकोटिसहस्राणां फलं प्राप्नोति मानवः। यह एकादश्यादिक व्रतों का माहात्म्य बना लिया है ऐसे ही शालग्राम नर्मदा लिंगआदिका महात्म्य बना लिया है सो इस प्रकार के मिथ्या२ जाल अपने मतलब के हेतु लोगों ने बना लिये हैं और परस्पर एक को एक देख के जलते हैं तथा अत्यन्त विरोध और परस्पर निन्दा होती है क्योंकि जो मिथ्या२ कल्पना है उनकी एकता कभी नहीं होती जो सत्य बात है सो सब के बीच में एक ही है चक्रांकितादिकों ने अपने संप्रदाय के मन्त्र बना लिए हैं। ओन्नमोनारायणाय ओम् श्रीमन्नारायण चरणांशरणंप्रपद्ये ओम् तेनारायणायनमः ये दोनों चक्रांकितों के मन्त्र हैं ओम् नमो भग

वतेवासुदेवाय ओम् कृष्णायनमः ओम् राधाकृष्णाभ्यांनमः ओम् गोविन्दायनमः ओम् राधावल्लभायनमः येनिंबार्कादिकोंकेमन्त्रहैं ओम् रामायनमः ओम् सीता रामाभ्यांनमः ओम् रामायनमः येरामोपासकोंकेमन्त्रहैं ओम् नृसिंहायनमः ओम् हनुमतेनमः येखाखीआदि कोंकेमन्त्रहैं ओम् नमः शिवाययहशैवोंकामन्त्र हैऐंह्रींक्लींचामुंडायेविच्चे ओम् ह्रांह्रींह्रूंह्रैंह्रौंहः बगलामुख्यै फट्स्वाहाइत्यादिकवाममार्गियोंकेमन्त्रहैं सत्यनाम अपयहीकवीरसंप्रदायकामन्त्रहै दादूरामयहदादूसंप्रदायकामन्त्रहै रामरामयहरामसनेहीसम्प्रदायकामन्त्रहै वाहगुरू॥ एकओंकारसत्यनामकर्त्तापुरुषनिर्भयनिर्वैर अकालमूर्त्तअयोनीसहभंगगुरुप्रसादजप॥ यहनानकसंप्रदायकामन्त्रहैं इत्यादिक कहांतकहमजाल गिनावेंकि लाखहां प्रकारके मिथ्याकल्पना लोगोंनेकरलियेहैं येसबगायत्री औपरमेश्वरकामन्त्रइसके छोडानेकेवास्तेधूर्त्तलोगोंनेसबरचीहै औरजैसे गडेरियाअपने भेंडऔरछेरियोंकोचराताहैउनसेजबचाहै तबदूधदुहलेताहै अपनामतलबसिद्धकरलेताहैइचकाउनमेंसे एकभेंडव छेरीकोईलेले अथवा भागजायतबउसगडरियेकोबडादुःखहोताहै सदिनभरचराके एकस्थानमेंइकट्ठाकरदेताहैवहचाहताहैइसझुंडमेंसे एकभीपृथक्नहोजायकिन्तु अन्यभेंडवाछेरीमिलाकेबढायाचाहताहै क्योंकि उनसेहीउसका आजीविकाचलतीहै वैसेहीआजकाल मूर्खमनुष्योंकोधूर्त्त गुरुलोगजालमेंबांधकेअत्यन्त धनादिकलूटतेहैं औरबडे२ अनर्थकरतेहैं क्योंकिचेले मूर्खहैंइससे जैसावेकहदेतेहैंवैसाहीमानलेतेहैंजोउनगुरुओंकोविद्याऔर बुद्धिहै।तौतो ऐसी अपनेवास्तेनरककीसामग्रीक्योंकरतेतथा चेलेलोगोंकों विद्याऔरबुद्धिहोतीतो इनधूर्त्तोंकेजालमेंफसकेक्यों नष्टहोतेदेखनाचाहिये किनानकजीकबीरजी औरदादूजी इनकेसंप्रदायमे पाषाणादिकमूर्त्ति पूजनतोनहींहै परन्तुउनमेंभीसंसारका धनादिकहरनेके वास्ते ग्रन्थसाहबकीउ

स्रे भीअधिकपूजाकर्त्ते हैं यहभीएकमूर्त्तिपूजनहीहै पुस्तकभीज-
डहाताहैक्योंकिजैसी पाषाणादिकोंकी पूजावैसी पुस्तकोंकीभीपू-
जाजाननीइसमें कुछभेदनहींयहकेवलपरपदार्थ हरनेकेवास्ते ही
लोगोंनेयुक्तिरचलिईहै अपने२संप्रदायमें ऐसाआग्रहहैउनकोकि
वेदादिकसत्यपुस्तकोंकी ऐसीपूजा वाउनमेंप्रीति कभीनहीकर्त्तेजै
सीकीअपने भाषापुस्तकों मेंप्रीतिकरतेहैं औरसंन्यासियोंनेएकशं
करदिग्विजयरचलियाहै उसमेंबहुत २मिथ्याकथारक्खीहैउसमें
दण्डीलोगऔर गिरीपुरी आदिकगोसांईलोग अत्यन्तप्रीतिकरते
हैंअर्थात्रामानुजदिग्विजय निंबार्कदिग्विजय माधवार्कदिग्विज-
यवल्लभदिग्विजयकबीर दिग्विजयऔरनानक दिग्विजयादिकअप-
नी२बडाईकेवास्ते लोगोंने मिथ्या२जाल रचलियेहैं शंकराचार्य
कोईसंप्रदायकेपुरुष नहोथेकिन्तु वेदोक्तचार आश्रमोंकेबीचसंन्या
साश्रममेंथेपरन्तु उनकेविषयमेंलोगोंने संप्रदायकोनांई व्यवहार
कररक्खाहै दशनामलोगोंने पीछेसेकल्पित करलियेहैं जैसेकि
किसीकानामदेवदत्तहोय इसके अन्तमेंदश प्रकारके शब्दरखतेहैं
किदेवदत्ताश्रमएक १ देवदत्तार्थतीर्थ २देवदत्तानन्दसरस्वतीऔ-
रइसीकाभेददूसरा किदेवत्तेन्द्रसरस्वती ३ देवदत्तगिरी ४देवद-
त्तपुरी५ देवदत्तपर्वत ६देवदत्तसागर ७ देवदत्तारण्य ८ देवद-
त्तवन ९ देवदत्तभारती १० येदशनामरचलियेहैं फिरइनमेंशृं-
गेरीशारदाभूगोवर्द्धन औरज्योतिमठये चारप्रकारकेमठमानते-
हैंऔरदण्डियोंने दामोदरनृसिंह नारायणइत्यादि कदण्डोंकेना-
मरखलियेहैं उसमेंयज्ञोपवीतबांधतेहैं उसकानामशंखमुद्रादीक
रक्खाहैऐसे२बहुत कल्पनादण्डियोंनेभीकिईहै किन्तु जोबाल्या
वस्थामेंनामरहताथा सोईसबआश्रमोंमेंरहताथा जैसेकिजैगीष
व्यआसुरिपंचशिखाऔरबोध्यऐसे २ नाम संन्यासियोंकेमहाभा
रतमेंलिखेहैंइससे जानाजाताहै कियहपीछेसे मिथ्याकल्पनादण्डी
लोगोंनेकरलियाहैपरन्तुदण्डी लोगसनातनसंन्यासाश्रमीहैंक्यों-

किमनुस्मृत्यादिकमें इनका व्याख्यानदेख नेमें आताहै औरगोसांई लोगोंने भोटुगोंनाथ इत्यादिकमहो शब्दकल्पित करलियाहै जैसे कि बैरागीआदिकोंने नारायणदासइस्से बड़ा भारीबिगाड़भया। कि नीचऔर उत्तमकी परीक्षाहीनहोहोती क्योंकिसब काएकमाहीनामदेख पड़ताहैताप: पुंड्रनाममाला औरमन्त्रयेपंचसंस्कार चक्रांकितादिकमानतेहैं औरमोक्षहोना भी इससे मानतेहैंपरन्तु इसमेंबिचार करनाचाहिए किसंस्कारनामहै पवित्रताकासो पवित्रतादोप्रकार कीहोतीहै एकमन कोदूसरीबाह्यपदार्थोंकोइनमेंसे मनकीपवित्र ताहोनेसे बाह्यपवित्रता भीहोतीहै जिनका मनअधर्मकरने मेंरहताहै उनकोबाह्यपवित्र ताव्यर्थहैसोउन संस्कारोंसेमनकोपवित्रताकुछनहीं होसक्तीदेखनाचाहिए किगोकुलस्थोंकेमन्दिरोंमें रोटीऔरदालतकलागबेचतेहैं औरबाहर सेप्रसिद्धरखतेहैं किठाकुरकोइतनाबड़ा भोगलगताहै सोजितने नौकरचाकरमन्दिरोंमेंरहतेहैं उनकोमासिकधननहीदेतेकिन्तु इसकेबदलेपक्काअन्न रोटीदालतकदेतेहैं उनके हाथगोसांईजीअन्नबेचतेहैं औरबेप्रजाके हाथबेचतेहैं जैसेहलवाईकी दुकानमें बेचाजाताहै औरप्रसादभी उनकेयहां भेजतेहैं सबमन्दिरधारी किजिस्से कुछप्राप्तिहोतीहो मन्दिरोंमेंजब दर्शनकेहेतुजातेहैं तब जोउनकेस्त्रीवापुरुष,सेवक तथाधनदेनेवाले उनकाबड़ासत्कारकतेहैं अन्यकानहीं इनमिथ्याव्यवहारोंकेहोनेसेदेशकाबड़ाअनुपकारहोताहै क्योंकिबाहरसेतोमहात्माकीनांईबनेरहतेहैंछलऔरहृदयमेंकपट,काम,क्रोध,लोभादिकदोषबढ़तेचलेजातेहैं देखनाचाहिएकिबड़े२ मन्दिर,मठ,गांव,राज्यदुकानदारीकरतेहैं औरनामरखतेहैं वैष्णव,आचारी,उदासी,निर्मलगोसाईं जटाजूटबने रहतेहैंतिलक,छापा,माला, ऊपरसेधारणरखतेहैं औरउनकाहृदयका व्यवहारहमलोगदेखतेहैं बिद्याकालेशनहींबातभीयथावत्कहनावासुननानहींजानें इस्से सबमनुष्योंकोएकसत्य,धर्मबिद्यादिकगु-

साग्रहणकरनाचाहिए औरइननष्टव्यवहारोंको छोड़ना चाहिए
तभीसबमनुष्योंका परस्परउपकारहोसक्ताहै अन्यथानहीं वाम-
मार्गीलोग एकभैरवीचक्ररचतेहैं उसमेंएकनङ्गीस्त्री करकेउसके
हाथमेंछूरीवातलवारदेदेतेहैं औरबीचमेंएकआसन केऊपरबैठा
देतेहैं फिरउसस्त्रीकी पूजाकरतेहैं यहांतककिगुप्तअंगकीभीफिरउस
जलको सबलोगपीतेहैं औरउसस्त्रीकोमानतेहैं कियहसाक्षात्दे-
वीहै औरब्राह्मणसेलेकेऔरचमारतक उसस्थानमेंसबबैठतेहैं फि
रएकपात्रमेंमद्यकोपूजाकरके मद्यरखतेहैं उसीएकपात्रमेंवहस्त्री
पीतीहै फिरउसीजूठेपात्रमें सबलोगमद्यपीतेहैं औरमांसभीखा-
तेजातेहैं रोटीऔरबरेखातेजातेहैं फिरजबमद्यपीकेमस्तहोजाते
हैं तबउसीस्त्रीसेभोगकरतेहैं जिसको किपहिलेदेवीमानीथी और
नमस्कारकियाथा औरमनुष्यकाबलिदानभीकरतेहैं कोई२उस-
काभीमांसखातेहैंमुरदेकेऊपरबैठके जपकरतेहैं औरस्त्रीकेसमाग-
मकेसमयजपकरतेहैं । योन्यांलिंगंसमास्थाप्यजपेन्मन्त्रमतन्द्रि-
तः। औरयहभीउनकामन्त्रहै किएकमाताकोछोड़केकोईस्त्रीअगम्य
नहीं फिरउनमेंमएकमातङ्गीविद्यावालाहै वहऐसाकहताहै कि
मातरमपिनत्यजेत् माताकोभीनहींछोड़नाचाहिए क्योंकिमा-
तङ्गहस्तीकानामहै सोमाताकोभी नहींछोड़ता वैसेवेभीमानते
हैं ऐसीदशमहाविद्याउनलोगोंनेबनारक्खीहै उनमेंसेएकचोली
मार्गहै उसकाऐसामतहै किस्त्रीऔरपुरुष सबएकस्थानमें रात्रि
कोइकट्ठे होतेहैं एकबड़ाभारीमृत्तिकाकाघड़ावहांरखतेहैं उसमें
सबस्त्रीलोगअपनेहृदयकावस्त्रअर्थातजिसकानामचोलीहै उसकोउ-
सघड़ेमेंडालदेतीहैं फिरउनवस्त्रोंकोघड़ेकेबीचमेंमिलादेतेहैं फिर
खूबमद्यपीतेहैं औरमांसखातेहैं जबवेसबउन्मत्तहोजातेहैं फिरउ-
सघड़ेमेंहाथडालतेहैं जिसकेहाथमेंजिसकावस्त्रआवैवहउसको
स्त्रीहोतीहै वहमाता,कन्या,भगिनीवापुत्रकीभीहोस्त्रीयऐसे २ मि-
थ्याव्यवहारकरतेहैं औरमानतेहैंकिमुक्तिहोययहबड़ाआश्चर्यहै ऐ-

सेकर्मोंमेंकभीनहींमुक्तिहोसकी परन्तु विद्याहीनजोपुरुषहैं वेऐसे
२ जालोंमेंफसजातेहैं औरइनलोगोंनेअपने२ मतकेपुष्टिकेहेतुअ-
नेकपाषाणादिककृतिब्रह्मवैवर्त्तादिकपुराणतन्त्र उपपुराणपर-
स्परविरुद्ध ऋषिऔरमुनियोंके नामोंसे रचलिएहैं एककादूसरा
अपमानकर्ताहै अपनी२पुष्टिकेहेतु क्योंकिअसत्यबातऔरभ्रमजो
होताहै सोपरस्परविरुद्धमेंहीहोताहै औरजो सत्यबातहै सोसब
केहितु एकहीहैजोसज्जनहोतेहैं वेसदाश्रेष्ठ कर्महीकरतेहैं क्योंकि
वेसत्यासत्यविचारसे असत्यकोछोड़तेहैं औरसत्यको ग्रहणकरते-
हैंऔरकिसीकेजालमें विचारवान्पुरुष नहींफसताऔरसबकेउपकार
मेंहीउसकाचित्त रहताहैऐसेजोमनुष्यहैंवेधन्यहैं इससे क्याआया
किश्रेष्ठगृहस्थवाविरक्तजोहैं वेसदाश्रेष्ठकर्मही करतेहैंअश्रेष्ठन-
हीइसवास्ते वेविरक्तलोग अपनेमतलबमेंफसके सत्यासत्यनहीजा
नसक्तेहैं क्योंकिउनकोभ्रम अंधकारमेंकुछनहीं सूझताऔरजगन्ना-
थादिकमेंबहुतचमत्कारदेखपड़ताहै तथानानाप्रकारकेतीर्थजोगं
गादिकवेपापनाशकऔर मुक्तिप्रदहैंवानहीं उत्तर नहींक्योंकिज-
गन्नाथकीमूर्तिचंदनवानिंबकाष्ठकीबनातेहैंउसकोनाभिमेंपोलर-
खतेहैंउसमें सोनेकेसंपुटमें एकशालग्रामरखकेधरदेतेहैंउसको
ब्रह्मतत्त्वमानतेहैंफिरआभूषणवस्त्रपहिरादेतेहैं उसमेंकुछचमत
कारनहींहै किन्तुपुजारियोंनेआजीविकाकेवास्तेबातऔरमहा-
त्म्यकापुस्तकबनालियाहैवेएकतोयह चमत्कारकहतेहैंकिछत्तीस
वर्षमेंचोलाबदलताहै सोबातहमको झूठमालूमदेतीहै क्योंकि
३६ वर्षमेंमूर्तिपुरानीहोजातीहै फिरदूसरीबनाकेरखदेतेहैंऔर
कृष्णतथाबलदेवकी मूर्तिकेबीचमेंसुभद्राकी मूर्तिबनारखीहैइसमें
विचारनाचाहिये किएककेवामभाग दूसरेकेदहिने भागमेंमूर्ति
रखनाधर्मशास्त्रऔरयुक्तिसे विरुद्धहैऔरदूसरा चमत्कारयहकह
तेहैंकिएकराजाबड़ाहोऔर पराडायेतोनोंउसीसमयमरजातेहैंयह
बातउनकीमिथ्याहै क्योंकिअकस्मात्कोईउसदिन मरगयाहोगा

अथवा गजु लोगों ने विषदान देके कभी मार डाले होंगे सो माहात्म्य की ऐसी बात लोगों ने मिथ्या बना लिया है तो सरा चमत्कार यह कहते हैं कि आपसे आप ही रथ चलता है यह भी उनकी बात मिथ्या है क्योंकि हजारहां मनुष्य मिलके रथ को खींचते हैं और कारीगर लोगों ने ऐसा रथ में कला बना दिई है उसके उलट घुमाने से बह रथ खड़ा हो जाता होगा और सूध घुमाने से कुछ चलता होगा जैसे कि घड़ी आदिक के यन्त्र घूमते हैं ऐसे बहुत पदार्थविद्या से होते हैं चौथा चमत्कार यह कहते हैं कि एक चूल्हे के ऊपर सात पात्र धर देते हैं उनमें से ऊपर के पात्रों का चावल पहिले चुर जाते हैं यह भी उनकी बात मिथ्या है क्योंकि उन पात्रों में चावल पहिले डाल देते हैं फिर उसके पेंदे को मांज देते हैं फिर ऊपर २ पात्र रख देते हैं और नीचे के चूल्हे में थोड़ी सी आंच लगा देते हैं फिर दरवाजा बंद कर देते हैं और अच्छे २ धनाढ्य तथा राजा लोगों को दूर से कर छुला के निकाल के देखा देते हैं और कहते हैं कि देखिए महाराज कैसा चमत्कार है कि नीचे का अब तक चावल कच्चा है क्योंकि उस पात्र में चावल अन्न पर पीछे धरे हैं उस को देखके विचार रहित पुरुष मोहित होके बड़ा आश्चर्य गिनते हैं और हजारहां रुपैया देते हैं यह केवल उन मनुष्यों की धूर्तता है और चमत्कार कुछ नहीं है पांचवां चमत्कार यह कहते हैं कि जो पापी होय उसको उस मूर्ति का दर्शन नहीं होता यह भी उनकी बात मिथ्या है क्योंकि किसी के नेत्रमें दोष होने से आंख के सामने तिमिर आ जाते हैं और वे पुजारी लोग ऐसी युक्ति रचते हैं कि वस्त्र के अन्यथा रूप करके परदे बना रक्खे हैं उनके दोनों ओर पुजारी लोग खड़े रहते हैं और फिरते भी रहते हैं सो किसी प्रकार से उस मूर्ति को आड़ कर देते हैं फिर नहीं देख पड़ती तो उस बकरे से भी कहते हैं कि तुम लोग पापी हो जब तुम्हारा पाप कट जायगा तब तुम को दर्शन होगा तब वे बुद्धिहीन पुरुष झट २ रुपैये धर देते हैं फिर उनको दर्शन करा देते हैं यह सब मनुष्यों की धूर्तता है चमत्कार कुछ नहीं है छठवां यह चमत्कार कहते हैं कि अन्धा वा कुष्ठी हो जाता है जो कि

वहांका प्रसाद नहीं खाता यह भी उनकी बात मिथ्या है क्योंकि इस बात से कभी कोई कुष्ठी वा अंधा नहीं होसक्ता है बिना रोग से और अनेक दिनका सड़ा सड़ाया अन्न तथा पचावल्ली और हड्डियों के खपरे जिन को कौवे कुत्ते चमार और चांडालादिक स्पर्श करते हैं और धूर भी लग जाती है सबका उच्छिष्ट खाने से कुष्ठरोग भी होसक्ता है और परस्पर सबका जूठ सब खाते हैं और फिर अन्य जनों के किसीका जल वा अन्न न-हीं खाते यह देखना चाहिये कि इनका आश्चर्य व्यवहार कि सबका सब जूठ खाते भी हैं फिर कहते हैं कि हम किसीका नहीं खाते यह केवल इ-नका अविचार ही है सो जिनको वहां आजीविका है वे ऐसी २ मिथ्या बात सदा रचते रहते हैं कलिकत्ता में एक मृत्तिका की मूर्त्ति बना र-क्खी है उसका नाम रक्खा है काली यहां भी ऐसी २ मिथ्या २ जाल र-चरक्खी हैं कि कालीमद्य पीती है और मांस खाती है सो वह जड़मूर्त्ति क्या पीयेगी और क्या खावेगी परन्तु उन पुजारियों का खूब मद्य पीने और मांस खाने में आता है वे लोग स्वाद के हेतु और धनहरणे के हेतु नाना प्रकार की झूठ २ बात बना लेते हैं वहां एक मंदिर में पाषाण का लिंग स्थापन कर रक्खा है उसका नाम तारकेश्वर रक्खा है इस-विषय में उन्हों ने बात बना रक्खी है कि रोगियों को स्वप्नावस्था में महादे-व औषध बताजाते हैं उस औषध से उनका रोग छूटजाता है यह बात उनकी मिथ्या है क्योंकि उनका जो पुजारी है वही वैद्य और डाकतरों-की औषधी कियाकर्त्ता है और ऐसी औषधि क्यों न हो स्वप्नावस्था में महादेव का कहदेता है कि जिसके खाने से किसीको कभी रोग ही न हो-इसमें यह बात झूठ है कि वह पाषाण क्या कहवा सुनसक्ता है कभी न-हीं सेतबन्धरामेश्वर के विषय में ऐसा लोग कहते हैं कि जब गंगाजल चढ़ाते हैं तब वह लिंग बढ़जाता है यह बात मिथ्या है क्योंकि उस मंदि-र में दिवस को भी अंधकार रहता है उसी से चारकोने में चार दीप सदा जलते रहते हैं उस मंदिर में किसी को घुसने देते नहीं उनके हाथ से गंगा जल के उस मूर्त्ति के ऊपर जल चढ़ाता है जब वह पुजारी नीचे से-

ऊपर हाथ करता है तब मूर्त्ति में लेकर हाथ तक गंगाजी की एक धारा ब- नजाती है उस धारा में चारों द्वीपके प्रकाशके पड़ने से जल बिजली की नांई चमकता है तब उन यात्रियों का पुजारी लोग कहते हैं कि तुम लो- गों के ऊपर महादेव की बड़ी कृपा है देखो महादेव का लिंग बढ़ गया सो तुमरुपैये चढ़ाओ ऐसे बहकार के बहुधन हरण करते हैं और क- हते हैं कि रामने यह मूर्ति स्थापन किई है सो यह बात मिथ्या ही है क्यों- कि वाल्मीकी य रामायण में उसका नाम भी नहीं है केवल तुलसीदास के झूठ लिखने से लोग कहते हैं क्योंकि तुलसीदास की मिथ्या २ बात वि- चारना चाहिये नारीनाम स्त्रीका रूप देखके स्त्री मोहित नहीं होती फिर सीता के स्वयंवर में लिखा है कि जब स्वयंवर में सीताजी आई तब न- र और नारी सब मोहित होगये सीताजी को देखके यह बात पूर्वा- पर उसकी विरुद्ध है और अपने ग्रंथ में उनने लिखा है (कि अठारह पद्म यूथ पंवानर थे सो एक २ का चार २ कोस का शरीर लिखा तथा कुंभक- र्णकी मोंछ चार २ कोस की लंबी लिखी है १६ सोलह कोस की नांक ६४ कोस का हाथ लम्बा ६६ कोस का उदर ऐसा जो कुंभकर्ण होता तो लंका में एक भी नहीं समाता/और अठारह पद्म वानर पृथिवी भर में न- हीं समाते तथा बांदर मनुष्य की भाषा नहीं बोल सके फिर सुग्रीवादि- क राम से कैसे बोल सकेंगे राज्य का करना और विवाह पशुओं में कभी नहीं हो सक्ता ऐसी २ बहुत तुलसीकृत रामायण में झूठ बात लि- खी है सो इसके कहने का क्या प्रमाण फिर पाषाण के ऊपर राम ना- म लिख दिये उससे पाषाण समुद्र के ऊपर तरे हैं यह बात उसकी मिथ्या- है क्योंकि ऐसा होता तो हम लोग भी पाषाण के ऊपर राम नाम लि- खके उसका तरना देखते सो नहीं देखने में आता इससे झूठ बात को माननान चाहिये जैसी यह बात झूठ है उसका वैसी रामेश्वर की लिखी भी झूठ है कि सौ दक्षिण के धनाढ्य ने मंदिर बनाया है उसका नाम है रा- मेश्वर उसको चार ४०० बरस भये होंगे और एक दक्षिण में कालिया- कंत का मंदिर है इस विषय में लोगों ने ऐसी बात बना लिई है कि जब मू-

र्तिहुक्का पीती है सो झूठ है क्योंकि पाषाण की मूर्ति हुक्का कैसे पीवेगी इ-
समें लोगोंने मूर्ति के मुख में छिद्र बना रक्खा है उस छिद्र में नाली लगा
के कोई मनुष्य छिपके धुंआ खींचता है फिर वे पुजारी कहते हैं देखो सा-
चात् मूर्ति हुक्का पीती है ऐसा बहका के धन हर लेते हैं ऐसे ही जयपुर-
के राज्य में एक जीन देवी बजती है वह मद्य पीती है सो भी बात झूठ है
क्योंकि वह मूर्ति पोली बना रक्खी है उसके मुख में छिद्र है मद्य के पात्र-
को मुख से लगा के ढरका देते हैं वह मद्य अन्य स्थान में चला जाता है
फिर उसको ले के बेचते हैं तथा द्वारिका के विषय में लोग कहते हैं कि
द्वारिका सोने की बनी है उसमें एक पोपा भक्त समुद्र में डूब के चला गया-
था उसको श्रीकृष्णजी मिले उनसे बात चीत भई पोपा ने कहा कि मैं
तो आपके पास रहूंगा तब श्रीकृष्ण ने कहा कि मर्त्यलोक का आदमी य-
हां नहीं रह सक्ता सो तुम हमारा शंख चक्र गदा पद्म के चिन्ह द्वारका में
लजाओ और सबसे कहदेओ कि इन चिन्हों का दाग तप्त करके जो ल-
गवालेगा सो बैकुंठ में चला आवेगा ऐसे ही चक्रांकित लोग भी कहते हैं
सो यह बात मिथ्या है क्योंकि जीते शरीर को जलाने से कोई बैकुंठ में न-
हीं जा सक्ता है और जो जा सक्ता तो मरे भये शरीर को भस्म कर देते हैं
इससे बैकुंठ के आगे भी जायगा फिर जीते शरीर को जो जलाना यह
बात केवल मिथ्या है एक पंजाब में ज्वालाजी का मंदिर है उसमें अग्नि
निकलता रहता है इसको कहते हैं कि साक्षात् भगवती है इनसे
पूछना चाहिये कि तुम्हारे घर में जब रसोई करते हैं तब चूले में भी
ज्वाला निकलती रहती है प्रश्न चूले में तो लकड़ी लगाने से निकल-
ती है और वहां आपसे आपही निकलती रहती है उत्तर ऐसे ही
अनेक स्थानों में अग्नि निकलती है सो पृथिवी में अथवा पर्वत में गंध
कादिक धातु हैं उनमें किसी प्रकार से अग्नि उत्पन्न हो के लग जाता है सो
पृथिवी को फोड़ के ऊपर निकल आता है जबतक वे गन्धकादिक धातु र-
हती हैं तबतक अग्नि जलता ही रहता है यही पृथिवी के हिलने का कार-
ण है क्योंकि जब भीतर से बाहर पर्वत में अग्नि निकलता है तभी पृथिवी

मेंकंपहोजाताहै सोवहबातकेवलमनुष्योंनेअपनीआजीविकाकेवा-स्ते मिथ्याबनालिईहै एकउत्तराखण्डमें केदारऔरबद्रीनारायणये दोस्थानप्रसिद्धहैं इसविषयमेंलोगऐसाकहतेहैंकिबद्रीनारायणकी मूर्तिपारसपत्थरकीहै औरशङ्कराचार्यनेस्थापितकिईहै सोयहबा तमिथ्याहै क्योंकिजोवहपारसपत्थरकीरहती तो पुजारीलोगद-रिद्रक्योंरहते औरयहबातझूठमालूमदेतीहै किपारसपत्थरसेलो हाछुआनेसेसोनाबनजाताहै इसकोकिसीनेदेखातोहैनहीं सुनतेसु नातचलेआतेहैं इसबातकाक्याप्रमाण औरशङ्कराचार्यतोमूर्ति-योंकेतोड़नेवालेथे वेस्थापनक्योंकरते केदारकेविषयमें ऐसीबात-लोगकहतेहैं किजबपांडवलोग हिमालयमेंगलनेकोगये तबमहा देवकादर्शनकियाचाहतेथे सोमहादेवने दर्शननहीदिया क्योंकि-वेगोत्रनामअपनेकुटुंबके पुरुषोंकोमारकेयुद्धमेंआयेथे सोमहादें-वपार्वती औरसबउनकेगणोंने भैंसेकारूपधारणकरलियाथा सो-नारदजीनेंकहाकिमहादेवादिकोंनेंभैंसाकारूपधारणकरलियाहै तुमकोवहकानकेवास्तेइसकोयहपरीचाहैकिमहादेवकिसीकीटां-गकेनीचेसेनहीनिकलतसोभी मनेतीनकोसकेछोटेदोपर्वतथेउनके ऊपरटांगरखदिई एक२केऊपर फिरसबभैंसेतोउनकेनीचेसे-निकलगये परन्तुएकभैंसानहीनिकला तबभीमनेनिश्चयकरलिया कियहीभैंसाहैउसकोपकड़नेकोभीमदौड़ा तबवहभैंसापृथिवीमेंगु-प्तहोगया उसकासिरनैपालमेंनिकलाजिसका नामपशुपतिरक्खा है तथाउसकापगकाप्रोरमेंनिकला उसकानामअमरनाथरक्खा औरचूतड़वहींनिकला जिसकानामकेदारहै औरजंघाजहांनिक लीउसकानामतुंगनाथादिकरक्खाहैऐसेपंचकेदारलोगोंनेरचलि येहैं इसमेंविचारनाचाहियेकिनैपालमेंभैंसेकाअंगनांककानकुछ नहीदेखपड़ताहै तथाकाश्मीरमेंखुरभीनहीदेखपड़ते ऐसेअन्यत्र कुछभीनहीभैंसेका चिन्हदेखपड़ताकिन्तुसर्वत्र पाषाणहीदेखप-ड़ताहैपरन्तुऐसी २ मिथ्याबातकोमनुष्यलोग मानलेतेहैंयहके-

वल अविद्या और मूर्खता का गुण है क्योंकि भीमइतना लंबा चौड़ा होता तो उसका घर कितना लंबा चौड़ा होता और नगर में वा ग्राम में कैसे चल सक्ता तथा द्रौपद्यादिक उनको स्त्री कैसे बन सक्ती और महादेव को क्या डर पड़ा था कि भैंसा होजाय फिर इतना लंबा चौड़ा क्यों बन जाता और क्या अपराध वा पाप महादेव ने किया था कि चेतन से जड़ बनजाय इससे यह बात सब मिथ्या है एक कामाख्या स्थान गयाक्खा है उस में एक कुंड बना रक्खा है उसका नाम योनि रक्खा है और वह रजस्वला होती है यह सब बात उन पुजारियों ने आजीविका के हेतु मिथ्या बना लिई है एक बौद्ध गया स्थान है उस में बौद्ध की मूर्ति बना रक्खी है उसकी पूजा और दर्शन आज तक करते हैं वह मूर्ति केवल जैनों की ही है सो ऐसा जानना चाहिये कि जितना पाषाण पूजन है और जो जड़ पदार्थों का पूजन सो सब जैनों का ही है एक गया स्थान बना रक्खा है उस में बड़ा संसार का धन लूटा जाता है गया के पण्डाओं को मुफ्त का बहुत धन मिलता है सो वेश्यागमन मद्यपान और मांसाहार में हो जाता है केवल प्रमाद में अच्छे काम में कुछ नहीं फिर यजमान लोग मानते हैं कि गया के श्राद्ध में ही पितरों का उद्धार होजाता है सो ऐसे कर्मों से उद्धार तो किसी का होता नहीं परन्तु नरक होने का संभव होता है फिर इस विषय में ऐसा कहते हैं कि रामचन्द्र ने गया में श्राद्ध किया था सो साक्षात् दशरथ जी उनके पिता उन ने हाथ निकाल के गया में पिण्ड ले लिया था उस दिन से गया का माहात्म्य चला है और वह स्थान गयासुर का था सो यह बात सब मिथ्या है क्योंकि वे लोग आजकाल भी हाथ निकाल के क्यों नहीं पिण्ड लेलेते कि सो समय कोई पुरुष फल्गू नदी में भूमि में गुहा बना के भीतर बैठ रहा होगा और उनों ने मकान बना रक्खा था ऐसे ही उसने भूमि में से हाथ निकाल के पिण्ड ले लिया होगा फिर झूंठ बात प्रसिद्ध कर दिई कि साक्षात् पितृ लोग हाथ निकाल के पिण्ड ले लेते हैं उस स्थान का पण्डितों ने माहात्म्य बना लिया फिर प्रसिद्ध होगई और सब मानने लगे सो गया ना-

मन्दिरस्थानमेंस्थापितकरें और अपनेपुत्रपौत्र तथा राज्यशिसदेशमें अपनेरहताहोयउनका नामगयाबेदीकेनिबग्टमें लिखाहैउस-काअर्थ अभिप्राय तोजानानहीं फिरयहपाखण्डरचलियाकाशि-राजनेमहाभारतमेंलिखाहै किउसनेनगरबसायाथा इससेउसका नामकाशीपड़ा औरवरुणा तथा असीनालाकेबीचमेंहोनेसे वा-राणसीनामरक्खागया इसकाऐसा झूंठ माहात्म्य बनालिया है-किसाक्षात महादेव कीपुरीहैऔर महादेव नेमुक्तिका सदावर्त्त बांधरक्खा हैतथाजहांरभूमिहैइससेपापपुण्यलगताहोनहींरबदेव-तापंद्रहरकलामेंकाशीमेंरहतेहैं औरएकरकलासेअपनेरस्थान मेंरहतेहैं एकमणिकर्णिकाकुंडरच रक्खाहैकियहांपार्वतीकेकान कामणिगिरपड़ाथा तथाकालभैरव यहांकाकोटपालहै सोसबको दण्डदेताहैपापपुण्य कीव्यवस्थासेइसकाशीका महाप्रलयमें भीप्र-लयनहींहोता क्योंकिकालभैरव त्रिशूलकेउपरकाशीकोरखलेताहै औरभूचालमेंहलतीभीनहींपंच काशीकेबीचमें कोईकीटपतंग तकभीमरैतोउसको महादेव मुक्तिदेतेहैं अन्नपूर्णा सबकोअन्न देतीहैअन्तर्गृहीऔरपंचक्रोशीके करनेसेसबपापछूटजातेहैंइत्या-दिकमिथ्यारजालरचकेकाशीरहस्य औरकाशीखण्डादिकग्रंथब-नालियेहैं औरकहतेहैंकिबारहज्योतिलिंगहोतेहैंउनमेंसेएकयहां विश्वनाथहैउनसेपूछना चाहियेकिज्योति लिंगहोतेतोमंदिरमें कभीअन्धकारनहीहोता औरवहपाषाण मुक्तिवाबन्धकभी नहींकर सक्ताक्योंकिउसीको कारीगरोंने मंदिरकेबीच गढेमेंचिपकाकेबं-धकररक्खाहैफिर अपनेहीबंधनसेनहींछूटसक्ता फिरअन्यकोमु-क्तिक्याकरसकेगा सोयहकेवलपण्डितोंने बातबनालिईहै किका-शीमेंमरनेसे मुक्तिहोतीहैक्योंकिइसबातको सुनकेसबलोगकाशी मेंमरनेकेहेतुआवेंगे उनसेहमारी आजीविका सदाहुआकरेगी इससेऐसी र जाल रचाकरतेहैंप्रयागमें गंगायमुनाके संगममेंए-कतीसरीझूंठसरस्वती मानलेतेहैंकि तीसरीसरस्वती भीयहांहै

और दूर स्थान में मुंडानेसे सिद्ध होजाता है सो ऐसा अनुमान किया जाता है कि पहिले कोई नौवाथा उसने अपने कुलको आजीविकाकर लिई है और संगममें स्नानकरनेमे मुक्ति होजाती है यह केवल आजीविकाके वास्ते झूठ २ बात और झूंठ २ पुस्तक लोगोंने बना लिए हैं कि प्रयागतीर्थ राज है ऐसे ही अयोध्या में हनुमानजीको रामजी गद्दी दे गये हैं और अयोध्यामें निवाससे भी मुक्ति होती है यह भी उनकी बात मिथ्या ही है तथा मथुरा और वृन्दावनमें बड़ो २ मिथ्या बात बना लिई हैं कि यमद्वितीयाके स्नानसे यमके बंधनसे जीव छूट जाता है क्योंकि यमुनायमराजकी बहिन है और वृन्दावनके विषयमें भक्ति भोगे होती है कि मेरी मुक्ति कैसे होयगी मुक्ति मुक्तिके वास्ते वृन्दावनको गलियों में झाड़ू देते हैं और मंदिरों में नानाप्रकारके प्रमादों में व्यभिचारादिक करते हैं तथा अनेक प्रकारके जालोंसे लोगोंका धन हरण करलेते हैं एक चक्रांकितोंने मंदिर रचवाया है उनके दरवाजोंका नाम वैकुंठद्वार इत्यादिक रक्खे हैं और सकल पुंगव सब मनुष्य मिलके इकट्ठे खाते हैं सकल पुंगव उसका नाम है कि कच्चा पक्का सब प्रकारका पक्का कच्चा अन्न बनता है फिर ब्राह्मणसे लेके अंत्यजपर्यन्त उनके जितने शिष्य हैं उनको पंक्ति लग जाती है उनके हाथके बीचमें थोड़ा २ सब पदार्थ सबको देदेते हैं और वे खा लेते हैं उनमें से कोई जलसे हाथ भी डालता है और कोई वस्त्र से पोंछ लेता है और ठाकुरजीको झुलाव देते हैं उसमें भी बड़े २ अनर्थ सुननेमें आते हैं और एकरात वेश्याके घर ठाकुरजी जाते हैं फिर उनको प्रायश्चित्त कराते हैं और यमुनाजीमें डुबाके स्नान कराते हैं यह केवल उनका मिथ्या प्रपंच है पर धन हरनेके वास्ते और मूर्खोंको बहकानेके वास्ते फिर उस मंदिरमें बहुत लोगोंको शंखचक्रादिक तपाके दाग देदेते हैं ऐसे २ मिथ्या छलप्रपंचसे अपनी आजीविका करते हैं इनमें कुछ सत्यवा चमत्कार नहीं तथा गंगादिक तीर्थोंके विषयमें सब पापका छूटना वैकुंठमें आना मुक्तिका होना और ब्रह्मद्रव तथा साक्षात् भगवती का मानना यह बात मि-

थ्या है क्योंकि हिमवतः प्रभवति गंगा यह व्याकरण महाभाष्य का वचन है इसका यह अभिप्राय है कि हिमालय से गंगा उत्पन्न होती है तथा यमुनादिक नदियां बहुत हिमालय से उत्पन्न भई हैं और विन्ध्याचल में तथा तड़ागों में भी बहुत नदियां उत्पन्न होती हैं केवल जल सब में है उस जल में उत्तम मध्यम और नीच ता भूमि के संयोग गुण से है इससे अधिक कुछ नहीं सो जल होता है वह जल क्या पापको छोड़ासकेगा और मुक्ति को भी देसकेगा कुछ भी नहीं जैसा जिस जल में गुण है शीत उष्ण हिछ निर्मलता वैसा ही उसमें होता है इनमें अधिक गुण नहीं विचार मिष्टादिक गुण सब भूमि के संयोग से हैं अन्यथा नहीं गंगेत्वद्दर्शनान्मुक्तिर्जाने स्नानजं फलम् इत्यादिक नारदादिकों के नामोंसे मिथ्या २ श्लोक लोगोंने बनालिए हैं जो दर्शनसे मुक्ति होती तो सब संसार की हो मुक्ति होजाती और मुक्ति में कोई अधिक फल नहीं है कि संसार में स्नान से कुछ अधिक होवै यह केवल मिथ्या कल्पना उनकी है कि काश्यां मरणान्मुक्तिः गंगेत्वद्दर्शनान्मुक्तिः सह्ससभगदर्शनान्मुक्तिः हरिस्मरणान्मुक्तिः ॥ इत्यादिक मिथ्या श्रुति लोगोंने बनालिई हैं किन्तु ऋते ज्ञानान्नमुक्तिः यह सत्य श्रुति है कि बिना ज्ञान से किसी की मुक्ति नहीं होती क्योंकि सत्यासत्य विवेक के बिना असत्य के दोषों का ज्ञान नहीं होता दोष ज्ञान के बिना मिथ्या व्यवहार और मिथ्या पदार्थों से कभी नहीं जीव छूटता इससे मुक्ति के वास्ते सत्या सत्य का विवेक परमेश्वर में प्रीति धर्म का अनुष्ठान अधर्म का त्याग सत्सङ्ग सद्विद्या जितेन्द्रियतादिक गुण इनमें अत्यन्त पुरुषार्थ से मुक्ति होसक्ती है अन्यथा नहीं और जिसको इस बात का निश्चय करना होवै वह इस बात को करै कि जितने तीर्थों के पुरोहित और मंदिर स्थान के पुरोहित उनके प्राचीन पुस्तकों के देखने से सत्य २ निश्चय होता है क्योंकि वह यजमान देश गांव जाति दिन मास और संवत्सर इनका यथावत् पुस्तक जो बही खाता उसमें लिखे रखते हैं उनके देखने से ठीक २ दिन मास और संवत्सर का निश्चय होता है कि इस तीर्थ वा इस मं-

दिरकाप्रारंभ इससंवत्सरमेंभयाहै क्योंकिजब जिसकाप्रारंभहोता हैतबउसकेपण्डे औरपुजारी तथापुरोहित उसीसमयबनजातेहैं देखनाचाहियेकि विंध्याचलमूर्त्ति केविषयमें लोगकहतेहैंकिएक दिनमें देवीतीनरूप धारणकर्त्तीहै अर्थात्प्रातः कालमेंकन्या मध्यानमेंजवान औरसंध्याकालमेंबुड्ढीबनजातीहै इनसेपूंछनाचाहियेकि रातमेंउसमूर्त्तिकी कौनअवस्थाहोतीहै सोकेवलपुजारीलोगोंकीधूर्त्तताहै क्योंकिजैसावस्त्रआभूषणधारणकरैंवैसाहीस्वरूपदेखपडताहैऔरकहतेहैंकिइसमंदिरमेमक्खीनहीहोतीपरंतु असंख्यातमक्खीहोतीहैं सोकेवलझूठ बकातेहैंआजीविकाकेवास्ते तथावैजनाथकेविषयमेंकहतेहैंकिकैलाससेरावणलेआयाहैयहसबमिथ्याकल्पना लोगोंकीहै क्योंकिआजतक नये २ मंदिरनये२ मूर्त्तियोंकेनामधरतेहैं औरसंप्रदायीलोगोंनेअपने२संप्रदाय केपुष्टिकेवास्ते बनालियेहैं उनकानाम रखदियापुराणऔरऐसा भीवेकहतेहैं कि अष्टादशपुराणानांकर्त्तासत्यवतीसुतः इसकायहअभिप्रायहैकिअठारहपुराणोकेकर्त्ताव्यासजीहैं जोकिसत्यवतीके पुत्रहैं यहबातमिथ्याहै क्योंकिव्यासजीबडेपंडितथे और सत्यवादी सबपदार्थविद्या यथावत्जानतेथे उनका कथनयथावत्प्रमाणयुक्तहीहोताहै क्योंकिउनकेबनायेशारीरकसूत्रहैं और महाभारतमें जो२ श्लोकहैं वेभीयथावत्सत्यहीहैं परन्तुमहाभारतमेंअन्यभीश्लोकहैं अथवासबव्यासजीकेबनायेहैं नहीं कईहजारश्लोकसंप्रदायीलोगोंनेमहाभारतमें मिलादियेहैं अपने२ संप्रदायकेप्रमाणकेवास्ते क्योंकिशांतिपर्वमें विष्णुकीबडाईलिखीहैऔरसबकोन्यूनताऔरउसीमें सहस्रनामलिखेहैं इससे विरुद्धउसीपर्वमे शिवसहस्रनामजहांलिखेहैं वहांविष्णुकोतुच्छकरदियाहै तथाजहां विष्णुकी बडाईहै वहांमहादेवको तुच्छकरदियाहैऔरजहांगणेशऔरकार्तिकस्वामीकीस्तुतिकिईहै वहांअन्यसबकोतुच्छबनादियेहैं तथाभीष्मपर्व औरविराटपर्वमे जहांदेवीकीकथालिखीहै वहांअन्यसब

तुच्छगिनेहैं एकभीमऔरधृतराष्ट्रकी कथालिखीहै किधृतराष्ट्रकेश-
रीरमें ६००० हाथीकाबलथा तथाभीमकेशरीरमे दसहजारहा-
थीकाबलथा औरएकगरुड़पच्छीकाबल ऐसावर्णनकियाकि जिस-
कातोलन नहींहोसक्ता उसगरुड़काबलविष्णुकेआगेतुच्छगिना-
तथाउसविष्णुकाबल वीरभद्रकेआगे तुच्छकरदियाहै वीरभद्रका
रुद्रकेआगे औररुद्रकाविष्णुके विष्णुका वीरभद्रकेआगऐसोप-
रस्परमिथ्याकथा व्यासजीकी बनाई महाभारत मेंनहींबनसक्ती-
औरभीऐसी २ कथालिखीहैं किभीमकोदुर्योधननेविषदानदिया-
जबवहमूर्छितहोगया तबउसकोबांधकेगंगा जीमेंगिरादियासोब-
हपातालकोचलागया वहांसर्पोंनेबहुतकाटा फिरजबउसकावि-
षउतरगया तबसर्पोंकोमारनेलगा उस्सेसर्पभागगयेवासुकीराजा
सेजाकेफिरकहा किएकमनुष्यका लड़काआयाहै सोबड़ा पराक्र-
मीहै तबवासुकी भीमकेपासगया औरपूछाकि तूकौनहै कहांसे
आयाहै तबभीमनेकहा किमैंपाण्डुकापुत्रहूं औरयुधिष्ठिरकाभाई-
तबतोवासुकी बड़ेप्रसन्नभये औरभीमसेकहा किजितनातुझसेइ-
नकुण्डोंमेंसेजल पीयाजाय उतनापी क्योंकियेनवकुण्डअमृतसेभ-
रेहैंऐसासुनकेउठा औरनवकुण्डोंका सबजलपीगया सोनवहजा-
रहाथीकाबलबढ़गया इसमेंविचारनाचाहियेकि विषकेदेनेसे वह
भीम मरक्योंनगया औरजलमें एकघड़ीभरनहींजीसक्ता औरपा-
तालकामार्ग वहांकहांहोसक्ताहै औरजोहो सक्तातोगंगाकाजल
सब पातालमें चलाजाता ऐसी २ मिथ्याकथा व्यासजीकी कभी
नहींहोसक्ती औरजितनी सत्यकथाहै वसवमहा भारतमें व्यास
जीकीहोसक्तीहैं औरजितने पुराणहैं उनमेंव्यास जीकाकियाएक
श्लोकभीनहीं क्योंकिशिव पुराणादिक सबशैव लोगोंके बनायेहैं
उनमेंकेवल शिवकोही ईश्वरवर्णन कियाहै औरनारायणादिक
शिवकेदासहैं फिर रुद्राक्षभस्म नर्मदाकालिंग औरमृत्तिकाका
लिंग बनाकेपूजने बिनाकिसीकी मुक्तिनहीं होतीयहवेदल शै-

वोंकी मिथ्या कल्पना है और इन बातों से कभी नहीं मुक्ति होती विना धर्मानुष्ठान विद्या और ज्ञानसे फिर वह शिव जिसको कि ईश्वर वर्णन किया था पार्वतीके मरनेमें सर्वत्र रोता फिरा ऐसी कथा श्रेष्ठ पुरुषोंकी कभी नहीं होती किन्तु यह केवल शैव संप्रदाय-वालोंकी बनाई है तथा शाक्त लोगोंने देवीभागवत तथा मार्कण्डेय पुराणादिक बनाए हैं उनमें ऐसी २ कथा झूठ लिखी है कि श्रीपूर्वमें एक भगवती परब्रह्मरूप थी उसने संसार रचनेकी इच्छा किई तब प्रथम ब्रह्माको उत्पन्न किया और कहा कि तूं मेरेसे भोग कर तब ब्रह्माने कहा कि तूं मेरी माता है तुझसे मैं समागम नहीं कर सक्ता तब कोपसे भगवतीने ब्रह्माको भस्म कर दिया और दूसरा पुत्र उत्पन्न किया जिसका नाम विष्णु है उससे भी वैसा ही कहा फिर विष्णुने भी समागम न हीं किया इस्से उसको भी भस्म कर दिया फिर तीसरा पुत्र उत्पन्न किया जिसका नाम शिव है उस्से भी कहा कि तूं मुझसे समागम कर तब महादेवने कहा कि तूं तो मेरी माता है तेरेसे मैं समागम नहीं कर सक्ता परन्तु तूं अपने अंगसे एक स्त्रीको पैदा कर उस्से मैं समागम करूंगा फिर उसने पैदा किई और दोनोंका विवाह भी किया फिर महादेव नेदेखा कि ये दो भस्म क्या पडी हैं तब देवीने कहा कि तेरे भाई हैं इन दोनोंने मेरी आज्ञा नहीं मानी इस्से इनको मैंने भस्म कर दिया फिर महादेवने कहा कि मेरे भाई हैं इनको जिला दो तब भगवतीने जिला दिये और फिर कहा कि और दो कन्या उत्पन्न करो कि मेरे भाई काभी विवाह होजाय भगवतीने उत्पन्न किई विवाह होगया एकका नाम उमा दूसरीका नाम लक्ष्मी तीसरी सावित्री इनके विषयमें ब्रह्मा नारायणकी नाभिसे उत्पन्न भया कहीं लिखा कि ब्रह्मासे रुद्र और नारायण उत्पन्न भये कहीं लिखा कि उमा दक्षकी कन्या कहीं लिखा हिमालयकी कन्या है लक्ष्मी समुद्रकी कन्या है कहीं लिखा कि वरुणकी कन्या कहीं लिखा कि सावित्री सूर्यकी कन्या है कहीं लिखा कि ब्रह्मासे जगत उत्पन्न भया कहीं नारायणसे कहीं महादेवसे-

कहींगणेशसे कहींस्कंदसे ऐसे झूंठ २ कथापुराणोंमेंबनारक्खीहैं प्रश्न इसमेंविरोधनहीं क्योंकियेसबकथाकल्पकल्पान्तरकोहैंउत्तर यहबातमिथ्याहै क्योंकि सूर्याचन्द्रमसौधातायथापूर्वमकल्पयत् जैसीसूर्यादिकसृष्टिपूर्वकल्पमेंभईथीवैसीसबकल्पमेंहोतीहै ऐसा जोकहोगेतोकिसीकल्पमें पगसेभीखातेहोंगेऔरमुखसेचलतेहों-गेनेत्रसेबोलतेहोंगे जीभसेनबोलतेहोंगे इत्यादिकसबजानलेना लोगोंनेमार्कण्डेयपुराणान्तर्गतजोदुर्गास्तोत्रहैजिसकानामरक्खा हैसप्तशती उसमेंऐसी २ झूंठकथालिखीहै किरुधिरौघमहानद्यः सद्यस्तत्रप्रसुस्रुवुः रक्तबीजऔर देवीकेयुद्धमें रुधिरकीबडी २ न-दियांचलीं इनसेपूंछना चाहिएकि रुधिरवायुकेस्पर्शसेजमजा-ताहै उसकीनदीकभीनहीचलसक्ती रक्तबीजइतनेबडेकिसबजग-त्पूर्णहोगया उनकेशरीरसे उनसेपूंछनाचाहिएकिइतनगरगां-व पर्वतभगवती भगवतीकासिंह कहांखडेथेयस्याःप्रभावमतुलंभ-गवाननन्तो ब्रह्माहरश्चनहिवक्तुमलंबलंचसा चंडिकाखिलजगत्प-रिपालनाय नाशायचाशुभभयस्यमतिंकरोतु इसश्लोकमेंब्रह्मा वि-ष्णुऔरमहादेव कोतोमूर्खबनाया क्योंकिचंडिकाकाअतुलप्रभाव और बलकोवेनहीं जानतेहैं अर्थात् मूर्खहीभयेचंडिकोपेइसधा-तुसे चण्डिकाशब्द सिद्धहोताहै जोकोपरूपहै वहअधर्मकास्वरू-पहीहै विष्णुःशरीरग्रहण महमीशानएवच कारितास्तेयतोऽत-स्त्वांक: स्तोतुंशक्तिमान्भवेत् ब्रह्माविष्णु औरमहादेवतीनोंनेश-रीरधारण वालेकियेहैं फिरतेरीस्तुतिकरनेकोसमर्थकौनहोस-क्ताहै ऐसाकहके त्वंस्वाहा त्वंस्वधा त्वंहि इत्यादिक स्तुतिकरने भीलगा यहबडीभारी प्रमादकीबातहै किजिसकानिषेधकरैउसी कोअपनेकरनेलगजाय सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः मनुष्योमत्प्रसादेन भविष्यतिनसंशयःपूछनाचाहिये उसभगवती कीप्रतिज्ञाहैकिमेराइसश्लोकका पाठऔरमेरीभक्तिकरेगाअर्था-त्सबदुःखोंसेछूटजायगा औरधान्यधनपुत्रोंसे युक्तहोताहैसो यह

प्रतिज्ञा नजानकर्हागई किइसपाठककरने औरकरानेवाले अनेक दुःखोंमेंपीडित देखनेमेंआतेहैं धनधान्यपुत्रोंको इच्छाभी अत्यन्त होतीहै औरमिलताकुछनहीं यहांतककिपेटभीनहींभरताऐसी२ मिथ्याकथाओंमें विद्याहीनपुरुषोंको विश्वासहोजाताहै यहबडा एकआश्चर्यहै ऐसेहीविष्णुपुराण ब्रह्मवैवर्तऔर पद्मपुराणादिकों मेंअनेक २ झूंठकथा लिखीहैं तथाभागवतमें बहुतमिथ्या कथा लिखीहैं किशुकाचार्य व्यासजीकेपुत्र परीक्षितके जन्मसेसौ१०० बरसपहिलेमरगयाथा परीक्षितका जन्मपीछे भयाहैसोमोक्षधर्म में महाभारतकेलिखाहै फिरजोमनुष्य कहतेहैंकि शुकाचार्यने सप्ताहसुनाया सोकेवलमिथ्याबातहै क्योंकिउससमयशुकाचार्यका शरीरहीनहीथा और ऋषिकाश्रापथा कियमलोककोपरीक्षितजा य फिरभागवतमेंलिखा किपरीक्षितपरमधाम कोगयायहउनकी बातपूर्वापरविरुद्ध औरमिथ्याहै औरचतुःश्लोकीसबभागवतकामू- लमानतेहैंसोनारायणनेब्रह्मासे ब्रह्मानेनारदसेनारदने व्यासजी से व्यासजीनेशुकसे शुकनेपरीक्षितसे फिर भागवत संसारमेचल- निकला सो यहबडाजाल रचलियाहैक्योंकि ज्ञानंपरमगुह्यं मे य- द्विज्ञानसमन्वितम् सरहस्यंतदंगंचगृहाणगदितंमया इत्यादिक चारश्लोक बनालियेहैं क्योंकिपरम और गुह्ययेदोनोंज्ञानकेविशे- षणहोनेसे वही विज्ञानहोजाता है फिर यद्विज्ञानसमन्वित यह जोउसकाकहना सोमिथ्याहोजाताहै औरगुह्य विशेषणसेसरह- स्यमिथ्याहोताहै क्योंकि रहस्यनामएकान्त और गुह्यकाहोहैप- रमज्ञानकेकहनेसेतदंग अर्थात मुक्तिकाअंगहै यहउसकाकहना मिथ्याहीहैक्योंकि परमज्ञानजोहोताहै सोमुक्तिकाअंगहोहोता- हैवैसायह श्लोकमिथ्याहै वैसासब भागवतभी मिथ्याहै क्योंकिजय- विजयकी कथाभागवतमें लिखीहै सनकादिकचारवैकुंठ कोगयेथे उससमयनारायण लक्ष्मीजीकेपासथे जयऔर विजययेदोनोंवैकुंठ केद्वारपालोंने उनकोरोकदिया तबउनको क्रोधभया औरश्रापज-

यविजयको दियाकितुम जाओ भूमिमेगिरपड़ोतबतोउनकोबड़ाभय भया औरउनकोप्रार्थनाकिई किमहाराजमेरे आपकाउद्धारकैसेहोगा तबसनकादिकोंनेकहाकि जोतुमप्रीतिसे नारायणकीभक्तिकरोगेतोसातवें जन्मतुमाराउद्धारहोगा औरजोवैरसेभक्तिकरोगे तो तीसरेजन्मतुमारा उद्धारहोगा इसमेंविचारनाचाहिये किसनकादिकसिद्धथे वेवायुवत् आकाशमार्गमे जहांचाहेवहांजातेथे उनकानिरोधकैसेहोसक्ताहै तथाजयविजयनेबालकरूपथेत्रारौ कोक्योंरोका क्योंकिवेक्यादोनोंमूर्ख थे औरवेसाक्षातब्रह्मज्ञानीथे उनकोक्रोध क्योंहोता और कोईकिसीको प्रीतिसेसेवाकरै औरदूसराउसकोदण्ड सेमारै उनमेंसेकिसके ऊपरवहप्रसन्नहोगाजोकिसेवाकर्त्ताहै औरजोदण्डामारताहैउसके ऊपरकभी किसीकोप्रसन्नतानहीं होसक्ती फिरवेहिरण्याक्ष औरहिरण्यकश्यपहोनेंभयेएककोवराहनेमारा औरदूसरेकोनृसिंहनेउसकापुत्रथाप्रल्हादउसकेविषयमेंबहुतझूंठकथाभागवतमेंलिखीहै किउसकोकूंएमेंगिरायाऔरपर्वतसेगिरायापरन्तुवहनमराफिरलोहेकाखंभअग्निसेतपाया औरप्रल्हादसेकहा कितूंइसकोपकड़ नहीं तोतेरासिरमैंकाटडालूंगाफिरप्रल्हादखंभकेसामनेचला औरचित्तमे डराभीकुछ किमैंजलनजाऊं सोनारायणने चिवटीउसकेऊपरचलाई उनकोदेखके प्रल्हादनिडरहोके खंभेकोपकड़ा तब खंभाफटगया औरबीचमेसेनृसिंह निकलेसोउसकेपिताकोपकड़के पेटचीरडालाऔरनृसिंहकोबड़ाक्रोधआयासोब्रह्मामहादेवलक्ष्मीतथाइन्द्रादिकदेवोंसे नृसिंहकेकोपकोशांतिहीनहोभई फिरप्रल्हादसे सबनेकहाकि तूंहीशान्तिकर सोप्रल्हाद नृसिंहकेपासगया औरनृसिंहशांतहोगया सोप्रल्हादको जीभसेचाटनेलगा औरकहाकि वरमांग तबप्रल्हादनेकहा किमेरेपिताका मोक्षहोयतबनृसिंहबोले किमेरेवरसे २१ पुरुषोंकामोक्ष होगयातेरेपितादिकोंकाइनसेपूछनाचाहियेकिनारायणने सूकरऔरपशुकाशरीरक्योंधारणकि-

या और कैसे भारणकरसक्ते हिरण्याक्षपृथिवीको चटाईकीनाईं ध
रके सिराने सोगया सोकिसके ऊपर सोआ और पृथिवीको उठाई
सोकिसके ऊपर खडा होके और पृथिवीको कोई उठा भीसकता है
और कोई नारायणके भक्तको पर्वतसे गिरा देवा कूएमें डाल देवक्ष म
र जायगा अथवा हाथ गोड टूट जायगा रक्षा कोई नहीकरेगा खंभमें
से नृसिंहका निकलना यह बात बडी मिथ्या है और नृसिंहजो नारा-
यणका अवतार और रूव हु होता तो पहिली बातको क्यों भूल जाता
जो मनकादिकों ने मात बातो न जन्म में सङ्गतिक होयी उनने पहिले ही
जन्म में सङ्गतिक्यों ट दिई और प्रथम ही उनका जन्मथा उसकी २१पी
ढीन ही रनसक्तो और जो कश्यप मरीचिब्रह्मा तक विचारें तो भी चा-
र पीढी होसक्ती हैं २१ तक कभी नहो फिर उसने लिखा कि हिरण्या-
क्ष हिरण्यकश्यप ही रावण कुंभकर्ण शिशुपाल और दन्तवक्र होते भ
ये फिर सङ्गति किनको भई यह बडी मिथ्या कथा है अजामीलकी कथा
मे लिखा है कि अपने पुत्रको मरणसमयमें बोलायाउसकाभी नाम-
नारायणथा सो नारायणने इतना भी नहो कि मेरेको पुकार-
ता है वा अपने पुत्रको और वह बडा पापीथा परन्तु एकसमय नारायण
के नामसे उसको वैकुंठका वास दे दिया सो बडा भारी अन्यायकिपा-
पकरे और दण्ड नहोय ऐसी कथा सुनके लोगोंकी भ्रष्टबुद्धि होजाती
है क्योंकि एकबार नारायणके नामसे सब पाप छुट जाते हैं फिर कोई
पाप करने में भय कभी नहोक रेगा व्यासजीने सब वेद वेदांग विद्याओं
को पढ़लिया और परमेश्वर पर्यन्त यथावत् पदार्थोंका साक्षात्कार-
किया था तथा अणिमादिक सिद्धि भी भई थी फिर भी सरस्वतीनदीके
तटमे एक वृक्षके नीचे शोकातुर होके जैसे रोता होवै वैसे बैठे थे उ-
स समयमें ब्रह्मा नारद आये और व्यासजीसे पूंछा कि आप ऐसी अव
स्थामें क्यों बैठे हैं तब व्यासजी बोले कि मैंने सब विद्या पढी और सब प्र-
कारका ज्ञान भी मुझको भया परन्तु मेरे चित्तकी शांति नहीभई तब
नारदजी बोले कि तुमने भगवत कथा नहीं किई और ऐसा ग्रन्थ भी को

ईनहीबनायाजिसमेंभगवतकथाहोवै सोआपभागवतबनावेंकृष्ण
जीकेगुणयुक्त तबआपकाचित्त शान्तहोगा इसमेंविचारनाचाहि-
येकिव्यासजी जोनारायणका अवतारहोते तोउनकोअज्ञानशो-
क औरमोह क्योंहोता और जोउनकोअज्ञानादिकथेतोअज्ञानी-
का बनाया जोभागवतउसकाप्रमाणनहींहोसक्ता फिरइसकथामे
वेदादिकोंकोकेवलनिन्दाआतीहै क्योंकिवेदादिकोंके पढनेमव्या-
सजीकोज्ञान नहींभया तोहमलोगोंका कैसेहोगा फिरभीनिग-
मकल्पतरोर्गलितंफलं इत्यादिकश्लोकोंमे केवलवेदोंकीनिन्दाकी-
किईहै क्योंकिवेदादिक सत्यशास्त्रोंका यहनिन्दानकरतातोइसम
हामिथ्याजालरूपजोभागवतग्रन्थउसकी प्रवृत्तिहीनहींहोतीफि-
रउसनेनृगराजकोकथालिखीकि यावत्यः सिकताभूमौयावन्तोदि
वितारकाः यावत्योवर्षधाराश्च तावतीरददंस्मगाः॥नृगराजाने इ-
तनीगायदिईकिजितनेभूमिमेकणिकाहैं इससे पूंछनाचाहिये किइ-
तनीगायकहां खडीरहतीथीं क्योंकिएकगायतीनचारहाथके
जगहमें खडीरहतीहैं उसभूमिकेकणोंको सबभूमिकेमनुष्यकरो-
डहांलाखहां वर्षतकगिने तोभीपारावार नहींहोवै फिरभीउस
मिथ्यावादीको संतोषनहीभया मिथ्याकहनेसेकि जितनेआकाश
मेतारे औरजितने दृष्टिकेबिंदु उतनेगोदान नृगराजनेकियेफि-
रभीवह दुर्गतिकोप्राप्तभया क्योंकिएकगाय एकब्राह्मणकोपहिले
दिईथी फिरभूलके दूसरेकोदेदिई फिरदोनोंब्राह्मण लडनेलगे-
किएक कहेयहमेरीगायहै दूसराकहेकिमेरी तबनृगराजनेकहा
किदोनोंतुम समझकेएकतो इसगायकोलेलेओ दूसराएककबद-
लेमे सौहजारलाख करोडऔर सबराज्य नेलेओ परन्तुलडोमत
वेदोनोऐसेमूर्खकिलडनेहीरहे किन्तुशान्तनभयेऔरफिर राजा
कोआपदेदियाकितूदुर्गतिकोजाइसमविचारनाचाहिये किएक-
तोइसनेकर्मकांडकीनिन्दाकिईकीयोडीसीभीभूलपडजायतोदुर्ग-
तिकोजाय इससे कर्मकाण्डमेंकुछफलनहीं ऐसाउनकीमिथ्याबुद्धि

थोकिइसप्रकारकी मिथ्याकथाउसनेलिखी औरब्राह्मणोंकीनिन्दा लिखीकिसदाइठोहोतेहैं औरराजाने उनकोदण्डभी नहींदिया ऐसेपुरुषोंको दण्डदेनाचाहिये राजाकोफिरकभी हठदुराग्रहन करैं औरराजाका अपराधक्याभयाथा किउसकोंपापलगा एक गोदानके व्यतिक्रमसेदुर्गतीकोवहगया और असंख्यातगोदानका पुन्यउसका कहांगयायह अन्धकारकीबात उनकोकिइतने उसने गोदानकिये परन्तु सबउसकेनष्टहोगये बहुतगोदानोंके पुन्यनेकुछसहायनहींकिया फिरउसनेएककथालिखीकि रथेनवायुवेगेन जगामगोकुलंप्रतिजबकंसनेअक्रूरजीकोश्रीकृष्णकेलेनेकेवास्तेभेजा तबमथुरासे सूर्योदयसमयमें वायुवेगरथकेऊपरबैठ केचलेदोकोस दूरगोकुलथासोचारप्रहरमेंअर्थात् सूर्यास्तसमयमेंगोकुल कोआपहुचे इससेपूंछनाचाहियेकि रथकावायुवेगकहांनष्टहोगया जोकोईकहेकि अक्रूरजीकोप्रेमहुआ सोदेरसेपहुंचेपरन्तु घोड़ेकोऔर सहीसको प्रेमकहांसेआया और उसका वायुवेग उसने क्योंमिथ्यालिखा फिरपूतनाको श्रीकृष्णने मारके गोकुलमथुरा केबीचमें उसकाशरीर डालदिया सोछःकोसतकउसशरीर कीस्थूलतालिखी फिरकंसको मालूम भीनहीं भयाकि पूतनामारी गई वानहीं जोछःकोसको स्थूलताहोतीतो दोकोसकेबीचमें कैसे समाताकिन्तु गोकुलमथुरा येदोनोंचूर्णहोजाते औरगोकुलमथुराके पारकोस२ तकशरीरगिरताथा ऐसी२ झूठकथा लिखीहैं परन्तु कथाकरनेऔरकरानेवाले सबभांगपानकरकेमस्तहोगयेहैं किऐसेझूठकोभीनहीं जानसक्ते ब्रह्माजीको नारायणजीनेवर दियाकि। भवानकल्पविकल्पेषु न विमुह्यतिकर्हिचित्जबतकसृष्टि है इसकानामहै कल्पऔरजबतक प्रलयबनारहै उसकानामहैविकल्पसोनरायणने ब्रह्माजोसेकहाकितुमको कभीमोहनहोगाफिरवत्सहरणकथामेंलिखा किब्रह्मामोहितहोगये और बछड़े कोहरलियाऔरउनीब्रह्मानेतोकहाथा किआपवासुदेवऔदेवकीकेघर

मेंजन्म लीजिये फिर कैसोगाढ़ी भांगपी लिई कि झटभू लगये कि यह गोपहै वा विष्णुका अवतार है और भागवत बनानेवाले ने ऐसा नशा किया है कि बड़ा अंधकार इसके हृदय में है कि ऐसा बड़ा पूर्वापर विरुद्ध लिखता है और जानता भी नहीं प्रियव्रत को कथा उसने लिखी कि सातदिनतक सूर्योदय नहीं भया तब प्रियव्रत रथपे बैठके सूर्य की नाई प्रकाशित होके घूमने लगा सो उसके रथके पहिये के लीकसे सातदिनतक घूमने से सात समुद्र सप्त द्वीप बनगये इस्से पूछना चाहिये कि रथके चक्र को इतनी बड़ी स्थूल लीक भई तो उसरथ के चक्र का क्या प्रमाण रथ अश्व और प्रियव्रत के शरीर का क्या प्रमाण होगा एकरथ इसकथा से इतना स्थूल होगा कि पृथ्वी के ऊपर अवकाश नहीं होसक्ता और सूर्य आकाश में भ्रमण कर्ता है प्रियव्रत ने पृथ्वी के ऊपर भ्रमण किया फिर जितना सूर्य का प्रकाश उतना उस्से कभी नहीं होसक्ता और सूर्य लोक के इतना स्थूल भी कभी नहीं होसक्ता भूगोल के विषय में जैसा उनने लिखा है वैसा उन्मत्त भी न लिखतथा सुमेरुपर्वत के विषय में जैसा लिखा है वैसा बालक भी नहीं लिखेगा सो ऐसी असंभव और मिथ्या कथा भागवत का करनेवाला लिखता है श्रीकृष्ण विद्वान धर्मात्मा और जितेन्द्रिय थे ऐसा महाभारत की कथा से यथावत् निश्चय होता है सो श्रीकृष्ण की जैसी निन्दा इसने कराई ऐसी किसी की नहोगी क्योंकि उसने रासमंडल की कथा लिखी उसमें ऐसी २ बात लिखी जिस्से यथावत् श्रीकृष्ण की निन्दा होय जैसे कि वृन्दावन से महावन छ: कोस है वृन्दावन में बंसी बजाई उसका शब्द निकट २ गांव और मथुरा में किसी ने नहीं सुना किन्तु जैसा बांदर उड़के जाय वैसा शब्द उड़के महावन में कैसे गया होगा फिर उस शब्द को सुनके महावन की स्त्रियां व्याकुल होगई फिर उनके पतियों ने निरोध भी किया तो भी किसी ने न माना फिर उलटा आभूषण और वस्त्र धारण करके वहां से चली सो छ:कोस वृन्दावन में न जाने पहुंची कि नाई उड़गई होंगी पग का आभूषण नाक में नाक का आभूषण पग में कैसे धारण करलेगी फिर श्रीकृ-

ष्णानेगोपियोंसेकहाकितुमनेबडाबुराकामकियाइससे तुमअपने२घ
रकोचलीजाओ औरअपनो २ पतिकोसेवाकरो पतियोंकीआज्ञा
भंगमतकरो फिरगोपियांबोलीं कियेभूठपतिहैं सत्यपतितोआ-
पहीहैं हमउनकेपासक्योंजाय आपकोछोडकेतबतोश्रीकृष्णभीप्र-
सन्नहोगये औरहाथसेहाथ पकडकेभटक्रीडा करनेलगेसो छः
मासकीराचिकरदिई क्योंकिस्त्रियांबहुतथीं औरकामातुरथोफि-
रश्रीकृष्णने भीबिचाराकि इनसेथोडेकालमें तृप्तिनहोगीइससेछः
मासकाक्रीडाकेवास्ते कालबनायाफिर क्रीडाकरते२ अन्तर्ध्यान
होगए फिरगोपियांबहुतव्याकुलहोनेलगींऔररोनेलगीं तबश्री
कृष्णफिरप्रसिद्धहोगये तबफिरगोपीप्रसन्नहोगईं फिरभोसबमि-
लके क्रीडाकरनेलगे फिरएकबारएकगोपोकोश्रीकृष्णकंधेपरले-
केबनमेंभागगए उससोकावीर्यस्रावहोगयाइसमेंबिचारनाचाहि-
एकि श्रीकृष्णकभोऐसी बातनकरेंगेइससे बहुतजगत्काअनुपका-
रहोताहै क्योंकिस्त्रीलोगगोपियोंका दृष्टान्तसुनके व्यभिचारिणी
होजांयगीतथापुरुषभोश्रीकृष्णकादृष्टान्त सुनकेव्यभिचारीहोजां-
यगेऐसीकथासे बहुतजगतका अनुपकारहोताहै फिरवहांपरी-
क्षितने प्रश्नकियाकियहधर्मकाउल्लंघनश्रीकृष्णने क्योंकियाउसका
शुकनेउत्तरदिया॥ धर्मव्यतिक्रमोदृष्ट ईश्वराणांचसाहसम्तेजी-
यसांनदोषायवन्हेः सर्वभुजोयथा इसकायहअभिप्रायहै किजोई-
श्वरहोताहै सोधर्मकाउल्लंघनकर्त्ताहीहै किन्तु जैसाचाहैवैसा
करें परस्त्रीगमनकरले वाचोरीभीकरले उनकोदोषनहीं जैसे
तेजस्वीपुरुष जोचाहेसोकरले जैसोअग्निसबकोजलादेतीहै औ-
रदोषनहीलगताहै वैसेकृष्णादिक समर्थथेउनकोभी दोषन-
हीलगताइनमेंबिचारनाचाहिये किश्रीकृष्णधर्मात्माथेऐसाका-
मकभीनहीकरेंगे(औरजोश्रीकृष्ण ऐसाकर्त्ततो कुंभोपाकसेकभो
ननिकलते)इससे श्रीकृष्णनेकभीऐसा कामनहीकियाथा क्योंकिवे
बडेधर्मात्माथे ईश्वराणांवच सत्यंतथैवाचरितंक्वचित् इसकायह

अभिप्राय है कि ईश्वर का वचन कहीं २ जैसे सत्य होता है वैसे आचरणभी सत्य कहीं २ होता है सर्वथा ईश्वर असत्य बोलता है और अधर्म को होकते हैं किन्तु कदाचित् सत्यवचन बोलता है ईश्वर और सत्य आचरण इनसे पूंछना चाहिये कि यह ईश्वर को बात है वा उन्म त्तकी ? कह ते हैं कि जिसके कण्ठ में रुद्राक्ष वा तुलसी की माला न होय वा ललाट में तिलक उनके मुख देखने से पाप होता है उनसे कहो कि उनकी पीठ देखने से तो पुण्य होता होगा और वे कहते हैं कि उनके हाथ से जल लेने में पाप होता है तो उनसे कहो कि वह पग से जल देदे फिर तो कुछ पाप नहीं होगा ऐसी २ बातें लोगों ने मिथ्या बना लिई हैं और भागवत के विषय में हमने थोड़े से दोष देखा है परन्तु भागवत सब दोष रूप हो है वैसे ही अठारह पुराण अठारह उपपुराण और सब तन्त्र ग्रन्थ बेनछही हैं इससे कुछ जगत् का उपकार नहीं होता सिवाय अनुपकार के ब्रह्मा विष्णु महादेवादिक देव उनका निवासस्थान कहां है उत्तर महाभारत की रीति से और युक्ति से भी यह निश्चय होता है कि ब्रह्मादिक सब हिमालय में रहते थे क्योंकि इस भूमि में उनके चिन्ह पाये जाते हैं खाण्डव बन इन्द्र का बाग था पुष्कर में ब्रह्मा ने यज्ञ किया कुरुक्षेत्र में देवों ने यज्ञ किया अर्जुन और श्रीकृष्ण से इन्द्रादिकों का युद्ध होना तथा पाण्डवों से गान्धर्वों का युद्ध होना दमयन्ती के स्वयंवर में इन्द्रादिकों का आना अर्जुन का महादेव से पाशुपतास्त्र का सीखना तथा देवलोक में जाके विद्या का पढ़ना भीम का कुबेर पुरी में जाना तथा दशरथ और कैकेयी का रथ के ऊपर चढ़ के देवासुरसंग्राम में जाना सर्व युद्ध देखने के वास्ते विमानों पर चढ़ के देवों का आना इस देशवासियों का अनेक बार समागम का होना महोदधि और गंगा का ब्रह्मलोक से आना स्वर्गारोहिणी का कैलास से निकलना अलकनन्दा का कुबेर पुरी से आना वसुधारा का वसुपुरी से गिरना नर और नारायण का बदरिकाश्रम में तप का करना युधिष्ठिर का शरीर सहित स्वर्ग में जाना नारद का देवलोक से इस लोक में आना यज्ञों में

देवोंकोनिमन्त्रणदेना और उनोंका यज्ञोंमें आना नहुषकेइन्द्रका होना युधिष्ठिरऔरयमराजका समागमकाहोना इसवक्ततकब-ह्मलोककैलासवैकुंठ इन्द्रवरुणकुबेर वसुअग्न्यादिक आठवसुपुरियोंकाइनसबकेआजतक उत्तरखण्डमेंप्रसिद्धविद्यमानोंका होना महभारतऔर केदारखण्डादिकोंमें सबकेजो२ चिन्हलिखेहैं उनकेप्रत्यक्षकाहोनाहिमालयकीकन्यापार्वतीसेमहादेवकाविवाहहो नावरुणकीकन्यासे नारायणका विवाहहोना इत्यादिकहेतुओंसे हिमालयमेंहोदेवलोक निश्चित था इसमेंकुछसंदेहनहीसोप्रथम जबसृष्टिभईथी इसक्याआयाकि प्रथमसृष्टिमनुष्योंकी हिमालय मेंभईथीफिरधोरे२ बढतेचलेवैसे २ सबभूगोलमेंमनुष्यवासकरते चले औरफैलतेभोचले सोजितनेपुरुषहैं मनुष्यसृष्टिमें वसबहिमालयउत्तराखण्ड सेहीबढेहैं सोउत्तराखण्डमें ३३ करोड़मनुष्यप्रथमथे सबपर्वतोंमें मिलके फिरजबबहुतबढे तबचारोंओरमनुष्यफैलगएउनमेंसेविद्याबल बुद्धिपराक्रमादिक गुणोंसेजोयुक्तथे वेब्रह्मादिकदेव कहातेथेऔर उनकीगद्दीपर जोबैठताथा उनका नामब्रह्मापडताथा वैसेहीमहादेवविष्णु इन्द्रकुबेरऔरवरुणादिकनामपडतेथे जैसेमिथिलापुरीमें जोगद्दीपरबैठताथाउसकानामजनकपडताथा तथाजोकोईराज्याभिषेकहोके राजपरबैठे हैंउसकानाम पदवीकेयोग्य अबतकपडताजाताहै जैसेअमात्योंकानामदीवानलाटजजकलकटरइत्यादिकनामप्रत्यक्ष पडतेहीहैं परन्तु वेहिमालयवासीदेव पदार्थविद्याकोहस्तक्रियासहितअच्छीप्रकारसेजानतेथे उनमेंसेविश्वकर्मा बडेपदार्थविद्यायुक्तथे अनेकप्रकार केयन्त्रअग्नि जलवायु इत्यादिककेयोगसे विमानादिकरथचलतेथे धर्मात्मातथा जितेन्द्रियादिकश्रेष्ठगुणवालेहोतेथेऔर बडेशूरवीरथेनाना प्रकारके आकाशपृथिवी औरजलमेंफिर नेकेवास्तेबनालेतेथेआकाशमें जोयानरचतेथे उसकानामविमान रखतेथे सो उनमनुष्योंमेंसे बहुतदुष्टकर्मकरनेवालेथे उनको हिमालयसेनि-

कालदिएथे सोहिमालयसे दक्षिणदेशमें आकरके तथफिरवडेक्रु-
कर्मकरनेको लगगएथे उनकानाम राक्षसपडाथा और कुछउन
डाकुओंमेंसेअच्छेथे उनकानामदैत्यपडगयाथा इनदैत्यऔररा-
क्षसोंमेंहिमालयवासी देवोंका वैरबनगयाथा जबउनदेवोंकाबल
होताथातबइनको मारतेथेऔरउनकाराज्य छीनलेतेथे जबदैत्या
दिकोंकाबलहोताथा तबदेवोंकाराज्यछीनलेतेथे औरमारतेभी-
थेएकथा आचार्य दैत्योंका गुरुथाऔरबृहस्पति देवोंकाथादोनोंअ-
पने२ चेलोंकोविद्यापढातेथे जबजिसकाबलबुद्धि पराक्रमबढता
थाउनकाविजय होताथापरन्तु देवविद्याओंमें सदाश्रेष्ठहोतेथे
औरहिमालयमें देवोंकेराज्यस्थानथे इससेदैत्योंकाअधिक बलन-
हीचलताथा सोअबउसहिमालय देवलोकमें कोईनहीहै किन्तु
सबजोपर्वतवासीहैं देवोंकापरीवारवहीहै आर्यावर्त्तादिक देशोंमें
जितने उत्तमआचारवालेमनुष्यहैं वेदेवोंकेपरीवारहैंऔरजित-
नेहबशीआदिक आजतकभी जोमनुष्योंकेमांसको खालेतेहैं वे
राक्षसऔरदैत्यके कुलकेहैंसोमहाभारतादिक इतिहासोंमेंस्पष्ट-
निश्चयहोताहै इसमेंकुछसंन्देहनहीं एकजयपुरमेंनाभाडोमजा-
तिकाथाजिसकागुरुअग्रदासथा सोउसकोंउननेचेलाकरलियाथा
उनकानाम नाभादासरक्खाथा सोवैरागियोंकाजूठखाताथाऔ-
रजहांवैरागीलोक मुखहातधोतेथे उसकाजलपीताथा सोवैरा-
गियोंकेजूंठअन्न औरजूंठजलखानेपीनेसे सिद्धहोगया इसप्रमाण
सेआजतकवैरागीलोक परस्परजूंठखातेहैं क्योंकिजैसेनाभासिद्ध
होगयावैसेहमलोगभी सिद्धहोजांयगे परन्तु आजतककोईजूंठके
खानेऔरपीनेसे सिद्धनहीभया इससे यहभीनिश्चितभया किनाभा
भीसिद्धनहीथा उननेएकग्रंथबनायाहै उसकानामभक्तमालरक्खा
हैउसमेंवैरागियोंकानामसन्तरक्खाहैसोपीपाकीकथाउसनेलि-
खीहै उसकोस्त्रीकानाम सीताथाभोउनकेपास वैरागीदसपांचआए
उनकेखानपीनेकेवास्ते पीपाकेपासकुछ नहीथासोउसकी स्त्रीके

पासकहाकि इनसाधुओंके खानेकेवास्ते कुछ लेआना चाहिये क्योंकिउसकोकोई उधारवामांगनेमे नहीदेताथा और उसकीस्त्री सीतारूपवतीथी सोएकदुकानदारके पासगई औरकहाकिहमको अन्नऔरघीतुमदेओतबवैश्यनेउसकोदेखके कहाकितूंएकरातभर मेरेपासरहेतो तुझकोमैंदेऊं तबसीतानेकहाकि कुछचिन्तान-हीसाधुओंकिसेवाकेवास्ते मेराशरीरहै तबवैश्यनेअन्नादिकदि-येऔरउनवैरागियोंको भोजनउनने करायाफिरजब पहररात्रि गईतबपीपासेकहाको ऐसीबातकहके मैंपदार्थलेआईहूं तबतोपी-पानेधन्यवाददिया कितूंबडोसाधुओंकी सेवकहै परन्तुउसवक्तकु-छ २ वृष्टिहोतीथीसोसीताको कंधेपरलेजाकेउसबनियेकेपासप-हुंचादियातब बनियेनेकहाकि वृष्टिहोतीहैवृष्टिमेंतेरापगभीनहीं भीजाफिरतूं कैसेआईतबसीतानेकहाकितुझको इसबातकाक्या प्रयोजनहै तुझकोजोकरनाहोय सोकरतबवैश्यनेकहाकि तूंस-चबोलसीतानेकहाकिमेरा पतिकांधेपरचढाकेतेरेदुकानपैपहुं-चादिया तबतोवहवैश्य सीताकेचरणमें गिरपडाऔरकहाकितूं औरतेरापतिधन्यहै क्योंकितुमने संतोकेवास्ते अपनाशरीरभीबे-चडालायहसब बातउनकीअधर्मयुक्त औरझूठहैक्योंकि यहश्रेष्ठ पुरुषोंकाकामनहीं जोकिवेश्याऔर भडुओंकाकामकरै ऐसेहीध-न्नाभगतकाविनाबीजसे खेतजमगयानामदेवको पाषाणकीमूर्त्ति नेदूधपीलिया मीराबाईपाषाण कीमूर्त्तिमेंसमागई औरकोईभग-तकेरासमेनारायण वृन्दावनकेरोटी उठाकेभागे औरमीरा विष पीनेसेभीनहीमरी इत्यादिकभगत मालकीबातझूठहैऔरएकप-रिकालउनसाधुओंकीसेवाकरताथा जोकिचक्रांकितथेवहभीच-क्रांकितथा परन्तुवहपरिकाल डांकूपनेसेधनहरणकरकेसाधुओं-कोदेताथा सोएकदिनचोरी सेवाडांकूपनसे धननहीपायाफिरब-डाव्याकुलभया औरघोडे परचढके जहांतहांघूमताथा सोना-रायणएकधनाढ्यके वेषसेरथपैबैठके परिकालकोमिले सोझटप-

रिकालने उनको घेरलिया और कहाकि तुमको मारडालूंगानहीं तो तुमसबकुछरखदेओ परन्तु उनके रखनेमें कुछदेर भई सोझट उतरके नारायणके अंगुलीमें सोनेकी अंगुठियांथीं सोअंगूठीसहित अंगुलीकोकाटलिई तब नारायण बड़ेप्रसन्न भये और दर्शनदियाकि तूंबड़ाभक्त है देखना चाहिये कि नारायणभीकैसे अन्यायकारी हैं डांकूओंके ऊपर कृपाकर देतेहैं अर्थात् डांकूऔर चोरोंके संगीहैं फिर वेचक्रांकितलोगनित्य उपदेशसबकर्त्ते हैं किचोरीकरके भोपदार्थलेआवै और नारायण तथावैष्णवोंकी सेवामेंलगावैतोभीवह्वबड़ाभक्तहोताहै और वैकुंठकोजाताहै फिरबहपरीकालकोईबनियेकेजहाजपर बैठकेसमुन्द्रपार बनियोंकेसाथ चलागया वहां बनियोंनेजहाजमें सुपारीभरीसो एकसुपारीका आधाखण्डपरिकालनेजहाजमेंधरदिया और वैश्योंसे कहदिया किमैंआधीसुपारीपारजाकेलेलेऊंगा तबवैश्योंने कहाकिएकक्या दशतुमलेलेना तबपरीकालने कहाकिनहीं मैंतोआधीहीलेऊंगाफिरजहाजपारकोआगया जबसुपारीजहाजसे उतारनेलगे तबपरिकालनेकहाकिआधीसुपारी हमकोदेदेओ तबवैश्यलोग सुपारीका आधाखण्डदेनेलगेसोपरीकाल बड़ाक्रोधकरके सबसेकहनेलगाकियेवैश्यमिथ्यावादीहै क्योंकिदेखोइसपत्रमें आधीसुपारीमेरीलिखीहै सोयेदेतेनहीं सोअत्यन्तधूर्त्तता करनेलगाऔर लड़नेकोतैयारभया।फिरजालसाजी करके आधीसुपारी नावमेंसे बटवालिई उनवैरागियोंकेसेवामें सबधनलगादिया सोऐसेपरीकालकोचक्रांकितके संप्रदायमें बड़ी प्रतिष्ठाहैसोचक्रांकितके मन्त्रार्थग्रंथमें ऐसीबातलिखीहै सोजितनेसंप्रदाईहैं वेअपनेचेलका ऐसे २ उपदेशकरकेऔर ऐसेग्रन्थोंको सुनाके पापोंमें लगादेतेहैं फिरभक्तमालामें एक कथालिखीहै किएकसाधूएक ब्राह्मण केघरमें ठहराथाऔर ब्राह्मणउसकी सेवाकरताथा उसकोएककुमारीकन्याथीउसपे वहसाधू मोहितहोगया सोउसकन्याको लेकेर।चिमें

कुकर्मकियाऔरखटियाकेउपरदोनोंनंगेसोगएथे सोजबउसकन्या कापितापात: कालउठातबदोनोंकोनंगे देखकेअपनीचादरदोनों परओढादीई औसिपाहियोंसे कहाकियहसाधू भागनजाय फिरवहबाहरचलागया तबवेदोनोंउठे उठकेदेखा किवस्त्रकिननडाला सोकन्याने पहिचानलिया किमेरेपिताकायहवस्त्रहै फिरवहकन्याडरकेभागगई भागकेछिपगई औरसाधूभीवहांसे निकलके जानेलगा तबसिपाहियोंनेउसको रोकलिया तबतोसाधूबहुतडरा अबतक कन्याकापिता बाहरसेआया सोसाधू केपासआकेसाष्टांगनमस्कारकिया किमेराधन्यभाग्यहै जोकिआपनेमेरीकन्याकाग्रहणकिया इसमेंमेराभी उद्धारहोजायगा सोआपआनन्दसेमेरेघरमेंरहिये औरकन्याकोभी मैंनेआपकोसमर्पण करदिया तबसाधूबडा प्रसन्नहोकेरहा औरविषय भोगकरनेलगा इसकोविचारना चाहिये किबडे अनर्थकीबातहै क्योंकिऐसीकथा कोसुनकेसाधू औरगृहस्थलोग भ्रष्टहोजातेहैं इसमेंकुछसंदेहनही फिरभक्तमालमेंएक कथालिखीहै किएकभक्तथा उसकेघरमें साधूपाहुनेआये फिरउनकी सेवाकेवास्ते पितापुत्रदोनों चोरीकरनेकेवास्तेगये सोएकबनिये कीदुकान कीभींतमें सुरंगदेकपुत्रभीतर घुसा औरपिताबाहरखडारहा सोभीतरसे घीचौनीअन्ननिकालकेदेताथा औरवहलेताथा जबभीतरसेबाहर निकलनेलगा तबतक दुकानवालेजागउठे सोउसकेपगतो भीतरथे औरसिरबाहरनिकलाथा तबतकउसनेउसके पग पकडलिये औरसिरपकडलियापिताने दोनोंतर्फ खींचनेलगे सोउसकेपिताने विचारकियाकि हमपकडजांयगेतो साधूओंकी सेवामेंहरकतहोगी सोपुत्रकासिरकाटके औरघृतादिक पदार्थोंकोलेके भागगयातबतकराजपुरुषआये और उनकाशरीर राजघरमेंलेगये औरखोजहोनेलगा कियहकिसकाहै फिरवहअपनेघरमेंचलागया और साधुओंकेवास्ते भोजनबनाया औरउन कीपंक्तीभई उस समयमेंसाधु

ओंनेपूंछाकि कहांहैतुमारालडका उसकोजलदी बोलाओ तबउ-सकेमाता और पिता जोचोर उन्नेंकहाकि कहींचलागयाहोगा आजायगा आपतबतकभोजनकोजिये तबसाधुओंनेकहाकि वहजबआवेगा तबहमलोग भोजनकरेंगे अन्यथानहीं तब उसकोमा-तानेरोकेकहा किवहतोमारागया तबसाधुओंनेपूंछा कैसेमारा गया किहमारेघरमेंआपकेसत्कारकेहेतु पदार्थनहोथा इस्से वेदोनोंचोरीकरनेकोगयेथे वहांवह मारागया तबसाधुओंनेकहाकि उसकाशरीरकहांहै तब उन्नेकहाकि सिरहमारेघरमे हैऔरश-रीर राजघरमेंहै वेसाधूलोग राजघरमें जाके शरीरलेआयेशरी रऔरसिर कासन्धान करकेबीचमेंरखदिया फिरवेसाधूनाचने-कूदनेऔरगानेलगे फिरवहजीउठा और साधूओंनआनन्दसेभो जनकिया औरउनसेकहासाधुओंने कितुमबडेभक्तहो और स्वर्ग मेंतुह्मारावासहोगा इसमेंविचारनाचाहिये किसाधुओंकोआज्ञा होनाऔरचोरीकाकरना फिरनरकमेंनजाना किन्तु स्वर्गमेंजा-ना यहबडोमिथ्याकथाहै ऐसीकथाकोसुनके लोगसब भ्रष्टबुद्धिहो जातेहैं ऐसी२ कथासबभ्रष्ट भक्तमालमेंलिखीहैं फिरभीलोगों-कोऐसीमूर्खताहैकिसुनतेहैं औरकतेहैं शिवपुराणमें त्रयोदशीप्र-दोषव्रत जोकोईनकरै वेनरकमेंजांयगे तन्त्र औरदेवीभागवता-दिकोंमेंलिखाहै नवरात्र काव्रत नकरैं वेनरकमेंजांयगे तथापद्म पुराणादिकमेंलिखाहै किदशमी दिग्पालोंका एकादशी विष्णु-का द्वादशीवामनका चतुर्दशीनृसिंह औरअनन्तका अमावस्या-पितृओंका पौर्णमासीचन्द्रका सो मतमतान्तरोंसे औरपुराणत-था उपपुराणोंमे यहआयाकि किसोतिथिमेंभोजननकरना औरज लभीनपोना औरजोकोईखाया वा पीयावहनरककोजायगा इस मेंवकहतेहैं किजिसकाबिवाह उसकोगीत इस्से ऐसीकथामेंविरो धनहीआता उनसेपूछनाचाहियेकि जिसकाबिवाह होताहै उस केगीतगायेजातेहैं परन्तु पहिलेजिनके बिवाहभयेथे औरजिनके

होनेवाले हैं उनका खण्डन तो नहीं होता क्योंकि जो उसमें है वा पहिले जिनके विवाह भये और जिनके होंगे उनको नीच तो नहीं बनाते इससे ऐसे २ मूर्खता के दृष्टान्त से कुछ नहीं होता ऐसे २ श्लोक लोगों ने बना लिये हैं कि शीतले त्वं जगन्माता शीतले त्वं जगत्पिता शीतले त्वं जगद्धात्री शीतलायै नमो नमः एक विस्फोट रोग है उसका नाम शीतला रक्खा यादृशी शीतला देवी तादृशो वाहनः खरः शीतलाष्टमी को गधे की पूजा करते हैं और हनुमान् का रूप मानके बानर की पूजा करते हैं भैरव का वाहन कुत्ता को मानके पूजा करते हैं तथा पाषाण पिप्पलादिक वृक्ष तुलस्यादिक औषधी दूब और कुशादिक घास पित्तलादिक धातु चन्दनादिक काष्ठ, पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, जूता, और विष्टा तक आर्यावर्त्त देशवाले पूजा करते हैं इनको सुख वा कल्याण कभी नहीं हो सकता जबतक इन पाखण्डों को आर्यावर्त्त वासी लोग न छोड़ेंगे तबतक इनका अच्छा कुछ नहीं हो सकता फिर एक शालिग्राम पाषाण और तुलसी घास दोनों का विवाह करते हैं तथा तडाग बाग कूपादिकों का विवाह करते हैं और नाना प्रकार की मूर्तियां बनाके मंदिर में रखते हैं उनके नाम शिव और पार्वती नारायण और लक्ष्मी दुर्गा काली भैरव, बटुक ऋषि मुनि राधा और कृष्ण सीता और रामजगन्नाथ विश्वनाथ गणेश और ऋद्धि सिद्धि इत्यादिक रख लिये हैं फिर इनके पुजारी बहुत दरिद्र देखने में आते हैं और सब संसार से धन लेने के हेतु उपदेश करते हैं कि आओ यजमान धन चढ़ाओ देवताओं को नहीं तो तुमको दर्शन का फल न होगा आम नियाले ओ ठाकुर जी के हेतु बालभोग ले आओ तथा राजभोग के वास्ते दो और गहना चढ़ाओ तथा वस्त्र और नारायण तथा महादेव के वास्ते मंदिर बनवाओ और खूब आजीविका लगवाओ हम कहते हैं कि ऐसे दरिद्र देवता और महंत तथा पुजारी लोग आर्यावर्त्त के नाश के वास्ते कहां से आगये और कौनसा इस देश का अभाग्य और पाप था कि ऐसे २ पाखण्ड इस देश में चल गये फिर इनको लज्जा भी नहीं आ-

तोकिअपनेपुरुषोंका उपहासकर्त्ते हैं कियह सीतारामहैं इत्यादि कनामलेलेके दर्शनकराते हैं इसमेंबडाउपहासहै परन्तुसमझते नही देखनाचाहियेकि कृष्णतोधर्मात्माथे उनकेऊपर झूठजाल भागवतमेंलिखाहैं फिरउसीलीला कोरासमण्डल बनाकेकहते हैंउसमेंकिसीलडकेको कृष्णबनाते हैं किसीकोराधाऔर गोपियां बनालेते हैं तथासीतारामऔर रावणादिक लडकोंकोबनाकेली-लाकरतेहैं सोकेवलवडे लोगोंकाउपहासइसमेंहोताहै और कुछ नहीक्योंकि श्रीकृष्णऔररामादिकोंकेजोसत्यभाषणादिकव्यवहा-र तथाराजनीतिका यथावत्पालना औरजितेन्द्रियादिक सबवि-द्याओंकापढना इनसत्यव्यवहारोंका आचरणतोकुछ नही करते किन्तुकेवलउपहासकीबातें तथापापोंकोप्रसिद्धकर्त्ते हें अपनेकुग-तिकेवास्ते–दशसूनासमंचक्रं दशचक्रसमोध्वजः दशध्वजसमोवे-षो दशवेषसमोनृपः॥ यहमनुकाश्लोकहै इसकायहअभिप्रायहै कि सूना नामहत्यासोदशहत्याकेतुल्य जीवोंकोपीडा औरहननचक्र-सेहोताहै सो तेलीवाकुहारकेव्यवहारसेजीवोंकोदशगुणपीडा वा हननहोताहै इससे दशगुणधोबी वामद्यके निकालनेवाले के व्यव हारमे सौगुणहत्याहोतीहै तथाइससे दशगुणहत्यावेषमेंहोतीहैअ र्थात् वेषकिसकोकहतेहैंकिकिसीकास्वरूपबनाना औरनकलकर ना अर्थात् मूर्तिपूजन रामलीलाऔररास मण्डलादिकजितने-व्यवहारहैंवेसबवेषमेंहोगिनेजातेहैंक्योंकिउनकावेषधारणहोकि-याजाताहै इससेवेषमेंहजारहत्या काअपराधहैतथा जोराजान्या-यसेपालननहीकरता औरअन्यायकर्त्ताहै वहदसहजार हत्याका स्वरूपहै इससे वेषबनानाबनवाना तथादेखनाभी सज्जनोंकोन चाहिये औरइनसबव्यवहारोंकोछोडनाचाहियेऔर अच्छेव्यव-हारोंकोकरनाचाहिये ऐसेइसदेशमें नष्टप्रवृत्तिभई हैकिकोईऐ सा कहताहै मारणमोहनउच्चाटन वशीकरणऔर विद्वेषणादिक मैंजानताहूं इनसेपूछनाचाहिये कितूंजीवन मरेभयकाभी करा-

सच्चा है वा नहीं सो कोई दैवयोग से मर जाता है वा कपट छल से विषादि देके मार डालते हैं फिर कहते हैं कि मेरा पुरश्चरण सिद्ध हो गया यह बात सब झूंठ है कोई रोगी होता है उसको बतलाता है कि भूत चढ़ गया है फिर दूसरा बतलाता है कि इसके ऊपर शनैश्चरादिक ग्रह चढ़े हैं तीसरा कहता है कि सो देवता की खोर है चौथा कहता है कि किसी का आप लगा है ये सब बात मिथ्या हैं कोई कहता है कि मैं रसायन बनाता हूं और दूसरा कहता है कि मैं पारे को भस्म बनाता हूं उसको कोई खा लेतो बुड्ढे का जवान होजाता है यह भी मिथ्या ही जानना और बहुत से पाखण्डी लोग बहुत पुरुष और स्त्रियों से कहते हैं कि जाओ तुमको पुत्र होजायगा सो सब तो बन्ध्या होती ही नहीं हैं जो किसी को पुत्र होजाता है तब वह पाखण्डी कहता है कि देख मेरे वर से पुत्र होगया और ऐसे भी कहता है कि मेरे वर से पुत्र होगया वह स्त्री और उसका पति भी बकते रहते हैं कि बाबाजी के वर से मुझको पुत्र भया उनकी बात सुनके बहुत मूर्ख लोग मोहित होके बाबाजी की पूजा में लगजाते हैं फिर वह पाखण्डी धन पाके बड़े २ अनर्थ करते हैं यह सब बात झूंठ है मुहूर्त्त और मुहूर्त्त इन दोनों से धूर्त्त लोग कहदेते हैं कि तुम्हारा विजय होगा सो दोनों का पराजय तो होता नहीं जिसका विजय होता है उससे खूब धन लेते हैं कि हमारे पुरश्चरण और वर से तेरा विजय भया है अन्यथा कभी न होता फिर बहुत बुद्धिहीन पुरुष इस बात से भी धननाश करते हैं कोई कहता है कि जो कुछ होता है सो ईश्वर की इच्छा से ही होता है जैसा चाहता है वैसा करा लेता है और किसी के कुछ करने से होता नहीं सब को नचावै राम गोसांई ऐसे २ झूंठ बचन बना लिये हैं इनसे पूंछना चाहिये कि जो वह मिथ्याभाषण चोरी परस्त्रीगमनादिक कराता है तो वह बहुत बुरा है वह कभी ईश्वर वा श्रेष्ठ नहीं हो सक्ता कोई कहता है कि जो कुछ होता है सो प्रारब्ध से ही होता है इनसे पूंछना चाहिये कि तुम व्यवहार चेष्टा क्यों करते हो सो पुरुषार्थ में ही सदा चित्त देना चाहिये अन्य-

चन होवड़तऐसे २ बालकोंको और स्त्रियोंको बहकातेहैं कि वे जन्म तक नहीं सुधर सकें ऐसा कहते हैं कि बहमातापिता तो झूंठहै तुम आजाओ नारायणके शरण और एक२ साधू हजार२ को मूंडलेता है और बहकाके पतितकर देते हैं उनका मरण तक कुछ सुकर्म नहीं होताक्योंकि सुधरे तो तब जोकुछ विद्यापढे और बुद्धि होतो फिर एक घरको छोंड़देते हैं और मातापिताकी सेवाभी छोड़देते हैं फिर कुटी मठ और मंदिरोंको बनाके हजारहांप्रकारके जालमें फस जाते हैं उनसे पूंछना चाहिये कि तुमलोगोंने घर और मातापितादिकक्यों छोड़े थे तब वेकहते हैं कि ऐसा सुख घरमें नहीं है ठीक है कि घरमें छप्परकेनीचे रहनापडताथा मजूरीमें हनतसे चना और जवकाआटाभीपेटभर नहीं मिलताथा सोआर्यावर्त्तमेंअन्धकारपर्णहै नित्य मोहनभोगमिलताहै और नित्यनयेभोग ऐसासुखस्त्रीकाभी गृहाश्रमनमेंहीहोता इस गृहाश्रममेंकुछहै नहीं देखिये कि एकरुपैया कोई मंदिरमेंचढाताहै उसको एकआनेका प्रसाददेतेहैं कभीनही देतेहैं परन्तु हमलोगोंने इसको विचारलियाहै कि सौलहपचाससौ और हजारगुनातकभी इसमंदिरकेदुकानदारोंमें तथा तीर्थमें होताहै अन्यत्र कैसोहीदुकानदारीकरो तोभी ऐसा लाभनहीं होता क्योंकि खाना नित्यनयीस्त्रियां और नित्यनानाप्रकार केपदार्थोंकी प्राप्ति अन्यत्र कहीं नहीं होती सिवायमंदिर पुराणादिकोंकीकथा और चेलोंकेमूड़नेसे इससे आपहजारकहो हमलोग इस आनन्दको छोड़नेवाले हैं नहीं अच्छा हमनेभीजानलियाहै कि जबतक यजमान विद्या और बुद्धियुक्त नहीं होंगे तबतक तुम लोग कभी नहीं छोड़ोगे परन्तु कभी दैवयोगसे विद्या और बुद्धि आर्यावर्त्त में होगी फिर तुमको और तुमारे पाखण्डोंकोवे सेवक और यजमान ही छोड़ेंगे तबपीछे भकमारकेतुमलोग भीछोड़देओगे ऐसे२ मिथ्या मत चलगये हैं कि कानको फाड़के मुद्राकोपहिरनेसे योगी और मुक्ति होती है सोइनके मतमें मत्स्येन्द्रनाथ और गोरखनाथ दोआचार्य

भयेहैं उननेयहमतचलाया उनकोशिवकाअवतारऔर सिद्धमा-नतेहैं नमःशिवाय उनकामन्त्रहै औरअपने मतकादिग्विजयभीब नालियाहै औरजलंधर पुराण हठप्रदीपिका गोरक्षशतकादिक बनालियेहैं फिरकहतेहैं येग्रन्थमहादेवनेबनायेहैं उनकाअना-चारवाममार्गियोंकीनांईहै क्योंकिजैसेवाममार्गी लोग श्मशानमे पुरश्चरणकरतेहैं तथामनुष्यकपाल खानेपीनेकेवास्ते रखतेहैं त-थारजस्वलास्त्रीका वस्त्रशिखावाबाहुमें बांधरखतेहैंइससे अपनेको धन्यमानतेहैं औरऐसे २ प्रमाण मानलेतेहैं रजस्वलाक्षितपुष्कं-रंचाण्डालीतुस्वयं काशीव्यभिचारिणीतुङ्गास्यात्पुंश्चलीतुकुरुक्षे-त्रंयमुनाचर्म कारिणी इत्यादिकवचनोंमे वणैसामानतेहैं किइ-नस्त्रियोंकेसाथ समागम करनेसे इनतीर्थोंकाफलप्राप्त होताहै फिरवेऐसे २ श्लोककहतेहैं किहालांपिबतिदीक्षितस्यमंदिरेसुप्तो निशायांगणिका गृहेषुदिक्षितनाम रक्खाहै मद्यबेचनेवालेकाउ-सकेघरमे जोपुरुषनिर्भयऔर निर्लज्ज होकेमद्यपीताहै फिरवे-श्याकेघरमेजाके उससे समागमकरै औरवहींसोजाय उसका ना मसिद्ध औरमहावीर रखतेहैं औरलज्जादिक आठपाशोंकोछो डदे तबवहशिवहोताहै इसमेंऐसा प्रमाणकहतेहैं॥ पाशबद्धोभवे ज्जीवः पाशमुक्तःसदाशिवः अर्थात जितनेव्यभिचारादिकपापकर्म हैंउनकेकरनेमें लज्जादिकजबतककर्त्ताहै तबतकवहजीवहै जबनि र्लज्जादिक दोषोंसेयुक्तहोताहै तबसदाशिवहोजाताहै देखनाचा हियेकि यहकैसीमिथ्याबातउनकीहै फिरउनने मद्यकानामती-र्थरक्खाहै मांसकानामशुद्धि मत्स्यकानामतृतीया रोटीकानाम-चतुर्थीऔरमैथुनकानामपंचमो जबवेआपसमेंबातकरतेहैंकिलेआ ओतीर्थऔरपीयो इसवास्तेइननेऐसेनाम रखलियेहैं किकोईऔ रनजाने औरजितनेवाममार्गीहैं उनकेकौलवीर भैरवआदिऔ-रगणयेपांच नामरखलियेहैं स्त्रियोंकेनाम भगवती देवीदुर्गाका-ली इत्यादिकरखलियेहैं औरजोउनकेमतमेंनहीहैंउनकानामप-

शु कराटकशुष्क औरविमुखादिक नामरखलियेहैं सोकेवलमिथ्या
जालउनकाहै इसकोसज्जनलोग कभीनमानें वैसेहोकानफटेना
थोंकाव्यवहारहै क्योंकिवभीश्मशान मेंरहतेहैं मनुष्योंका कपाल
रखतेहैं वाममार्गियोंसेवमिलतेहैं इत्यादिकबहुत नष्टव्यवहार-
आर्यावर्त्तमेंचलजानेसे देशकाश्रेष्ठ व्यवहार नष्टहोगया औरसब
देशखराबहोगया परन्तुआजकालअंगरेजके राज्यमेंकुछ२ सुध-
रना औरसुखभयाहै जोअबअच्छे २ ब्रह्मचर्याश्रमादिकव्यवहार-
वेदादिक विद्याऔरपाखण्ड पाषाणपूजनादिकोंका त्यागकरैं तो
इनकोबहुतसुखहोजाय क्योंकिराज्यका आजकालबहुतसुखहैध-
र्मविषयमें जोजैसाचाहै वैसाकरैऔरनानाप्रकारके पुस्तकभीय-
न्त्रालयोंकेस्थापनेसेसुगम तासेमिलतीहैंअच्छे२ मार्गशुद्धबनग-
येहैं तथाराजाऔरदरिद्रकोभी बातराजघरमेंसुनीजातीहै कोई
किसीकाजबरदस्तीसेपदार्थनहींछीनसक्ता अनेकप्रकारकीपाठशा
लाविद्यापढनेकेवास्ते राजप्रबन्धसेबनतीहैं औरबनीभीहैं उन
मेंबालकोंकी यथावत्शिक्षाहोतीहै औरपढनेसे आजीविका भी-
राजघरमें पढनेवालेकोहोतीहै किसीकाबन्धनवादण्डराजघरमें
नहींहोता जिसमेंजिसकोदोषीहोय उसकोदण्डकरैं अपनीप्रसन्न
तासें अत्यन्तदेशमेंमनुष्योंको दृद्धिभईहै औरपृथिवीभी खेतआदि
कोंसेबहुतहोगईहै वनादिकनहींरहेहैं लडाईबखेडा गदरकुछइ
सवक्तनहींहोतेहैं औरव्यवस्था राजप्रबन्धसे सबप्रकारसे अच्छीब
नीहै परन्तुकितनीबात हमकोअपनीबुद्धिसेअच्छीमालूमनहीं दे-
तीहैं उनकोप्रकाशकर्त्ते हैं नजानेवबडेबुद्धिमान्हैं उननेइनबातों
मेंगुणसमझाहोगा परन्तुमेरीबुद्धिमें गुणइनबातोंमें नहीदेखप
डतेहैं इससे इनबातोंकोमैंलिखताहूं एकतोयहबातहै किनोनऔ
रपौनरोटीमें जोकरलियाजाताहै वहमुझको अच्छानहींमालू-
मदेता क्योंकिनोनकेबिना दरिद्रकाभीनिर्वाह नहींहोता किन्तु
सबकोनोनका आवश्यकहोता है औरवेमजूरी मेंहनतसेजैसेतैसे

निर्वाह करते हैं उनके ऊपर भोयह नोन का दण्डतुल्य रहता है इस से दरिद्रों को क्लेश पहुंचता है इससे ऐसा होय कि मद्य अफ़ीम गांजा-भांग इनके ऊपर चौगुना करस्थापन होय तो अच्छी बात है क्योंकि नशादिकों का छूटना ही अच्छा है और जो मद्यादिक बिलकुल छूट-जांय तो मनुष्यों का बड़ा भाग्य है क्योंकि नशा से किसी को कुछ उपकार नहीं होता परन्तु रोगनिवृत्ति के वास्ते औषधार्थ तो मद्यादिकों की प्रवृत्ति रहना चाहिये क्योंकि बहुत से ऐसे रोग हैं कि जिन के मद्यादिक ही निवृत्तिकारक औषध हैं सो वैद्यकशास्त्र की रीति से उन रोगों को निवृत्त हो सक्ती है तो उनको ग्रहण करैं जब तक रोग न छूटे फिर रोग के छूटने से पीछे मद्यादिकों को कभी ग्रहण न करैं क्योंकि जितने नशाकारक नेवाल पदार्थ हैं वे सब बुध्यादिकों के नाशक हैं इससे इनके ऊपर ही कर लगाना चाहिये और लवणादिकों के ऊपर न चाहिये पौन रोटी से भी गरीब लोगों को बहुत क्लेश होता है क्योंकि गरीब लोग कहीं से घास छेदन करके लाये वा लकड़ी का भार उनके ऊपर कौड़ियों के लगने से उनको अवश्य क्लेश होता होगा इससे पौन रोटी का जो करस्थापन करना सो भी हमारी समझ से अच्छा नहीं तथा चोर डाकू परस्त्रीगामी और जूआ के करनेवाले इनके ऊपर ऐसा दण्ड होना चाहिये कि जिसको देख वा सुनके सब लोगों को भय हो-जाय और उन कामों को छोड़दें क्योंकि जितने अनर्थ होते हैं वे सब उनसे ही होते हैं सो जैसा मनुस्मृति राजधर्म में दण्ड लिखा है वैसा ही करना चाहिये जब कोई चोरी करै तब यथावत् निश्चय करके कि इसने अवश्य चोरी किई है कुत्ते के पंजे की नांई लोहे का चिन्ह राजा बनारखे उसको अग्नि में तपा के ललाट के भौं के बीच में लगादे कुछ बेत भी उसको मारदे और गधे पै चढ़ा के नगर के बीच में बजार में जूतियां भी लगतीं जाय और प्रायश्चित्त कराके फिर उसके कुछ धन दण्ड दे अथवा छः दिन जङ्गल खाना रखके वहां सूखे चने पाव भर तक खाने को दे और रात भर पिसवावै न पीसे तो वहां भी उसको जूते बैठें और दिव-

समें भी कठिन काम उससे करावे जबतक वह निर्बल न होजाय परन्तु ऐसा बहुत दिन न रक्खे जिससे कि मर न जाय फिर उसको दोनों दिनतक शिक्षा करै कि सुनभाई तैंने मनुष्य होके ऐसा बुराकाम किया कि तेरे ऊपर ऐसा दण्ड हुआ हमको भी तेरा दण्ड देखके बड़ा हृदयमें दुःख भया और आपभले आदमी होके व्यवहार करना फिर ऐसा काम कभी न करना चाहिये अच्छे २ काम करना चाहिये जिससे राजघरमें और सभामें तथा प्रजामें तुम लोगोंको प्रतिष्ठा होय और आपलोगोंके ऊपर ऐसा कठिन जो दण्ड दियागया सो केवल आपलोगोंके ऊपर नही किन्तु सब संसार के ऊपर यह दण्ड भया है जिससे इस दण्डको देख वा सुनके सबलोग भय करैं और फिर ऐसा काम कोई न करै ऐसे शिक्षा जितने बुरे कर्म करनेवाले हैं उनको दण्डके पीछे अवश्य करनी चाहिये क्योंकि दण्ड जातो सदा उसको स्मरण रहै और हठो वा विरोधी न बन जाय इसवास्ते शिक्षा अवश्य करना चाहिये केवल शिक्षा वा केवल अत्यन्त दण्डमें दोनों सुधरने नहीं जब कि जब दोनोंसे मनुष्य सुधरसक्ते हैं फिर भी वह चोरी करै तो उसका हाथ काट डालना चाहिये फिर भी वह न माने तो उसको बरोहवाल से मार डालना चाहिये किसी दिन उसकी आंख निकाल डाले किसी दिन कान किसी दिन नाक और सब जगह घुमाना चाहिये कि जिस को सब देखें फिर बहुत मनुष्योंके सामने उसको कुत्ते से चिथवा डालें ऐसा दण्ड एक पुरुषको होय तो उसके राजभरमें कोई चोरी की इच्छा भी न करेगा और राजाको भी इनके प्रबन्धमें बड़ा आनन्द होगा नहीं तो बड़े प्रबन्धमें भी यह होते हैं साधारण दण्डसे वे कभी सुधरेंगे नहीं डाकुओंको भी चोरको नाई दण्ड देना चाहिये और जुआ करनेवालोंको एकबार करनेमें हो बरोहवालसे जैसा कि चोरका लिखा गधेपर चढाना आदिक सब कर के फिर कुत्ते से चिथवा डालना चाहिये क्योंकि जो परस्त्रीगमन और जितने बुरे कर्म हैं वे जुआरों से होजाते हैं इससे उनके सहाय करनेवालेको भी ऐसा दण्ड देना चा-

हिये क्योंकि जितनेलड़ई दंगा चोरीपरस्त्रीगमनादिक इनसे ह। उ-
त्पन्नहैं। तेहैं इससे इनके ऊपर राजादण्डदेनेमें कुछथोडाभी आल-
स्यनकरै सदातत्पर रहै महाभारतमें एकदृष्टान्तलिखाहैकि सो-
नेचांदीऔर अच्छे २ पदार्थधरे रहैं उसकोकोईनस्पर्शकरै तबजा-
ननाकि राजा है और धनाढ्यलोगलाखहां रुपैयोंकोदुकानकाकि-
वाडकभीनहींलगावै और रातदिनकोईकिसीका पदार्थनउठावै
तबजाननाकि राजाहै धर्मात्माइसवास्ते ऐसाउग्रदण्डचाहिये कि
सबमनुष्यन्यायमेंचलैं अन्यायमेंकोईनहो जबस्त्रीवापुरुषव्यभिचार
करैं अर्थात परपुरुषसे स्त्रीगमनकरै परस्त्रीसेपुरुष जबउनकाठी-
क २ निश्चयहोजाय तबस्त्रीकेललाटमें अर्थात्भौंकेबीचमें पुरुष के
लिंगइन्द्रियका चिन्हलोहेकाअग्निमें तपाकेलगादे तथा पुरुषकेल-
लाटमें स्त्रीकेइन्द्रियकाचिन्हलगादे फिरजिसकोसबदेखाकरैं फि-
रउनकोभी खूबफजीहतकरैं औरकुछधनदण्डभीकरैं पीछेउसीप्र-
कारसेंभिक्षा भीकरैं सबको फिरभीविनमानैं औरऐसा कामकरैं त-
ब बहुतस्त्रियोंकेसामने उसस्त्रीकोकुत्तोंसेचिथवाडालै औरपुरुषको
बहुतपुरुषोंकेसामने लोहेकेतख्तको अग्निमेंतपाकेसोवादे उसके
ऊपर फिरउसकेऊपर घुमावै उसीपर्यंकके ऊपर उसका मरणहो
जाय फिरकोईपुरुषव्यभिचारकभीनकरेगा ऐसादण्डदेखकेवासु-
नके औरमक्कार कागदकोबेचतेहैं औरबहुतसाकागजों परधन
बढादियाहै इससे गरीबलोगोंको बहुतक्लेश पहुंचताहै सोयहबात
राजाको करनीउचितनहीं क्योंकि इसकेहोनेसे बहुतगरीबलोग
दुःखपाकेबैठेरहतेहैं कचहरीमेंबिनाधनसे कुछबातहोतीनहीं इ-
स कागजोंकेऊपर जोबहुत धनलगानाहै सोमुझकोअच्छामालू
मनहीदेता इसकोछोडनेसेही प्रजामेंआनन्दहोताहै क्योंकिथा-
नेसेलेकेआगे२ धनकाहीखर्चदेखपडता। हैन्यायहोनातोपीछेफि-
रनानाप्रकारके लोगसाक्षीझूंठ सबबनालेते हैं यहांतककिख़ु-
ब़ानेकोदेदेओ औरझूठगवाही हजारबतादेवादेओ जोजैसामनु

मेंदण्डलिखाहै वैसादण्डचलेतो खानेपीनेके वास्तेझूंठोमाचोटे-
नेको कोई तैयारनहीं होय अवाङ्नरकमथ्यं ति प्रेत्यस्वर्गोच्चहोय-
ते इसकायहअभिप्रायहै कि जबयहनिश्चयहोजायकिइसनेझूंठसा-
चीदिई तबउसकोजीभ काटडारीकेबीचमें काटलेयहीअवाङ्नाम
जीभरहित सोनरकभोगउस कोप्रत्यक्षहोय क्योंकिराजा प्रत्यक्ष-
न्यायकर्त्ताहै उसीवक्तउसकोप्रत्यक्ष हीफलहोनाचाहियेऔर जि-
तने अमात्यविचारपति राजघरमेंहोवेंउनके ऊपरभीकुछदण्डव्य-
वस्थारखनीचाहिये क्योंकिवभीअत्यन्तसच झूंठकेविचारमें तत्पर
होके न्यायहीकरनेलगे देखनाचाहियेकि एककेयहांअर्जीपचदि-
याउसकेऊपर विचारपतिने विचारकरकेअपनीबुद्धि औरकानून
कीरीतिसे एककीजीतकिई और दूसरेकापराजय जिसकापराज-
यभयाउसनेउसकेऊपर जोहाकिमहोताहै उसके पासफिरअपी-
लकरी सोप्रायःजिसकाप्रथम विजयभयाथा उसकोदूसरेस्थानमें
पराजयहोताहै औरजिसका पराजयहोताहै उसकाविजय फिर
ऐसेही जबतकधननहीचूकता दोनोंका तबतकविलायततकलडते
हीचलेजातेहैं प्रायःरहीसलोग इसबातमेंहठकेमारे बिगड़जाते
हैं इसमें क्याचाहियेकि बिचारकरनेवालेके ऊपरभीदण्डकी व्यव-
स्थाहोनीचाहिये जिस्से वे अत्यन्त बिचारकरकेन्यायहीकरें ऐसा
आलस्यनकरें किजैसाहमारीबुद्धिमें आया वैसाकरदिया तुमको
इच्छाहोयतो तुमजाओ अपीलकरदेओ ऐसीबातोंसेविचारपति
भीआलस्यमेंआजातेहैं औरविचारपतिको अत्यन्तपरीक्षा करनी
चाहिये किअधर्मसेडरतेहोंय औरविद्याबुद्धिमे युक्तहोयकामक्रो-
धलोभ मोहभय शोकादिकदोषजिनमेंनहोयऔर अन्तर्यामीजो
सबका परमेश्वर उस्से हीजिनकोभयहोय औरसेनहींसोपक्षपात
कभीनकरें किसीप्रकारसे तबउसराजाकीप्रजाको सुखहोसक्ताहै
अन्यथानहीं और पुलिसका जोदरजाहै उसमें अत्यन्तभद्रपुरुषों
कोरखनाचाहिये क्योंकिप्रथमस्थानन्यायकायहीहैइस्से ही आगे

प्रायः वादविवादकेव्यवहार चलतेहैं इसस्थानमेंजोपक्षपातसेअ-
नर्थलिखा पढ़ाजायगा सोआगेभीअन्यथा प्रायःलिखापढ़ाजायगा
औरअन्यथा व्यवहारभी प्रायः होजायगाइसपुलीसमें अत्यन्तश्रे-
ष्ठपुरुषोंको रखनाचाहिये अथवा पहिलेजैसे चौकीदारमहल्ले२
मेंएक२ रहताथा उससेबहुधा अन्यायनहींहोताथा जबसे पुलिस
काप्रबन्धभयाहै तबसेबहुधा अन्यथा व्यवहारही सुननेमेंआताहै
और गाय बैल भैंसोंबकरी और भेडोंआदिक मारेजातेहैं इससे प्र-
जाको बहुतसा शाप प्राप्त होताहै औरअनेकपदार्थोंकी हानिभी होती
हैक्योंकिएकगैयादस१०सेरदूधदेतीहैकोई८सेरछः६सेरपांच५स-
रऔरदो २ सेरतक उनकेमध्यछः६ सेरनित्य दूधगिनाजाय कोई
दस१० मासतकदूधदेतीहै कोईछः६ मासतकउसका मध्यस्थआ-
ठमासतक गिनाजाताहै सोएकमासभरमें सवाचारमन दूधहो-
ताहै उसमेंचावलडालके चीनीभीडालदेंतो सौपुरुषतृप्त होसक्ते
हैं जोऐसेहीपीयें तो ८० पुरुषतृप्त होजांयगे और ८०० वा ६४०
पुरुषतृप्तहोसक्ते हैं कोईगाय १५ दफेबियातीहै कोईदसदफे उस
काहमने १२ वक्तारखलिये सो ९६०० मैंपुरुषतृप्त होसक्ते हैंफिर
उसके बछड़ेऔरबछियांबढेंगे उनसेबहुतबैल औरगाय बढेंगेए-
कगायसेलाख मनुष्योंका पालन होसक्ताहै उसको मारके मां-
ससे ८० पुरुषतृप्त होसक्ते हैंफिरदूधऔर पशुओंकीउत्पत्तिकामूल
हीनष्टहोजाताहैजोबैलआर्यावर्त्तमेंपांचरुपैयोंसेआताथासोअब
३०सेभीनहींआता औरकुछगांव औरनगरकेपास पशुओंकेचर-
नेकेवास्तेउसकीसीमामेंभूमिरखनीचाहियेजिसमेंकिवपशुचरैंजै-
सेदुग्धादिकसेमनुष्यके शरीरकीपुष्टिहोतीहै वैसीसूखे अन्नादि-
कोंसेनहींहोती औरबुद्धिभीनहींबढती इससेराजाकोयहबात अव-
श्यकरनीचाहिये किजिनपशुओंसे मनुष्यके व्यवहारसिद्ध होतेहैं
औरउपकारहोताहै वेकभीनमारेजांय ऐसाप्रबन्धकरनाचाहिये
जिससेसबमनुष्योंकोसुखहोय वैसाहीप्रजास्थ पुरुषोंकोभीकरनाउ-

चितहै सोराजासेप्रजाजिस्से प्रसन्नरहे औरप्रजासेराजा प्रसन्न-
रहै यहीबातकरनी सबकोउचितहै देखनाचाहियेकि महाभार-
तमेंसगरराजाकी एककथालिखीहै उसकाएकपुत्र असमंजानाम
थाउसको यत्यन्त शिक्षाकिईगई परन्तु उसनेअच्छाआचारवावि-
द्याग्रहणनहिं किई औरप्रमादमेंहीचित्तदेताथा सोउसकीयुवाव-
स्थाभीहोगई परन्तु उसकोशिक्षा कुछनलगी राजादिकश्रेष्ठपुरु-
षोंकोउसकेऊपर प्रसन्नतानहोभई फिरउसका विवाहभीकरादि-
याएकदिनसर्यूमें असमंजास्नानकेलिये गयाथा वहांप्रजाके बाल-
कआठ २ दश २ बरसके जलमें स्नानकरतेथे औरक्रीडाभीकरतेथे
सोउनमेंसेएक बालकबाहरनिकला उसकोपकडके असमंजानेग-
हिरेजलमें फेंकदिया सोबालकडूबनेलगा तबतककोईप्रजास्थपु-
रुषने बालककोपकडलिया उसकेशरीरमें जल प्रविष्टहोनेसे वह
मूर्छितहोगया उसकोदशादेखके असमंजाबहुत प्रसन्नभया औ-
रहसकेघरकोचलागया कोईबालकउसकेपिताके पासगया और
कहाकितुमारे बालककोयहदशाहै राजाकेपुत्रनें करदिई सुनके
उसकीमातापिता औरसबकुटुंबकेलोग दुःखीभये उसको देखके
फिरउसबालककोउठाकेजहांसगरराजाकीसभालगीथी वहांको
चलेराजासभाकेबीचमें सिंहासनपरबैठेथेसोउनकोआतेदूरसेदेख
केझटऊठकेउनकेपासचलेगयेऔरपूछाकि इसबालकको क्याभया
तबउनकीमातारोनेलगी राजानेदेखके बहुतउनकाधैर्यदियाकि
तुमरोओमत बातकहदेओकिक्याभयातबबालककापिताबोलाकि
हमारेबडेभाग्यहैंकिआपकेजैसेराजाहमलोगकेऊपरहैं दूरसेदेख
केप्रजाकेऊपरकृपाकरकेपूछना औरदौडकेआनायहबडाप्रजाका
भाग्यहैइसप्रकारकाराजाहोना फिरराजानेपूछाकितुमअपनीबा-
तकहो तबउसनेराजाकोकहाकोएकतोआपहैं औरएकआपकापु-
त्रहै जोकिअपनेहाथसेहीप्रजाकोमारनेलगा औरजैसाभयाथावै-
सासब २ हालराजासेकहदियातबराजानेवैद्योंकोबोलाकेउसका

जलनिकलवाडाला और ओषधोंसे उसीवक्तस्वस्थ बालकहोगया
फिरसभाकेबीचमेंबालकउसकोमातपिता और जिसनेबालकनि-
कालाथावहभीवहांथाफिरराजानेसिपाहियोंकोआज्ञादिई कि अ-
समंजाकिसुसकेचढाकेलेआओ सिपाहीलोगगये और वैसहीउसको
बांधकेलेआये असमंजाकोभी संग२ चलीआई और सभामखडे
करदियेराजानेपुत्रकीस्त्रीसे पूछाकितूइसकेसाथजानेमेंप्रसन्नहैवा-
नहीतबउसनेकहाकिअबजोदुःखवासुखहोसोहोयपरन्तुमेरेअभा-
ग्यसेऐसापतिमिलासोमैंसाथहीरहूंगीपृथकनहीं तबराजानेअस-
मंजासेकहाकितेराकुछभाग्यअच्छाथा कियहबालकमरानहीजो
यहमरजातातोतुझको बुरेहवालसेचोरकोनाईं मैंमारडालतापर-
न्तुतुझको मैंमरणतकबनबासदेताहूं सोतूंकभीगांवमें वानगरमें
अथवा मनुष्योंके पासखडारहा वा गयातोतुझ को चोरकोनाईं
मारडालेंगे इसलितूंऐसेबनमें जाकेरहकिजहांमनुष्य कादर्शनभीन
होय सिपाहियोंसे हुकुमदेदिया किजाओतुमघोरवनमेंइनदोनों
कोछोडआओ उसकोनवस्त्रदिये अच्छे२ नखानेदिये नधनदिये
किन्तुजैसेसभामे दोनोंखडेथे वैसेही छोडआये फिरवे बनमेंरहे
और उनदोनोंसे बनमेहीपुत्रभया उसकोस्त्रीअच्छीथीसोअपनपा-
सहीबालककोरक्खा और शिक्षाभीकिई जबपांचवर्षकाभया तब
ऋषियोंकेपास पुत्रकोवहस्त्री रखआई और ऋषियोंसेकहाकिम-
हाराज यहआपकाहीबालकहै जैसेयहअच्छाबने वैसाकीजियेतब
वेऋषिलोग बहुतप्रसन्नहोके उसकोरक्खा किइसकोअच्छीप्रका-
रसेशिक्षाकिईजायगी क्योंकियहसगरकापौत्रहै फिरस्त्रीचलीगई
अपनेस्थानपर औरऋषिलोगोंने उसबालकके यथावत्संस्कारकि-
येविद्यापढाई और सबप्रकारकी शिक्षाभीकिई और उसनेयथावत्
ग्रहणकिई जबवह ३६ बरसकाहोगया तबउसकोलेके सगरराजा
केपासऋषिलोगगये और कहाकियह आपकापौत्रहै इसकीपरी-
क्षाकीजियेसोराजानेउसकी परीक्षाकिई औरप्रजा सब ४ पुत्र-

षोंनेभी सोसबगुणऔरविद्यामें योग्यहोहगा तबप्रजास्थपुरुषों-
नेराजासेकहा किअसमंजानजो आपकापौत्र सोराजाहोनेकेयो-
ग्यहै तबराजानेकहाकि सबबुद्धिमानप्रजास्थजोश्रेष्ठपुरुष उनको
प्रसन्नता औरसम्मतिहोयतो इसकाराज्याभिषेकहोजायफिरसब
श्रेष्ठलोगोंने सम्मतिदिईऔर उसकाराज्याभिषेकभीहोगयाक्यों-
किसगरराजा अत्यन्तवृद्धहोगयथे राज्यकार्यमेंबहुतपरिश्रमपड-
ताथा सोसबअधिकार उसकेऊपरदेदिये परन्तुअपनभी जितना
होसकताथा उतनाकर्त्तेथें राजाऐसाहोनाचाहिये किएकभर्त्त
राजाथा जिसकेनामसे इसदेशकाभरतखण्डनामरक्खागयाहैउ-
सकेभीनवपुत्रथे सो २५ वर्षकेऊपरसबहोगयेथेपरन्तुमूर्खऔरप्र-
मादीथे राजानेऔरप्रजास्थपुरुषोंने विचारकियाकि इनमेंसेएक
भीराजाहोनेकेयोग्यनहींसो भरतराजाने इश्तिहार करकेपुरुष-
औरस्त्रीलोगोंकोबोलाया जोप्रतिष्ठितराजाऔरप्रजास्थथे सोएक
मैदानमें समाजस्थानबनाया उसकेबीचमें एकमंचानभीगाडदि-
या सोजबसबलोग एकदिनइकट्ठेभये परन्तु किसीकोविदितनभ-
याकिराजाक्याकरेगा औरक्याकहेगा फिरमंचानके ऊपरराजा
चढकेसबसे कहाकिजोराजा अथवाप्रजास्थ रहीसलोगोंकापुत्र
इसप्रकारकादुष्टहोय उसकोऐसाही दण्डदेना उचितहै जोकिइ-
सवक्तहम अपनेपुत्रोंकोदेंगे सोसदा सबसज्जन लोगइस नीतिको
मानें औरकरें फिर मंचानसेउतरे औरनवपुत्रभीबीचमेंखडेथे
सब समाजवाले देखभीरहेथे औरउनकीमाताभी सोसबकेसाम-
नेखड्गहाथमेंलेके नवोंकासिरकाटके औरमंचानके ऊपरबांधदि-
ये फिरभीसबसेकहाकि जोकिसीकापुत्रऐसादुष्टहोय उसकोऐसा
हीदण्डदेनाचाहिये क्योंकि जोहमइनका सिर नकाटते तोयेह-
मारपीछेआपसमें लडते राज्यकानाशकरतेऔरधर्मकीमर्यादा-
कोतोडडालते इससे राजपुत्र वाप्रजास्थजोश्रेष्ठ धनाढ्यलोग उन
कोऐसाहीकरना उचितहै अन्यथाराज्यधन औरधर्मसबनष्टहो-

जांयगे इसेसंक्षेपसेही देखनाचाहिये किआर्यावर्त्त देशमें
ऐसे २ राजाऔर प्रजास्थश्रेष्ठपुरुषहोतेथे सोइसवक्त आर्यावर्त्त
देशमें ऐसेभ्रष्टाचारहोगयेहैं कोजिनकी संख्याभीनहीं होसक्तीऐ-
सासर्वत्र भूगोलमें देशकोईनहीं ऐसाश्रेष्ठआचारभीकिसीदेशमें
नहोथा परन्तु इसवक्त पाषाणादिक मूर्तिपूजनादिक पाखण्डोंसे
चक्रांकितादिक संप्रदायोंके वादविवादोंसे भागवतादिक ग्रन्थोंके
प्रचारसे ब्रह्मचर्याश्रम औरविद्याके छोडनेसेऐसादेशबिगडाहैकि
भूगोलमें किसीदेशकीनहीं जैसीकिदुर्दशा महाभारतकेयुद्धकेपी-
छेआर्यावर्त्तदेशकीभईहै सोआजकालअंगरेजकेराज्यमेंकुछ २ सु
खआर्यावर्त्त देशमेंभयाहै जोइसवक्तवेदादिक पढनेलगें ब्रह्मचर्या-
श्रमआश्रम चालीसवर्षतककरैं कन्याऔर बालकसबश्रेष्ठशिक्षा
औरविद्यावालेहोवैं इनमत मतान्तरोंके वादविवाद आग्रहोंको
छोडैंसत्यधर्म औरपरमेश्वरकी उपासनामें तत्परहोवैं तोइसदेश
कीउन्नति औरसुखहोसक्ताहै अन्यथानहीं क्योंकिविनाश्रेष्ठव्यव
हारविद्यादिकगुणोंसे सुखनहीहोता आजकालजोकोई राजा ज
मींदार वाधनाढ्यहोताहै उनकेपास मतमतान्तर के पुरुष और
खुशामदीलोग बहुतरहतेहैंबबुद्धिधनऔरधर्मनष्टकरदेतेहैंइससे
सज्जनलोग इनबातोंको विचारकेसमझलें और करनेकेव्यवहा-
रोंकोकरैं अन्यथानहीं।एकब्रह्मसमाज मतचलाहै वेऐसामानते
हैं नित्यपरमेश्वर सृष्टिकर्त्ताहै अर्थात् जीवादिकनये २ नित्यउत्प
न्नकर्त्ताहै जीवपदार्थऐसाहै किजड औरचेतनमिलाभया उसको
ईश्वरकर्त्ताहै जबवह शरीर धारणकर्त्ताहै तबजडांशसे शरीरबन
ताहै और चेतनांशजोहै सोआत्मारहताहै जबशरीरछूटताहैतब
केवलचेतन औरमनआदिक पदार्थरहतेहैं फिरजन्मदूसरानहीं
होता किन्तुपापोंकाभोग पश्चात्तापसेकरलेताहै ऐसेहीक्रमसे अ-
नन्तउन्नतिकोप्राप्तहोताहै यहबातउनकीयुक्ति औरविचारसेवि-
रुद्धहै क्योंकि जोनित्य २ नईसृष्टि ईश्वरकर्त्तातो सूर्य चन्द्रपृथिव्या-

दिकपदार्थोंकोभी सृष्टिनईर देखनेमेंआतीजैसे पृथिव्यादिककीसृ-
ष्टिनई २ देखनेमेंनहीआती ऐसेजीवकी सृष्टीभीईश्वरने एकवे
रकिईहै सोकेवल कल्पनामात्रसे ऐसाकथनवेलागकरतेहैं किन्तु
सिद्धान्त बातयहनहीहै इससे ईश्वरमें नित्यउत्पत्तिका विघ्नदोष
आवेगा औरसर्वशक्तिमत्वादिकगुणभीईश्वरमेंनहीरहैंगे क्योंकि
जैसेजीव क्रमसेशिल्पविद्यासे पदार्थोंकोरचनाकर्ताहै वैसा ईश्वर
भीहोजायगा इससे यहबात सज्जनोंकोमाननेके योग्य नहीं और
एकजन्मवादजोहै सोभी विचारविरुद्धहै क्योंकि अनेकजन्महोते हैं
सोप्रथमपूर्वार्द्धमेंविचारकियाहैवहांदेखलेना औरपश्चात्तापसेपा-
पोंकीनिवृत्तिमानना यहभीयुक्तिविरुद्धहै सोप्रथम लिखदियाहैकि
पश्चात्तापजो होताहैसो कियेभयेपापोंका निवर्त्तकनहीहोताकि-
न्तुआगेकर्त्तव्य पापोंकानिवर्त्तकहोताहै बिनाशरीरसेपापपुण्यों
काफलभोग कभीनहीहोसक्ता औरबिना शरीरके जीवरहताही
नही जोमनमेंपश्चात्तापसे पापोंकाफल जीवभोक्ता तोजिस २ दे
श कालऔर जिनजीवोंकेसाथ पापऔरपुण्यकियेथे उनकाभीम
नमेंस्मरणहोता औरजोस्मरणहोतातो फिरभीजीव मोहकेलो
भसेवहीं अपनेपुत्र स्त्रियादिकसंबन्धियों के पासआजाता सोकोई
आतानही इससे यहबातभी उनकीप्रमाणविरुद्धहै और वर्णाश्रम
कीजोसत्यव्यवस्था शास्त्रकीरीतिसे उसकाछेदनकरताहै सोसबम
नुष्योंके अनुपकारकाकर्महै यहदूसरेसमुल्लासमें विस्तारसेलिख
दियाहै वहांदेखलेना यज्ञोपवीत केवलविद्यादिक गुणोंका और
अधिकार काचिन्हहै उसकातोडनासाहससे इससेभी अत्यन्तमनु
ष्योंका उपकारनहीहोता किन्तु विद्यादिक गुणोंसेवर्णाश्रम का
व्यवहारकरना शास्त्रकीरीतिसे इससे जोमनुष्योंका उपकारहोसक्ता
है संसाराचारकी रीतिसे नहीं वेब्राह्मणादिकवर्णवाच जोशब्द
हैंउनकोजातिवाचि ब्राह्मलोगजानके निषेधकरते हैं सोकेवल उन
कोभ्रमहै किन्तु शास्त्रकीरीतिसे मनुष्यादिक जातिवाचकशब्द हैं

सोमनुष्यपशुवृक्षादिककी एकताकोई नहीकरसक्ता सोईमनुष्या-
दिकशब्दजातिवाचकशास्त्रमेंलिखेहैं सोसत्यहीहैऔरखानपीनसे
धर्मकिसीका बढतानहीं औरनकिसीकाघटता इसमेंभीअत्यन्तजो
आग्रहकरनाकिसबके साथखानाअथवाकिसीकेसाथनहीखानाय
हीधर्ममाननेनायहभी अनुचितबातहै किन्तु नष्टभ्रष्टसंस्कार ही
नपदार्थोंकेखाने औरपीनेसे मनुष्यकाअनुपकार होताहै अन्यथ
नहीऔरवार्षिकउत्सवादिकोंमेंमेलाकरनाइसमेंभी हमकोअत्यन्त
श्रेष्ठगुणमालूमनहींदेता क्योंकिइसमें मनुष्यकी बुद्धिबहिर्मुखहो
जातीहै औरधनभीअत्यन्तखर्चहोताहै केवलअंगरेजीपढने सेसं-
तोषकरलेनायहभी अच्छीबातउनकीनहीहैं किन्तु सबप्रकारकीपु
स्तकपढनाचाहिये परन्तुजबतकवेदादिक सनातन सत्यसंस्कृतपु-
स्तकोंकोनपढेंगे तबतकपरमेश्वरधर्म अधर्मकर्त्तव्य औरअकर्त्त-
व्यविषयोंको यथावत् नहीजानेंगेइस्से सबपुरुषार्थसेइन वेदादि-
कोंकोपढनाऔरपढानाचाहिये इस्सेसबविघ्ननष्टहोजांयगेअन्यथा
नहीऔर हमकोऐसा मालूमदेताहैकि थोडेहीदिनोंमे ब्राह्मस-
माजकेदोतीनभेदचलगयेहैं औरउनकाचित्तभी परस्परप्रसन्ननं-
हीहै किन्तु ईर्ष्याहीएकसे दूसरेकीहोतीहै सोजैसेवैराग्यादिकों-
मेंअनेकभेदोंकेहोनेसे अनेकप्रमादऔरविरुद्ध व्यवहारहोगयेहैंऐ-
साउनकाभी कुछकालमेंहोजायगा क्योंकिविरोधसेहीविरुद्धव्यव-
हारमनुष्योंकेहोतेहैं अन्यथानहीसोवेदादिक सत्यशास्त्रोंको ऋ-
षिमुनियोंकेव्याख्यान सनातनरीतिसे अर्थसहितपढेंतोअत्यन्तउ-
पकारहोजाय अन्यथानहीतो आगे २ व्यवहारहोजायगा ईसा
मूसामहम्मदनानक चैतन्यप्रभृतियोंकोही साधुमानना औरजै-
गीषव्यपंचशिखा आसुरिऋषिऔर मुनियोंकोनही गिननायहु
भीउनकोभूलहै अन्यबातजेपरमेश्वरकी उपासनादिक वेसबउन-
कीअच्छीहैं इसके आगे जैनमतके विषय मेंलिखा जायगा ॥

इतिश्री महयानन्द सरस्वतिस्वामि कृते स

त्यार्थप्रकाशे सुभाषाविरचिते एकादशःसमुल्लासःसंपूर्णः ॥ ११ ॥

अथ जैनमतविषयाख्याख्यास्यामः॥ सब संप्रदायोंसे जैनकामत प्रथम चलाहै उसको साढ़े तीन हजार वर्ष अनुमानसे भये हैं सो उनके २४ तिर्थ्यङ्कर अर्थात् आचार्य भये हैं जैनेन्द्र पार्श्वनाथ ऋषभदेव गौतम और बौधादिक उनके नाम हैं उन्ने अहिंसाधर्म परमधर्म माना है इसविषयमें वे ऐसा कहते हैं कि एक बिन्दु जलमें अथवा एक अन्नके कणमें असंख्यात जीव हैं उन जीवोंके पांख आजाय तो एक बिन्दु और एक कणके जीव ब्रह्माण्डमें न समावैं इतने हैं इससे मुख के ऊपर कपड़ा बांध रखते हैं जलको बहुत छानते हैं और सब पदार्थों को शुद्ध रखते हैं और ईश्वरको नहीं मानते ऐसा कहते हैं कि जगत् स्वभावसे सनातन है इसका कर्त्ता कोई नहीं जब जीव कर्मबन्धनसे छूट जाता है और सिद्ध होता है तब उसका नाम केवली रखते हैं और उसीको ईश्वर मानते हैं अनादि ईश्वर कोई नहीं है किन्तु तपोबलसे जीव ईश्वररूप होजाता है जगत्का कर्त्ता कोई नहीं। जगत् अनादि है जैसे घास वृक्ष पाषाणादिक पर्वत वनादिकोंमें आपसे आपही होजाते हैं ऐसे पृथिव्यादिक भूतभी आपसे आप बनजाते हैं। परमाणुका नाम पुद्गल रक्खा है सो पृथिव्यादिकोंके पुद्गल मानते हैं जब प्रलय होताहै तब पुद्गल जुदे २ होजाते हैं और जब वे मिलते हैं तब पृथिव्यादिक स्थूलभूत बनजाते हैं। और जीव कर्मयोगसे अपना २ शरीर धारण करलेते हैं जैसा जोकर्म करता है उसको वैसा फल मिलता है। आकाशमें चौदह राज्य मानते हैं उनके ऊपर शीपद्मशिला उसको मोक्ष स्थान मानते हैं जब शुभकर्म जीव कर्त्ता है तब उनकर्मोंके वेगसे चौदह राज्योंको उल्लंघन करके पद्मशिलाके ऊपर विराजमान होते हैं चराचरको अपनी ज्ञानदृष्टिसे देखते हैं फिर संसार दुःख जन्म मरणमें नहीं आते वहीं आनन्द करते हैं ऐसी मुक्ति जैनलोग मानते हैं। और ऐसाभी कहते हैं कि अर्मजो है सो जैनकाही है और

सबहिंसकहैं तथाअधर्मी क्योंकिजो हिंसाकरतेहैं वेधर्मात्मानहीं जो यज्ञमेंपशुमारतेहैं और ऐसे २ बातेंकहतेहैं कियज्ञमें जोपशु माराजाताहै सोस्वर्गको जाताहोय तो अपनापुत्रवा पिता को नमारडालेंस्वर्गको जानेकेवास्ते ऐसे २ श्लोकवचन बनारक्खे हैं। (त्रयोवेदस्य कर्त्तारो धूर्त्तभण्ड निशाचराः) इसकायह अभिप्रायहै कि ईश्वर विषयकिजितनी बातवेदमेंहैं वहधूर्त्तोंकीबनाईहै जितनीफलस्तुति अर्थात् इसयज्ञकोकरैंतो स्वर्गमेंजाय यह बातभाण्डोंनेबनारक्खीहै औरजितना मांसभक्षण पशुमारनेकाविधिहैवेदमें सोराक्षसोंबनानयाहै क्योंकि मांसभोजनराक्षसोंकोबड़ा प्रियहै सबबातअपने खानेपीनेऔरजीविका केवास्तेलोगोंनेबनाई है) और जैनमतहै सोसनातनहै औरयहीधर्महै इसकेविनाकिसीकोमुक्ति वासुखकभीनहींहोसक्ता ऐसी २ वेबातेंकहतेहैं (उत्तर) ऐसेपूंछनाचाहिये किहिंसातुमलोग किसको कहतेहो औरकहैं कि किसीजीवकोपीडादेना सोतोविनापीडाके किसीप्राणिका कुछव्यवहारसिद्धनहींहोता क्योंकिआपलोगोंकेमतमेंहीलिखाहै किएकबिन्दुमें असंख्यात जीवहैं उसकोजाघवकज्ञाने तोभीवेजीवबचनहींहोसक्ते फिरजलपानअवश्यकियाजाताहै तथा भोजनादिकव्यवहार औरनेत्रादिकोंकी चेष्टाअवश्यकिईजातीहै फिरतुमाराअहिंसाधर्मतोनहींबना (प्रश्न) जितनेजीव बचाये जातेहैं उतनेबचातेहैं जिसकोहमलोग देखतेहीनहीं उनकीपीडामें हमलोगोंकोअपराधनहीं (उत्तर) ऐसाव्यवहार सबमनुष्योंकाहैजैमांसाहारीहैं वेभीअश्वादिक पशुओंकोबचालेतेहैं वैसेतुमलोगभी जिनजीवोंसेकुछव्यवहारका प्रयोजननहीं है जहांअपनाप्रयोजनहैवहांमनुष्यादिकोंको नहींबचातेहो फिर तुमारो अहिंसानहीं रही (प्रश्न) मनुष्यादिकोंकोज्ञानहै ज्ञानसेवेअपराधकर्तेहैं इससेउनकोपीडादेनेमेंकुछअपराधनहीं वेपश्वादिकजीव बिनाअपराधहैंउनकोपीडादेनाउचितनहीं (उत्तर) यहबात तुमलोगोंकीविरुद्धहैक्योंकिज्ञा-

मवालोंकोपीडादेना और ज्ञानहीनपशुओंको पीडानदेनायहबा-
तविचारशून्यपुरुषोंकोहै क्योंकि जितने प्राणीदेहधारीहैं उनमेंसे
मनुष्य अत्यन्तश्रेष्ठहै सोमनुष्योंका उपकारकरना औरपीडाका
नकरना सबकोआवश्यकहै हिंसानामहैवैरकासो योगशास्त्र व्या
सजीके भाष्यमेंलिखाहै (सर्वथासर्वदा सर्वभूतेष्वनभिद्रोहः अहिं-
सा) यहअहिंसाधर्म कालक्षणहै इसकायह अभिप्रायहैकि सबप्र-
कारसे सबकालमें सबभूतोंमेंअनभिद्रोह अर्थात् वैरका जोत्याग
सोकहाताहै अहिंसासो आपलोगअपने संप्रदायमेंतोप्रीतिकरते
हो और अन्यसंप्रदायोंमेंद्वेष तथा वेदादिकसत्यशास्त्र तथाईश्वर
पर्यन्त आपलोगोंको वैरऔरद्वेषहै फिरअहिंसाधर्म आपलोगों
काकहनेमात्रहै/ अपनेसंप्रदायोंके पुस्तकतथाबातभी अन्यपुरुषोंके
पासप्रकाशितनहीकर्त्ते हो यहभीआपलोगोंमें हिंसासिद्धहैईश्वर
कोआपलोगनहीमानतेहैं यह आपलोगोंकी बडीभूलहैऔर स्व
भावसे जगतकीउत्पत्तिकामानना यहभीतुमलोगोंकोझूंठबातहैइ-
सकाउत्तर ईश्वरऔरजगतकी उत्पत्तिके विषयमेंदेखलेना प्रथम
जीवकाहोना औरसाधनोंकाकरना पश्चात् वहसिद्धहोगा जबजी-
वादिक जगत्विनाकर्त्तासे उत्पन्नहोनहीहोता औरप्रत्यक्षजगत्में
नियमोंकेजगत्में देखनेसे सनातन जगत्कानियन्ता ईश्वर अवश्य
है फिरउसकोईश्वर नहीमानना औरसाधनोंसे सिद्धजोभयाउ-
सीकोहीईश्वरमानना यहबात आपलोगोंकोसबझूठहै आपसेआ
पजीवशरीरधारणकरलेतेहैं तोशरीरधारणमेंजीव स्वतन्त्रठह-
रे फिरछोडक्यों देतेहैं क्योंकिस्वाधीनतासे शरीरधारणकरलेते
हैंफिरकभी उसशरीरकोजीव छोडगाहीनहीं जोआपकहेंकिक-
र्मोंकेप्रभावसे शरीरकाहोना और छोडनाभीहोताहै तोपापोंके
फलजीवकभीनहीग्रहणकर्त्ता क्योंकि दुःखकी इच्छाकिसीकोनहीं
होतीसदा सुखकीइच्छाहोरहतीहै जबसनातन न्यायकारीईश्वर
कर्मफलकी व्यवस्थाकाकरनेवालानहोगा तोयहबातकभीनबनेगी

आकाशमें चौदहराज्य तथा पञ्चशिला मुक्तिकास्थानमानना यह
बातप्रमाण और युक्तिसेविरुद्धहै केवलकपोलकल्पनामात्रहै और
उसके ऊपरबैठकेचराचर कादेखना और कर्मवेगसेवहांचलाजा
नायहभीबात आपलोगोंकीअसत्यहै(यज्ञोंकेविषयोंमें आपकुतर्क
कर्त्तेहैं सोपदार्थविद्याकेनहोनेसे क्योंकिघृतदूध औरमांसादि
कोंकेयथावत् गुणजानते और यज्ञकाउपकारकि पशुओंकोमार-
नेमेंथोडासादुःखहोताहै परन्तुयज्ञमें चराचरकाअत्यन्त उपका-
रहोताहै/इनको जोजानते तोकभीयज्ञविषयमें तर्ककर्त्ते/ वेदोंका
यथावतअर्थकेनही जाननेसेऐसीबात तुमलोगकहतेहो।किधूर्त्त
भाण्डऔर निशाचरोंनेलिखाहै यहबातकेवल अपनेअज्ञानऔ-
रसंप्रदायोंके दुराग्रहसेकहतेहो और वेदजोहै सोसबकेवास्तेहित-
कारीहै किसीसंप्रदायकाग्रन्थ वेदनहीहै किन्तु केवलपदार्थविद्या
और सबमनुष्योंके हितकेवास्ते वेदपुस्तकहै पक्षपातछोडकेकुछन-
ही इनबातोंकोजानतेतो वेदोंकात्याग और खण्डनकभीनकरते
सोवेदविषयमें सबलिखदियाहै वहींदेखलेना और(यज्ञमेंपशुको
मारनेसे स्वर्गमेंजाताहै यहबातकिसीमूर्खके मुखसेसुनलिईहोगी
ऐसीबात वेदमेंकहींनहीलिखी)जीवोंकेविषयमें वेऐसाकहतेहैंकि
जीवजितने शरीरधारीहैं उनकेपांचभेदहैं एकइन्द्रिय दोइन्द्रियत्री-
न्द्रिय चतुरिन्द्रिय औरपंचेन्द्रिय जडमेंएक इन्द्रियमानतेहैं अर्थात्
वृक्षादिकोंमें सोयहबात जैनोंकीविचारशून्यहै क्योंकिइन्द्रिय सू-
क्ष्महोनेसे कभीनहीदेखपडती परन्तुइन्द्रियका कामदेखनेसेअ-
नुमानहोताहै किइन्द्रियअवश्यहै सोजितनेवृक्षादिकोंकेबीजहैंउ-
नकोपृथिवीमें जबबोतेहैं तब अङ्कुर ऊपरआताहै औरमूल नीचे
जाताहै जोनेत्रेन्द्रिय उनकेनहोतीतो ऊपरनीचेको कैसेदेखता
इसकामसे निश्चितजानाजाताहै किनेत्रेन्द्रियजडवृक्षादिकोंमेंभी
है तथाबहुतलताहोतीहैं सोवृक्षऔर भित्तीके ऊपर चढजातीहै
जोनेत्रेन्द्रियनहोती तोउसकोकैसेदेखता तथास्पर्शेन्द्रियतो वेभी

मानते हैं जीभ इन्द्रियभी वृक्षादिकों में हैं क्योंकि मधुर जलसे बागा
दिकों में जितने वृक्ष होते हैं उनमें खारा जल देने से सूख जाते हैं जोभ
इन्द्रिय न होता तो स्वाद खारे वा मीठे का कैसे जानते तथा श्रोत्रे-
न्द्रियभी वृक्षादिकों में है क्योंकि जैसे कोई मनुष्य सोता होय उसको
अत्यन्त शब्द करने से सुन लेता है तथा तोफ आदिक शब्द से भी वृक्षों में
कम्प होता है जो श्रोत्रेन्द्रिय न होता तो कम्प क्यों होता क्योंकि अक-
स्मात् भयङ्कर शब्द के सुनने से मनुष्य पशु पक्षी अधिक कम्प जाते हैं वै-
से वृक्षादिक भी कम्प जाते हैं जो वे कहें कि वायु के कम्प से वृक्ष में चेष्टा हो
जाती है अच्छा तो मनुष्यादिकों को भी वायु की चेष्टा से शब्द सुन पड-
ता है इससे वृक्षादिकों में भी श्रोत्रेन्द्रिय है तथा नासिका इन्द्रिय भी है
क्योंकि वृक्षों का रोग धूप के देने से छूट जाता है जो नासिकेन्द्रिय न हो-
ता तो गन्ध का ग्रहण कैसे करता इससे नासिका इन्द्रिय भी वृक्षादिकों में
है तथा त्वगिन्द्रिय भी है क्योंकि कुमोदिनि कमल लज्जावती अर्था-
त् छुई मुई औषधि और सूर्यमुखी आदिक पुष्पों में और शीत तथा उष्ण
वृक्षादिकों में भी जान पडते हैं क्योंकि शीत तथा अत्यन्त उष्णता से वृ-
क्षादिक कुम्हला जाते हैं और सूख भी जाते हैं इससे तत्तद् इन्द्रियों का
कर्म देख के मत तत् इन्द्रिय वृक्षादिकों में अवश्य मानना चाहिये (यह
भ्रम जैन संप्रदाय वालों को स्थूल गोलक इन्द्रियों के नहीं देखने से हु-
आ है) सो इस जैन लोग इन्द्रियों को नहीं जान सके परन्तु कार्य द्वारा
सब बुद्धिमान लोग वृक्षादिकों में भी इन्द्रिय जानते हैं इसमें कुछ सं-
देह नहीं और जहां जीव होगा वहां इन्द्रिय अवश्य होंगी क्योंकि इन स-
ब क्रियों का जो संघात इसी को जीव कहते हैं जहां जीव होगा वहां इ-
न्द्रियां अवश्य होंगी (जैनों का ऐसा भी कहना है कि तालाब वा बावली कु-
आं कभी न बनाना क्योंकि उनमें बहुत जीव मरते हैं जैसे तालाब के र-
चने से भी सो उसमें बैठेगा उसके ऊपर मेघा बैठेगा उसको कौआ ले
जायगा और मार भी डालेगा उसका पाप तालाब बनाने वाले को हो-
गा क्योंकि वह तालाब न बनाता तो यह हत्या न होती इसमें उनसे कुछ

नहीसमझा क्योंकिउसतालाबकेजलसे असंख्यातजीवसुखी होंगे उसकापुण्य कहांजायगा सोपापके वास्ततालाबकोई नहीबनाता किन्तु जीवोंकेसुखके वास्तेबनातेहैं इससे पाप नहीहोसक्ता परन्तु जिस देशमेंजल नहीमिलताहोय उसदेशमें बनानेसे पुण्यहोता-है जिसदेशमें बहुत जल मिलताहोवे उसदेशमें तडागादिकोंका बनानाव्यर्थहै।औरवेबडे २ मंदिरऔरबडे २ घरबनातेहैं उनमें क्याजीवनहीमरतेहोंगे सोलाखहांरुपैये मन्दिरादिकोंमें मिथ्या लगादेतेहैं जिनसेकुछसंसारका उपकारनहीहोता और जोउप-कारकोबातहै उससेदोषलगातेहैं फिरकहतेहैं किजैनकाधर्मश्रे-ष्ठहै औरइसकेबिनामुक्तिभी किसीकोनहीहोती सोयहबातउन-कीमिथ्याहै क्योंकिकसीबात औरऐसेकर्मोंसेमुक्तिकभीनहीहोस-क्ती मुक्तितो मुक्तिकेकर्मोंसेसर्वत्रहोतीहै अन्यथानही।जितनामूर्ति पूजनचलाहै सोजैनोंसेहीचलाहै यहभीअनुपकार काकर्महै इससे कुछउपकारनही संसारमेंबिनाअनुपकारके सोजैनोंकी बडाभा गीआग्रहहै जोकोईकुछपुण्य कियाचाहताहै धनाढ्य सोमन्दिर-हीबनादेताहै औरप्रकारका दानपुण्यनहीकर्त्तेहैं।उनने जैनगा-यत्रीभी एकबनालिईहै औरएकयतीहोतेहैं उनकोश्वेताम्बर कह-तेहैं दूसराहोताहैदिगम्बर जिसकोमुनिऔर स्रावककहतेहैंउ-नमेंसेढूंढिये लोगमूर्तिपूजन कोनहीमानते औरलोग मानतेहैं उनमें एकश्रीपूज्यहोताहै उसका ऐसा नियमहोताहै किइतना धन जबसेवकलोगदे तबउसकेघरमेंजाय और मुनिदिगम्बरहोते हैं वेभी उनकेघरमें जबजातेहैं तबआगे २थानबिछातेचलेजाते-हैं औरउनकेमतमें नहोय वहश्रेष्ठभीहोयतो भीउसकोभिक्षा अ-र्थात् जलतकभीनहीदेते यहउनका पक्षपातसेअनर्थहै किन्तु जो श्रेष्ठहोय उसाकीसेवा करनीचाहिये दुष्टकीकभीनही यहसबम-नुष्योंकेवास्ते उचितहै जेढूंढियेहोतेहैं उसके केशमें जूंआपडजां-यतो भीनहीनिकालते औरइनकामत नहीबनवाते किन्तु उनका

साधु जब आता है तब जैनी लोग उसकी दाढ़ी मोंछ और सिर के बाल सब नोंच लेते हैं जो उस वक्त वह शरीर कम्पावै अथवा नेत्र से जल गिरावै तब सब कहते हैं कि यह साधु नहीं भया है क्योंकि इसको शरीर के ऊपर मोह है विचार करना चाहिये कि ऐसो २ पीडा और साधुओं को दुःख देना और उनके हृदय में दयाका लेश भी न होआना यह उनकी बात बहुत मिथ्या है क्योंकि बालों के नोंचने में कुछ नहीं होता जब तक काम क्रोध लोभ मोह भय शोकादिक दोष हृदय से नहीं जायंगे यह ऊपर का सब ढोंग है उनमें जितने आचार्य भये हैं उनके बनाये ग्रन्थों को वेद मानते हैं सो अठारह ग्रन्थ हैं तथा महाभारत रामायण पुराण स्मृतियां भी उन लोगों ने अपने मत के अनुकूल ग्रन्थ बना लिये हैं अन्य भगवती गोला ज्ञानचरित्रादिक भी ग्रन्थ नाना प्रकार के बना लिये हैं बहुत संस्कृत में ग्रन्थ हैं और बहुत प्राकृत भाषा में रच लिये हैं उनमें अपने संप्रदाय की पुष्टि और अन्य संप्रदायों का खण्डन कपोलकल्पना से अनेक प्रकार लिखा है जैसे कि जैन मार्ग सनातन है प्रथम सब संसार जैनमार्ग में था परन्तु कुछ दिनों से जैनमार्ग को छोड़ दिया है लोगों ने सो बड़ा अन्याय है क्योंकि जैनमार्ग छोड़ना किसी को उचित नहीं ऐसी २ कथा अपने ग्रन्थों में जैनों ने लिखी हैं सो सब संप्रदायवाले अपनी २ कथा ऐसी ही लिखते हैं और कहते हैं इसमें प्रायः अपने मत लाभ के लिये बातें मिथ्या २ बना लिई हैं। यावज्जीवं सुखं जीवेन्नास्ति मृत्योरगोचरः। भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः॥ यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्॥ अग्निहोत्रं त्रयो वेदा त्रिदण्डं भस्मगुण्ठनम्॥ बुद्धिपौरुषहीनानां जीविकेति बृहस्पतिः॥ अग्निरुष्णो जलं शीतं शीतस्पर्शस्तथानिलः॥ केनेदं चित्रितं तस्मात् स्वभावात्तद्व्यवस्थितिः॥ न स्वर्गो नापवर्गो वा नैवात्मा पारलौकिकः। नैव वर्णाश्रमादीनां क्रियाश्च फलदायकाः॥ अग्निहोत्रं त्रयो वेदा त्रिदण्डं भस्मगुण्ठनम्॥ बुद्धिपौरुषहीनानां जीविका धातृनिर्मिता॥ पशु श्च

त्रिहतःस्वर्गं ज्योतिष्टोमेगमिष्यति ॥ स्वपितायजमानेन तत्रक-स्मान्नहिंस्यते॥ मृतानामपिजंतूनां श्राद्धंचेत्तृप्तिकारणम्॥ गच्छतामिहजंतूनां व्यर्थंपाथेयकल्पनम्॥ स्वर्गस्थितायदातृप्तिं गच्छेयुस्तत्रदानतः॥ प्रासादस्योपरिस्थाना मत्रकस्मान्नदीयते॥ यदिगच्छत्परंलोकं देहादेषविनिर्गतः॥ कस्माद्भूयोनचायाति बन्धुस्नेहसमाकुलः॥ ततश्चजीवनोपायो ब्राह्मणैर्विहितस्त्विह॥ मृतानांप्रेतकार्याणि नत्वन्यद्विद्यतेक्वचित्॥ त्रयोवेदस्यकर्तारो भण्डधूर्त्तनिशाचराः॥ जर्फरीतुर्फरीत्यादि पंडितानां वचःस्मृतम्॥ अश्वस्यात्रहिशिश्नन्तु पत्नीग्राह्यंप्रकीर्त्तितम्॥ भण्डैस्तद्वत्परंचैव ग्राह्यजातंप्रकीर्त्तितम्। मांसानांखादनंतद्व न्निशाचरसमीरितम्॥ इत्यादिकश्लोक जैनोंनेबनारक्खे हैं और अर्थ तथा काम दोनोंपदार्थमानते हैं लोकसिद्ध जोराजासोई परमेश्वर और ईश्वर नहीं पृथिवी जल अग्नि वायु इन केसंयोगसे चेतनउत्पन्नहोके इन मेंलो नहोजाता है और चेतनपृथक पदार्थनहो ऐसे २ प्राकृतदृष्टान्तदे केनिर्बुद्धि पुरुषोंकोबहकादेतेहैं जोचारभूतोंकेयोगसे चेतनउत्पन्नहोता तो अबभीकोई चारभूतोंकोमिलाके चेतनदेखलादे सो कभीनहीं देखपड़ेगा इनस्वभावसे जगतकी उत्पत्तिआदिकका उत्तर ईश्वर और सृष्टिकेविषयमें लिखदियाहै वहींदेखलेना भूतेभ्योमूर्त्युपादान वत्तदुपादानम् इत्यादिक गोतममुनिजीके कियसूत्र नास्तिकोंकेमतदेखाने केवास्तेलिखेजातेहैं औरउनकाखण्डनभी सोजानलेना जैसेपृथिव्यादिक भूतोंसेबालु पाषाण गेरूअंजनादिक स्वभावसेकर्त्ताकेबिना उत्पन्नहोतेहैं वैसेमनुष्यादिकभी स्वभावसे उत्पन्नहोतेहैं नपूर्वापरजन्म नकर्म औरनउनकेसंस्कार किन्तु जैसे जलमेंफेन तरंग और बुद्बुदादिक अपने आपसे उत्पन्नहोतेहैं वैसेभूतोंसे शरीरभी उत्पन्नहोताहै उसमें जीवभी स्वभावसेउत्पन्नहोताहै उत्तर नसाध्यसमत्वात् २ गो० जैसेशरीरकोउत्पत्ति कर्मसंस्कारकेबिना सिद्धमानतेहो वैसेबालकादिक

को उत्पत्ति हुआ करती वालुकादिकोंके पृथिव्यादिकप्रत्यक्ष निमित्त और कारणहै वैसे पृथिव्यादिक स्थूलभूतोंका कारणभी सूक्ष्ममानना होगा ऐसे अनवस्थादोषभी आजायगा और साध्य समहेत्वाभासके नांई यहकथन होगा और इस दोहोत्पत्तिमें निमित्तान्तर अवश्य तुमको मानना चाहिये नोत्पत्तिनिमित्तत्वन्मातापित्रोः ३-गो० यह नास्तिकका अपने पक्षका समाधान है कि शरीरकी उत्पत्तिका निमित्त माता और पिताहैं जिनसेकि शरीर उत्पन्न होता-है और बालुकादिक निर्बीज उत्पन्न होतेहैं इससे साध्यसम दोष हमारे पक्षमे नहीं आता क्योंकि मातापिता खानापीनाकर्त्ते हैंउससे वीर्य बीजशरीरका है जग्रागा उत्तर प्राप्तौचानियमात् ४ गो० ऐसा तुम मतकहो क्योंकि इसका नियम नहीं माता और पिताका संयोग होताहै और वीर्यभी होताहै तोभी सर्वत्र पुत्रोत्पत्ति नहीं देखनेमें आती इससे यह जो आपका कहा नियम सो भङ्ग होगया इत्यादि नास्तिक के खण्डनमें न्यायदर्शनमें लिखाहै जो देखा चाहै सो देखले दूसरे नास्तिकका ऐसा मतहै कि अभावाद्भावोत्पत्तिर्नानुपमृद्यप्रादुर्भावात् ५ गो० अभाव अर्थात् असत्यसे जगत् की उत्पत्ति होतीहै क्योंकि जैसे बीजका नाशकरके अङ्कुर उत्पन्न होताहै वैसे जगत् की उत्पत्ति होतीहै उत्तर व्याघातादप्रयोगः ६ गो० यह तुम्हारा कहना अयुक्त है क्योंकि व्याघातके होनेसे जिसका मर्दन हुआ-है बीजके ऊपर भागका यह प्रकट नहीं होता और जो अङ्कुर प्रकट होताहै उसका मर्दन नहीं होता इससे यह कहना आपका मिथ्या है तीसरा नास्तिक का मत ऐसाहै ईश्वरःकारणं पुरुषकर्माफल्यदर्शनात ७ गो० जीव जितना कर्म कर्ता है उसका फल ईश्वर देता है जो ईश्वर कर्मफल न देता तो कर्मका फल कभी न होता क्योंकि जिस कर्मका फल ईश्वर देताहै उसका तो होताहै और जिसका नहीं देता उसका नहीं होता इससे ईश्वर कर्मका फल देनेमें कारणहै उत्तर पुरुषकर्माभावेफलानिष्पत्तेः ८ गो० जो कर्मफल देनेमें ईश्व-

र कारणहोता तो पुरुषकर्मकर्त्ता तोभीईश्वर फलदेता सो बि- नाकर्म करनेसे जीवकोफलनहू देता इस्से क्याजानाजाताहै कि जोजीव कर्मजैसाकर्त्ताहै वैसा फल आपहीप्राप्तहोताहै इस्से ऐ- साकहनाव्यर्थहै फिरभीवह अपनेपक्षको स्थापनकरने केवास्ते क हताहै कि तत कारितत्व'दहेतुः (२१) गो० ईश्वरही कर्मका फल औरकर्मकरानेमें कारणहै जैसा कर्मकराताहै वैसा जीवकर्त्ताहै अन्यथानहीं उत्तर जोईश्वकराता तोपापक्योंकराता और ईश्व- रके सत्यसंकल्पके होनेसे जोजिव जैसाचाहता वैसाहीहोजाता और ईश्वर पापकर्मकराके फिर जीवकोदण्डदेता तोईश्वरकोभी जीवसेअधिक अपराधहोता उसअपराधका फलजो दुःखसो ईश्व रकोभीहोनाचाहिये और केवल छली कपटी औरपापोंके करा- नेसे पापीहोजाता इस्से ऐसा कभी कहनाचाहिये किईश्वर करा ताहै चौथे नास्तिकका ऐसामतहै कि अनिमित्ततो भावोत्प त्तः कण्टकतैक्ष्ण्यादिदर्शनात् (२२) १० गो० निमित्तके बिनापदार्थों की उत्पत्तिहोतीहै क्योंकि वृक्षमें कांटेहोतेहैंवेभीनिमित्तकेबि- ना होते तीक्ष्णहोतेहैं कण्टकोंकी तीक्ष्णता पर्वतधातुओंको चित्र, पाषाणोंकोचिक्कनता जैसे निमित्त देखनेमेंआतीहै वैसेहीशरीरा दिकसंसारको उत्पत्तिकर्त्ता केबिनाहीतोहै इसका कर्त्ताकोईनहीं उत्तर अनिमित्त अनिमित्तत्वान्नो निमित्ततः (२३) ११ गो० बिननि- मित्तके सृष्टिहोतीहै ऐसामतकहो क्योंकि जिस्से जो उत्पन्नहोता है वहीउसका निमित्तहै वृक्ष पर्वत पृथिव्यादिक उनके निमित्त जाननाचाहिये वैसेही पृथिव्यादिककी उत्पत्तिकानिमित्तपरमेश्वर हीहै इस्से तुमारा कहनामिथ्याहै/पांचवें नास्तिकका ऐसामत है कि सर्वमनित्य मुत्पत्ति विनाशधर्मकत्वात् (२४) १२ गो० सबजगत् अनित्यहै क्योंकि सबकीउत्पत्ति और बिनाशदेखनेमें आताहैजो उत्पत्ति धर्मवालाहै सो अनुत्पन्न नहीहोता जो अविनाशधर्मवा लाहै सो विनाशी [illegible]